BIHAR YOGA®

श्रीरामचरितमानस

बालकाण्ड – 4

संकलन एवं सम्पादन

अवलोकितेश्वर



योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, मुंगेर, बिहार, भारत

श्रीरामचरितमानस

बालकाण्ड – 4

(दोहा 188 से 268 तक)

राम अवतार, बाल लीलायें एवं शिव-धनुष यज्ञ

ॐ, प्रेम, मंगलम्

स्वामी निरंजन

श्रीरामचरितमानस

बालकाण्ड – 4

राम अवतार, बाल लीलायें एवं शिव-धनुष यज्ञ

संकलन एवं सम्पादन

अवलोकितेश्वर

(सुबोध अग्रवाल, सतना)



योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, मुंगेर, बिहार, भारत

श्रीरामचरितमानस बालकाण्ड – 4
अवलोकितेश्वर

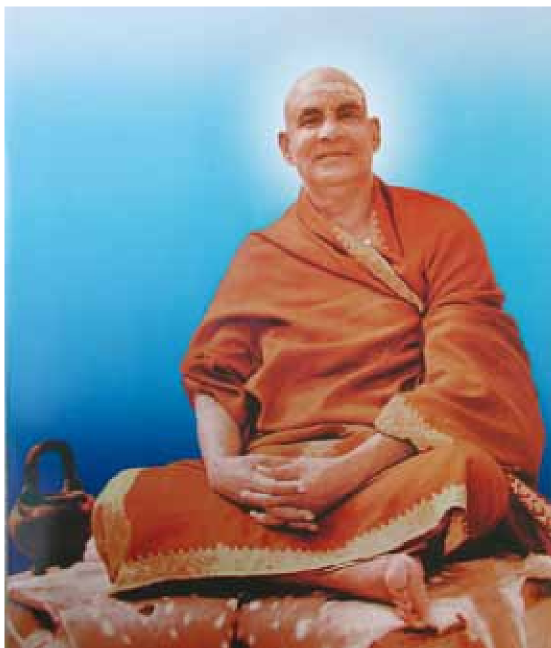
योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित
प्रथम संस्करण 2021

ISBN: 978-81-949328-6-4

प्रकाशक एवं वितरक–योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, गरुड विष्णु,
पी.ओ. गंगा दर्शन, फोर्ट, मुंगेर, बिहार

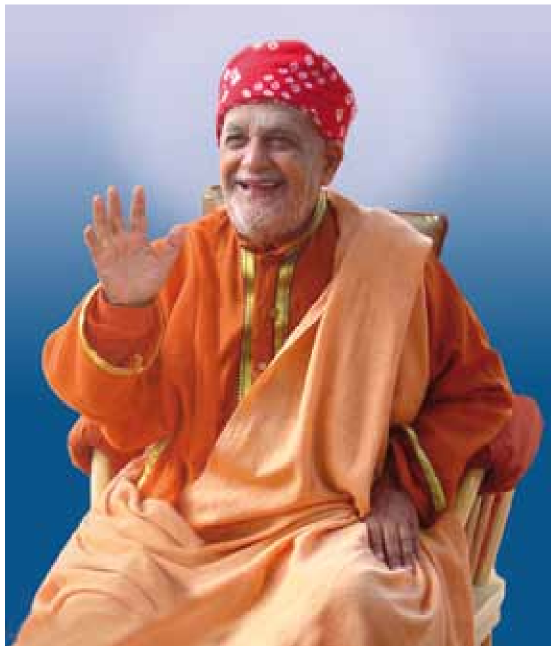
वेबसाइट: www.biharyoga.net
www.sannyasapeeth.net
www.satyamyogaprasad.net

मुद्रक–थॉमसन प्रेस (इंडिया) लिमिटेड, नई दिल्ली



सविनय समर्पण

स्वामी शिवानन्द सरस्वती के चरणों में
जिन्होंने स्वामी सत्यानन्द सरस्वती को योग के रहस्यों की शिक्षा दी



नमो नारायण

योगविद्या भारतवर्ष की सबसे प्राचीन संस्कृति और जीवन-पद्धति है तथा इसी विद्या के बल पर भारतवासी प्राचीनकाल में सुखी, समृद्ध और स्वस्थ जीवन बिताते थे। जब से भारत में योग विद्या का ह्रास हुआ, तभी से भारतवासी गरीब, दुःखी और अस्वस्थ हैं। पूजा-पाठ, धर्म-कर्म से शान्ति मिलती है और योगाभ्यास से धन-धान्य, समृद्धि और स्वास्थ्य। भारत में सुख, समृद्धि, शक्ति और स्वास्थ्य के लिए हर व्यक्ति को योगाभ्यास करना चाहिए।

स्वामी सत्यानन्द सरस्वती
रिखियापीठ, 2005

विषय सूची

परिचय

श्रीरामचरितमानस को मेरे पिताजी अपने माता-पिता के समान ही मानते थे, क्योंकि उनके माता-पिता बचपन से ही नहीं थे। उन्होंने अपना सारा जीवन इस ग्रंथ के आधार पर ही प्रेम, आनंद व संतोष के साथ जिया। मुझे बचपन से ही इस ग्रंथ से बहुत लगाव रहा है। मैंने इसकी जीवंतता को नजदीक से देखा है।

मेरे गुरु, श्री स्वामी सत्यानन्द जी की भी इस ग्रंथ के प्रति अगाध श्रद्धा है। रिखिया में उनके सत्संगों के अनुपम संग्रह, भक्ति योग सागर भाग-1 से 7 तक मैंने पढ़े हैं और उन्हें पढ़कर लगा, वे चाहते हैं कि श्रीरामचरितमानस का शब्दानुवाद हो। यह बात मेरे मन में बैठ गयी। 5 दिसंबर 2009 की मध्य रात्रि को जब गुरुदेव महासमाधि में लीन हुए, रात्रि में 2 बजे मेरी नींद अचानक खुल गई। उठकर थोड़ी देर ध्यान किया। उसके बाद यह कार्य मेरे लिये श्री गुरुदेव का सेवा कार्य बन गया।

स्वामी चिन्मयानन्द जी के वरिष्ठ शिष्य स्वामी शंकरानन्द जी, कानपुर आश्रम में रामचरितमानस के एक-एक दोहे पर एक घंटे का प्रवचन दिया करते थे। उनके उपलब्ध प्रवचनों को आधार बनाकर मैंने नोट तैयार किया। स्वामी निरंजनानन्द जी से जब आशीर्वाद और मार्गदर्शन का निवेदन किया तो उन्होंने कहा, कार्य अच्छा है, इसे इतना सरल लिखो कि अनपढ़ व्यक्ति भी समझ जाये। बस फिर क्या था! स्वामीजी की प्रेरणा से सरलीकरण, संपादन, शीर्षक, उपशीर्षक बनते चले गये। स्वामीजी ने कहा कि एक-एक काण्ड लिखते जाओ, हम प्रकाशित करते जायेंगे। सबसे पहले सुंदरकाण्ड तैयार हुआ जिसमें हुनमान जी के सुंदर सेवा कार्य का वर्णन है। गुरु प्रेरणा से अब बालकाण्ड को पाँच भाग में तैयार किया गया है जिसमें श्रीरामचरितमानस की

महिमा, शिव-पार्वती विवाह, राम-अवतार के कारणों का वर्णन, बाल लीला एवं राम-सीता विवाह का सरस एवं सुन्दर वर्णन किया गया है।

गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस महाकाव्य है। यह सरस है, इसमें मधु की मिठास है। हम अपनी कार्य सिद्धि के लिए बिना मिठास के जल्दी-जल्दी पाठ कर लेते हैं। राग से, भाव से, रस लेते हुए इसे पढ़ें। आँखों में प्रेम के अश्रु आयेंगे, शरीर रोमांचित हो जाएगा। यह मात्र पुस्तक नहीं है, इसमें अध्यात्म, ज्ञान, भक्ति और प्रेम के साथ-साथ पारिवारिक, व्यवहारिक एवं सामाजिक शिक्षा भी है। यह इतिहास भी है, भूगोल भी है, राजनीति और कूटनीति की शिक्षा भी है। यह हिंदी साहित्य की उच्चतम प्रस्तुति है।

– अवलोकितेश्वर

तुम भगवान पर अविश्वास कर सकते हो। तुम्हें राम के अस्तित्व पर प्रश्न हो सकता है। सब ठीक है, पर मैं भगवान के बारे में नहीं, मैं बोल रहा हूँ नाम के बारे में। नाम पर कभी शंका मत करना। जब राम का नाम लेते हो तो तुम्हारा मन, तुम्हारा हृदय, तुम्हारा पूरा जीवन ऐसे धुल जाता है, जैसे राम का नाम डिटरजेंट पाउडर हो। यह भगवान का नाम मामूली चीज नहीं है। यह भगवान का नाम आत्मबम है। तुम्हारे अंदर में जितनी माया, मलिनता, कोढ़, गंदगी, भय, निराशा, जितनी भी आसुरी शक्तियाँ हैं सबको समाप्त कर देगा। मेरा कहना है कि रोज जब भी तुमको समय मिले भगवान् का नाम जपो। 1 घण्टा जपो, 2 घण्टा जपो। समय मिले तो कभी 1 दिन कभी 2 दिन कभी 9 दिन या साल भर का अनुष्ठान करो। यही एकमात्र रास्ता है।

– स्वामी सत्यानन्द सरस्वती

बालकाण्ड – 4

14 मुख्य शीर्षकों द्वारा संक्षिप्त प्रस्तुतीकरण

1. अयोध्या में प्रभु राम का तीन भाइयों सहित अवतार

(दोहा 188 से 196)

तुलसीदास जी ने 9 दोहों में भगवान के गर्भ में आने से लेकर शिशु बनकर अवतार लेने की कथा का मनमोहक वर्णन किया है। जब अयोध्या के राजा दशरथ, गुरु वसिष्ठ से पुत्र न होने का दु:ख बताते हैं, तब गुरु समझाते हुए कहते हैं तुम्हारे यहाँ तो भगवान स्वयं चार पुत्र बनकर जन्म लेंगे। पुत्र होने का योग है इसलिये पुत्रकामेष्टि यज्ञ शृंगी ऋषि से करवाते हैं। अग्निदेव स्वयं प्रकट होकर खीर का प्रसाद देते हैं, जिसे खाने से तीनों रानियों के गर्भ में भगवान अवतरित हो जाते हैं। प्रकृति में सब तरफ आनंद व मंगल छा जाता है। फिर कौशल्या माँ के सामने प्रभु दिव्य चर्तुभुज रूप में प्रगट होते हैं, माँ स्तुति गाती हैं, प्रभु पूर्व जन्म की कथा याद दिलाते हैं, माँ शिशु-लीला करने का आग्रह करती हैं। बस आदेश मिला, तुरंत चतुर्भुज रूप छोड़कर प्रभु शिशु बनकर रोने लगते हैं। पूरे राजमहल व नगर में खबर फैल जाती है। रानी कैकेयी के एक पुत्र व रानी सुमित्रा के दो पुत्र जन्म लेते हैं।

2. नामकरण व मनमोहक शिशु लीला

(दोहा 197 से 198)

लगभग 10-12 दिनों बाद जब शिशुओं के नामकरण का समय आया तब वसिष्ठ जी लक्षणों के अनुसार नाम रख देते हैं। जो सबको आनंद देने वाले हैं उनका नाम राम, सबका भरण पोषण करने वाले का नाम भरत, बाहरी व मन के भीतर के शत्रुओं का नाश करने वाले का नाम शत्रुघ्न, व सब सद्‌गुणों से भरे हुए पुत्र का नाम लक्ष्मण रख देते हैं।

3. बालक राम का दिव्य माधुर्य रूप

(दोहा 199 से 200)

इस प्रसंग में भगवान राम के बाल रूप का सुंदर स्वरूप वर्णन करते हैं। वर्णन से पता चलता है कि उनकी आयु लगभग छः माह की हो गयी है। शिशु रूप से बाल रूप में आने पर वे बैठने लगे, घुटनों के बल चलने लगे। दो दाँत निकल आये। तुलसीदास जी यहाँ पर भगवान राम के उसी रूप का वर्णन करते हैं जिसका शिव जी व काकभुशुंडि जी सदा ध्यान करते हैं। बाल रूप राम ही इनके इष्टदेव हैं। जब भी बाल रूप राम का ध्यान करना हो, स्मरण करना हो तो दिये गये स्वरूप के अनुसार कर सकते हैं। यह रूप माधुर्य प्रधान है। इसलिये चरण से ध्यान प्रारंभ करके मुख तक जाते हैं। युवा रूप ऐश्वर्य प्रधान होता है, इसमें भगवान का ध्यान मुख से प्रारंभ करके चरण तक जाते हैं। माधुर्य रूप का ध्यान आनंद प्रदान करता है, ऐश्वर्य रूप का ध्यान समृद्धि व शक्ति प्रदान करता है। शिव जी कहते हैं कि जो लोग राम के चरणों में प्रेम करते हैं, उन्हें ही बाल रूप भगवान राम व उनकी बाल लीलायें साक्षात् देखने का सुख प्राप्त होता है।

4. प्रभु राम के विराट् रूप का दर्शन

(दोहा 201 से 202)

माँ कौशल्या प्रभु की बाल लीलाओं में इतनी मग्न हो गयीं कि वे उनके ब्रह्म रूप को भूल ही गईं। माँ ने पूर्वजन्म में वरदान माँगा था कि जब आप पुत्र बनकर आयें तब हमें आपके ब्रह्म रूप का भी स्मरण बना रहे, हम मोह में न पड़ें। इस प्रसंग में पुत्र बने राम माँ को सचेत करने के लिये लीला करके अपना विराट् रूप दिखाते हैं। उनके शरीर में अनेकों ब्रह्मांड, अनेकों ब्रह्मा, शिव, बहुत से पृथ्वी, सूर्य तारे इत्यादि दिखने लगते हैं। सूक्ष्म ब्रह्मांड से लेकर माया का कार्य, सब दिखाई देता है। माँ आश्चर्यचकित होती हैं। प्रभु फिर से शिशु बन जाते हैं। माँ प्रार्थना करती हैं कि तुम्हारी यह माया अब हमें कभी न घेर पाये। हम लोगों को तो बस इतनी प्रार्थना करनी है कि हे प्रभु! आपकी माया हमें इतना अधिक न घेर ले कि हम आपका स्मरण करना ही भूल जायें। राम नाम लेते रहने का अवसर मिलता रहे।

5. बाल लीलायें, मुंडन, जनेऊ, शिक्षा, राज्य के कार्य

(दोहा 203 से 205)

प्रभु राम शिशु से बालक बन गये। आयु जब तीन वर्ष की हो गयी तो मुंडन संस्कार करवाया गया। अब माँ की गोद से राजमहल के आँगन में चारों भाई खेलने लगे हैं। आयु बढ़ने के साथ लीला का विस्तार होता जाता है। राजमहल के लोग और अयोध्यावासी आनंदित होते हैं। 10 वर्ष की आयु में जनेऊ पहनाकर, अनुशासन में रहने का संकल्प दिलवाया गया। अब गुरु के यहाँ जाकर सब भाई विधिवत् शिक्षा ग्रहण करते हैं। वापस जब राजमहल आते हैं तो पाई गई शिक्षा का अभ्यास करने के लिये राजाओं का खेल खेलते हैं। वन में जाकर शिकार करके कठिन परिस्थितियों का सामना करने का अभ्यास करते हैं। अब इतने बड़े हो गये कि पिता के राज्य संभालने के कार्य में सहयोग करने लगे। तुलसीदास जी फिर याद दिला देते हैं कि ये ब्रह्म ही हैं, पर मनुष्य लीला कर रहे हैं, भक्तों के लिये, हम सबके लिये, इसे देखकर आनंदित हों। जीवन में इसे अपनायें।

6. विश्वामित्र जी राम-लक्ष्मण को लेने आते हैं

(दोहा 206 से 208)

प्रभु राम युवा अवस्था में प्रवेश करते हैं। विश्वामित्र जी महान् मुनि व ज्ञानी हैं। वन में उनका पवित्र आश्रम है, जहाँ पर मुनि लोग यज्ञ, जप, योग इत्यादि साधनायें करते हैं। ताड़का, मारीच, सुबाहु इत्यादि राक्षस उन्हें बहुत परेशान करते हैं। विश्वामित्र जी ने ध्यान करके जब देखा की प्रभु राम ने निशाचरों के वध के लिये अयोध्या में अवतार ले लिया है, तो उन्हें लाने के लिये अयोध्या पहुँचते हैं। महाराज दशरथ पहले मना कर देते हैं। लेकिन वशिष्ठ जी के समझाने पर दशरथ राम-लक्ष्मण को विश्वामित्र को सौंप देते हैं। इस प्रसंग से प्रभु राम के अवतार के माधुर्य रूप की कथा समाप्त होती है। आगे ऐश्वर्य रूप की कथा होगी।

7. आश्रम पहुँचे, निशाचरों का वध, अहिल्या उद्धार

(दोहा 209 से 211)

इस प्रसंग से राम के ऐश्वर्य व वीरता के गुण की कथा प्रारंभ होती है। राम, धनुष-बाण हाथ में लिये सावधानी से जा रहे हैं। आश्रम पहुँचने के

पहले ताड़का जैसे ही हमला करती है, प्रभु एक बाण से ही उसे मार देते हैं। विश्वामित्र जब यह समझ जाते हैं कि ये तो ब्रह्म ही हैं, अपनी सारी विद्यायें व अस्त्र-शस्त्र राम को अर्पित कर देते हैं। आश्रम पहुँचकर राम-लक्ष्मण यज्ञ की रक्षा करते समय निशाचरों को मारकर मुनियों का भय दूर कर देते हैं। राम-लक्ष्मण को अपने साथ मुनिजन, जनकपुर में धनुषयज्ञ व सीता स्वयंवर देखने ले जाते हैं। रास्ते में पत्थर बनी अहिल्या को चरणों की धूल का स्पर्श कराकर प्रभु जीवंत कर देते हैं। इस प्रसंग के पाठ के समय ऐसा भाव रखें कि प्रभु राम हमारे क्रोध का नाश करेंगे। अच्छे कार्य में आने वाली बाधाओं को दूर करेंगे। हमारी बुद्धि जो जड़ बन गयी है, उसमें जीवंतता ला देंगे।

8. जनकपुर पहुँचे, जनक जी ने महल में ठहराया

(दोहा 212 से 217)

सब लोग चलते हुए गंगा नदी के किनारे पहुँचे। महिमा सुनकर स्नान किया। जनकपुर नगर जैसे-जैसे नजदीक आने लगा उसकी सुंदरता का वर्णन करते जाते हैं। वन, बगीचे, पुष्प वाटिकायें, पानी की व्यवस्था, अत्यंत सुंदर घर, भव्य राजमहल, वहाँ के रहने वाले भी अच्छे हैं। नगर के बाहर एक आम के बगीचे में, सब सुविधायें देखकर वहीं ठहर जाते हैं। सूचना मिलते ही महाराज जनक अपने मंत्री, सेनापति, गुरु, विप्रों व परिवार को लेकर मिलने आते हैं। राम जी के मधुर व मनोहर रूप को देखकर तो वे ब्रह्मज्ञान ही भूल गये। मन प्रेम के अधीन हो गया है। विश्वामित्र जी दोनों भाइयों का परिचय देते हैं। जनक जी सबको नगर में लाकर एक वातानुकूलित महल में ठहरा देते हैं। मुनि का पूजन करते हैं। भोजन करवाते हैं। फिर सब लोग दोपहर में विश्राम करते हैं।

9. राम-लक्ष्मण जनकपुर देखने निकले, नगर में चर्चा

(दोहा 218 से 226)

प्रभु राम व लक्ष्मण के नगर भ्रमण के इस सुंदर प्रसंग का पाठ करते समय कुछ समय के लिये जनकपुर के बालक बन जायें या सखी बनकर चर्चा में शामिल हों। फिर देखें कैसे राम व लक्ष्मण के सुंदर शरीर का दर्शन होगा! आनंद की अनुभूति होगी! मन के सारे तनाव एक क्षण में ही दूर हो जायेंगे। प्रभु के

सौंदर्य का तुलसीदास जी ने मनमोहक वर्णन किया है। नगर के लोग राम से न केवल आकर्षित होते हैं बल्कि सीता के योग्य वर के रूप में भी देखने लगते हैं। बालक उनके साथ लग जाते हैं। वे नगर घुमाते हुए धनुष-यज्ञशाला तक ले जाते हैं। राम बहुत प्रेम से सब चीजें देखकर हर्ष प्रगट करते हैं। विलंब के भय से भयभीत होते हुए वापस विश्वामित्र के पास आकर संध्यावंदन कर रात्रि में विश्राम करते हैं। राम-लक्ष्मण विश्वामित्र के चरण दबाते हैं, फिर लक्ष्मण राम के चरण दबाते हैं। हमें कैसे रहना चाहिये इसका वर्णन है।

10. बगीचे में राम सीता एक दूसरे को देखते हैं

(दोहा 227 से 239)

श्रृंगार रस से भरपूर इस प्रसंग में जिस मर्यादा के साथ तुलसीदास जी ने राम व सीता का आमना-सामना बगीचे में करवाया है, वह अद्भुत है। गुरु की आज्ञा से राम-लक्ष्मण जिस बगीचे में पुष्प लेने जाते हैं, उसी में माँ की आज्ञा से सीता जी सखियों के साथ विवाह के पूर्व गौरीपूजन के लिये आती हैं। मालियों से पूछकर राम पुष्प ले रहे हैं। सीता जी, देवी पार्वती से अपने अनुकूल वर माँग रही हैं। एक सखी आकर राम-लक्ष्मण के बगीचे में मौजूद होने की जैसे ही सूचना देती है, सखियाँ सीता जी को बगीचे में ले आती हैं। राम सीता को देखकर आकर्षित होते हैं। उन्हें लगता है विधाता ने इन्हीं से विवाह होना निश्चित कर रखा है। इसके बाद सीता राम को देखकर उनके सुंदर श्यामल रूप को आँखों के रास्ते मन में बसा लेती हैं। सीता जी राम को वर रूप में पाने के लिये फिर से देवी के मंदिर में जाकर प्रार्थना करती हैं। उनके प्रेम व विनम्रता से देवी की मूर्ति मुस्कुराकर आशीर्वाद देती है कि तुम्हारा विवाह श्यामल राजकुमार से ही होगा। इधर राम जब फूल लेकर विश्वामित्र जी के पास पहुँचकर सारी घटना बताते हैं, तब पूजा के बाद मुनि भी मनोकामना पूर्ण होने का राम व लक्ष्मण को आशीर्वाद देते हैं।

11. धनुषयज्ञ परिसर में सब लोग पहुँचते हैं

(दोहा 240 से 249)

धनुष-यज्ञ का प्रसंग जनमानस में बहुत लोकप्रिय है। तुलसीदास जी सभी पाठकों को इस लीला को देखने के लिये आमंत्रित कर रहे हैं। जनक जी ने योग्यतानुसार सभी नगरवासियों को आदर से बैठवाया, राजाओं को

सिंहासननुमा कुर्सियों पर बैठवाया। विश्वामित्र जी को प्रणाम करके परिसर घुमाकर, अपनी प्रतिज्ञा बतायी व एक विशेष प्रकार के सबसे ऊँचे मंच पर प्रभु राम व लक्ष्मण के साथ बैठाया। अपनी-अपनी भावनाओं के अनुसार लोगों ने राम को अलग-अलग रूपों में देखा। प्रभु राम की सुंदरता, शरीर से झलकती वीरता, दिव्य सौंदर्य, चलने, उठने, बैठने के तरीकों को देखकर राजाओं को लगा कि ये ही धनुष तोड़ेंगे। जब सब लोग बैठ गये और माहौल शांत हुआ तो जनक जी के बुलाने पर सखियाँ सीता जी को लेकर आती हैं। उनके दिव्य सौंदर्य को देखकर सब मोहित हो जाते हैं। राम को खोजते हुए उन्होंने सारे राजाओं पर सरसरी नजर घुमायी, राम को देखा, मन में बैठाया और संकोच से सखियों को देखने लगीं।

12. धनुष न टूटने से जनक का क्षोभ, लक्ष्मण का रोष

(दोहा 250 से 253)

'जो राजा धनुष तोड़ेगा उसे सीता जी बिना विचारे वरण करेंगी'–राजा जनक की इस प्रतिज्ञा की घोषणा होते ही अभिमानी राजा तुरंत पूरी तैयारी से उठे। धनुष को देखे। सारी शक्ति व सारी युक्तियाँ लगा दीं पर धनुष अपने स्थान से हिला तक नहीं। राजाओं की दशा देखकर महाराज जनक उन्हें ललकारते व धिक्कारते हैं। उनका आशय रहा होगा कि इन्हें और ताकत आजमानी है तो आजमा लें, बाद में यह न कहें कि हमें मौका नहीं मिला। परंतु ये बातें लक्ष्मण जी को चुभ गयीं। उन्हें लगा कि यह तो प्रभु राम का अपमान है, उनके रहते ये अनुचित बातें कैसे कह दीं। अपने प्रभु का सम्मान बनाये रखने के लिये लक्ष्मण जी क्रोधित होकर रघुकुल की महिमा, राम की महिमा व अपने बल का इस प्रकार वर्णन करते हैं कि सारे राजा व जनकपुरवासी डर जाते हैं। माँ सीता प्रसन्न होती हैं। जनक जी सकुचा जाते हैं। प्रभु राम गुरु विश्वामित्र व मुनियों सहित मन ही मन प्रसन्न होते हैं। इशारे से राम मना करते हैं, लक्ष्मण को अपने पास बैठा लेते हैं। वातावरण शांत हो जाता है, सब चुपचाप हैं।

13. गुरु की आज्ञा से श्रीराम ने शिव-धनुष तोड़ दिया

(दोहा 254 से 262)

विश्वामित्र जी की आज्ञा से राम सहजता से शिव-धनुष को तोड़ देते हैं। प्रभु के मंच से उठकर धनुष तोड़ने तक के समय में लोगों के मन में उठ रहे भावों

का सुंदर चित्रण तुलसीदास जी इस प्रसंग में करते हैं। जब राम उठते हैं तो लगा मंच पर सूर्योदय हो गया। जब चलते हैं तो सुंदर हाथी की चाल है। सुनयना जी के शंका प्रगट करने पर सखियाँ समझाकर राम में विश्वास पैदा करवा देती हैं। सीता जी के मन में बहुत व्याकुलता है, राम के कोमल शरीर को देखकर लगा कि इनसे इतना कठोर धनुष तुड़वाना अनुचित कार्य है। राम के अनुरूप ही धनुष हल्का हो जाये ऐसी प्रार्थना करती हैं। मन में राम के प्रति पक्का प्रेम का संकल्प व दास्य भक्ति आते ही प्रभु उनकी तरफ देखते हैं। भावों को जान जाते हैं। जैसे ही राम ने धनुष की तरफ देखा, लक्ष्मण जी पृथ्वी संभालने वाली सारी शक्तियों को सचेत करते हैं। राम के बहुत शीघ्रता से धनुष उठाते ही बिजली जैसी चमकी, लोग कुछ देख या समझ पाते तब तक तेजी से डोरी चढ़ाकर उसे झुकाकर गोलाकार किया, फिर बीच से दो टुकड़े करके जमीन में डाल दिया। भयंकर कठोर ध्वनि हुई, फिर पूरे ब्रह्मांड में राम की जय-जयकार गूंज गयी।

14. सीता ने राम के गले में वरमाला पहनायी

(दोहा 263 से 267)

तुलसीदास जी ने श्रीराम-सीता विवाह का वर्णन तीन चरणों में किया है। प्रथम चरण में धनुष टूटने के साथ ही प्रतिज्ञा के अनुसार विवाह हो गया। दूसरे चरण में, इस प्रसंग में सीता जी राम के गले में जय-माला पहनाती हैं। गुरु सतानंद का आदेश मिलते ही सीता जी हंसिनी जैसी चाल से राम की ओर चलती हैं। सुंदर सखियों के मध्य में वे महाछबि जैसे शोभायमान हैं। पहली बार राम की सुंदरता को निकट से देखकर एकदम स्थिर हो जाती हैं। प्रेम इतना है कि जयमाला पहना नहीं पा रही हैं। वरमाला पहनाते ही देवता फूलों की वर्षा करने लगे, चारों तरफ बाजे बजने लगे, जय-जयकार होने लगी। राम व सीता की सुंदर जोड़ी की आरती व न्योछावर होने लगती है। विवाह में विघ्न भी आता है, कुछ दुष्ट राजा शोर मचाने लगते हैं, सज्जन राजा उन्हें डाँटकर शांत कर देते हैं।

बालकाण्ड – 4

अवतार, बाल लीलायें एवं शिव-धनुष यज्ञ

1. अयोध्या में प्रभु राम का तीन भाइयों सहित अवतार

(दोहा 188 से 196)

तुलसीदास जी ने 9 दोहों में भगवान के गर्भ में आने से लेकर शिशु बनकर अवतार लेने की कथा का मनमोहक वर्णन किया है। जब अयोध्या के राजा दशरथ, गुरु वशिष्ठ से पुत्र न होने का दु:ख बताते हैं, तब गुरु समझाते हुए कहते हैं तुम्हारे यहाँ तो भगवान स्वयं चार पुत्र बनकर जन्म लेंगे। पुत्र होने का योग है इसलिये पुत्रकामेष्टि यज्ञ शृंगी ऋषि से करवाते हैं। अग्निदेव स्वयं प्रगट होकर खीर का प्रसाद देते हैं। जिसे खाने से तीनों रानियों के गर्भ में भगवान अवतरित हो जाते हैं। प्रकृति में सब तरफ आनंद व मंगल छा जाता है। फिर कौशल्या माँ के सामने प्रभु दिव्य चर्तुभुज रूप में प्रगट होते हैं। माँ स्तुति गाती हैं। प्रभु पूर्व जन्म की कथा याद दिलाते हैं। माँ शिशु-लीला करने का आग्रह करती हैं। बस आदेश मिला, तुरंत चर्तुभुज रूप छोड़कर प्रभु शिशु बनकर रोने लगते हैं। पूरे राजमहल व नगर में खबर फैल जाती है। रानी कैकेयी के एक पुत्र व रानी सुमित्रा के दो पुत्र जन्म लेते हैं।

अयोध्या के राजा दशरथ व सभी रानियाँ परम भक्त हैं

अवधपुरीं रघुकुलमनि राऊ। बेद बिदित तेहि दसरथ नाऊँ ॥188:7॥
धरम धुरंधर गुननिधि ग्यानी। हृदयँ भगति मति सारँगपानी ॥188:8॥

अवधपुरीं रघुकुलमनि राऊ = अयोध्या के रघुकुल में श्रेष्ठ राजा हुए, *बेद बिदित* = वेदों में प्रसिद्ध, *तेहि दसरथ नाऊँ* = उनका नाम दशरथ था, *धरम*

धुरंधर = वे धर्म की धुरी को धारण करने वाले, *गुननिधि* = गुणों के भंडार, *ग्यानी* = ज्ञानी हैं, *हृदयँ भगति* = मन में भक्ति है, *मति सारँगपानी* = और बुद्धि, शाङ्‌र्ग धनुष धारण करने वाले भगवान नारायण में लगी रहती है।

कौसल्यादि नारि प्रिय सब आचरन पुनीत ।
पति अनुकूल प्रेम दृढ़ हरि पद कमल बिनीत ॥दोहा 188॥

कौसल्यादि नारि प्रिय = उनकी कौशल्या आदि रानियाँ थी, *सब आचरन पुनीत* = सब पवित्र आचरण वाली हैं, *पति अनुकूल* = पति के अनुसार चलने वाली, *प्रेम दृढ़ हरि पद कमल* = भगवान के चरण कमलों में पक्का प्रेम है, *बिनीत* = और विनम्रता है।

अयोध्या में रघुकुल के शिरोमणि राजा दशरथ हुए। वे इतने ज्ञानी, भक्त, धर्म का पालन करने वाले और गुणी हैं कि वेदों तक में उनकी प्रसिद्धि है। उनकी तीन रानियाँ हैं, बड़ी महारानी कौशल्या हैं, मझली कैकेयी व छोटी सुमित्रा। ये तीनों पवित्र आचरण करने वाली, विनम्र और पति के अनुसार चलने वाली हैं। महाराज दशरथ के समान इनके हृदय में भी भगवान के चरणों में दृढ़ प्रेम है।

सबसे प्रमुख बात है कि ये सब भगवान के परम भक्त हैं। इस प्रकार यहाँ पर त्रेता युग में अयोध्या में दशरथ-कौशल्या पुत्र बनकर प्रभु के आने की भूमिका का वर्णन है। पर वे क्या आज भी आ सकते हैं? हाँ। कहाँ? हमारे हृदय में। कैसे? इस संसार में हमें जो भी कार्य मिला है, उसे अच्छे से करें, सबसे विनम्रता से बात करें, भगवान के नाम का स्मरण करते रहें, उनके प्रति प्रेम भाव रखें।

दशरथ जी के मन में पुत्र न होने का दुःख हुआ

एक बार भूपति मन माहीं। भै गलानि मोरें सुत नाहीं ॥189:1॥

एक बार भूपति मन माहीं = एक बार राजा के मन में, *भै गलानि* = दु:ख होता है, *मोरें सुत नाहीं* = कि हमारे पुत्र नहीं है।

राजा दशरथ ने पूर्व जन्म में तपस्या करके भगवान को ही पुत्र रूप में पाने का वरदान प्राप्त किया था। समय आने पर उनके सोए हुए पुण्य जागे, संस्कार

का उदय हुआ जिससे उनके मन में पुत्र प्राप्ति की कामना उत्पन्न हुई। फिर इस बात का दु:ख होने लगा कि हमारा पुत्र नहीं है।

समस्या के समाधान के लिये गुरु के पास जाते हैं

गुर गृह गयउ तुरत महिपाला। चरन लागि करि बिनय बिसाला ॥189:2॥
निज दुख सुख सब गुरहि सुनायउ। कहि बसिष्ठ बहुबिधि समुझायउ ॥189:3॥

गुर गृह गयउ तुरत महिपाला = राजा तुरंत गुरु के घर जाते हैं, *चरन लागि करि* = चरणों में प्रणाम करके, *बिनय बिसाला* = बहुत विनती की, *निज दुख सुख सब* = अपना सारा दु:ख व सुख, *गुरहि सुनायउ* = गुरु को सुनाया, *कहि बसिष्ठ बहुबिधि समुझायउ* = वसिष्ठ जी ने अनेक प्रकार से समझाकर कहा।

मन में समस्या आते ही वे अपने गुरु वसिष्ठ जी के पास जाते हैं, चरणों का स्पर्श करके उनकी वंदना करते हैं। पर जाते ही दु:ख का रोना नहीं रोने लगे। अपने राज्य की व्यवस्था व सुख शांति की बातें बतायीं, प्राप्त सुखों को बताया। अंत में यह भी बता दिया कि इतनी आयु हो जाने पर भी अभी तक पुत्र प्राप्त नहीं हुआ, इसका हमें बहुत दु:ख है। वसिष्ठ जी ने दशरथ जी को अनेक प्रकार से समझाकर कहा।

पुत्र होना निश्चित है, शृंगी ऋषि से पुत्रकामना यज्ञ करवाया

धरहु धीर होइहहिं सुत चारी। त्रिभुवन बिदित भगत भय हारी ॥189:4॥
सृंगी रिषिहि बसिष्ठ बोलावा। पुत्रकाम सुभ जग्य करावा ॥189:5॥

धरहु धीर = धैर्य रखो, *होइहहिं सुत चारी* = तुम्हारे चार पुत्र होंगे, *त्रिभुवन बिदित* = जो तीनो लोकों में प्रसिद्ध, *भगत भय हारी* = और भक्तों के भय को दूर करेंगे, *सृंगी रिषिहि बसिष्ठ बोलावा* = वसिष्ठ जी ने शृंगी ऋषि को बुलवाया, *पुत्रकाम सुभ जग्य करावा* = उनसे पुत्र प्राप्ति की कामना का यज्ञ करवाया।

तुम धैर्य धारण करो, तुम्हारे चार पुत्र होंगे। ये तीनो लोकों में प्रसिद्ध व भक्तों के हृदय के भय को दूर करने वाले हैं। अप्रत्यक्ष रूप से बता दिया कि भगवान ही

तुम्हारे यहाँ अवतार लेंगे। पर इसका मतलब यह नहीं कि हम कुछ काम न करें। भगवान का आवाहन करने के लिये पुत्र कामेष्टि यज्ञ करना चाहिये। शृंगी ऋषि इस यज्ञ को करने का विधान जानते हैं। इसलिये वसिष्ठ जी ने उन्हें बुलवाया। शृंगी ऋषि ने आकर वह यज्ञ करवाया। यहाँ ध्यान दें कि महाराज दशरथ के प्रारब्ध में पुत्र होना निश्चित है, तभी वसिष्ठ जी ने यज्ञ करवाया। यदि किसी के प्रारब्ध में पुत्र होने का संयोग नहीं है, तो फिर कुछ भी करो, कार्य नहीं होगा।

अग्निदेव प्रगट हुए, रानियों को खिलाने हेतु खीर प्रदान की

भगति सहित मुनि आहुति दीन्हें। प्रगटे अगिनि चरू कर लीन्हें ॥189:6॥
जो बसिष्ठ कछु हृदयँ बिचारा। सकल काजु भा सिद्ध तुम्हारा ॥189:7॥
यह हबि बाँटि देहु नृप जाई। जथा जोग जेहि भाग बनाई ॥189:8॥

भगति सहित मुनि आहुति दीन्हें = मुनि के भक्ति सहित आहुतियाँ देने पर, *प्रगटे अगिनि* = अग्नि देव प्रगट हो गये, *चरू कर लीन्हें* = हविष्यान्न खीर हाथ में लिये थे, *जो बसिष्ठ कछु हृदयँ बिचारा* = वसिष्ठ जी ने हृदय में जो विचार किया था, *सकल काजु भा सिद्ध तुम्हारा* = वह तुम्हारा सारा कार्य सिद्ध हो गया है, *यह हबि* = इस हविष्यान्न खीर को, *बाँटि देहु नृप जाई* = हे राजन् तुम जाकर बाँट दो, *जथा जोग जेहि* = जिसको जैसा उचित हो, *भाग बनाई* = वैसा भाग बनाकर।

शृंगी ऋषि के साथ वसिष्ठ जी व अन्य ऋषियों ने भी बहुत श्रद्धा के साथ उस यज्ञ में आहुतियाँ दी। इस प्रकार विधिपूर्वक यज्ञ संपन्न होने पर अंत में यज्ञ देव हाथ में एक पात्र में खीर लिये प्रगट हुए। अग्निदेव ने कहा, हे राजन्! वसिष्ठ जी ने जिस हेतु यज्ञ करवाया था, वह सब सिद्ध हो गया है। अब यह हवन का प्रसाद ले जाकर अपनी रानियों के बीच, जिसको जिस प्रकार देना है, यथायोग्य उसी प्रकार बाँट दो।

राजा ने प्रसन्नता से रानियों को यथायोग्य खीर खिलायी

तब अदृस्य भए पावक सकल सभहि समुझाइ ।
परमानंद मगन नृप हरष न हृदयँ समाइ ॥दोहा 189॥

तब अदृस्य भए पावक = इसके बाद अग्नि देव अन्तर्धान हो गये, *सकल सभहि समुझाइ* = सारी सभा को समझाकर, *परमानंद मगन नृप* = राजा परम आनंद में मग्न हो गये, *हरष न हृदयँ समाइ* = उनके मन में प्रसन्नता समा नहीं रही थी।

तबहिं रायँ प्रिय नारि बोलाईं। कौसल्यादि तहाँ चलि आईं ॥190:1॥

तबहिं रायँ = उसी समय राजा ने, *प्रिय नारि बोलाईं* = प्रिय रानियों को बुलवाया, *कौसल्यादि तहाँ चलि आईं* = कौशल्या आदि रानियाँ वहाँ आ पहुँचीं।

अर्ध भाग कौसल्यहि दीन्हा। उभय भाग आधे कर कीन्हा ॥190:2॥
कैकेई कहँ नृप सो दयऊ। रह्यो सो उभय भाग पुनि भयऊ ॥190:3॥
कौसल्या कैकेई हाथ धरि। दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसन्न करि ॥190:4॥

अर्ध भाग कौसल्यहि दीन्हा = उस खीर का आधा भाग कौसल्या जी को दिया, *उभय भाग* = शेष बचे भाग के, *आधे कर कीन्हा* = दो हिस्से बना दिये, *कैकेई कहँ नृप सो दयऊ* = एक भाग कैकेयी जी को दिया, *रह्यो सो उभय भाग पुनि भयऊ* = दूसरा शेष भाग के फिर दो हिस्से किये, *कौसल्या कैकेई हाथ धरि* = एक भाग कौशल्या जी के हाथ से, एक भाग कैकेयी के हाथ से छुआकर, *दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसन्न करि* = प्रसन्न मन से सुमित्रा जी को दिया।

हवन का प्रसाद देने के बाद जैसे ही अग्निदेव अदृश्य हुए, राजा ने बहुत प्रसन्न होकर तुरंत ही प्रिय रानियों को बुलवा लिया। महाराज दशरथ ने खीर के प्रसाद को रानियों को इस प्रकार बाँटकर खिलाया।

1. खीर के दो भाग करके आधा भाग रानी कौशल्या को दिया। सबसे बड़ा भाग के होने कारण प्रभु राम माँ कौशल्या से प्रगट हुए।
2. बचे हुए आधे भाग का आधा करके रानी कैकेयी को दिया। इस एक चौथाई भाग से भरत जी प्रकट हुए, उनमें भगवत्ता अधिक प्रगट हुई।
3. बचे हुए एक चौथाई भाग के दो भाग करके एक भाग को रानी कौशल्या व दूसरे भाग को रानी कैकेयी के हाथ पर छुआ कर तब प्रसन्नता से रानी सुमित्रा को दिया। इनसे लक्ष्मण जी प्रगट हुए जो राम के अनुगामी हुए व शत्रुघ्न जी प्रगट हुए जो भरत के अनुगामी हुए।

रानियों के गर्भ में भगवान आ गये, सब जगह आनंद छा गया

एहि बिधि गर्भ सहित सब नारी। भईं हृदयँ हरषित सुख भारी ॥190:5॥
जा दिन तें हरि गर्भहिं आए। सकल लोक सुख संपति छाए ॥190:6॥
मंदिर महँ सब राजहिं रानीं। सोभा सील तेज की खानीं ॥190:7॥

एहि बिधि गर्भ सहित सब नारी = इस प्रकार सब रानियाँ गर्भवती हुईं, *भईं हृदयँ हरषित सुख भारी* = वे सब बहुत प्रसन्न हुईं व सुख का अनुभव हुआ, *जा दिन तें हरि गर्भहिं आए* = जिस दिन से भगवान गर्भ में आये, *सकल लोक सुख संपति छाए* = सब लोकों में सुख व संपत्ति छा गई, *मंदिर महँ* = महल में, *सब राजहिं रानीं* = सब रानियाँ शोभायमान हो रही हैं, *सोभा सील तेज की खानीं* = शोभा; शील व तेज के गुणों से भरी हुई हैं।

हवन का प्रसाद खाने के बाद तीनों रानियों को लगा कि उनके गर्भ भर गये हैं। वे मन में बहुत हर्षित हैं, उन्हें बहुत अधिक सुख की अनुभूति हो रही है। रानियों के हृदय भगवान के गुण जैसे शील, तेज से परिपूर्ण हो गये। वे महल में शोभायमान हो रही हैं। भगवान के गर्भ में आते ही, चर सृष्टि जैसे मनुष्य आदि प्रसन्न हो गये, और अचर जैसे वृक्ष-लताओं आदि में खूब फल-फूल आ गये।

गर्भ धारण करने के बाद माँ को सदा प्रसन्न रहना है

स्वामी सत्यानंद जी कहते हैं कि रामचरितमानस मात्र धर्मग्रंथ नहीं है। यह जीवन की संपूर्ण रूपरेखा है। जिस दिन तुम माँ के गर्भ में आये, उस दिन से तुम्हारी मृत्यु होने के दिन तक का संपूर्ण चित्र प्रस्तुत करने वाला यह ग्रंथ है। प्राय: माँ के जीवन में इतनी परेशानी रहती है कि वह प्रसन्न नहीं रह पाती। इसका प्रभाव शिशु पर अच्छा नहीं होता है। इस प्रसंग का बार-बार पाठ करें, अपने आप मन में परिवर्तन आयेगा, पूरे गर्भ काल में आनंद की अनुभूति होगी। जब मन प्रसन्न रहेगा तो संतान को भी सदैव प्रसन्नता व आनंद रहेगा। इस ग्रंथ का पाठ पूरी पीढ़ी को बदल सकता है।

भगवान के प्रगट होने के समय लग्न-नक्षत्र अनुकूल हो गये

सुख जुत कछुक काल चलि गयऊ। जेहिं प्रभु प्रगट सो अवसर भयऊ ॥190:8॥

सुख जुत = सुख के साथ, *कछुक काल* = कुछ समय, *चलि गयऊ* = बीत गया, *जेहिं प्रभु प्रगट* = जब भगवान को प्रगट होना है, *सो अवसर भयऊ* = वह अवसर आ गया।

जोग लगन ग्रह बार तिथि सकल भए अनुकूल ।
चर अरु अचर हर्षजुत। राम जनम सुखमूल ॥

जोग लगन ग्रह बार तिथि = योग; लगन; ग्रह; दिन; तारीख, *सकल भए अनुकूल* = ये सभी अनुकूल हो गये, *चर अरु अचर हर्षजुत* = जड़ और चेतन हर्षित हो गये, *राम जनम सुखमूल* = श्रीराम का जन्म सुख का मूल है।

भगवान को गर्भ में धारण किये हुए की अनुभूति के सुख का कुछ समय ऐसे ही व्यतीत हो गया। जब प्रगट होने का समय आया तो ज्योतिष के अनुसार जो बहुत अच्छा लग्न-नक्षत्र होना चाहिये, वे सब आ गए। श्रीराम के जन्म के समय सारी सृष्टि में चाहे मनुष्य हों, जानवर हों, पेड़-पौधे हों सब जगह आनंद ही आनंद है। हम लोग प्राय: ग्रह-नक्षत्रों की पूजा करके उन्हें प्रसन्न करने के प्रयास में भगवान का स्मरण ही भुला देते हैं। यहाँ कहते हैं कि भगवान को आना है, इसलिये लग्न-नक्षत्र अपने आप अनुकूल हो गये हैं। कभी हम भी प्रेम से भगवान को पुकारें, हो सकता है सारी स्थितियाँ अपने आप अनुकूल हो जायें।

चैत्र शुक्ल नवमी, अभिजित् नक्षत्र, दोपहर का समय

नौमी तिथि मधु मास पुनीता। सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता ॥191:1॥
मध्यदिवस अति सीत न घामा। पावन काल लोक बिश्रामा ॥191:2॥
सीतल मंद सुरभि बह बाऊ। हरषित सुर संतन मन चाऊ ॥191:3॥

नौमी तिथि = हिंदी महीने की नौ तारीख, *मधु मास पुनीता* = पवित्र चैत्र का महीना, *सुकल पच्छ* = शुक्ल पक्ष, *अभिजित हरिप्रीता* = भगवान को प्रिय अभिजित् नक्षत्र है, *मध्यदिवस* = दोपहर का समय, *अति सीत न घामा* = न बहुत ठंडी है न बहुत गर्मी है, *पावन काल लोक बिश्रामा* = सबको सुख देने वाला पवित्र समय है, *सीतल मंद सुरभि बह बाऊ* = शीतल; मंद व सुगंधित वायु चल रही है, *हरषित सुर* = देवता प्रसन्न हैं, *संतन मन चाऊ* = संतों के मन में उत्साह है।

हिंदी कैलेंडर के चैत्र का महीना है, शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि है, दिन मंगलवार है। आकाश में अभिजित् नक्षत्र है, कहते हैं यह नक्षत्र भगवान को प्रिय है। दोपहर का समय है। मौसम कैसा है? न धूप का ज्यादा ताप है न ज्यादा ठंडक है। मन को सुकून देने वाला समय है। हवा कैसी है? शीतल, मंद व सुगंधित। देवताओं के मन में प्रसन्नता है व संतों के मन में उत्साह आ गया। सारे प्राणियों को सुख, आनंद व शांति का अहसास अपने आप हो रहा है।

वन, पर्वत व नदियों ने भी प्रसन्नता व्यक्त की

बन कुसुमित गिरिगन मनिआरा। स्त्रवहिं सकल सरिताऽमृतधारा ॥191:4॥

बन कुसुमित = वन में फूल खिल गये, *गिरिगन मनिआरा* = पर्वतों पर मणियाँ निकल कर चमकने लगीं, *स्त्रवहिं सकल सरिताऽमृतधारा* = नदियों में अमृत के समान स्वच्छ जल की धारा बहने लगी।

वन, पर्वत व नदियों ने कैसे प्रसन्नता व्यक्ति की? वन में वृक्ष फूलों या फलों से लद गये। पर्वत में छिपी हुई मणियाँ स्वत: ही ऊपर निकलकर चमकने लगीं। नदियों का जल अमृत के समान पवित्र हो गया, स्वच्छ जल की धारा बहने लगी।

ब्रह्मा जी देवताओं सहित प्रभु के दर्शन के लिये आकाश में

सो अवसर बिरंचि जब जाना। चले सकल सुर साजि बिमाना ॥191:5॥
गगन बिमल संकुल सुर जूथा। गावहिं गुन गंधर्ब बरूथा ॥191:6॥

सो अवसर बिरंचि जब जाना = जब ब्रह्मा जी ने अवतार का समय जाना, *चले सकल सुर साजि बिमाना* = तब सारे देवता विमान सजा-सजाकर चल दिये, *गगन बिमल* = निर्मल आकाश, *संकुल सुर जूथा* = देवताओं के समूह से भर गया, *गावहिं गुन गंधर्ब बरूथा* = गंधर्वों के दल गुणों का गान करने लगे।

प्रकृति में हुए परिवर्तन से ब्रह्मा जी समझ गये कि प्रभु के अवतार का समय आ गया है। उन्होंने सब देवताओं को कहा कि वे सब आकाश में अपने विमानों

पर चढ़कर भगवान का अवतार देखने आयें। पूरे आकाश में देवता ही देवता मंडराने लगे, भगवान के अवतार की प्रतीक्षा करने लगे। गन्धर्व लोग भी आकर भगवान का गुणगान करने लगे।

ब्रह्मा जी सहित देवता वानर बन गये थे, फिर यहाँ कैसे आये?

ब्रह्मा जी और देवता तो भगवान के अवतार लेने के पहले ही योजना के अनुसार रीछ-वानर बन कर पृथ्वी पर अवतार ले चुके हैं, फिर यहाँ आकाश में कैसे आ गये? इसे इस प्रकार समझें कि एक देवता अनेकों रूप धारण कर सकता है लेकिन अपने स्थान पर देवता ही रहता है। हम लोगों की बुद्धि में भी ब्रह्मा जी का वास है पर वे अपनी जगह भी विद्यमान हैं। परब्रह्म राम अवतार लेंगे पर वे उसी प्रकार ब्रह्म भी बने रहेंगे।

आकाश से फूलों की वर्षा, बाजे बजने लगे, स्तुति गाने लगे

बरषहिं सुमन सुअंजुलि साजी। गहगहि गगन दुंदुभी बाजी ॥191:7॥
अस्तुति करहिं नाग मुनि देवा। बहुबिधि लावहिं निज निज सेवा ॥191:8॥

बरषहिं सुमन सुअंजुलि साजी = सुंदर अंजलियों में भरकर फूल बरसाने लगे, *गहगहि गगन दुंदुभी बाजी* = आकाश में घमाघम बाजे बजने लगे, *अस्तुति करहिं नाग मुनि देवा* = नाग; मुनि व देवता स्तुति करने लगे, *बहुबिधि लावहिं निज निज सेवा* = बहुत प्रकार से अपनी-अपनी भेंट लाने लगे।

भगवान अवतार लेने वाले हैं इसलिये गंधर्व लोग अंजुली में भर-भरकर आकाश से फूलों की वर्षा करने एवं बाजे बजाने लगे। देवकोटि के लोग, मनुष्य कोटि में मुनि लोग और नाग लोक के प्राणी भी आकर भगवान की स्तुति गाने लगे। वे सब अपनी-अपनी सेवा भेंट करते हैं। सब तरफ आनंद का वातावरण है।

स्वामी सत्यानंद जी के रिखिया सत्संग से

जिस दिन भगवान राम माँ कौशल्या के गर्भ में अवतरित हुए, संपूर्ण जगत् मंगलमय हो गया था। मांगलिकता क्या है? वायु शुद्ध और सुंगधित हो गई,

पेड़-पौधे फलने-फूलने लगे, गउएँ दूध देने लगीं, अस्वस्थ पुनः स्वस्थ हो गये। अतएव जब भी भगवान इस सृष्टि में अवतरित हुए हैं, मांगलिकता का चतुर्दिक आविर्भाव हुआ है। चूँकि इसका ऐतिहासिक प्रमाण है, तुम इसे नकार नहीं सकते।



कौशल्या माँ के कमरे में प्रभु प्रगट हो गये

सुर समूह बिनती करि पहुँचे निज निज धाम ।
जगनिवास प्रभु प्रगटे अखिल लोक बिश्राम ।।दोहा 191।।

सुर समूह बिनती करि पहुँचे निज निज धाम = देवताओं के समूह विनती करके अपने-अपने लोक में जा पहुँचे, *जगनिवास प्रभु* = सारे विश्व में व्याप्त प्रभु, *प्रगटे* = प्रगट हो गये, *अखिल लोक बिश्राम* = वे सारे लोकों को शांति प्रदान करने वाले हैं।

देवताओं के समूह भगवान के प्रगट होने के पहले ही विनती करके अपने-अपने लोक को वापस चले गये। जगनिवास मायने जो सारे विश्व में व्याप्त है, वही ब्रह्म मानवीय शरीर धारण करके प्रगट हो गये। वे सारे लोकों को शांति प्रदान करने वाले हैं। कहाँ प्रगट हुए? माँ कौशल्या के सामने। किस रूप में प्रगट हुए? इसका अद्भुत, मनमोहक वर्णन तुलसीदास जी अपनी काव्य शैली में, एक स्तुति के रूप में करते हैं। स्तुति हिंदी में है पर इसकी प्रस्तुति संस्कृत से बेहतर है।

सुंदर विष्णु रूप में देख, माँ हर्षित व आश्चर्यचकित

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी ।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी ।।

भए प्रगट = भगवान प्रगट हो गये, *कृपाला* = वे कृपा करने वाले हैं, *दीनदयाला* = दीनों पर दया करते हैं, *कौसल्या हितकारी* = माँ कौशल्या का हित करने वाले हैं, *हरषित महतारी* = माँ प्रसन्न हो गयीं, *मुनि मन हारी* = मुनियों का मन मोह लेने वाले, *अद्भुत रूप बिचारी* = उनके आश्चर्यजनक रूप को सोचकर।

लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी॥

लोचन अभिरामा = आँखों को आनंद देने वाला, *तनु घनस्यामा* = बादल के समान नीले रंग का शरीर है, *निज आयुध भुज चारी* = चार भुजायें हैं जिनमें अपने अस्त्र लिये हैं, *भूषन* = आभूषण पहने हैं, *बनमाला* = वनमाला पहने हैं, *नयन बिसाला* = बड़ी-बड़ी आँखें हैं, *सोभासिंधु* = सुंदरता के समुद्र हैं, *खरारी* = खर को मारने वाले हैं।

माँ कौशल्या समझती थीं कि जैसे संसार में पुत्र होते हैं, वैसे भगवान जन्म लेंगे, पर वे तो पुरुषाकार रूप में आकर खड़े हैं। उनकी चार भुजाये हैं, पीताम्बर पहने हैं, मुकुट धारण किये हैं, वनमाला पहने हैं। माँ को बहुत आश्चर्य हुआ कि ये कहाँ से आ गये? बहुत सुंदर चतुर्भुज विष्णु भगवान को अपने सामने देखकर माँ प्रसन्न हुई। सावधान होकर देखा कहीं हम सो तो नहीं रहे हैं! नहीं, जाग रहे हैं। यह सब विचार किया। फिर से देखा अरे! ये तो सामने खड़े ही हैं। माँ को भगवान कैसे सुंदर दिखे उसका वर्णन करते हैं:

1. *लोचन अभिरामा*– जब मुख की तरफ देखा तो नेत्र बहुत सुंदर हैं। नेत्रों में प्रभु का अनुग्रह दिखाई दिया– उदारता के साथ प्रेम भाव से खड़े हैं।
2. *तनु घनश्यामा*– पूरे शरीर की तरफ देखा तो वह मेघ के समान श्यामवर्ण का है। जैसे आकाश में मेघ प्रगट होते हैं वैसे ही भगवान प्रगट हो गये हैं।
3. *निज आयुध भुज चारी*– चार भुजाये हैं। एक में शंख लिये हैं। मानो शंख बजाकर सावधान कर रहे हैं कि माया के चक्कर में अपने जीवन का लक्ष्य ही भूल मत जाना। दूसरे हाथ में कमल लिये हैं। मानो आशीर्वाद देते हुए कह रहे हैं कि जैसे कमल जल में रहता है पर जल से प्रभावित नहीं होता, वैसे ही संसार में रहो पर उसका प्रभाव न पड़े। कमल के समान अपना व्यक्तित्व आकर्षक व सबको सुकून देने वाला बनाओ। तीसरे हाथ में गदा है, जो कहती है कि प्रभु की धर्ममय बात नहीं मानोगे तो जीवन में दु:ख आते रहेंगे। गदा तुम्हें मारती रहेगी जब तक सुधर न जाओ। चौथे हाथ में चक्र है। यदि गदा से नहीं सुधरोगे और प्रभु से लड़ने को तैयार हो, तो बस चक्र भी तैयार है। ये चारों हथियार भगवान के सर्वशक्तिमान होने के

सूचक हैं। सही मार्ग पर चलने वालों के लिये शंख व कमल, गलत मार्ग के लिये गदा व चक्र है।

4. *भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु*– आभूषण, पीताम्बर, वनमाला धारण किये हैं। विशाल नेत्र हैं। अत्यधिक सुंदर हैं। आनंद सिंधु हैं।
5. *खरारी*– खर+अरि = निशाचर के शत्रु हैं। खरदूषन को मारने वाले हैं। खर से आशय वाणी की कर्कशता भी है, कटु वचन भी है। दूषन मायने दोष। प्रभु इस दोष को दूर करके हमारी वाणी में कोमलता, मधुरता ले आते हैं।

अभी तो सगुण प्रभु के रूप का वर्णन किया, उनके गुण क्या हैं?

1. *कृपाला दीनदयाला*– कृपा या दया करना भगवान का स्वाभाविक गुण है। उनकी कृपा सदैव सब पर बरसती रहती है, पर मिलती किसे है? जो दीन है। दीन से आशय गरीब नहीं, बल्कि जिन्होंने अपना अहंकार त्याग दिया है। वे भगवान पर ही आश्रित रहते हैं। उन्हीं का स्मरण करते रहते हैं।
2. *कौसल्या हितकारी*– कौशल्या माँ ने पिछले जन्म में तपस्या की थी, भगवान ने वरदान दिया था, पुत्र बनकर आयेंगे। कमरे में दशरथ जी नहीं हैं। माँ अकेली हैं। इसलिये कहते हैं कौशल्या जी का हित करने वाले हैं।

माँ कौशल्या हाथ जोड़कर स्तुति गाने लगती हैं

कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता।
माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता।।

कह दुइ कर जोरी = दोनों हाथ जोड़कर माँ कहती हैं, *अस्तुति तोरी* = तुम्हारी स्तुति, *केहि बिधि करौं* = किस प्रकार करूँ? *अनंता* = तुम तो अनंत हो, *माया गुन ग्यानातीत* = तुम तो माया, गुण व ज्ञान के परे हो, *अमाना* = तुम अहंकार रहित हो, *बेद पुरान भनंता* = वेद व पुराण तुम्हारी महिमा अनेक प्रकार से गाते हैं।

करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता ।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता ।।

करुना सुख सागर = तुम करुणा व सुख के समुद्र हो, *सब गुन आगर* = तुम तो सभी गुणों के आगार हो, *जेहि गावहिं श्रुति संता* = वेद व संत इसी प्रकार तुम्हारे गुन गाते रहते हैं, *सो मम हित लागी* = वही मेरे हित के

लिये, *जन अनुरागी* = भक्तों के प्रेम के कारण, *भयउ प्रगट श्रीकंता* = हे लक्ष्मीपति! तुम प्रगट हुए हो।

ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै ।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै ॥

ब्रह्मांड निकाया = ब्रह्मांडों के समूह, *निर्मित माया* = तुम्हारी माया ने रचे हैं, *रोम रोम प्रति* = तुम्हारे एक-एक रोये में एक-एक ब्रह्मांड है, *बेद कहै* = ऐसा वेद कहते हैं, *मम उर सो बासी* = ऐसे महान् तुम मेरे पेट में रहे, *यह उपहासी* = यह आश्चर्यजनक है, *सुनत धीर* = जो समझदार भी सुनेगा, *मति थिर न रहै* = उसकी बुद्धि भी स्थिर न रहकर व्याकुल हो जायेगी।

भगवान को देखकर माँ ने दोनों हाथ जोड़ लिये, फिर कहने लगीं, हम तुम्हारी स्तुति किस प्रकार से करें! तुम तो अनंत हो। यहाँ ध्यान दें कि माँ के सामने प्रभु साकार मनुष्य रूप में खड़े हैं, उनके वस्त्र, आभूषण सब दिख रहे हैं फिर अनंत क्यों कहती हैं? यह नियम है। साकार रूप भगवान का जब स्मरण करें तब ये भाव रखें कि ये अनंत भी हैं। ऐसे अनंत की महिमा कैसे कहें? हम महिमा कहें वह तुच्छ न हो जाये। पर जब प्रभु सामने हैं तो महिमा कहनी ही है, यह भी नियम है, जो-जो महिमा उन्हें तुरंत याद आयी, समझ में आयी वे बोलने लगीं।

1. तुम माया, गुण व ज्ञान के परे हो। यह संसार माया के अधीन है पर तुम माया के परे हो। माया के तीन गुण हैं सत्त्व, रजस् व तमस्। तुम इन तीनों गुणों के भी परे हो। आँखों से देखना, कान से सुनना, बुद्धि से समझना यह सब ज्ञान कहलाता है, तुम इस ज्ञान से समझ में आने वाले नहीं हो, इसके परे हो।
2. तुम निरहंकारी हो। वेद पुराण तुम्हारी महिमा अनेक प्रकार से गाते हैं।
3. तुम्हारे अंदर करुणा ही करुणा भरी है। जैसे सागर में जल भरा हो। तुम अनंत सुख प्रदान करने वाले हो। तुम्हारे अंदर सब प्रकार के गुण हैं। श्रुतियाँ व संतों से जैसी महिमा हमने तुम्हारी सुनी वैसी ही कह दी।
4. श्री = लक्ष्मी, कंता = पति। माँ पहचान गई कि ये लक्ष्मीपति भगवान विष्णु ही हैं। कहती हैं, तुम मेरे लिये व अपने भक्तों के लिये इस रूप में प्रगट हुए हो।

5. एक ब्रह्मांड की क्या बात है, अनगिनत ब्रह्मांडों के समूहों की रचना तुम्हारी माया करती है। वेद कहते हैं कि तुम्हारे शरीर के प्रत्येक रोये में ब्रह्मांड विद्यमान है।
6. इतने महान् होकर, मेरे उदर में तुम वास किये हो, यह बात तो आश्चर्यजनक है। हम तो समझ रहे थे कि तुम हमारे गर्भ में विद्यमान हो, पर तुम इस प्रकार प्रगट हो गये। यह बात जो सुनेगा उसकी बुद्धि कुछ समझ ही न पायेगी।

पूर्व जन्म की कथा समझाकर प्रभु ने कहा पुत्र जैसा प्रेम करो

उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै ।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ॥

उपजा जब ग्याना = जब माँ के अंदर ज्ञान उत्पन्न हुआ, *प्रभु मुसुकाना* = तब भगवान मुस्कुराते हैं, *चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै* = कहा अभी बहुत प्रकार की लीलायें करनी हैं, *कहि कथा सुहाई* = पूर्व जन्म की सुंदर कथा सुनाकर, *मातु बुझाई* = माँ को समझाया, *जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै* = कि अब तो पुत्र भाव में हमें प्रेम करो।

भगवान के इस प्रकार प्रगट होने पर माँ कौशल्या को यह ज्ञान उत्पन्न हो गया कि जो ब्रह्म समस्त ब्रह्मांड में वास कर रहा है वही हमारे उदर में है, वही हमारे सामने है। यही ज्ञान है। इसे देखकर भगवान मुस्कुराते हैं। उनके ओंठ हिलते हैं, उनका मुस्कुराना ही माया है। जैसे ही मुस्कुराये माँ के ज्ञान के नेत्रों में माया का पर्दा पड़ गया। भगवान सोचते हैं प्रार्थना हो गयी, अब हमें आगे भी बहुत कार्य करने हैं। उन्होंने पूर्व जन्म की सुंदर कथा सुनायी, वरदान पूरा होने का समय आ गया है, माँ को भी बात याद आ गयी। माँ को समझा दिया कि हम तुम्हारे यहाँ पुत्र बनकर आ रहे हैं। अब तो पुत्र भाव से स्मरण करो।

माँ ने कहा यह रूप छोड़ो, शिशु बनकर लीला करो

माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा ।
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा ॥

माता पुनि बोली = फिर माँ बोलती हैं, *सो मति डोली* = वह बुद्धि कि ब्रह्म अनंत है भूल गईं, *तजहु तात यह रूपा* = हे तात! यह रूप छोड़ो, *कीजै सिसुलीला* = शिशुओं जैसी लीला करो, *अति प्रियसीला* = जो हमको प्रिय लगे, *यह सुख परम अनूपा* = यह सुख बहुत सुंदर होगा।

भगवान की बातें सुनकर माता कि वह बुद्धि जिससे वे भगवान को अनंत समझ रही थी डोल गयी मायने भुला गई। उनका ध्यान सगुण साकार की तरफ गया। कहती हैं जब माता-पुत्र का संबंध होना है, उसी प्रकार से रहना है तो यह रूप छोड़ो। शिशु तो छोटा सा होता है, वैसे ही एकदम छोटे से हो जाओ। शिशुओं जैसी लीला करो जो हमें प्रिय लगे। यह सुख सुंदर होगा। दोनों बातें होंगी– भगवान भी हैं, पुत्र भी है, कितना अनुपम सुख होगा।

माँ की आज्ञा मिलते ही प्रभु बालक बनकर रोने लगे

सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा ।

सुनि बचन सुजाना = माँ की यह बात सुनकर सुजान प्रभु, *रोदन ठाना* = रोना शुरू कर दिये, *होइ बालक* = बालक बनकर, *सुरभूपा* = देवताओं के स्वामी।

यदि भगवान चाहते तो कह देते हम यह चतुर्भुज रूप छोड़कर शिशु बन रहे हैं। पर नहीं, उन्होंने माँ से कहलवाया। पहली शिक्षा माँ की आज्ञा का पालन करना है। जब माँ ने आदेश दिया तब शिशु बन गये। यहाँ पर सुजाना से आशय है कि भगवान को बाल लीला करके सिर्फ मनो-विनोद नहीं करना है, बल्कि धर्म की रक्षा भी करनी है। जैसे ही शिशु बने लीला शुरू कर दी, कौशल्या-दशरथ के पुत्र बनकर रोने लगे। रोने की आवाज महल में फैल गयी, सबको पता चल गया कि रानी को पुत्र हुआ है।

इस स्तुति को गाने से भगवान के चरणों की प्राप्ति

यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा ॥छंद॥

यह चरित जे गावहिं = इस चरित्र को जो लोग गाते हैं, *हरिपद पावहिं* = भगवान का पद पाते हैं, *ते न परहिं भवकूपा* = वे संसार के कुएँ में नहीं पड़े रहते हैं।

भगवान के प्रगट होने की कथा साधारण कथा नहीं है। इसमें ज्ञान की बातें हैं। जो लोग इस चरित्र को पढ़ेंगे, सुनेंगे, उन्हें हरि पद प्राप्त हो जायेगा। यह संसार कुएँ की तरह ही है। जब तक हम अपने आप को मात्र शरीर ही समझते रहेंगे तब तक इस कुएँ में यूँ ही पड़े रहेंगे।

संसार के हित के लिये, अपनी इच्छा से शरीर धारण करते हैं

बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार ।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार ॥दोहा 192॥

बिप्र धेनु सुर संत हित = विप्र; गाय; देवता व संतों के हित के लिये, *लीन्ह मनुज अवतार* = मनुष्य बनकर अवतार लिया, *निज इच्छा निर्मित तनु* = अपनी इच्छा से शरीर धारण किया, *माया* = माया से परे, *गुन* = गुणों से परे, *गो पार* = इन्द्रियों से परे वे हैं।

विप्र, गाय, देवता व सज्जनों के हित के लिये भगवान ने अपनी इच्छा से मनुष्य शरीर धारण किया। जब तक इच्छा हुई वे लीला करते हैं फिर शरीर को समेट लेते हैं। वे माया, गुण व इन्द्रियों के परे हैं। वे स्वतंत्र होकर जीवन जीते हैं। जीव अपनी इच्छा से नहीं बल्कि कर्म के अनुसार शरीर धारण करता है, वह कर्मबंधन में है। जो व्यक्ति भगवान के इस दिव्य रूप को जानता है, वह भी उन्हीं की तरह स्वतंत्र होकर कर्मबंधन से मुक्त हो जाता है।

शिशु का रोना सुन सब आये, महल व नगर में खबर फैल गई

सुनि सिसु रुदन परम प्रिय बानी। संभ्रम चलि आईं सब रानी ॥193:1॥
हरषित जहँ तहँ धाईं दासी। आनँद मगन सकल पुरबासी ॥193:2॥

सुनि सिसु रुदन = शिशु के रोने की आवाज सुनकर, *परम प्रिय बानी* = जो बहुत प्यारी थी, *संभ्रम* = आश्चर्य करती हुई, *चलि आईं सब रानी* = सब रानियाँ आ गयीं, *हरषित जहँ तहँ धाईं दासी* = प्रसन्नता से दासियाँ यहाँ वहाँ दौड़ीं, *आनँद मगन सकल पुरबासी* = सारे नगर में खबर फैली, नगरवासी आनंद में मग्न हो गये।

शिशु के रोने की आवाज बहुत प्रिय थी, इसे सुनकर सब रानियाँ आश्चर्य करती हुईं चली आईं कि कोई खबर नहीं मिली, पुत्र जन्म हो गया। शिशु रोकर ही अपने आने, सोने, भूख, प्यास, कष्ट की सूचना देता है। भगवान भी वैसे ही लीला करते हैं। दासियाँ भी आ गईं। उन्होंने सबको सूचना दे दी। महाराज दशरथ के पुत्र होने की सूचना पूरे नगर में फैल गयी, सब लोग आनंद में मगन हो गये।

यह कथा क्यों पढ़ें?

इस कथा में यह बात बार-बार आती है कि प्रभु कर तो रहे हैं मनुष्य की लीला पर सदैव स्मरण रखते हैं कि हम ब्रह्म हैं। इसे पढ़ते-पढ़ते, सुनते-सुनते हमारे अंदर भी ऐसे भाव आने लगते हैं कि हम भी हैं तो वही दिव्य आत्मा पर संसार में अपने सभी कर्त्तव्यों को पूरा करने की लीला कर रहे हैं। ऐसा विचार करते ही तत्काल हमारी सारी समस्यायें, तनाव, कष्ट दूर हो जाते हैं। जैसे भगवान अवतार लेते हैं, मनुष्य की लीला करते हैं, पर अंदर से वे सदैव भगवान ही बने रहते हैं, वैसे ही हमें भी अंदर से सदैव आत्मा बने रहने का अभ्यास करना है।

पुत्र जन्म की खबर दशरथ जी को ब्रह्म के आनंद के समान लगी

दसरथ पुत्रजन्म सुनि काना। मानहुँ ब्रह्मानंद समाना ॥193:3॥
परम प्रेम मन पुलक सरीरा। चाहत उठत करत मति धीरा ॥193:4॥

दसरथ पुत्रजन्म सुनि काना = राजा दशरथ पुत्र का जन्म कानों से सुनकर, *मानहुँ ब्रह्मानंद समाना* = उन्हें लगा जैसे ब्रह्म का आनंद प्राप्त हुआ हो, *परम प्रेम मन पुलक सरीरा* = उनके मन में परम प्रेम उत्पन्न हुआ व शरीर पुलकित हो गया, *चाहत उठत* = उठने का प्रयास करते हैं पर शिथिलता से उठ नहीं पाते, *करत मति धीरा* = बुद्धि को स्थिर करके उठते हैं।

जाकर नाम सुनत सुभ होई। मोरें गृह आवा प्रभु सोई ॥193:5॥
परमानंद पूरि मन राजा। कहा बोलाइ बजावहु बाजा ॥193:6॥

जाकर नाम सुनत सुभ होई = जिसका नाम सुनने से ही कल्याण होता है, *मोरें गृह आवा प्रभु सोई* = वही प्रभु हमारे घर में आ गये हैं, *परमानंद पूरि*

मन राजा = राजा का मन परम आनंद से भर गया, *कहा बोलाइ बजावहु बाजा* = सेवकों को बुलाकर कहा कि बाजे वालों को बुलवाकर बाजा बजवाओ।

महाराज दशरथ ने पुत्र जन्म की खबर सुनी, उन्हें कैसा लगा?

1. सुनने के साथ ही लगा जैसे ब्रह्म का आनंद प्राप्त हो गया हो। ब्रह्म की अनुभूति या आत्म ज्ञान के समय जो आनंद की प्राप्ति होती है वही आनंद उन्हें पुत्र जन्म की सूचना सुनने से हुआ।
2. पुत्र का परम प्रेम हृदय में उत्पन्न हो गया। शरीर रोमांचित हो गया। ऐसी दशा में व्यक्ति का शरीर शिथिल हो जाता है। उठना चाहते हैं पर उठ नहीं पाते। बुद्धि को स्थिर करके अपने शरीर पर नियंत्रण पाकर फिर उठते हैं।
3. वशिष्ठ जी ने पहले ही बता दिया था कि भगवान ही तुम्हारे यहाँ पुत्र बनकर आयेंगे। वह बात याद आयी तो सोचते हैं कि जिसका नाम सुनने से ही शुभ होता है, वही प्रभु मेरे घर में आ गये हैं। यह सोचकर राजा को परम आनंद प्राप्त हुआ।
4. राजा ने किया क्या? सेवकों को बुलवाकर कहा कि बाजा बजाने वालों को बुलवाकर बधाव बजवाओ।

वशिष्ठ जी को बुलवाया गया, देखकर कहा, अनुपम बालक है

गुर बसिष्ठ कहँ गयउ हँकारा। आए द्विजन सहित नृपद्वारा ॥193:7॥
अनुपम बालक देखेन्हि जाई। रूप रासि गुन कहि न सिराई ॥193:8॥

गुर बसिष्ठ कहँ गयउ हँकारा = फिर दूत भेजकर गुरु वसिष्ठ को बुलवाया गया, *आए द्विजन सहित नृपद्वारा* = वे विप्रों को साथ लेकर राजा के द्वार पर आ गये, *अनुपम बालक देखेन्हि जाई* = उन्होंने अनुपम बालक को देखा, *रूप रासि* = जो सौंदर्य से परिपूर्ण हैं, *गुन कहि न सिराई* = उनके गुणों को कितना भी कहो समाप्त नहीं होते हैं।

दूत भेजकर गुरु वसिष्ठ जी को बुलवाया गया। वे राजा के पुरोहित भी हैं। जितने भी संस्कार होते हैं वे ही करवाते हैं। उनके साथ बहुत से विप्र भी आते हैं। वशिष्ठ जी ने बालक को देखकर कहा यह तो अनुपम है। इसकी तुलना

संसार के अन्य बालकों से नहीं की जा सकती है, क्योंकि यह पंच भौतिक तत्त्वों से नहीं बना है। यह चिन्मय है। इसके रूप, गुण, सौंदर्य का जितना भी वर्णन करो कभी पूरा नहीं होगा। सिराई मायने सिराना यानि ठंडा करना, न सिराई मायने कभी भी ठंडा न होना।

जन्म के संस्कार के बाद राजा ने दान दिया

नंदीमुख सराध करि जातकरम सब कीन्ह ।
हाटक धेनु बसन मनि नृप बिप्रन्ह कहँ दीन्ह ॥दोहा 193॥

नंदीमुख सराध करि = नन्दीमुख श्राद्ध करके, *जातकरम सब कीन्ह* = जातकर्म आदि संस्कार सब किये, *हाटक धेनु बसन मनि नृप* = राजा ने स्वर्ण, गायें, वस्त्र व मणि इत्यादि, *बिप्रन्ह कहँ दीन्ह* = विप्रों को दान में दिया।

बच्चे के जन्म लेते ही नन्दीमुख श्राद्ध, जातकर्म आदि संस्कार किये जाते हैं। राजा ने यह सब विधिपूर्वक किया। इसके बाद विप्रों को स्वर्ण, गायें, वस्त्र व मणि इत्यादि दान में दिया।

नगरवासियों ने प्रसन्नता में पूरा नगर सजा दिया

ध्वज पताक तोरन पुर छावा। कहि न जाइ जेहि भाँति बनावा ॥194:1॥
सुमनबृष्टि अकास तें होई। ब्रह्मानंद मगन सब लोई ॥194:2॥

ध्वज पताक तोरन पुर छावा = ध्वजा, पताका और तोरणों से नगर छा गया, *कहि न जाइ जेहि भाँति बनावा* = जिस प्रकार से सजाया गया उसका वर्णन नहीं हो सकता है, *सुमनबृष्टि अकास तें होई* = आकाश से फूलों की वर्षा हो रही है, *ब्रह्मानंद मगन सब लोई* = सब लोग ब्रह्मानंद में मग्न हैं।

नगर वासियों ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त करने के लिये ऊँची-ऊँची पताकाओं, छोटी झंडियों, तोरणों से नगर को सजा दिया। ये सब सजावटें उन्होंने बहुत प्रेम से इतनी सुंदरता से कीं, कि उसका वर्णन करना भी कठिन है। आकाश से पुष्प वर्षा होने लगी मायने सब ओर आनंद छा गया। सब लोग ब्रह्म के आनंद में मग्न हो गये हैं।

स्त्रियाँ शिशु की आरती व न्यौछावर करके चरणों में प्रणाम करती हैं

बृंद बृंद मिलि चलीं लोगाईं। सहज सिंगार किएँ उठि धाईं ॥194:3॥
कनक कलस मंगल भरि थारा। गावत पैठहिं भूप दुआरा ॥194:4॥
करि आरति नेवछावरि करहीं। बार बार सिसु चरनन्हि परहीं ॥194:5॥

बृंद बृंद मिलि चलीं लोगाईं = स्त्रियाँ समूह-समूह बनाकर राजभवन की तरफ चलीं, *सहज सिंगार किएँ उठि धाईं* = सहज शृंगार करके चल दीं, *कनक कलस मंगल भरि थारा* = स्वर्ण के कलश व थाल में मंगल द्रव्य भरकर, *गावत* = गीत गाते हुए, *पैठहिं भूप दुआरा* = राजद्वार में प्रवेश करती हैं, *करि आरति* = आरती करती हैं, *नेवछावरि करहीं* = न्यौछावर करती हैं, *बार बार सिसु चरनन्हि परहीं* = बार-बार शिशु के चरणों को प्रणाम करती हैं।

अयोध्या की स्त्रियों को राजमहल पहुँचने की जल्दी है। इसलिये सामान्य शृंगार किया। सोने के कलशों व थाली में मंगल द्रव्य भरा, समूह बनाकर, गीत गाती हुई राजमहल में प्रवेश करती हैं। राजा के शिशु को देखती हैं, उसकी आरती करती हैं, कुछ धन न्यौछावर करके दान कर देती हैं। भगवान को शिशु रूप में देखकर भागवत भाव आ ही जाता है। उस प्रेम को प्रगट करने के लिये बार-बार चरणों में प्रणाम करती हैं।

राजा ने खूब दान दिया, जिसे मिला उसने भी दान कर दिया

मागध सूत बंदिगन गायक। पावन गुन गावहिं रघुनायक ॥194:6॥
सर्बस दान दीन्ह सब काहू। जेहिं पावा राखा नहिं ताहू ॥194:7॥

मागध सूत बंदिगन गायक = मागध; सूत; वन्दीजन और गवैये, *पावन गुन गावहिं रघुनायक* = रघुकुल के स्वामी के पावन गुणों का गान करते हैं, *सर्बस दान दीन्ह सब काहू* = राजा ने सब किसी को भरपूर दान दिया, *जेहिं पावा राखा नहिं ताहू* = जिसने पाया उसने भी रखा नहीं।

द्वार पर मागध, सूत, वंदीजन इत्यादि रघुकुल की यशगाथा का गान कर रहे हैं। महाराज दशरथ ने सबको खूब दान दिया। जिसको दान मिला उसके मन में भी खूब उल्लास आया कि राजा के यहाँ पुत्र हुआ है, तो उसने वह

दान किसी और को दे दिया। इसी प्रकार जब हमारे मन में भी भगवान का प्रेम, ज्ञान व भक्ति आती है, तो वह भी अंदर रोके नहीं रुकती, हम दूसरों को बाँटने लगते हैं। जिसे वह ज्ञान मिलता है वह भी दूसरों को बाँट देता है। हमने योग सीखा, मंत्र-जप किया हमें फायदा हुआ, दूसरे को सिखा दिया, उसे भी फायदा हुआ, उसने तीसरे को सिखा दिया।

सुगंधित द्रव्य के छिड़काव से पूरा नगर महक उठा

मृगमद चंदन कुंकुम कीचा। मची सकल बीथिन्ह बिच बीचा॥194:8॥

मृगमद चंदन कुंकुम कीचा = कस्तूरी; चंदन और कुंकुम को मिलाकर छिड़काव कर दिया गया, *मची सकल बीथिन्ह बिच बीचा* = नगर भर की सब गलियाँ महक उठीं।

गृह गृह बाज बधाव सुभ प्रगटे सुषमा कंद ।
हरषवंत सब जहँ तहँ नगर नारि नर बृंद ॥दोहा 194॥

गृह गृह बाज बधाव सुभ = घर-घर में शुभ बधाव बजने लगे, *प्रगटे सुषमा कंद* = सौंदर्य निधान भगवान प्रगट हुए हैं, *हरषवंत सब जहँ तहँ नगर नारि नर बृंद* = नगर भर में सब स्त्री-पुरुष प्रसन्न हैं।

नगर की सड़कों की सफाई करके कस्तूरी, चंदन व कुंकुम मिलाकर छिड़काव किया गया, इससे पूरा नगर महक उठा। सौंदर्य के निधान भगवान प्रगट हुए हैं। घर-घर में शुभ बधाई के बाजे बजने लगे। भगवान का आनंद सभी को एक समान प्रसन्न करने वाला है, इसलिये कहते हैं कि नगर के सारे स्त्री-पुरुष प्रसन्न हैं।

कैकेयी के एक पुत्र व सुमित्रा के दो पुत्र हुए, सभी सुंदर हैं

कैकयसुता सुमित्रा दोऊ। सुंदर सुत जनमत भैं ओऊ ॥195:1॥
वह सुख संपति समय समाजा। कहि न सकइ सारद अहिराजा ॥195:2॥

कैकयसुता = रानी कैकेयी ने पुत्र को जन्म दिया, *सुमित्रा दोऊ* = रानी सुमित्रा ने दो पुत्रों को जन्म दिया, *सुंदर सुत जनमत भैं ओऊ* = वे सब भी जन्म से

सुंदर हैं, *वह सुख संपति समय समाजा* = उस समय समाज में व्याप्त सुख संपति का, *कहि न सकइ सारद अहिराजा* = वर्णन सरस्वती व शेषनाग भी नहीं कर सकते।

भगवान राम के अवतार लेने के बाद रानी कैकेई ने एक पुत्र व रानी सुमित्रा ने दो पुत्रों को जन्म दिया। ये सब पुत्र भी सुंदर हैं। उस समय समाज में व्याप्त सुख व संपत्ति की महिमा का वर्णन सरस्वती जी व शेषनाग भी नहीं कर सकते हैं।

सूर्य के सामने रात्रि संध्या बनकर दर्शन करने आती है

अवधपुरी सोहइ एहि भाँती। प्रभुहि मिलन आई जनु राती ॥195:3॥
देखि भानु जनु मन सकुचानी। तदपि बनी संध्या अनुमानी ॥195:4॥

अवधपुरी सोहइ एहि भाँती = अयोध्या इस प्रकार शोभायमान हो रही है, *प्रभुहि मिलन आई जनु राती* = मानो प्रभु के दर्शन के लिये रात्रि भी चली आई हो, *देखि भानु* = सूर्य को देखकर, *जनु मन सकुचानी* = मानो रात्रि को मन में संकोच लग रहा है, *तदपि बनी संध्या अनुमानी* = फिर भी उसने संध्या का रूप तो धारण कर ही लिया।

अगर धूप बहु जनु अँधिआरी। उड़इ अबीर मनहुँ अरुनारी ॥195:5॥
मंदिर मनि समूह जनु तारा। नृप गृह कलस सो इंदु उदारा ॥195:6॥
भवन बेदधुनि अति मृदु बानी। जनु खग मुखर समयँ जनु सानी ॥195:7॥

अगर धूप बहु जनु = लोगों ने इतनी अगरबत्ती व धूप जलाया, *अँधिआरी* = जिससे धुँआ छा गया; अंधेरा जैसा हो गया, *उड़इ अबीर* = गुलाल इतना उड़ा, *मनहुँ अरुनारी* = मानो संध्या की लालिमा हो, *मंदिर मनि समूह* = घरों में लगी मणियाँ चमक रही हैं, *जनु तारा* = मानो तारे हैं, *नृप गृह कलस* = राजभवन के ऊपर का कलश, *सो इंदु उदारा* = श्रेष्ठ चंद्रमा लग रहा है, *भवन बेदधुनि अति मृदु बानी* = महल में मधुर वाणी में वेदों का उच्चारण, *जनु खग मुखर* = मानो पक्षी चहचहा रहे हैं, *समयँ जनु सानी* = संध्या का समय समझकर।

भगवान का अवतार दोपहर में हुआ, इसलिये दिन ने तो प्रभु के सुंदर रूप का दर्शन कर लिया। पर रात्रि दर्शन नहीं कर पायी। तुलसीदास जी अपनी

अलौकिक काव्य शैली में रात्रि, दिन में संध्या बनकर कैसे अयोध्या में आकर प्रभु के दर्शन करती है, उसका वर्णन करते हैं।

1. जब रात्रि भगवान के दर्शन के लिये आने लगी तो उसने देखा, सूर्य आकाश में चमचमा रहे हैं। रात्रि सूर्य के सामने नहीं आती है, उसे संकोच लगा। वह संकुचित होते-होते सिर झुकाये-झुकाये घुस आयी। भयंकर रात्रि न बनकर संध्या बनकर आ गयी।
2. अयोध्या के लोगों ने जन्म का उत्सव मनाने के लिये इतनी अधिक अगरबत्ती व धूप जलाया कि उसके धुएँ से आकाश में हल्का अंधेरा छा गया, शाम जैसा वातावरण बन गया। अबीर भी इतना उड़ाया कि वह लालिमा बनकर आकाश में ऐसी छा गयी मानो संध्या के समय लाल बादल पश्चिम की तरफ जा रहे हैं।
3. राजभवन में खूब मणियाँ लगाई गयी थीं वे झिलमिल चमककर आकाश में तारों जैसे लग रही थीं। भवन के ऊपर चमकता हुआ कलश चन्द्रमा के समान शोभायमान हो रहा था।
4. वशिष्ठ जी के साथ विप्रों का समुदाय भी आया था। वे लोग शिशु के जातक कर्म के समय वेद पाठ कर रहे थे। इनकी सुमधुर ध्वनि ऐसी लग रही थी, मानो संध्या समझकर आकाश में पक्षी चहचहा रहे हों।
5. इसी संध्या का फायदा उठाकर रात्रि चली आई, प्रभु के दर्शन को।

दिन में रात्रि देख सूर्य एक माह तक आकाश में डटा रहा

कौतुक देखि पतंग भुलाना। एक मास तेइँ जात न जाना ॥195:8॥

कौतुक देखि पतंग भुलाना = इस तमाशे को देखकर सूर्य चक्कर में पड़कर भूल गया, *एक मास तेइँ जात न जाना* = एक महीने तक वह वहीं रह गया।

मास दिवस कर दिवस भा मरम न जानइ कोइ ।
रथ समेत रबि थाकेउ निसा कवन बिधि होइ ॥दोहा 195॥

मास दिवस कर दिवस भा = एक महीने का एक दिन हो गया, *मरम न जानइ कोइ* = इस रहस्य को कोई नहीं समझ पाया, *रथ समेत रबि थाकेउ* = सूर्य अपने रथ सहित वहीं रुक गये, *निसा कवन बिधि होइ* = फिर रात्रि कैसे होती।

यह रहस्य काहूँ नहिं जाना। दिनमनि चले करत गुनगाना ॥196:1॥
देखि महोत्सव सुर मुनि नागा। चले भवन बरनत निज भागा ॥196:2॥

यह रहस्य काहूँ नहिं जाना = इस रहस्य को कोई नहीं समझ पाया, *दिनमनि* = सूर्यदेव, *चले करत गुनगाना* = भगवान के गुणों का गान करते हुए चल दिये, *देखि महोत्सव सुर मुनि नागा* = इस महा उत्सव को देखकर देवता; मुनि व नाग लोक के रहने वाले, *चले भवन बरनत निज भागा* = अपने भाग्य की सराहना करते हुए अपने-अपने घर को चल दिये।

जब सूर्य ने देखा हम अयोध्या के ऊपर खड़े हैं, हमारे होते हुए भी रात्रि कैसे होने लगी तो वह चक्कर में पड़ गया। इस चक्कर में वह डटा रहा कि हमारे होते हुए अंधेरा न हो। कितनी देर तक सूर्य रथ रोककर अयोध्या के ऊपर रुके रहे? तुलसीदास जी कहते हैं कि एक महीना। एक माह तक सूर्य देखता रहा कि कब अंधेरा खत्म हो। प्रभु राम के अवतार का वह दिन एक महीने के बराबर हो गया। न सूर्य गये, न रात्रि हुई, वही संध्याकाल एक महीने तक बना रहा। इस रहस्य को कोई जान नहीं पाया क्योंकि सब इतने प्रसन्न हैं कि लोगों का इस ओर ध्यान ही नहीं गया कि आज का दिन इतना लंबा क्यों हो गया। जब सूर्यदेव भगवान का गुणगान करते हुए चल दिये तब देवता, मुनि व नागलोक वासी भी अपने-अपने भाग्य की सराहना करते हुए वापस चले गये।

भारतीय ज्योतिष के अनुसार सूर्य की भी गति है

ज्योतिष के अनुसार जब भगवान ने अवतार लिया, तो सारे मुहूर्त्त एक साथ आ गये। तिथि, नक्षत्र, मुहूर्त्त सारे एकत्रित हो गये। उन सब तिथियों को अपने स्थान में वापस जाने में एक महीने का समय लग गया, तब सूर्य की गति आगे बढ़ी। विज्ञान के अनुसार सूर्य स्थिर है, पृथ्वी उसकी परिक्रमा करती है। भारतीय ज्योतिष के अनुसार पृथ्वी अपनी कीली पर घूमती है, लेकिन सूर्य में भी गति है। सभी अपनी गति से चलते हैं।

काकभुशुण्डि व शिव जी मनुष्य बने अयोध्या में घूम रहे हैं

औरउ एक कहउँ निज चोरी। सुनु गिरिजा अति दृढ़ मति तोरी ॥196:3॥
काकभुसुंडि संग हम दोऊ। मनुजरूप जानइ नहिं कोऊ ॥196:4॥
परमानंद प्रेम सुख फूले। बीथिन्ह फिरहिं मगन मन भूले ॥196:5॥

औरउ एक कहउँ निज चोरी = मैं अपनी एक और छिपाव की बात कहता हूँ, *सुनु गिरिजा* = हे पार्वती सुनो! *अति दृढ़ मति तोरी* = क्योंकि तुम्हारी बुद्धि बहुत स्थिर है, *काकभुसुंडि संग* = काकभुशुण्डि के साथ, *हम दोऊ* = हम दोनों, *मनुजरूप* = मनुष्य का रूप बनाये थे, *जानइ नहिं कोऊ* = इसलिये कोई पहचान नहीं पाया, *परमानंद* = परम आनंद, *प्रेम सुख फूले* = और प्रेम के सुख में फूले हुए, *बीथिन्ह फिरहिं* = गलियों में घूम रहे थे, *मगन मन भूले* = हमारा मन मगन था शरीर की सुधि भूले हुए थे।

यह कथा शिव पार्वती को सुना रहे हैं। इसका स्मरण अपने निराले अंदाज में तुलसीदास जी कराते रहते हैं। शिव जी कहते हैं कि हे गिरिजा! तुम्हें एक रहस्य की बात कहता हूँ। तुम्हारी बुद्धि स्थिर व मजबूत है, इसलिये तुम इसे समझ जाओगी। काकभुशुंडि के साथ मैंने मनुष्य शरीर धारण किया, फिर हम दोनों चुपके से अपने प्रभु राम का अवतार देखने अयोध्या पहुँच गये। अवतार की लीला देखकर हम प्रेम व सुख से फूले, परम आनन्दित होते हुए अयोध्या की गलियों में घूमते रहे। हम लोगों का मन इतना मग्न था कि शरीर की सुधि भी भूल गये थे। हमें कोई पहचान भी नहीं पाया। यहाँ पर चोरी से आशय है, छिपाना, प्रगट नहीं करना।

राम व शिव का विलक्षण संबंध

यह सुभ चरित जान पै सोई। कृपा राम कै जापर होई ॥196:6॥

यह सुभ चरित जान पै सोई = परंतु यह शुभ चरित्र वही जान सकता है, *कृपा राम कै जापर होई* = जिस पर राम जी की कृपा हो।

स्वामी सत्यानंद जी रिखिया सत्संग में कहते हैं कि राम व शिव दोनों एक दूसरे के भक्त हैं, एक दूसरे के शिष्य हैं, एक दूसरे को प्यार करते हैं, एक दूसरे के प्रति समर्पित हैं। राम शिव का ध्यान करते हैं, शिव राम का ध्यान करते हैं। शिव राम नाम जपते हैं, राम शिव का नाम जपते हैं। शिव जी वहाँ जहाँ राम। राम जी जब जन्मे तब शिव जी पहुँच गये। तुलसीदास जी कहते हैं, यह चरित्र वही समझ सकता है, अनुभूति कर सकता है, जिस पर राम की कृपा हो।

संतुष्ट होकर लोग आशीर्वाद देते हैं– 'राजकुमार दीर्घायु हों'

तेहि अवसर जो जेहि बिधि आवा। दीन्ह भूप जो जेहि मन भावा ॥196:7॥
गज रथ तुरग हेम गो हीरा। दीन्हे नृप नानाबिधि चीरा ॥196:8॥

तेहि अवसर = उस समय, *जो जेहि बिधि आवा* = जो जिस प्रकार से आया, *दीन्ह भूप* = राजा ने उसे दे दिया, *जो जेहि मन भावा* = जिसके मन को जो अच्छा लगा, *गज रथ तुरग हेम गो हीरा* = हाथी; रथ; घोड़े; सोना; गौएँ; हीरे, *दीन्हे नृप नानाबिधि चीरा* = और नाना प्रकार के वस्त्र राजा ने दिये।

मन संतोषे सबन्हि के जहँ तहँ देहिं असीस ।
सकल तनय चिर जीवहुँ तुलसिदास के ईस ॥दोहा 196॥

मन संतोषे सबन्हि के = राजा ने सबके मन को संतुष्ट कर दिया, *जहँ तहँ देहिं असीस* = सब लोग जहाँ-तहाँ आशीर्वाद दे रहे थे, *सकल तनय* = सभी पुत्र, *चिर जीवहुँ* = दीर्घायु हों, *तुलसिदास के ईस* = ये तुलसीदास जी के इष्ट देवता हैं।

इस अवसर पर महाराज दशरथ इतने प्रसन्न हैं कि जो व्यक्ति जैसे आता है, जो कुछ माँगता है, उसे वही दे देते हैं। हाथी, रथ, घोड़े, सोना, गौएँ, हीरे, वस्त्र इत्यादि इतना दान दिया कि सब लोग संतुष्ट हो गये। तुलसीदास जी कहते हैं कि मेरे इष्ट प्रभु राम जो इस समय दशरथ जी के पुत्र बने हैं, उन्हें व उनके तीनों भाइयों को सब लोगों ने संतुष्ट होकर दीर्घायु होने का आशीर्वाद दिया।

2. नामकरण व मनमोहक शिशु लीला

(दोहा 197 से 198)

लगभग 10-12 दिनों बाद जब शिशुओं के नामकरण का समय आया तब वसिष्ठ जी लक्षणों के अनुसार नाम रख देते हैं। जो सबको आनंद देने वाला है उसका नाम राम, सबका भरण पोषण करने वाले का नाम भरत, बाहरी व मन के भीतर के शत्रुओं का नाश करने वाले का नाम शत्रुघ्न, व सब सद्गुणों से भरे हुए पुत्र का नाम लक्ष्मण रख देते हैं।

नामकरण का समय आ गया, वसिष्ठ जी आते हैं

कछुक दिवस बीते एहि भाँती। जात न जानिअ दिन अरु राती ॥197:1॥
नामकरन कर अवसरु जानी। भूप बोलि पठए मुनि ग्यानी ॥197:2॥

कछुक दिवस बीते एहि भाँती = कुछ दिन इस प्रकार व्यतीत हो गये, *जात न जानिअ दिन अरु राती* = दिन और रात कब बीत गये पता ही नहीं चलता, *नामकरन कर अवसरु जानी* = नामकरण संस्कार का समय आ गया, *भूप बोलि पठए मुनि ग्यानी* = राजा ने ज्ञानी मुनि वसिष्ठ को आमंत्रण भेजा।

कुछ दिन इसी प्रकार आनंद में व्यतीत हो गये। अयोध्यावासी, देवता इत्यादि नित्य आकर शिशु रूप राम के दर्शन करते रहे। सब इतने मग्न हैं कि कब दिन बीत गया, कब रात व्यतीत हो गयी, किसी को पता ही नहीं चलता। 10-12 दिन के हो गये, नामकरण का समय आ गया। महाराज दशरथ ने वसिष्ठ जी को कहलवा दिया। वे इसकी तैयारी करने लगे। अयोध्या में भी सूचना दे दी।

इनके अनेक नाम, बुद्धि के अनुसार नाम रखूँगा

करि पूजा भूपति अस भाषा। धरिअ नाम जो मुनि गुनि राखा ॥197:3॥
इन्ह के नाम अनेक अनूपा। मैं नृप कहब स्वमति अनुरूपा ॥197:4॥

करि पूजा भूपति अस भाषा = पूजा करके राजा ने कहा, *धरिअ नाम जो मुनि गुनि राखा* = हे मुनि! जो नाम आपने सोचकर रखा हो वह रखिये, *इन्ह के नाम अनेक अनूपा* = मुनि ने कहा इनके अनेक अनुपम नाम हैं, *मैं नृप कहब स्वमति अनुरूपा* = हे राजन् मैं अपनी बुद्धि के अनुसार इनका नाम रखूँगा।

वेदपाठ, हवन इत्यादि पूजा करने के बाद महाराज दशरथ ने वसिष्ठ जी से कहा, हे मुनि! आपने जो नाम विचार कर रखे हों वह बताइये। वसिष्ठ जी कहते हैं, इनके अनेक नाम हैं। इनके गुण अनुपम हैं, उन अनुपम गुणों के अनुसार इनके नाम हैं, तो वे नाम भी अनुपम हैं। हे राजन् फिर भी मैं अपनी बुद्धि के अनुसार इनके नाम बताऊँगा। प्रत्येक पुत्र के पहले लक्षण बताते हैं, उस लक्षण के अनुसार नाम बताते हैं।

बड़ा पुत्र आनंद-समुद्र, उसके एक कण से सब सुखी, नाम– 'राम'

जो आनंद सिंधु सुखरासी। सीकर तें त्रैलोक सुपासी ॥197:5॥
सो सुखधाम राम अस नामा। अखिल लोक दायक बिश्रामा ॥197:6॥

जो आनंद सिंधु = जो आनंद के समुद्र हैं, *सुखरासी* = जो सुख प्रदान करने वाले हैं, *सीकर तें* = उस आनंद के समुद्र के एक कण से, *त्रैलोक सुपासी* = तीनो लोक सुखी होते हैं, *सो सुखधाम* = जो सुख का भवन हैं, *राम अस नामा* = आपके बड़े पुत्र का नाम राम है, *अखिल लोक दायक बिश्रामा* = यह नाम संपूर्ण लोकों को शांति प्रदान करने वाला है।

हे राजन्, जैसे समुद्र में जल ही जल भरा रहता है, वैसे ही आपके बड़े पुत्र में आनंद ही आनंद भरा है। इनके आनंद के एक कण मात्र से सारा संसार सुखी हो जाता है। इसलिये इनका नाम राम है। सब लोकों में जितने भी प्राणी हैं, उन्हें विश्राम राम नाम से ही मिलता है। जो इन्हें भूलकर यहाँ-वहाँ भटक गया उसे फिर परेशानी, चिंता ही है, विश्राम कहाँ? जो सबके हृदय में रमण करता है, जिसकी चेतना से हम सब प्रकाशित हैं, जिसके आनंद से हम सब आनंदित हैं, वही राम है।

दूसरा पुत्र संसार का भरण पोषण करेगा, नाम– 'भरत'

बिस्व भरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई ॥197:7॥

बिस्व भरन पोषन कर जोई = जो सारे विश्व का भरण पोषण करता है, *ताकर नाम भरत अस होई* = आपके दूसरे पुत्र का नाम भरत होगा।

हे राजन्, आपके दूसरे पुत्र का लक्षण है कि यह सारे संसार का भरण पोषण करने वाला है। इसलिये इसका नाम भरत है। भरण से भरत नाम रख दिया। आकाशवाणी में भगवान ने कहा था कि मैं अंशों सहित अवतार लूँगा। ब्रह्म की वह शक्ति जो जगत् का पालन पोषण करती है, भरत बनकर अवतरित हो गई है। श्रीरामचरितमानस की चौपाइयों का लोग मंत्रों की तरह भी प्रयोग करते हैं। कुछ लोगों की मान्यता है कि यदि व्यक्ति का जीवन यापन नहीं हो पा रहा है, रोजगार नहीं है तो इस चौपाई का नियमित, नियमानुसार पाठ करे, कार्य सिद्ध हो जायेगा।

चौथे पुत्र के स्मरण से शत्रुओं का नाश, नाम– 'शत्रुघ्न'

जाके सुमिरन तें रिपु नासा। नाम सत्रुहन बेद प्रकासा॥197:8॥

जाके सुमिरन तें रिपु नासा = जिसके स्मरण मात्र से शत्रु का नाश हो जाता है, *नाम सत्रुहन बेद प्रकासा* = आपके चौथे पुत्र का नाम शत्रुघ्न है, यह नाम वेदों में प्रसिद्ध है।

हे राजन्, आपके चतुर्थ पुत्र का लक्षण है कि इसके स्मरण मात्र से शत्रुओं का नाश हो जाता है। इसलिये इसका नाम शत्रुघ्न है। शत्रु से आशय मात्र संसार में बैठे दुश्मनों से नहीं है, बल्कि हमारे अंदर बैठे मानसिक विकार भी हैं, जो हमसे शत्रु जैसा व्यवहार करके सदैव हमें परेशान किये रहते हैं। मानसिक विकारों से हमारा व्यवहार दूषित होता है जो संसार में भी शत्रु पैदा करता रहता है। इस प्रकार ब्रह्म की वह शक्ति जो मानसिक विकारों को दूर करती है, शत्रुघ्न बनकर अवतरित हो गई।

तीसरा पुत्र अच्छे लक्षणों से भरपूर है, नाम– 'लक्ष्मण'

लच्छन धाम राम प्रिय सकल जगत आधार ।
गुरु बसिष्ट तेहि राखा लछिमन नाम उदार ॥दोहा 197॥

लच्छन धाम = अच्छे लक्षणों के धाम हैं, *राम प्रिय* = राम को प्रिय हैं, *सकल जगत आधार* = सारे जगत् के आधार हैं, *गुरु बसिष्ट तेहि राखा लछिमन नाम उदार* = गुरु वसिष्ठ जी ने तीसरे पुत्र का श्रेष्ठ नाम लक्ष्मण रखा।

हे राजन्, आपके तीसरे पुत्र का लक्षण है कि यह सारे अच्छे लक्षणों से भरा हुआ है, यह राम को प्रिय है, यह सारे जगत् का आधार भी है, इन सब कारणों से इस बालक का नाम लक्ष्मण रखते हैं। इस प्रकार ब्रह्म की वह शक्ति जो सारे जगत् का आधार है, लक्ष्मण बनकर अवतरित हो गई। भगवान राम को क्या प्रिय है? अच्छे गुण जैसे क्षमा, दया, शांति, नि:स्वार्थता, निरहंकारिता इत्यादि, ये सब गुण लक्ष्मण में विद्यमान हैं, इसलिये वे भगवान राम को प्रिय हैं।

चारों पुत्र वेदों के तत्त्व, राम नाम तो शिव के प्राण हैं

धरे नाम गुर हृदयँ बिचारी। बेद तत्व नृप तव सुत चारी ॥198:1॥
मुनि धन जन सरबस सिव प्राना। बाल केलि रस तेहिं सुख माना ॥198:2॥

धरे नाम गुर हृदयँ बिचारी = गुरु ने मन में विचार करके ये नाम रखे, *बेद तत्व नृप तव सुत चारी* = फिर कहा हे राजन्! तुम्हारे ये चारों पुत्र वेदों के तत्त्व हैं, *मुनि धन* = मुनियों के धन हैं, *जन सरबस* = भक्तों के सर्वस्व हैं, *सिव प्राना* = शिव जी के प्राण हैं, *बाल केलि रस* = बाल लीला के रस को, *तेहिं सुख माना* = इन्होंने सुख मान लिया है।

वसिष्ठ जी ने विचार करके चारों पुत्रों का नामकरण संस्कार कर दिया। इसके बाद महाराज दशरथ से कहा कि हे राजन्! तुम्हारे ये चारों पुत्र चारों वेदों के तत्त्व हैं। वेदों में जिस ब्रह्म को समझाया गया है उसी ब्रह्म ने मनुष्य शरीर रखकर तुम्हारे चार पुत्रों के रूप में जन्म ले लिया है। फिर पुत्रों की महिमा इस प्रकार समझायी।

1. *मुनि धन*– जैसे कंजूस को अपना धन प्यारा होता है, वह धन को अपने से अलग नहीं करता, सदैव संजोए रखता है, वैसे ही मुनि लोग राम का सदैव चिंतन, स्मरण करते रहते हैं, कभी उन्हें त्यागते नहीं।
2. *जन सरबस*– ये भक्तों के माता-पिता, भाई-बहन, सखा, ज्ञान, विद्या इत्यादि सभी हैं।
3. *शिव प्राण*– जैसे प्राण के बिना शरीर नहीं रह सकता वैसे ही राम नाम के बिना शिव जी, शिव नहीं हैं। वे हर क्षण राम नाम का जप करते रहते हैं।

इस प्रकार का महिमावान् ब्रह्म बाल लीला का सुख प्रदान कर रहा है।

राम-लक्ष्मण, भरत-शत्रुघ्न की सुंदर जोड़ी, माँ नजर उतारती हैं

बारेहि ते निज हित पति जानी। लछिमन राम चरन रति मानी ॥198:3॥
भरत सत्रुहन दूनउ भाई। प्रभु सेवक जसि प्रीति बड़ाई ॥198:4॥
स्याम गौर सुंदर दोउ जोरी। निरखहिं छबि जननीं तृन तोरी ॥198:5॥

बारेहि ते = अबोध बालकपन से ही, *निज हित* = परम हितैषी, *पति जानी* = स्वामी जानकर, *लछिमन राम चरन रति मानी* = लक्ष्मण ने राम चरणों में प्रेम

जोड़ लिया है, *भरत सत्रुहन दूनउ भाई* = भरत व शत्रुघ्न दोनों भाइयों में, *प्रभुसेवक जसि प्रीति बड़ाई* = स्वामी व सेवक के समान प्रशंसनीय प्रेम हो गया, *स्याम गौर सुंदर दोउ जोरी* = श्याम रंग व गौर रंग की सुंदर दो जोड़ियों, *निरखहिं छबि* = की सुंदरता देखकर, *जननीं तृन तोरी* = माँ तिनका तोड़ती हैं।

बालकपन से ही, जब चल नहीं पाते, बोल नहीं पाते, उस अवस्था से श्यामल व गौरे रंग की दो जोड़ियाँ बन जाती हैं।

1. श्यामल राम, गोरे लक्ष्मण की जोड़ी– लक्ष्मण जी के मन में बालकपन से यह भाव है कि राम ही हमारा हित करने वाले, हमारे स्वामी हैं। इसी भाव से उनके मन में राम के प्रति प्रेम भाव है। इन दोनों की जोड़ी बहुत ही सुंदर है।
2. श्यामल भरत, गोरे शत्रुघ्न की जोड़ी– शत्रुघ्न ने भरत को अपना स्वामी मान लिया। जैसा स्वामी सेवक का प्रेम होना चहिये वैसा ही इनमें हो गया।

माताएँ जब इतने सुंदर पुत्रों को देखती हैं, तो सोचती हैं कि इन्हें कहीं हमारी ही नजर न लग जाये, इसलिये तिनका तोड़ देती हैं, जिससे तिनका ही नष्ट हो, बच्चों पर बुरा असर न हो।

चारों गुणनिधान, पर राम ज्यादा सुखसागर हैं

चारिउ सील रूप गुन धामा। तदपि अधिक सुखसागर रामा ॥198:6॥
हृदयँ अनुग्रह इंदु प्रकासा। सूचत किरन मनोहर हासा ॥198:7॥

चारिउ सील रूप गुन धामा = चारों ही पुत्र शील; रूप व गुण के धाम हैं, *तदपि अधिक सुखसागर रामा* = फिर भी सुख के समुद्र राम जी में ये गुण ज्यादा हैं, *हृदयँ अनुग्रह इंदु प्रकासा* = उनके हृदय में चन्द्रमा के समान अनुग्रह प्रकाशित है, *सूचत किरन* = चन्द्रमा की शीतलता की सूचना किरणें देती हैं, *मनोहर हासा* = राम के अनुग्रह की सूचना मन को मोह लेने वाली उनकी हँसी देती है।

चारों भाई शीलनिधान, रूपनिधान व गुणनिधान हैं। पर बालक राम में ये लक्षण ज्यादा है। राम तो सुख के समुद्र हैं। आनंद ने ही राम का रूप धारण

कर लिया है। जो राम का स्मरण करता है उसे भी सुख की प्राप्ति होती है। जैसे आकाश में चन्द्रमा चमकता है वैसे ही राम के हृदय में अनुग्रह का चन्द्रमा प्रकाशमान है। चन्द्रमा शीतलता कैसे देता है? अपनी सुंदर किरणों से। बालक राम अपना अनुग्रह कैसे प्रगट करते हैं? मनमोहक हँसी से।

माँ कभी गोद में लेकर तो कभी पालने में लिटाकर दुलारती हैं

कबहुँ उछंग कबहुँ बर पलना। मातु दुलारइ कहि प्रिय ललना ॥198:8॥

कबहुँ उछंग = कभी गोद में लेकर, *कबहुँ बर पलना* = कभी सुंदर पालने में लिटाकर, *मातु दुलारइ* = माता दुलार करती हैं, *कहि प्रिय ललना* = यह कहती हैं 'ओ मेरे प्यारे ललना'।

माँ कौशल्या बालक राम को कभी तो गोद में उठा लेती हैं, दुलार करती हैं, कभी पालने में लिटाकर खिलाती हैं। दुलार में कहती हैं मेरे प्यारे ललना। माँ शिशु लीला का भरपूर आनंद ले रही हैं।

व्यापक ब्रह्म प्रेमवश शिशु बनकर माँ की गोद में

ब्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुन बिगत बिनोद ।
सो अज प्रेम भगति बस कौसल्या कें गोद ॥दोहा 198॥

ब्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुन बिगत बिनोद = जो सर्वव्यापक; ब्रह्म; दोषरहित; निर्गुण; विनोद रहित है, *सो अज* = जो अजन्मा है, *प्रेम भगति बस* = वह प्रेम व भक्ति के वश में होकर, *कौसल्या कें गोद* = कौशल्या माँ की गोद में खेल रहे हैं।

तुलसीदास जी फिर याद दिला देते हैं कि कौशल्या माँ जिसे बालक समझकर दुलार रही हैं, वे देखने में तो ब्रह्म के लक्षणों के विपरीत दिखते हैं, पर हैं ब्रह्म ही। सगुण राम की तुलना उनके ब्रह्म वाले लक्षणों से इस प्रकार करते हैं:
1. व्यापक– बालक राम का शरीर छोटा सा है पर हैं वे व्यापक।
2. निरंजन– वे निर्विकार है, उनमें कोई दोष नहीं है।
3. निर्गुन– माँ की गोद में सगुण होकर दिखते हैं पर वे हैं निर्गुण।

4. बिगत बिनोद– माँ के खिलाने पर वे हँसते हैं, पर उन्हें विनोद नहीं होता है।
5. अज– राम ने माँ के गर्भ से जन्म लिया है पर वे हैं अजन्मा।
ब्रह्म प्रेम के वश होकर बालक बनकर माँ की गोद में खेल रहे हैं।

3. बालक राम का दिव्य माधुर्य रूप

(दोहा 199 से 200)

इस प्रसंग में बाल रूप राम के सुंदर स्वरूप का वर्णन करते हैं। वर्णन से पता चलता है कि उनकी आयु लगभग छः माह की हो गयी है। शिशु रूप से बाल रूप में आने पर वे बैठने लगे। घुटनों के बल चलने लगे। दो दाँत निकल आये। तुलसीदास जी यहाँ पर राम के उसी रूप का वर्णन करते हैं जिसका शिव जी व काकभुशुंडि जी सदा ध्यान करते हैं। बाल रूप राम ही इनके इष्टदेव हैं। जब भी बाल रूप राम का ध्यान करना हो, स्मरण करना हो तो रामचरितमानस के अनुसार करें। यह रूप माधुर्य प्रधान है, इसलिये चरण से ध्यान प्रारंभ करके मुख तक जाते हैं। युवा रूप ऐश्वर्य प्रधान होता है, इसमें भगवान का ध्यान मुख से प्रारंभ करके चरण तक जाते हैं। माधुर्य रूप का ध्यान आनंद प्रदान करता है। ऐश्वर्य रूप का ध्यान समृद्धि व शक्ति प्रदान करता है। शिव जी कहते हैं कि जो लोग राम के चरणों से प्रेम करते हैं, उन्हें ही बाल रूप राम व उनकी बाल लीलायें साक्षात् देखने का सुख प्राप्त होता है।

श्याम वर्ण, कोमल, सुगंधित व सरस पूरा शरीर अत्यंत सुंदर है

काम कोटि छबि स्याम सरीरा। नील कंज बारिद गंभीरा ॥199:1॥

काम कोटि छबि = करोड़ों कामदेवों की सुंदरता से ज्यादा, *स्याम सरीरा* = बालक राम का नीला शरीर है, *नील कंज* = नीले कमल के समान, *बारिद गंभीरा* = और जल से भरे बादलों के समान गंभीर है।

सबसे पहले पूरे शरीर का वर्णन करते हैं। कामदेव बहुत सुंदर हैं, पर करोड़ों कामदेव मिलकर जितने सुंदर होंगे, उससे भी ज्यादा सुंदर बालक राम का श्याम वर्ण शरीर है। नीले कमल के रंग के समान शरीर में नीलापन है, कमल की कोमलता के समान शरीर कोमल है व कमल की सुंगध के समान ही शरीर

सुगंधित भी है। जब बादल जल से भरा रहता है तो वह गंभीर, सरस व नीला दिखता है। इसी प्रकार बालक राम का शरीर सरस है। कमल में सरसता नहीं है।

लाल तलवे, शुभ चिहन, चमकते नाखून, पायल की ध्वनि

अरुन चरन पंकज नख जोती। कमल दलन्हि बैठे जनु मोती ॥199:2॥
रेख कुलिस ध्वज अंकुस सोहे। नूपुर धुनि सुनि मुनि मन मोहे ॥199:3॥

अरुन चरन पंकज = ताजे खिले लाल कमल के समान चरण हैं, *नख जोती* = चरणों के नाखून का प्रकाश ऐसा लगता है, *कमल दलन्हि बैठे जनु मोती* = मानो लाल कमल के पत्तों पर मोती चिपका दिया हो, *रेख* = तलवों में रेखाओं से शुभ चिह्न बने हैं, *कुलिस* = वज्र, *ध्वज* = झंडे, *अंकुस* = और हाथी को नियंत्रित करने का अंकुश का, *सोहे* = ये चिन्ह शोभायमान हो रहे हैं, *नूपुर धुनि सुनि* = पाँव में बँधी पायल की आवाज सुनकर, *मुनि मन मोहे* = मुनियों का मन भी मोहित हो जाता है।

1. बालक राम के चरणों के तलवों का रंग ताजे खिले हुए कमल के लाल रंग के समान है।
2. तलवों में रेखाओं से वज्र, ध्वजा व अंकुश के सुंदर चिह्न बने हैं। इन सभी को मन लगाकर देखने का प्रयास करें। शास्त्रों में इनके दर्शन के फल बताये गये हैं। वज्र से मानसिक विकार दूर होते हैं। अंकुश का ध्यान मन को एकाग्र करता है। जब चरणों में ध्वज चिह्न को देखें तो उससे विजय प्राप्त होती है। कमल का निशान भक्ति प्रदान करता है।
3. तलवों की लालिमा पैर की अँगुलियों तक है, उनमें छोटे-छोटे सफेद नाखून हैं। नाखून से निकलता हुआ प्रकाश ऐसा लग रहा है मानो कमल के पत्तों पर मोती चिपका दिये गये हों और मोतियों से प्रकाश निकल रहा है।
4. तलवे, अंगुली, नाखून के बाद टखने पर आते हैं जिनमें पायल बँधी है। जब बालक राम चलते हैं तो उससे मधुर ध्वनि उत्पन्न होती है। इस ध्वनि को अपने कानों से सुनने का अभ्यास करें। तुलसीदास जी कहते हैं कि इस नूपुर की ध्वनि इतनी मनमोहक है कि यह मुनियों के मन को भी आकर्षित कर लेती है। इस प्रकार बालक राम के संपूर्ण स्वरूप का वर्णन चरणों से प्रारंभ करते हैं।

कमर में करधन, पेट में त्रिवली, गहरी नाभि

कटि किंकिनी उदर त्रय रेखा। नाभि गभीर जान जेहिं देखा ॥199:4॥

कटि किंकिनी = कमर में करधनी बँधी है, *उदर त्रय रेखा* = पेट में तीन रेखायें हैं, *नाभि गभीर* = नाभि गहरी है, *जान जेहिं देखा* = वही जान सकते हैं जिन्होंने देखा हो।

कमर में करधनी बँधी है जिसमें घुँघरू लगे हैं जो बालक राम के चलने से बजते हैं। अब और ऊपर देखते हैं तो पेट में आ गये। उसकी सुंदरता तीन रेखाओं से है जिसे त्रिवली कहते हैं। नाभि बहुत गहरी है। इसकी सुंदरता का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता है, वह समझ सकता है जिसने देखा हो।

लंबी भुजायें, हृदय में बाघ-नाखून, मणियों की माला, विप्र चरण

भुज बिसाल भूषन जुत भूरी। हियँ हरि नख अति सोभा रूरी ॥199:5॥
उर मनिहार पदिक की सोभा। बिप्र चरन देखत मन लोभा ॥199:6॥

भुज बिसाल = दोनों भुजायें लंबी हैं, *भूषन जुत भूरी* = आभूषण धारण किये हैं, *हियँ* = हृदय में, *हरि नख* = सिंह का नाखून बाँधकर लटकाया है, *अति सोभा रूरी* = इसकी छटा बहुत ही निराली है, *उर* = सीने पर, *मनिहार* = मणियों की माला, *पदिक* = जो रत्नों से जड़ित है, *की सोभा* = शोभायमान है, *बिप्र चरन देखत मन लोभा* = सीने पर भृगु के चरणों के निशान देखते ही मन लुभा जाता है।

दोनों भुजायें सामान्य से लंबी हैं। हाथ की कलाई में व भुजबल में आभूषण धारण किये हैं। बालक राम के हृदय में तीन चीजों का वर्णन करते हैं।

1. ऐसी मान्यता है कि बाघ का नाखून यदि बाँधकर बच्चे के गले में लटका दिया जाये तो नजर नहीं लगती। भूत-बाधा नहीं होती है। माँ ने बालक राम के गले में शेर का नाखून जो बाँधकर लटका दिया है, वह अत्यंत सुंदर है।
2. गले में मणियों की माला पहने हैं जो वक्ष स्थल तक लटक रही है।
3. हृदय में भृगु के चरणों के निशान हैं जो प्रभु की क्षमाशीलता व सहनशीलता को दर्शाते हुए बहुत ही शोभा पा रहे हैं।

गर्दन, ठोड़ी, मुख, दाँत, ओंठ, नासिका, तिलक, कान, गाल

कंबु कंठ अति चिबुक सुहाई। आनन अमित मदन छबि छाई ॥199:7॥
दुइ दुइ दसन अधर अरुनारे। नासा तिलक को बरनै पारे ॥199:8॥
सुंदर श्रवन सुचारु कपोला। अति प्रिय मधुर तोतरे बोला ॥199:9॥

कंबु कंठ अति = गला शंख के समान बहुत ही सुंदर है, *चिबुक सुहाई* = ठोड़ी भी सुंदर है, *आनन* = मुख पर, *अमित मदन* = असंख्य कामदेवों की, *छबि छाई* = सुंदरता की छटा छाई है, *दुइ दुइ दसन* = दो-दो दाँत हैं, *अधर अरुनारे* = लाल-लाल ओंठ हैं, *नासा* = नासिका, *तिलक* = और माथे पर तिलक का, *को बरनै पारे* = वर्णन कौन कर सकता है, *सुंदर श्रवन* = कान भी सुंदर हैं, *सुचारु कपोला* = गाल भी सुंदर हैं, *अति प्रिय मधुर तोतरे बोला* = मधुर तोतले शब्द बहुत ही प्यारे लगते हैं।

चरणों से शुरू करके गले तक पहुँचते हैं। गला कैसा है? शंख के समान लंबा व गोलाकार, उसमें रेखायें भी हैं। गले के ऊपर सुंदर ठोड़ी है। पूरे मुख की सुंदरता की तुलना कामदेव से करते हैं, इसलिये पूरे मुख को देखें, कुछ देर तक देखते रहें। फिर मुख के प्रत्येक भाग का वर्णन करते हैं। मुख में दो-दो दाँत दिख रहे हैं, ओंठ लाल रंग के हैं, नासिका भी बहुत सुंदर है, माथे पर सुंदर तिलक लगा है। गाल और कान भी सुंदर हैं। वाणी कैसी है? प्रभु राम अभी स्पष्ट बोल नहीं पा रहे हैं, तुतलाकर मधुर वाणी में बोलते हैं।

चिकने, घुंघराले बालों को माँ ने सँवारा है

चिक्कन कच कुंचित गभुआरे। बहु प्रकार रचि मातु सँवारे ॥199:10॥

चिक्कन = चिकने, *कच* = बाल हैं, *कुंचित* = घुंघराले हैं, *गभुआरे* = जन्म के ही बाल हैं, *बहु प्रकार रचि मातु सँवारे* = बालों को माँ ने बहुत प्रकार से बनाकर सँवार दिया है।

बालक राम की आयु लगभग छः माह की हो गई है। अभी उनका मुंडन नहीं हुआ है। जन्म के समय के बाल को गभुआरे कहते हैं। तुलसीदास जी के एक-

एक शब्द की महिमा है। कहते हैं बाल चिकने हैं, घुँघराले हैं, गभुआरे हैं। माँ कौशल्या ने इन बालों को खूब सँभालकर सँवारा है।

पीला वस्त्र पहने हैं, जाँघों व हाथों के सहारे चलते हैं

पीत झगुलिआ तनु पहिराई। जानु पानि बिचरनि मोहि भाई ॥199:11॥

पीत झगुलिआ तनु पहिराई = शरीर में पीले रंग का वस्त्र पहने हैं, *जानु पानि बिचरनि* = जाँघ व हाथ के सहारे चलते हैं, *मोहि भाई* = हे भाई बहुत मोहक हैं।

बालक राम ने वस्त्र क्या पहने हैं? ढीला वस्त्र पहने हैं जिसे गाँव की भाषा में झगुलिआ कहते हैं। वस्त्र का रंग कैसा है? भगवान का प्रिय रंग पीला है। क्या राम पैरों से चलने लगे? नहीं, अभी तो छोटे ही हैं, जाँघों के बल से जमीन पर बैठ जाते हैं, हाथों का सहारा लेकर घिसट-घिसट कर चलते हैं। घुटनों के बल भी चलने लगे हैं।

वर्णन संभव नहीं, जो स्वप्न में भी देखा हो वही समझ सकेगा

रूप सकहिं नहिं कहि श्रुति सेषा। सो जानइ सपनेहुँ जेहिं देखा ॥199:12॥

रूप सकहिं नहिं कहि श्रुति सेषा = पूरे रूप का वर्णन तो वेद व शेषनाग भी नहीं कर सकते, *सो जानइ* = वही जान सकता है, *सपनेहुँ जेहिं देखा* = जिसने कभी सपने में भी ऐसा देखा हो।

प्रभु राम के बाल रूप के दिव्य सौंदर्य का पूरा वर्णन वेद व शेषनाग भी नहीं कर सकते। जहाँ तक कल्पना जाये, उतनी सुंदरता का स्मरण, ध्यान करें। भगवान की सुंदरता को वही जान सकता है, जिसने स्वप्न में भी कभी उनके सौंदर्य की एक झलक देखी हो। इसका वर्णन वाणी से पूरा हो ही नहीं सकता है।

दशरथ-कौशल्या के प्रेमवश शिशु लीला कर रहे हैं

सुख संदोह मोहपर ग्यान गिरा गोतीत ।
दंपति परम प्रेम बस कर सिसुचरित पुनीत ॥दोहा 199॥

सुख संदोह = जो सुख के पुंज हैं, *मोहपर* = जो मोह से परे हैं, *ग्यान गिरा गोतीत* = जो ज्ञान; वाणी व इन्द्रियों के समझ के परे हैं, *दंपति परम प्रेम बस* = वे ही दशरथ-कौशल्या के अत्यंत प्रेम के वश होकर, *कर सिसुचरित पुनीत* = पवित्र शिशु लीला करते हैं।

प्रभु राम सुख के पुंज हैं। मोह से परे हैं। वे ज्ञान, वाणी व इन्द्रियों के भी परे हैं। परंतु वे प्रेम के बंधन में ऐसे बँधते हैं कि एक दंपति के यहाँ शिशु बनकर स्वयं जन्म लेते हैं, उन्हें सुख पहुँचाने के लिये बाल लीला करते हैं।

बालक राम को साक्षात् देखना, राम से प्रेम का फल है

एहि बिधि राम जगत पितु माता। कोसलपुर बासिन्ह सुखदाता ॥200:1॥
जिन्ह रघुनाथ चरन रति मानी। तिन्ह की यह गति प्रगट भवानी ॥200:2॥

एहि बिधि राम = इस प्रकार से राम, *जगत पितु माता* = संसार के माता-पिता हैं, *कोसलपुर बासिन्ह सुखदाता* = अयोध्या में रहने वाले लोगों को सुख देते हैं, *जिन्ह* = जिन्होंने, *रघुनाथ चरन रति मानी* = राम जी के चरणों से प्रेम किया है, *तिन्ह की यह गति प्रगट भवानी* = उनको दर्शन का प्रत्यक्ष लाभ इस प्रकार मिलता है।

जो सारे संसार के माता-पिता हैं वे ही बालक बनकर लीलायें करके अयोध्यावासियों को सुख प्रदान कर रहे हैं। पर अयोध्या में जन्म लेकर राम को बाल रूप में देखने का सौभाग्य किसे प्राप्त होता है? तो शिव जी कहते हैं, हे पार्वती! जिन्हें राम के चरणों से प्रेम है। भक्त पहले सत्संग करते हैं, फिर नाम स्मरण करते हैं, नाम जपते-जपते भगवान से प्रेम होने लगता है। फिर हृदय में प्रभु के दर्शन होते हैं। यही भक्त अवतार के समय अयोध्या में जन्म लेकर राम की बाल लीलायें आँखों से साक्षात् देखते हैं।

राम से विमुख होकर कहाँ सुख? राम भजन से ही कल्याण

रघुपति बिमुख जतन कर कोरी। कवन सकइ भव बंधन छोरी ॥200:3॥
जीव चराचर बस कै राखे। सो माया प्रभु सों भय भाखे ॥200:4॥

भृकुटि बिलास नचावइ ताही। अस प्रभु छाड़ि भजिअ कहु काही ॥200:5॥
मन क्रम बचन छाड़ि चतुराई। भजत कृपा करिहहिं रघुराई ॥200:6॥

रघुपति बिमुख = राम जी से विमुख होकर, *जतन कर कोरी* = करोड़ों प्रयास भी कर ले, *कवन सकइ भव बंधन छोरी* = उन्हें बंधन से कौन मुक्त करा सकता है? *जीव चराचर* = चर व अचर जीवों को, *बस कै राखे* = जिसने अपने वश में कर रखा है, *सो माया* = वह माया, *प्रभु सों भय भाखे* = प्रभु राम से भय खाती है, *भृकुटि बिलास* = भौहों के इशारे से, *नचावइ ताही* = उस माया को नचाते हैं, *अस प्रभु छाड़ि* = ऐसे प्रभु को छोड़कर, *भजिअ कहु काही* = कहो किसका भजन करें? *मन क्रम बचन छाड़ि चतुराई* = मन; वचन व कर्म से चतुराई छोड़कर, *भजत* = भजन करते ही, *कृपा करिहहिं रघुराई* = राम जी की कृपा प्राप्त हो जाती है।

शिव जी, पार्वती जी को सिद्धांत की बात कहते हैं कि राम से जो विमुख हैं वे कितना भी प्रयास करें भव बंधन से छूट नहीं सकते हैं। जिस माया ने चर व अचर सबको अपने वश में कर रखा है, वह माया प्रभु राम के भृकुटियों के संकेत से नाचती है। माया जब देखती है कि यह व्यक्ति तो राम का भक्त है, तो उसे परेशान नहीं करती। जब माया परेशान नहीं करती तो व्यक्ति सुखी हो जाता है। इसे ही कहते हैं भव बंधन से छुटकारा। इसलिये व्यक्ति को चतुराई छोड़कर मन, वचन व कर्म से राम का भजन करना चाहिये। भजन करते ही उनकी कृपा प्राप्त होती है।

कभी गोद में, कभी पालने में झुलाकर माँ आनंद मग्न है

एहि बिधि सिसुबिनोद प्रभु कीन्हा। सकल नगरबासिन्ह सुख दीन्हा ॥200:7॥
लै उछंग कबहुँक हलरावै। कबहुँ पालने घालि झुलावै ॥200:8॥

एहि बिधि सिसुबिनोद प्रभु कीन्हा = इस प्रकार प्रभु राम ने शिशु लीला करके, *सकल नगरबासिन्ह सुख दीन्हा* = सारे नगरवासियों को सुख प्रदान किया। *लै उछंग कबहुँक हलरावै* = कभी गोद में लेकर हिलाकर झूला जैसे झुलाती हैं, *कबहुँ पालने घालि झुलावै* = कभी पालने में लिटाकर झूला झुलाती हैं।

प्रेम मगन कौसल्या निसि दिन जात न जान ।
सुत सनेह बस माता बालचरित कर गान ॥दोहा 200॥

प्रेम मगन कौसल्या = माँ कौसल्या प्रेम में मग्न हैं, *निसि दिन जात न जान* = रात व दिन कब बीत जाता है पता ही नहीं चलता है। *सुत सनेह बस माता* = पुत्र के स्नेह के कारण माता, *बालचरित कर गान* = उनके बाल चरित्रों को सबको सुनाती रहती हैं।

इस प्रकार बाल लीला करके भगवान राम ने सभी नगरवासियों को सुख प्रदान किया। माता कौशल्या राम को लेकर कभी गले लगा लेती हैं, कभी गोद में हिलाती हैं, कभी पालने में लिटाकर झूला झुलाती हैं। राम को दूध पिलाना, नहलाना, वस्त्र पहनाना, बालों को सँवारना, तैयार करना इत्यादि कार्यों में इतनी मग्न हैं कि उन्हें पता ही नहीं चलता कि कब दिन व्यतीत हो गया, कब रात चली गई। नगरवासियों को, राजमहल के लोगों को माता बालक राम की लीलायें सुनाती रहती हैं। वे प्रेम से, गद्गद् होकर सब बातें लोगों को बताती रहती हैं।

4. प्रभु राम के विराट् रूप का दर्शन

(दोहा 201 से 202)

माँ कौशल्या प्रभु की बाल लीलाओं में इतना मग्न हो गयीं कि वे उनके ब्रह्म रूप को भूल ही गईं। माँ ने पूर्वजन्म में वरदान माँगा था कि जब आप पुत्र बनकर आयें तब हमें आपके ब्रह्म रूप का भी स्मरण बना रहे, हम मोह में न पड़ें। इस प्रसंग में पुत्र बने राम माँ को सचेत करने के लिये लीला करके अपना विराट् रूप दिखाते हैं। उनके शरीर में अनेकों ब्रह्मांड, अनेकों ब्रह्मा, शिव, बहुत से पृथ्वी, सूर्य, तारे इत्यादि दिखने लगते हैं। सूक्ष्म ब्रह्मांड से लेकर माया का कार्य सब दिखाई देता है। माँ आश्चर्यचकित होती हैं, प्रभु फिर से शिशु बन जाते हैं। माँ प्रार्थना करती हैं कि तुम्हारी ये माया अब हमें कभी न घेर पाये। हम लोगों को तो बस इतनी प्रार्थना करनी है कि हे प्रभु! आपकी माया हमें इतना अधिक न घेर ले कि हम आपका स्मरण करना ही भूल जायें। राम नाम लेते रहने का अवसर तो मिलता रहे।

माँ राम को पालने में लिटाकर, पूजाघर में भोग चढ़ाकर, रसोई में गई

एक बार जननीं अन्हवाए। करि सिंगार पलनाँ पौढ़ाए ॥201:1॥
निज कुल इष्टदेव भगवाना। पूजा हेतु कीन्ह अस्नाना ॥201:2॥
करि पूजा नैबेद्य चढ़ावा। आपु गई जहँ पाक बनावा ॥201:3॥

एक बार जननीं = एक बार माता ने, *अन्हवाए* = पुत्र राम को स्नान कराया, *करि सिंगार* = शृंगार किया, *पलनाँ पौढ़ाए* = फिर पालने पर लिटा दिया, *निज कुल इष्टदेव भगवाना* = अपने कुल के इष्टदेव भगवान की, *पूजा हेतु* = पूजा करने के लिये, *कीन्ह अस्नाना* = स्नान किया, *करि पूजा* = पूजा की, *नैबेद्य चढ़ावा* = भोग चढ़ाकर, *आपु गई जहँ पाक बनावा* = स्वयं रसोई घर चली गयीं जहाँ भोजन बनता है।

एक बार कौशल्या माँ ने राम को स्नान कराकर, उन्हें अच्छी तरह से तैयार करके, पालने में लिटा दिया। फिर अपने कुल के इष्ट देव की पूजा-अर्चन के लिये स्वयं स्नान किया। कुल के इष्ट कौन हैं? राम ही इस कुल के इष्टदेव हैं। पूजाघर में भगवान की पूजा-अर्चन की, नैवेद्य चढ़ाया। फिर रसोई घर में चली गईं। नियम के अनुसार भगवान को भोग लगाकर वहाँ से हट जाते हैं या पर्दा लगा देते हैं। व्यक्ति की अनुपस्थिति में भगवान भोग स्वीकार करते हैं।

लौटकर देखा राम भोग खा रहे हैं, पालने में सो भी रहे हैं

बहुरि मातु तहवाँ चलि आई। भोजन करत देख सुत जाई ॥201:4॥
गै जननी सिसु पहिं भयभीता। देखा बाल तहाँ पुनि सूता ॥201:5॥
बहुरि आइ देखा सुत सोई। हृदयँ कंप मन धीर न होई ॥201:6॥

बहुरि मातु तहवाँ चलि आई = फिर माता वहीं पूजा वाले स्थान में लौट आई, *भोजन करत देख सुत जाई* = यहाँ देखा कि पुत्र राम भोग को खा रहा है, *गै जननी सिसु पहिं भयभीता* = माँ भयभीत होकर पुत्र के पास गई, *देखा बाल तहाँ पुनि सूता* = वहाँ भी पुत्र को पालने में सोता देखा, *बहुरि आइ देखा सुत सोई* = फिर पूजाघर में आयीं यहाँ वही पुत्र देखा, *हृदयँ कंप* = हृदय काँपने लगा, *मन धीर न होई* = मन में धैर्य नहीं हो रहा है।

माँ कौशल्या पुन: पूजाघर में गईं कि अब भगवान ने भोग ग्रहण कर लिया होगा, भोग उठा लायें। पर वहाँ माँ क्या देखती हैं? जो नैवेद्य भगवान को चढ़ाया था, वह पुत्र राम स्वयं बैठकर खाये जा रहा है। उन्होंने सोचा कि हमने

तो पुत्र को पालने में लिटाया था, ये यहाँ कैसे आ गये? तब माँ ने डरते हुए जाकर पालने को देखा, तो वहाँ पर राम पालने में सो रहे थे। फिर पूजा घर में आकर देखा तो वही पुत्र राम भोग खा रहे हैं। अब माँ कौशल्या का हृदय काँपने लगा, मन में धैर्य नहीं हो रहा है।

माँ को व्याकुल देख पुत्र राम मधुरता से मुस्कुरा दिये

इहाँ उहाँ दुइ बालक देखा। मतिभ्रम मोर कि आन बिसेषा ॥201:7॥
देखि राम जननी अकुलानी। प्रभु हँसि दीन्ह मधुर मुसुकानी ॥201:8॥

इहाँ = पूजा घर में, *उहाँ* = पालने पर, *दुइ बालक देखा* = दोनों जगह उसी बालक को देखकर, *मतिभ्रम मोर* = माँ को लगा कि मुझे भ्रम हो रहा, *कि आन बिसेषा* = या कोई अन्य विशेष कारण है, *देखि राम जननी अकुलानी* = राम को देखकर माँ व्याकुल हो गईं, *प्रभु हँसि दीन्ह मधुर मुसुकानी* = प्रभु राम मधुर मुस्कान में हँस दिये।

पूजा घर में व पालने पर, दोनों जगह अपने उसी पुत्र राम को देखकर माँ को लगा कि कहीं हमें भ्रम तो नहीं हो रहा है। हम सो तो नहीं रहे हैं? कोई और विशेष बात तो नहीं है? माया के कारण माँ को स्मरण नहीं आ रहा कि उनका पुत्र राम तो ब्रह्म भी है। वह दो क्या, अनेक शरीर धारण कर सकता है। यहाँ पर माया की प्रबलता दिखाते हैं कि जिसके यहाँ भगवान ने अवतार लिया, उसे भी माया भ्रम में डाल देती है। राम ने देखा माँ व्याकुल हैं, उन्हें कुछ समझ नहीं आ रहा है तो वे मुस्कुरा दिये। माँ कौशल्या जैसे ही सावधान हुई कि यह इतनी मधुरता से मुस्कुरा क्यों रहा है? फिर प्रभु राम ने क्या किया अगले दोहे में देखें।

राम ने अपना विराट् रूप दिखाया, रोम-रोम में अनेकों ब्रह्मांड हैं

देखरावा मातहि निज अद्भुत रूप अखंड ।
रोम रोम प्रति लागे कोटि कोटि ब्रह्मंड ॥दोहा 201॥

देखरावा मातहि = माता को दिखाया, *निज* = अपना, *अद्भुत रूप अखंड* = अद्‌भुत अखंड रूप, *रोम रोम प्रति* = प्रत्येक रोम में, *लागे* = लगे हुए हैं, *कोटि कोटि ब्रह्मंड* = करोड़-करोड़ ब्रह्मांड।

अगनित रबि ससि सिव चतुरानन। बहु गिरि सरित सिंधु महि कानन ॥202:1॥

अगनित = गिनती नहीं की जा सकती है इतने, *रबि ससि* = सूर्य व चन्द्रमा हैं, *सिव चतुरानन* = शिव जी व ब्रह्मा जी हैं, *बहु गिरि सरित सिंधु महि कानन* = बहुत से पर्वत; नदियाँ; समुद्र; पृथ्वी व वन हैं।

पुत्र राम, माँ कौशल्या के सामने विराट् रूप में प्रगट हो गये। उनके रोम रोम में अनेकों ब्रह्मांड दिखाई देने लगे। हमें जो पृथ्वी, आकाश, सूर्य, नक्षत्र, ग्रह, तारे आदि दिखाई देते हैं ये एक ब्रह्मांड है। विराट् रूप राम के शरीर के एक-एक रोये में माँ को इस प्रकार के अनेकों ब्रह्मांड दिखाई देने लगे। प्रत्येक ब्रह्मांड की रचना करने वाले ब्रह्मा, पालन करने वाले विष्णु व संहार करने वाले शिव भी अलग-अलग हैं, ये सब अनेकों प्रकार के दिखाई दे रहे हैं। ब्रह्म सदैव एक रहता है पर त्रिदेव अलग-अलग हैं। प्रभु राम के उस विराट् रूप में अनेक पर्वत, नदियाँ, समुद्र, पृथ्वी व वन दिख रहे हैं। कभी-कभी व्यक्ति को ब्रह्मांड का स्मरण करते रहना चाहिये, इससे बुद्धि व्यापक होती है। अन्यथा हम कुएँ के मेढ़क के समान उतने में ही सीमित रह जायेंगे।

काल, कर्म, स्वभाव के वश में जीव कैसे चक्कर काटता है?

काल कर्म गुन ग्यान सुभाऊ। सोउ देखा जो सुना न काऊ ॥202:2॥

काल = बहुत से काल हैं, *कर्म गुन ग्यान सुभाऊ* = बहुत से कर्म; गुण; ज्ञान व स्वभाव हैं, *सोउ देखा जो सुना न काऊ* = वे पदार्थ भी देखे जो कभी सुने नहीं थे।

गूढ़ से गूढ़ रहस्य को सरल भाषा में समझाना व उसे प्रत्यक्ष दिखा देने की तुलसीदास जी की विशेषता है। पहले स्थूल ब्रह्मांड को समझाया, अब सूक्ष्म का वर्णन करते हैं। माँ ने देखा कि जीव भिन्न-भिन्न कालों में कर्म के फल के अनुसार शरीर धारण करता है और अपने स्वभाव यानि वासनाओं के अनुसार फिर कर्म करता है। इस कर्म के फल के अनुसार फिर शरीर धारण करता है। इस प्रकार काल, कर्म व स्वभाव के वश में हुआ जीव बार-बार जन्मता-मरता चक्कर काटता रहता है। माँ ने यह भी देखा कि प्राणी एक शरीर से दूसरे शरीर में कैसे जाते हैं।

जीवों को नचाने वाली माया भक्तों को कैसे छोड़ती है?

देखी माया सब बिधि गाढ़ी। अति सभीत जोरें कर ठाढ़ी ॥202:3॥
देखा जीव नचावइ जाही। देखी भगति जो छोरइ ताही ॥202:4॥

देखी माया सब बिधि गाढ़ी = सब प्रकार से बलवान् माया को देखा, *अति सभीत* = जो बहुत भयभीत होकर, *जोरें कर ठाढ़ी* = हाथ जोड़े खड़ी थी, *देखा जीव* = जीव को देखा, *नचावइ जाही* = जिसे माया नचाती है, *देखी भगति* = भक्ति को देखा, *जो छोरइ ताही* = जो जीव को माया से छुड़ा देती है।

तुलसीदास जी क्रम से चलते हैं, पहले स्थूल ब्रह्मांड, फिर सूक्ष्म और अब माया का वर्णन करते हैं। ब्रह्मांड की रचना कैसे हुई? माया के द्वारा। सोचो! कितनी शक्तिशाली होगी? सूक्ष्म व स्थूल ब्रह्मांड से भी शक्तिशाली माया है। माँ ने राम के विराट् रूप में इतनी शक्तिशाली माया को, राम के सामने भयभीत होकर हाथ जोड़े हुए खड़े देखा। भगवान के सामने शक्तिहीन माया जीवों को कैसे नचाती है यह देखा। और माँ ने यह भी देखा कि जो लोग भगवान के भक्त हैं, उनकी तरफ तो माया देखती ही नहीं, उन्हें तो बिना चक्कर में फँसाये ही छोड़ देती है। भक्ति से व्यक्ति को माया से मुक्त होते हुए अपनी आँखों से माँ ने देखा।

रामचरितमानस में विराट् रूप का कई जगह वर्णन

प्रभु राम ने पहले सती को विराट् रूप दिखाया था। यहाँ पर माँ कौशल्या को दिखाते हैं। लंकाकाण्ड में, मंदोदरी ने विराट् रूप का वर्णन किया है जो ऋग्वेद के पुरुष-सूक्त से मिलता जुलता है। उत्तरकाण्ड में काकभुशुण्डि के प्रसंग में विराट् रूप का वर्णन आता है। तुलसीदास जी द्वारा वर्णित उपरोक्त सब प्रसंगों को मिलाकर देखें तो भगवान का विराट् रूप समझ में आयेगा।

माँ का शरीर रोमांचित, आँखें बंद कर चरणों में सिर झुकाया

तन पुलकित मुख बचन न आवा। नयन मूदि चरननि सिरु नावा ॥202:5॥

तन पुलकित = शरीर रोमांचित हो गया, *मुख बचन न आवा* = मुख से वाणी नहीं निकलती, *नयन मूदि* = आँखें बंद करके, *चरननि सिरु नावा* = चरणों में सिर नवाया।

ये सब देखकर माता कौशल्या पर क्या प्रभाव पड़ा? मुख से वाणी नहीं निकल रही है, आश्चर्यचकित होकर शरीर रोमांचित हो गया है। उन्होंने अपनी आँखें बन्द करके प्रभु राम के चरणों में सिर झुका दिया।

राम वापस शिशु बन गये, माँ को समझाकर कहा किसी से मत कहना

बिसमयवंत देखि महतारी। भए बहुरि सिसुरूप खरारी ॥202:6॥
अस्तुति करि न जाइ भय माना। जगत पिता मैं सुत करि जाना ॥202:7॥
हरि जननी बहुबिधि समुझाई। यह जनि कतहुँ कहसि सुनु माई ॥202:8॥

बिसमयवंत देखि महतारी = माँ को आश्चर्य में देखकर, *भए बहुरि सिसुरूप खरारी* = खर के शत्रु राम फिर से शिशु बन गये, *अस्तुति करि न जाइ* = माँ स्तुति भी नहीं कर पाती, *भय माना* = वे डर गयीं, *जगत पिता मैं सुत करि जाना* = कि हमने जगत् के माता-पिता को अपना पुत्र मान लिया, *हरि जननी बहुबिधि समुझाई* = राम ने माता को बहुत प्रकार से समझाया, *यह जनि कतहुँ कहसि सुनु माई* = फिर कहा कि हे माँ! यह बात किसी से कहना मत।

राम ने जब माँ को आश्चर्यचकित व व्याकुल देखा तब कोमल हृदय प्रभु राम वापस शिशु बन गये। अब शिशु रूप में राम को देखकर भी कौशल्या माँ क्यों भयभीत हैं? माँ को लगा मुझसे बहुत गलती हो गई है, मैं सारे जगत् के माता-पिता को अपना पुत्र समझ बैठी। इस भय के कारण वे स्तुति भी नहीं कर पा रही हैं। माता की यह दशा देखकर राम ने माँ को बहुत प्रकार से समझाकर बताया कि हमने तो अपने ब्रह्म स्वरूप का तुम्हें दर्शन करा दिया। अभी हम लीला कर रहे हैं, लीला के आनंद में मग्न रहते हुए भी ब्रह्म का स्मरण करते रहो। माँ से भगवान ने यह बात छिपाये रखने के लिये क्यों कहा? रावण का वध करने के लिये मनुष्य शरीर धारण किया है, जब तक उसका वध न हो ब्रह्म रूप को गुप्त रखना है।

माँ ने कहा– तुम्हारी माया हमें कभी भी चक्कर में न डाले

बार बार कौसल्या बिनय करइ कर जोरि ।
अब जनि कबहूँ ब्यापै प्रभु मोहि माया तोरि ॥दोहा 202॥

बार बार कौसल्या बिनय करइ कर जोरि = कौशल्या माँ हाथ जोड़कर बार-बार प्रार्थना करती हैं, *अब जनि कबहूँ ब्यापै* = अब कभी भी चक्कर में न डाले, *प्रभु* = हे प्रभु! *मोहि* = मुझे, *माया तोरि* = तुम्हारी यह माया।

प्रभु राम के समझाने के बाद कौशल्या माँ को थोड़ी हिम्मत आई और वे हाथ जोड़कर बार-बार विनती करने लगीं कि हे प्रभु! आपकी माया अब फिर कभी हमें चक्कर में न डाले। माँ की तरह हम सबको भी भगवान से यही प्रार्थना करनी है कि आपकी माया के चक्कर में कहीं हम आपके स्मरण को ही न भुला दें। हे प्रभु! अपनी माया से कह दो कि आपका स्मरण करते रहने दे।

5. बाल लीलायें, मुंडन, जनेऊ, शिक्षा, राज्य के कार्य

(दोहा 203 से 205)

प्रभु राम शिशु से बालक बन गये। आयु जब तीन वर्ष की हो गयी तो मुंडन संस्कार करवाया गया। अब माँ की गोद से राजमहल के आँगन में चारों भाई खेलने लगे हैं। आयु बढ़ने के साथ लीला का विस्तार होता जाता है। राजमहल के लोग, अयोध्यावासी आनंदित होते हैं। 10 वर्ष की आयु में जनेऊ पहनाकर, अनुशासन में रहने का संकल्प दिलवाया गया। अब गुरु के यहाँ जाकर सब भाई विधिवत् शिक्षा ग्रहण करते हैं। वापस जब राजमहल आते हैं तो पाई गई शिक्षा का अभ्यास करने के लिये राजाओं के खेल खेलते हैं। वन में जाकर शिकार करके कठिन परिस्थितियों का सामना करने का अभ्यास करते हैं। अब इतने बड़े हो गये कि पिता के राज्य सँभालने के कार्य में सहयोग करने लगे। तुलसीदास जी फिर याद दिला देते हैं कि ये ब्रह्म ही हैं, पर मनुष्य लीला कर रहे हैं, भक्तों के लिये, हम सबके लिये, इसे देखकर आनंदित हों, जीवन में इसे अपनायें।

चारों भाई अब बड़े होकर राजभवन के अंदर घूमने लगे

बालचरित हरि बहुबिधि कीन्हा। अति अनंद दासन्ह कहँ दीन्हा ॥203:1॥
कछुक काल बीतें सब भाई। बड़े भए परिजन सुखदाई ॥203:2॥

बालचरित हरि बहुबिधि कीन्हा = राम जी ने बहुत प्रकार से बाल लीलायें करके, *अति अनंद दासन्ह कहँ दीन्हा* = अपने भक्तों को बहुत आनंद प्रदान

किया, *कछुक काल बीतें* = कुछ समय व्यतीत हो जाने पर, *सब भाई बड़े भए* = चारों भाई बड़े हो गये, *परिजन सुखदाई* = राजभवन के लोगों को सुख देने लगे।

इस प्रकार प्रभु राम ने तरह-तरह की बाल लीलायें की। और अपने भक्तों को बहुत आनंद प्रदान किया। राज भवन में कार्य करने वाले दास भी भगवान के भक्त ही हैं। पहले कौशल्या माँ की गोद में खेले, फिर राजभवन के आँगन में, और अब बड़े हो गये तो पूरे राजभवन में चारों भाई घूमते हैं। जैसे-जैसे बड़े होते जाते हैं लीला का विस्तार होता जाता है। परिजन मायने राजभवन में कार्य करने वाले लोग। पुरजन मायने अयोध्यावासी। व्यक्ति को ऐसे कार्य करने चाहिये जिससे दूसरों को भी आनंद मिले।

मुंडन संस्कार करवाया

चूड़ाकरन कीन्ह गुरु जाई। बिप्रन्ह पुनि दछिना बहु पाई ॥203:3॥

चूड़ाकरन कीन्ह गुरु जाई = गुरु जी ने जाकर मुंडन संस्कार करवाया, *बिप्रन्ह पुनि दछिना बहु पाई* = विप्रों को बहुत दक्षिणा प्राप्त हुई।

चूड़ाकरन मायने मुंडन संस्कार। अब बालक राम तीन वर्ष के हो गये। गुरु वसिष्ठ ने जाकर मुंडन संस्कार करवा दिया। यहाँ पर जाई शब्द क्यों आया? मतलब है कि वसिष्ठ जी, राज परिवार के लोग, अन्य लोग किसी स्थान पर गये, वहाँ जाकर मुंडन संस्कार करवाया। मुंडन संस्कार घर में नहीं हुआ। वसिष्ठ जी के कहने के अनुसार करवाया गया, उन्होंने खुद नहीं किया। इन सब कार्यों में विप्रों को दक्षिणा दी जाती है, वह सब भी अच्छी प्रकार दी गई।

महाराज दशरथ के आँगन में चारों भाई लीला करते हैं

परम मनोहर चरित अपारा। करत फिरत चारिउ सुकुमारा ॥203:4॥
मन क्रम बचन अगोचर जोई। दसरथ अजिर बिचर प्रभु सोई ॥203:5॥

परम मनोहर चरित अपारा = बहुत मनोहर अपार चरित्र, *करत फिरत चारिउ सुकुमारा* = चारो सुंदर राजकुमार चलते फिरते करने लगे, *मन क्रम बचन* =

मन; कर्म व वाणी से, *अगोचर जोई* = जो समझ में आने वाले नहीं हैं, *दसरथ अजिर* = महाराज दशरथ के आँगन में, *बिचर प्रभु सोई* = वही प्रभु विचरण कर रहे हैं।

अब चारों भाई इतने बड़े हो गये हैं कि चलने फिरने लगे हैं। महाराज दशरथ के आँगन में चारों खेलते रहते हैं। इनके अपार मनोहर चरित्र हैं। यहाँ पर कहते हैं कि मन, वचन व कर्म से जो पकड़ में आने वाला नहीं है, जो निर्गुण, निराकार, अनन्त चैतन्य है वही ब्रह्म अवतार लेकर महाराज दशरथ के आँगन में बाल लीलायें करता हुआ विचरण कर रहा है।

भोजन के लिये बुलाने पर ठुमक-ठुमक कर भाग जाते हैं

भोजन करत बोल जब राजा। नहिं आवत तजि बाल समाजा ॥203:6॥
कौसल्या जब बोलन जाई। ठुमुकु ठुमुकु प्रभु चलहिं पराई ॥203:7॥

भोजन करत बोल जब राजा = भोजन करते समय जब राजा दशरथ बुलाते हैं, *नहिं आवत* = तब वे नहीं आते हैं, *तजि बाल समाजा* = बाल सखाओं को छोड़कर, *कौसल्या जब बोलन जाई* = माँ कौशल्या जब बुलाने जाती हैं, *ठुमुकु ठुमुकु* = फुदक-फुदक कर, *प्रभु चलहिं पराई* = प्रभु भागने लगते हैं।

तुलसीदास जी एक घटना सुनाते हैं। एक बार भोजन करने के समय जब महाराज दशरथ भोजन कक्ष में पहुँचे, तो उन्होंने पुत्रों को अपने साथ में भोजन करने के लिये बुलवाया। प्रभु राम अपने सभी भाइयों सहित अयोध्या के छोटे बालकों के साथ खेल रहे हैं, तो वे बुलाने से आते नहीं हैं। यह बाल स्वभाव है कि खाने से अधिक खेल की तरफ ध्यान रहता है। जब माँ कौशल्या बुलाने जाती हैं तो फुदकते हुए यहाँ-वहाँ भागते हैं, उनकी पकड़ में ही नहीं आते हैं।

वेद व शिव के पकड़ में न आने वाले को माँ ने पकड़ लिया

निगम नेति सिव अंत न पावा। ताहि धरै जननी हठि धावा ॥203:8॥
धूसर धूरि भरें तनु आए। भूपति बिहसि गोद बैठाए ॥203:9॥

निगम नेति = वेद यह कहकर कि ब्रह्म इतने ही नहीं हैं उन्हें पकड़ नहीं पाते, *सिव अंत न पावा* = शिव जी भी जिनका अंत नहीं पाते यानि पूरी तरह पकड़ नहीं पाते, *ताहि धरै* = उन्हें पकड़ने के लिये, *जननी हठि धावा* = माँ यह सोचकर दौड़ती हैं कि हम तो इन्हें पकड़ ही लेंगे, *धूसर धूरि भरें तनु आए* = खेलते-खेलते शरीर में धूल लिपटे हुए आए, *भूपति बिहसि गोद बैठाए* = राजा ने हँसकर उन्हें गोद में बैठा लिया।

वेद भी जिस ब्रह्म के लिये कहते हैं यह नहीं, यह नहीं, मायने वे वेद की पकड़ से बाहर हैं। शिव जी भी जिस ब्रह्म राम का ध्यान करते रहते हैं पर वे भी कहते हैं कि ये मेरी पकड़ में पूरी तरह नहीं आये हैं। उन्हीं राम को पकड़ने के लिये माँ यह सोचकर दौड़ती हैं कि हम तो इन्हें पकड़ ही लेंगे। जब कौशल्या माँ ने राम का हाथ पकड़ ही लिया तो वे लेट जाते हैं, उठते ही नहीं। जब माँ उन्हें उठाती हैं तब तक उनके शरीर में धूल मिट्टी लग जाती है। राम को उठाकर माँ दशरथ जी के पास ले आती हैं। महाराज दशरथ ने हँस कर धूल-धूसरित राम को अपनी गोद में बैठा लिया।

चावल दही मुँह में लपटाये मौका पाकर राम भाग जाते हैं

भोजन करत चपल चित इत उत अवसरु पाइ ।
भाजि चले किलकत मुख दधि ओदन लपटाइ ॥दोहा 203॥

भोजन करत = भोजन करते समय, *चपल चित* = मन चंचल है, *इत उत अवसरु पाइ* = इधर-उधर देखकर मौका पाते ही, *भाजि चले* = भाग जाते हैं, *किलकत* = किलकारी मारते हुए, *मुख* = मुँह में, *दधि ओदन* = दही व चावल, *लपटाइ* = लपटाये हुए।

भोजन करते हुए बालक राम का मन खाने की ओर नहीं है। वे इधर-उधर, कभी खेलते हुए बच्चे की ओर देखते हैं, कभी कहीं और देखते हैं और जहाँ भी जरा सा मौका मिला तो खाते समय उनके मुँह में जो दही-चावल लगा हुआ है, वैस ही बिना मुँह धोए, दही-चावल लिपटाए हुए, खेलने के लिये भाग जाते हैं।

बालचरित्र न सुनने वाले आनंद से वंचित रहते हैं

बालचरित अति सरल सुहाए। सारद सेष संभु श्रुति गाए ॥204:1॥
जिन्ह कर मन इन्ह सन नहिं राता। ते जन बंचित किए बिधाता ॥204:2॥

बालचरित अति सरल सुहाए = बहुत ही सरल व सुंदर बाल लीलायें, *सारद सेष संभु श्रुति गाए* = सरस्वती जी; शेषनाग; शिव जी व वेदों ने गाये हैं, *जिन्ह कर मन* = जिनका मन, *इन्ह सन नहिं राता* = इन लीलाओं में नहीं लगता, *ते जन बंचित किए बिधाता* = उन लोगों को विधाता ने आनंद से वंचित कर दिया है।

प्रभु राम की बाल लीलाएँ नित्य होती रहती हैं। कुछ लीलाओं का वर्णन यहाँ किया है, कुछ का उत्तरकाण्ड में काकभुशुण्डि जी करते हैं। तुलसीदास जी कहते हैं कि इन लीलाओं में बनावटीपन नहीं है। प्रभु इतने सहज भाव से लीला करते हैं कि जैसे वास्तव में बालक ही हों, इसलिये देखने वालों को सुंदर लगती है। उन्हें आनंद आता है। इन बालचरित्रों का सरस्वती जी, शेषनाग, शिव जी व वेदों ने भी बहुत वर्णन किया है। जिनको इन बाल लीलाओं में प्रेम नहीं है, इन्हें सुनने का जिनका मन नहीं करता वे लोग मानो विधाता द्वारा आनंद से वंचित कर दिये गये हों। बाल लीलाओं को सुनना महत्त्वपूर्ण साधना है।

चारों भाइयों का जनेऊ संस्कार किया गया

भए कुमार जबहिं सब भ्राता। दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता ॥204:3॥

भए कुमार जबहिं सब भ्राता = ज्यों ही सब भाई कुमार अवस्था के हुए, *दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता* = त्यों ही गुरु; माता व पिता ने उनका यज्ञोपवीत संस्कार कर दिया।

बालक राम अब किशोर हो गये। उनकी आयु लगभग 11 वर्ष की हो गयी। माता-पिता व गुरु ने चारों भाइयो को जनेऊ पहना दिया। इसे यज्ञोपवीत संस्कार कहते हैं। इस संस्कार का आशय है कि अब ये बालक के समान जैसा चाहे वैसा जीवन नहीं जियेंगे, इन्हें एक अनुशासन में रहना

होगा। एक नियम के अनुसार जीवन जियेंगे व गुरुकुल में जाकर शिक्षा प्राप्त करेंगे। यज्ञोपवीत अनुशासन की प्रतिज्ञा है। गुरु के आदेश का पालन, माता-पिता के आदेश का पालन करेंगे। अनुशासनहीन व्यक्ति को शिक्षा देना मुश्किल है।

गुरु के घर पढ़ने जाते हैं, बहुत कम समय में सब सीख लिया

गुरगृहँ गए पढ़न रघुराई। अलप काल बिद्या सब आई ॥204:4॥

गुरगृहँ गए पढ़न रघुराई = राम जी गुरु के घर पढ़ने के लिये गये, *अलप काल* = थोड़े ही समय में, *बिद्या सब आई* = उनको सब विद्याएँ आ गयीं।

उस समय बालकों की शिक्षा 10 वर्ष के बाद शुरू होती थी। पढ़ने के लिये गुरुकुल में जाना होता था। वहीं रहकर सब पढ़ते थे। प्रभु राम अपने सभी भाइयों सहित गुरु वसिष्ठ के यहाँ जाते हैं। गुरु ने उन्हें युद्ध करना, शासन चलाना, संगीत, धनुष विद्या, शास्त्रों का ज्ञान इत्यादि सिखाया। एक बार गुरु ने जो बता दिया उसे ये तुरंत सीख लेते हैं। इस प्रकार बहुत ही कम समय में सारी विद्यायें सीख लीं। रामचरितमानस की यह चौपाई सिद्ध मंत्र भी है, ऐसी मान्यता है कि विद्यार्थी यदि इसका पाठ करते रहें तो वे कम समय में ही ज्यादा सीख सकते हैं।

प्रभु राम भी गुरु से ज्ञान प्राप्त करते हैं, यही नियम है

जाकी सहज स्वास श्रुति चारी। सो हरि पढ़ यह कौतुक भारी ॥204:5॥

जाकी सहज स्वास = जिनका स्वाभाविक श्वास ही, *श्रुति चारी* = चारो वेद हों, *सो हरि पढ़* = वही राम पढ़ें, *यह कौतुक भारी* = यह बहुत बड़ा आश्चर्य है।

सारे ज्ञान का भंडार चारो वेद हैं, ये वेद ही प्रभु राम की सहज श्वास हैं। वेद भगवान से भिन्न नहीं हैं। जो राम स्वयं ज्ञानी हैं, ज्ञानस्वरूप हैं, वह कौन सा नया ज्ञान प्राप्त कर लेंगे। पर राम अपने गुरु वसिष्ठ के पास अनुशासन में रहकर, पढ़कर, यह शिक्षा दे रहे हैं कि ज्ञान को गुरु से ही प्राप्त करना है।

शिक्षा से विनम्रता, कार्यकुशलता, गुण व शील आते हैं

बिद्या बिनय निपुन गुन सीला। खेलहिं खेल सकल नृप लीला ॥204:6॥

बिद्या = शिक्षा प्राप्त करने से, *बिनय* = विनम्रता, *निपुन* = कार्यकुशलता, *गुन* = गुण, *सीला* = शील आता है, *खेलहिं खेल सकल नृप लीला* = राजाओं की लीलाओं के सभी खेल खेलते हैं।

विद्या प्राप्त करने के बाद व्यक्ति में चार बातें आनी चाहिये 1. विनम्रता यानि अहंकार न हो। 2. निपुणता– किसी भी कार्य को ठीक तरीके से करने की क्षमता आनी चाहिये। 3. गुन– व्यक्ति के अंदर अच्छे गुण आने चहिये। 4. शीलता आये। शिक्षा प्राप्त करने के बाद उसका अभ्यास भी शुरू करते हैं। राजाओं के खेल खेलते हैं। जैसे राम राजा बन गये, किसी को मंत्री बना दिया, कोई सेनापति बन गया, सेना तैयार कर दी, खेल-खेल में युद्ध का अभ्यास करने लगे।

धनुष बाण खेलते हुए जहाँ से निकलते हैं, सब देखते रह जाते हैं

करतल बान धनुष अति सोहा। देखत रूप चराचर मोहा ॥204:7॥
जिन्ह बीथिन्ह बिहरहिं सब भाई। थकित होहिं सब लोग लुगाई ॥204:8॥

करतल = हाथों में, *बान धनुष* = बाण व धनुष, *अति सोहा* = बहुत सुंदर लग रहा है, *देखत रूप चराचर मोहा* = उनके इस रूप को देखकर चर व अचर मोहित हो जाते हैं, *जिन्ह बीथिन्ह* = जिन गलियों में, *बिहरहिं सब भाई* = खेलते हुए निकलते हैं, *थकित होहिं* = देखते ही रह जाते हैं, *सब लोग लुगाई* = अयोध्या के सभी नर व नारी।

कोसलपुर बासी नर नारि बृद्ध अरु बाल ।
प्रानहु ते प्रिय लागत सब कहुँ राम कृपाल ॥दोहा 204॥

कोसलपुर बासी नर नारि बृद्ध अरु बाल = अयोध्या में रहने वाले पुरुष, स्त्रियाँ, बुजुर्गों और बालकों को, *प्रानहु ते प्रिय लागत सब कहुँ राम कृपाल* = सभी को कृपालु राम जी प्राणों से भी प्रिय लगते हैं।

तुलसीदास जी कहते हैं कि हाथों में धनुष-बाण धारण करने के बाद राम और सुंदर लगने लगे। चारों भाई राजाओं का खेल खेलते हुए अयोध्या की गलियों से जब निकलते हैं तो इनकी सुंदरता को देखकर लोग टकटकी लगाये देखते ही रह जाते हैं। नृप-लीला में यह भी आता है कि शहर में घूमो, लोगों से पूछो कि कोई तकलीफ तो नहीं है, समस्या तो नहीं हैं, क्योंकि इन्हें ही आगे प्रजा का पालन करना है। अयोध्या में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को प्रभु राम दर्शन देकर उन पर बहुत कृपा करते हैं। ऐसे कृपालु राम को अयोध्या के लोग अपने प्राणों से ज्यादा प्यार करने लगते हैं।

वन में शिकार खेलते हैं, पशु मरकर मुक्त हो जाते हैं

बंधु सखा सँग लेहिं बोलाई। बन मृगया नित खेलहिं जाई ॥205:1॥
पावन मृग मारहिं जियँ जानी। दिन प्रति नृपहि देखावहिं आनी ॥205:2॥
जे मृग राम बान के मारे। ते तनु तजि सुरलोक सिधारे ॥205:3॥

बंधु सखा = भाइयों और मित्रों को, *सँग लेहिं बोलाई* = बुलाकर साथ में लेकर, *बन मृगया नित खेलहिं जाई* = वन में रोज शिकार खेलने जाते हैं, *पावन मृग* = पवित्र पशु, *मारहिं जियँ जानी* = समझकर उनको मार देते हैं, *दिन प्रति नृपहि देखावहिं आनी* = प्रतिदिन शिकार को लाकर दशरथ जी को दिखाते हैं, *जे मृग* = जो पशु, *राम बान के मारे* = प्रभु राम के बाण से मरते हैं, *ते तनु तजि* = वे शरीर छोड़कर, *सुरलोक सिधारे* = देवलोक को चले जाते हैं।

क्षत्रिय होने के कारण वन में शिकार करना धर्म है। सभी भाइयों व मित्रों को साथ लेकर प्रतिदिन शिकार के लिये वन में जाते हैं। पशु को मारकर उसे खाने के लिये प्रभु राम शिकार नहीं करते, बल्कि एक तरह से यह युद्ध का अभ्यास है। वन में घोड़े दौड़ना, पैदल चलना, शेर का सामना करना, भालू का सामना करना, ये सब अभ्यास प्रतिदिन करते हैं। यहाँ पर मृग से आशय मात्र हिरण से नहीं है, बल्कि जंगली पशुओं से है। पशु के लिये पावन शब्द क्यों प्रयोग किया? आशय है पशु ने पूर्व जन्म में अच्छे कर्म किये हैं, पर किसी पाप के कारण पशु होना पड़ा है। पशु का जीवन व्यतीत हो गया है, मुक्ति का समय आ गया है। प्रभु राम के दर्शन से तो सबको लाभ मिलना है। पाप क्षीण होने ही हैं। प्राणी को स्वर्ग का अधिकारी बनना है। इसलिये जो पशु राम के

बाण से मरते हैं वे शरीर त्याग करके स्वर्ग चले जाते हैं। इन शिकारों को जब लाकर दशरथ जी को दिखाते हैं तो वे कहते हैं, हाँ वीरता का कार्य किया है।

राम सदैव सबको सुखी करने की व्यवस्था करते रहते हैं

अनुज सखा सँग भोजन करहीं। मातु पिता अग्या अनुसरहीं ॥205:4॥
जेहि बिधि सुखी होहिं पुर लोगा। करहिं कृपानिधि सोइ संजोगा ॥205:5॥
बेद पुरान सुनहिं मन लाई। आपु कहहिं अनुजन्ह समुझाई ॥205:6॥

अनुज सखा = छोटे भाइयों और मित्रों, *सँग* = के साथ, *भोजन करहीं* = भोजन करते हैं, *मातु पिता अग्या अनुसरहीं* = माता-पिता की आज्ञा का पालन करते हैं, *जेहि बिधि सुखी होहिं पुर लोगा* = जिस प्रकार नगर के लोग सुखी हों, *करहिं कृपानिधि सोइ संजोगा* = कृपानिधान राम वैसी ही व्यवस्था बनाते रहते हैं, *बेद पुरान सुनहिं मन लाई* = मन लगाकर वेद व पुराण सुनते हैं, *आपु कहहिं अनुजन्ह समुझाई* = फिर स्वयं छोटे भाइयों को समझाकर कहते हैं।

सुबह वन को निकले, दोपहर तक घर वापस आ गये। फिर क्या करते हैं? छोटे भाइयों व मित्रों के साथ दोपहर का भोजन करते हैं। मिलकर भोजन करने से आपस में प्रेम बढ़ता है। शाम को नियमित वेद व पुराण का श्रवण करते हैं। अपने भाइयों को कथा सुनाते रहते हैं। इनसे सही दिशा में चलने की प्रेरणा मिलती है। कुसंग से व्यक्ति बचा रहता है। प्रभु राम सामाजिक आयोजन, सभा इत्यादि ऐसी व्यवस्था बनाते रहते हैं जिनसे अयोध्यावासी सदैव प्रसन्न रहें।

सुबह माता-पिता गुरु को प्रणाम करके कार्य करते हैं

प्रातकाल उठि कै रघुनाथा। मातु पिता गुरु नावहिं माथा ॥205:7॥
आयसु मागि करहिं पुर काजा। देखि चरित हरषइ मन राजा ॥205:8॥

प्रातकाल उठि कै रघुनाथा = सुबह उठकर राम जी, *मातु पिता गुरु नावहिं माथा* = माता; पिता व गुरु को प्रणाम करते हैं, *आयसु मागि* = उनकी आज्ञा माँगकर, *करहिं पुर काजा* = नगर का कार्य करते हैं, *देखि चरित* = उनका चरित्र देखकर, *हरषइ मन राजा* = राजा मन में हर्षित होते रहते हैं।

प्रात:काल राम उठ कर सबसे पहले माता, पिता व गुरु को प्रणाम करते हैं। यह सभ्यता का सूचक है, छोटे बड़ों का सम्मान करते हैं। महाराज दशरथ से पूछकर ही नगर का कार्य करते हैं। हमें भी जीवन में इसी प्रकार के व्यवहार का अभ्यास करना चाहिये। महाराज दशरथ राम के ये सब चरित्र देखकर बहुत हर्षित होते हैं। सदाचारी पुत्र होना माता-पिता के लिये बहुत सुखकारक होता है।

राम के ब्रह्म वाले लक्षण तुलसीदास जी याद करा देना चाहते हैं

ब्यापक अकल अनीह अज निर्गुन नाम न रूप ।
भगत हेतु नाना बिधि करत चरित्र अनूप ॥दोहा 205॥

ब्यापक = सब जगह व्याप्त हैं, फिर भी शरीर धारण किये हैं, *अकल* = जिसका विभाजन न हो मायने अखंड है पर चार भाइयों के रूप में विभाजित होकर विद्यमान हैं, *अनीह* = जिसकी कोई कामना नहीं है; वह कामना कर रहा है कि नगर वासी प्रसन्न हों; माता-पिता प्रसन्न हों, *अज* = जो जन्म नहीं लेता परंतु अयोध्या में जन्म लिया है, *निर्गुन* = गुणों से परे है पर यहाँ सगुण हो गया है, *नाम* = उस ब्रह्म का कोई नाम नहीं है पर उनका नाम राम रख दिया गया है, *रूप* = उसका कोई निश्चित आकार नहीं है, पर यहाँ मनुष्य के आकार में हैं, *भगत हेतु नाना बिधि करत चरित्र अनूप* = भक्तों के हित के लिये वे तरह-तरह के अनुपम लीलायें करते रहते हैं।

बाल लीलाओं में पग-पग पर प्रभु राम के ब्रह्म लक्षणों का तुलसीदास जी इस प्रकार वर्णन करते हैं, जिससे यह सब हमारी बुद्धि में ठीक से बैठ जाये। इसका यहीं पर अभ्यास करा देते हैं। कथा जब आगे बढ़ेगी तब इतना वर्णन नहीं मिलेगा। जब भी पूजा करें, भगवान की मूर्ति को देखें तो बीच-बीच में यह स्मरण कर लें कि जो ब्रह्म सब जगह व्याप्त है उसी ने मूर्ति का रूप धारण किया है। इस ग्रंथ का पाठ करते समय यह भी स्मरण रखें कि तुलसीदास जी ने कपोल-कल्पित गप्प नहीं लिखी है। उन्होंने सृष्टि को, वेदांत दर्शन, अद्वैत वेदांत दर्शन, विशिष्ट अद्वैत दर्शन को गंभीरता से लेकर बहुत सुंदर तरीके से समझाया है। इसको ठीक से समझकर जीवन में उतारने का अभ्यास करें।

6. विश्वामित्र जी राम-लक्ष्मण को लेने आते हैं

(दोहा 206 से 208)

प्रभु राम युवा अवस्था में प्रवेश करते हैं। विश्वामित्र जी महान् मुनि व ज्ञानी हैं। वन में उनका पवित्र आश्रम है, जहाँ पर मुनि लोग यज्ञ, जप, योग इत्यादि साधनायें करते हैं। ताड़का, मारीच, सुबाहु इत्यादि राक्षस उन्हें बहुत परेशान करते हैं। विश्वामित्र जी ने ध्यान करके जब देखा कि प्रभु राम ने निशाचरों के वध के लिये अयोध्या में अवतार ले लिया है तो उनको लाने के लिये अयोध्या पहुँचते हैं। महाराज दशरथ पहले मना कर देते हैं। वसिष्ठ जी के समझाने पर राम-लक्ष्मण को विश्वामित्र को सौंप देते हैं। इस प्रसंग से प्रभु राम के अवतार की माधुर्य रूप की कथा समाप्त होती है। आगे ऐश्वर्य रूप की कथा होगी।

श्रीराम युवा हो गये हैं, आगे की कथा ध्यान से सुनो

यह सब चरित कहा मैं गाई। आगिलि कथा सुनहु मन लाई ॥206:1॥

यह सब चरित कहा मैं गाई = मैंने बाल लीला तक के चरित्र कहे, *आगिलि कथा सुनहु मन लाई* = अब मन लगाकर आगे की कथा सुनो।

स्मरण करें, कैलास में रामकथा शिव जी पार्वती जी को सुना रहे हैं। उसे ही प्रयाग में याज्ञवल्क्य जी भरद्वाज जी को सुना रहे हैं। वही कथा तुलसीदास जी हम सबको सुना रहे हैं। अभी तक राम के अवतार, शिशु लीला, बाल लीला व किशोर अवस्था तक के चरित्रों की कथा हो गयी। अब युवा अवस्था में प्रवेश कर गये हैं। उम्र लगभग 16 वर्ष की है। आगे की कथा मन लगाकर सुनें।

विश्वामित्र जी मुनि व ज्ञानी हैं, वन में आश्रम में रहते हैं

बिस्वामित्र महामुनि ग्यानी। बसहिं बिपिन सुभ आश्रम जानी ॥206:2॥

बिस्वामित्र महामुनि ग्यानी = विश्वामित्र महान् मुनि व ज्ञानी हैं, *बसहिं बिपिन* = वे वन में वास करते हैं, *सुभ आश्रम जानी* = पवित्र आश्रम जानकर।

यहाँ से विश्वामित्र जी की कथा शुरू होती है। पहले उनका परिचय देते हैं। मुनि वह है जो आध्यात्मिक साधना करे, मन पर नियंत्रण रखे, रहस्यों का

चिंतन व मनन करे, अनुसंधान करे, जीवन पर विचार करे। विश्वामित्र जी ने धैर्य पूर्वक इसी मार्ग पर चलकर पूर्णता को प्राप्त कर लिया है। इसलिये वे महामुनि हैं। मुनि ही आगे चलकर ऋषि बन जाते हैं। ये महान् ज्ञानी भी हैं। ये पहले क्षत्रिय राजा थे। बाद में तपस्या की तो उन्हें सारा विश्व ही मित्र लगने लगा तब इनका नाम विश्वामित्र हो गया। ये वन में जिस आश्रम में रहते हैं वहाँ आध्यात्मिक वातावरण के कारण शुद्धता व पवित्रता है।

निशाचर यज्ञ को विध्वंस कर मुनियों को दुःख देते हैं

जहँ जप जग्य जोग मुनि करहीं। अति मारीच सुबाहुहि डरहीं ॥206:3॥
देखत जग्य निसाचर धावहिं। करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं ॥206:4॥

जहँ जप जग्य जोग मुनि करहीं = उनके आश्रम में मुनि लोग मंत्र जप; यज्ञ; योग करते हैं, *अति मारीच सुबाहुहि डरहीं* = वहाँ पर मारीच व सुबाहु नाम के राक्षसों का बहुत डर था, *देखत जग्य निसाचर धावहिं* = यज्ञ को देखते ही निशाचर दौड़ पड़ते थे, *करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं* = वे उपद्रव मचाकर मुनियों को दुःख पहुँचाते थे।

विश्वामित्र जी के आश्रम में मुनि लोग जप, यज्ञ, योग, साधना करते हैं। किसी भी आश्रम में ये सब होना चाहिये तभी वह आश्रम है। रावण तो लंका में रहता था पर सब जगह उसने निशाचर नियुक्त कर रखे थे, जो वैदिक संस्कृति के विनाश में लगे थे। उत्तर भारत में बिहार राज्य की तरफ रावण ने मारीच, सुबाहु व ताड़का को नियुक्त कर रखा था। जहाँ इन को पता चले कि यज्ञ हो रहा है वहाँ पहुँचकर यज्ञ को विध्वंस कर, सामग्री छीन लेते, उपद्रव करते और मुनि लोग को परेशान करते थे। पर विश्वामित्र जी निशाचरों के कारण आश्रम छोड़कर भागे नहीं।

विश्वामित्र जी ने ध्यान में देखा, राम अवतार हो गया है

गाधितनय मन चिंता ब्यापी। हरि बिनु मरहिं न निसिचर पापी ॥206:5॥
तब मुनिबर मन कीन्ह बिचारा। प्रभु अवतरेउ हरन महि भारा ॥206:6॥

गाधितनय मन = गाधि के पुत्र विश्वामित्र जी के मन में, *चिंता ब्यापी* = बहुत चिंता छा गयी, *हरि बिनु मरहिं न निसिचर पापी* = उन्हें लगा बिना भगवान के

ये पापी राक्षस नहीं मरेंगे, *तब मुनिबर मन कीन्ह बिचारा* = तब मुनि ने मन में विचार करके देखा कि, *प्रभु अवतरेउ* = भगवान ने अवतार ले लिया है, *हरन महि भारा* = पृथ्वी का भार दूर करने के लिये।

विश्वामित्र जी के पिता का नाम गाधि था इसलिये यहाँ 'गाधितनय' कहा है। इनके दादा का नाम कुश था। कुश वंश में पैदा हुए इसलिये कौशिक भी कहलाते हैं। विश्वामित्र जी के मन में चिंता छा गई कि इन निशाचरों से कैसे छुटकारा पाया जाये! फिर उन्हें लगा कि ये तो भगवान के मारने से ही मरेंगे। मुनि ने ध्यान में देखा कि निशाचरों को मारने के लिये भगवान ने अवतार ले लिया है। वैसे विश्वामित्र जी समर्थ थे, वे चाहते तो निशाचरों को श्राप देकर भस्म कर देते। पर उन्होंने भगवान द्वारा ही इन्हें मरवाना उचित समझा। हमारे अंदर भी बहुत से निशाचर आज भी हैं, जो हमें परेशान किये रहते हैं। इनसे निपटने के लिये भगवान का ही सहारा लेना चाहिये। उन्हीं का स्मरण करें।

विश्वामित्र जी राम-लक्ष्मण को लाने अयोध्या पहुँचे

एहूँ मिस देखौं पद जाई। करि बिनती आनौं दोउ भाई ॥206:7॥
ग्यान बिराग सकल गुन अयना। सो प्रभु मैं देखब भरि नयना ॥206:8॥

एहूँ मिस = इसी बहाने, *देखौं पद जाई* = उनके चरणों के दर्शन करेंगे, *करि बिनती आनौं दोउ भाई* = विनती करके दोनों भाइयों को ले आयेंगे, *ग्यान बिराग सकल गुन अयना* = ज्ञान; वैराग्य व सकल गुणों के धाम, *सो प्रभु* = ऐसे प्रभु को, *मैं देखब भरि नयना* = मैं आँखें भरकर दर्शन करूँगा।

बहुबिधि करत मनोरथ जात लागि नहिं बार ।
करि मज्जन सरऊ जल गए भूप दरबार ॥दोहा 206॥

बहुबिधि करत मनोरथ = बहुत प्रकार से मनोरथ करते हुए, *जात लागि नहिं बार* = रास्ता व्यतीत होने में समय पता नहीं चला, *करि मज्जन सरऊ जल* = सरयू नदी में स्नान करके, *गए भूप दरबार* = राजा के दरबार में पहुँच गये।

विश्वामित्र जी सोचते हैं इन निशाचरों को मरवाने के बहाने हम अयोध्या जायेंगे, प्रभु के चरणों के दर्शन करेंगे। महाराज दशरथ से विनती करके राम-

लक्ष्मण दोनों भाइयों को यहाँ आश्रम में ले आयेंगे। आश्रम से अयोध्या जाते वक्त वे मन में भगवान राम के गुणों का, उनके दर्शन का, उनकी महिमा का ही स्मरण करते जा रहे हैं। इसलिये मार्ग की दूरी पता नहीं चली। वे सरयू नदी के किनारे पहुँच गये। सरयू में स्नान करके राजदरबार में पहुँचे।

दशरथ जी ने पूजन करके बहुत आदर सत्कार किया

मुनि आगमन सुना जब राजा। मिलन गयउ लै बिप्र समाजा ॥207:1॥
करि दंडवत मुनिहि सनमानी। निज आसन बैठारेन्हि आनी ॥207:2॥

मुनि आगमन सुना जब राजा = राजा ने जब सुना कि मुनि आये हैं, *मिलन गयउ लै बिप्र समाजा* = तो विप्रों का समाज लेकर उनसे मिलने गये, *करि दंडवत* = दंडवत प्रणाम करके, *मुनिहि सनमानी* = मुनि का आदर किया, *निज आसन बैठारेन्हि आनी* = अपने राजसिंहासन पर विश्वामित्र जी को बैठाया।

चरन पखारि कीन्हि अति पूजा। मो सम आजु धन्य नहिं दूजा ॥207:3॥
बिबिध भाँति भोजन करवावा। मुनिबर हृदयँ हरष अति पावा ॥207:4॥

चरन पखारि = चरन धोया, *कीन्हि अति पूजा* = उनकी बहुत पूजा की, *मो सम आजु धन्य नहिं दूजा* = और कहा मेरे समान धन्य आज कोई दूसरा नहीं है, *बिबिध भाँति भोजन करवावा* = अनेक प्रकार के भोजन करवाये, *मुनिबर हृदयँ हरष अति पावा* = मुनि बहुत प्रसन्न हुए।

महाराज दशरथ ने जब सुना कि मुनि विश्वामित्र आये हैं, तो वे विप्र लोगों को साथ लेकर द्वार पर ही अगवानी करते हैं। वहीं पर पूरा लेटकर दंडवत प्रणाम करते हैं। फिर साथ में लाकर राजदरबार में अपने सिंहासन पर बैठाते हैं। यह सम्मान देने का तरीका है। चरण पखारे, पूजा की, आरती की, माला पहनायी। फिर कृतज्ञता व्यक्त की, आपका आगमन हुआ, हम पर आपने कृपा की। यह हमारा बहुत सौभाग्य है। भोजन का समय हो रहा था। राजमहल में तरह-तरह के राजसी व्यंजन बनते ही हैं। वही राजसी भोजन विश्वामित्र जी को आदर व प्रेम से करवाया। राजा के आदर-सत्कार व प्रेम भाव से विश्वामित्र जी का मन प्रसन्न हो गया।

राम को देख, विश्वामित्र जी शरीर की सुधि खो बैठे

पुनि चरननि मेले सुत चारी। राम देखि मुनि देह बिसारी ॥207:5॥
भए मगन देखत मुख सोभा। जनु चकोर पूरन ससि लोभा ॥207:6॥

पुनि चरननि मेले सुत चारी = फिर राजा ने चारो पुत्रों से मुनि को प्रणाम करवाया, *राम देखि मुनि देह बिसारी* = राम को देखकर मुनि विश्वामित्र शरीर की सुधि भूल गये, *भए मगन देखत मुख सोभा* = मुख की शोभा देखकर ऐसे मग्न हो गये, *जनु चकोर पूरन ससि लोभा* = मानो चकोर पूर्णिमा का चन्द्रमा देखकर लुभा गया हो।

दोपहर का भोजन व विश्राम के बाद सायंकाल राजदरबार में सब बैठते हैं। महाराज दशरथ ने चारों पुत्रों को बुलवाकर मुनि विश्वामित्र के चरणों में प्रणाम करवाया। राम को देखकर विश्वामित्र जी अपने देह की सुध-बुध भूल गये। प्रभु का इतना सुंदर सौंदर्य है, तेज व प्रकाश है कि उनका मन बरबस ही सब भूल गया। वे मग्न हो गये। जब राम प्रणाम करके उठे तो मुनि ने मुख की सुंदरता देखी। दृष्टि मुख पर ही टिक गयी। फिर यहाँ-वहाँ देखा ही नहीं। ऐसा लग रहा है मानो चकोर टकटकी लगाकर पूर्णिमा के चंद्रमा को देख रहा है। जब परमात्म भाव आता है तो शरीर भाव नहीं रह जाता।

दशरथ जी बोले, आगमन का कारण कहिये, तुरंत पूरा करेंगे

तब मन हरषि बचन कह राऊ। मुनि अस कृपा न कीन्हिहु काऊ ॥207:7॥
केहि कारन आगमन तुम्हारा। कहहु सो करत न लावउँ बारा ॥207:8॥

तब मन हरषि बचन कह राऊ = तब राजा ने मन में हर्षित होकर कहा, *मुनि अस कृपा न कीन्हिहु काऊ* = हे मुनि! इस प्रकार की कृपा तो आपने कभी नहीं की, *केहि कारन आगमन तुम्हारा* = आज किस कारण से आपका आगमन हुआ है, *कहहु सो करत न लावउँ बारा* = कृपया बताइये; मैं उसे पूरा करने में देर नहीं करूँगा।

मुनि को राम प्रिय लगे इसलिये राजा को प्रसन्नता हुई। महाराज दशरथ व वसिष्ठ जी ने देखा कि ये तो अपने शरीर की सुध-बुध ही भूल गये हैं। अब

आगे बातचीत कैसे हो? तो ध्यान हटाने व बात आगे बढ़ाने के लिये महाराज दशरथ प्रसन्नता से कहते हैं कि हे मुनि! आपने ऐसी कृपा कभी नहीं की, स्वयं आकर दर्शन दिये हैं, कोई न कोई ऐसी बात है जिसके कारण आपका आगमन हुआ है। जो आज्ञा हो बतायें, हम उसे तुरंत पूरा करेंगे। राजा के इतना कहते ही कार्य पूरा करने का वचन हो गया। राजा पर आज्ञा पालन का बंधन हो गया।

विश्वामित्र जी ने सीधे कह दिया, राम-लक्ष्मण मुझे दे दो

असुर समूह सतावहिं मोही। मैं जाचन आयउँ नृप तोही ॥207:9॥
अनुज समेत देहु रघुनाथा। निसिचर बध मैं होब सनाथा ॥207:10॥

असुर समूह सतावहिं मोही = मुनि ने कहा राक्षसों के समूह मुझे बहुत परेशान करते हैं, *मैं जाचन आयउँ नृप तोही* = हे राजन् मैं तुमसे माँगने आया हूँ, *अनुज समेत देहु रघुनाथा* = छोटे भाई सहित राम को दे दो, *निसिचर बध* = राक्षसों के मारे जाने पर, *मैं होब सनाथा* = मैं सुरक्षित हो जाऊँगा।

देहु भूप मन हरषित तजहु मोह अग्यान ।
धर्म सुजस प्रभु तुम्ह कौं इन्ह कहँ अति कल्यान ॥दोहा 207॥

देहु भूप मन हरषित = हे राजन् प्रसन्न मन से इन्हें दो, *तजहु मोह अग्यान* = मोह व अज्ञान को छोड़ दो, *धर्म सुजस प्रभु तुम्ह कौं* = इससे तुम्हें धर्म व सुयश की प्राप्ति होगी, *इन्ह कहँ अति कल्यान* = इनका परम कल्याण होगा।

विश्वामित्र जी कहते हैं कि आश्रम में असुर बहुत कष्ट देते हैं। हे राजन्! मैं निशाचरों से रक्षा के लिये तुमसे माँगने आया हूँ। मुझे राम व लक्ष्मण दोनों भाइयों को दे दो। ये लोग निशाचरों का वध कर देंगे, हम सुरक्षित हो जायेंगे। इस प्रकार विश्वामित्र ने निश्चित भाव से सीधे-सीधे माँग लिया। जब तक माँगा तब तक महाराज दशरथ के मुख की मुद्रा बदल गयी। प्रसन्नता गायब, मोह व अज्ञान आ गया। विश्वामित्र जी को लगा कि ये देने को तैयार न होंगे। तो कहते हैं हे राजन्! तुम पुत्र मोह को छोड़ो, यह अज्ञान भी छोड़ो कि ये दुर्बल हैं, कमजोर हैं, प्रसन्नता से दो। इन्हें देने से तुम्हें धर्म की प्राप्ति होगी कि तुमने अपने दिये हुए वचन को पूरा किया। यश भी मिलेगा, लोग प्रशंसा करेंगे। इन दोनों पुत्रों का भी बहुत कल्याण होगा।

राजा का हृदय काँप उठा, चेहरा मुरझा गया

सुनि राजा अति अप्रिय बानी। हृदय कंप मुख दुति कुमुलानी ॥208:1॥
चौथेंपन पायउँ सुत चारी। बिप्र बचन नहिं कहेहु बिचारी ॥208:2॥

सुनि राजा अति अप्रिय बानी = राजा ने जब यह अप्रिय वचन सुने, *हृदय कंप* = उनका हृदय काँप गया, *मुख दुति कुमुलानी* = चेहरे की चमक मुरझा गयी, *चौथेंपन पायउँ सुत चारी* = मैंने चौथेपन में चार पुत्र प्राप्त किये हैं, *बिप्र बचन नहिं कहेहु बिचारी* = हे विप्र! आपने यह बात विचार करके नहीं कही।

विश्वामित्र की माँगें सुनकर राजा का हृदय काँपने लगा। मन उदास हो गया। राजा कहते हैं कि हे विप्र! आपने बहुत ही अप्रिय बात कही है। हमें तो वृद्ध अवस्था में चार पुत्रों की प्राप्ति हुई है, इसलिये आपने ये बातें ठीक से विचार करके नहीं कही हैं। यहाँ पर ध्यान दें कि भारतीय संस्कृति में व्यक्ति का वर्ण जन्म से नहीं कर्म से होता है। विश्वामित्र जी पहले क्षत्रिय थे, तपस्या करके ज्ञान प्राप्त कर लिया, इसलिये विप्र हो गये। महाराज दशरथ यहाँ पर उन्हें विप्र ही संबोधित करते हैं।

राजा कहते हैं मैं देह व प्राण सहित सर्वस्व देने को तैयार

मागहु भूमि धेनु धन कोसा। सर्बस देउँ आजु सहरोसा ॥208:3॥
देह प्रान तें प्रिय कछु नाहीं। सोउ मुनि देउँ निमिष एक माहीं ॥208:4॥

मागहु भूमि धेनु धन कोसा = पृथ्वी; गाय; धन और खजाना माँग लीजिये, *सर्बस देउँ आजु सहरोसा* = बहुत हर्ष के साथ आज मैं सर्वस्व दे दूँगा, देह *प्रान तें प्रिय कछु नाहीं* = देह व प्राण से प्यारा कुछ नहीं होता है, *सोउ मुनि देउँ* = हे मुनि! वह भी मैं दे दूँगा, *निमिष एक माहीं* = एक क्षणमात्र में।

राजा कहते हैं आप हमसे पूरा राज्य माँग लीजिये, गोधन माँग लें, राजकोश माँग लें, मैं अपना सर्वस्व आपको प्रसन्नता से देने को तैयार हूँ। हे मुनि! आप तो जानते ही हैं कि प्राणी को सबसे ज्यादा प्रिय अपना शरीर व प्राण होता है। यदि आप मुझसे माँगे तो मैं क्षण भर में ये दोनों भी देने को तैयार हूँ।

कहाँ कठोर निशाचर कहाँ मेरे सुकोमल पुत्र, कैसे दें?

सब सुत प्रिय मोहि प्रान कि नाईं। राम देत नहिं बनइ गोसाईं ॥208:5॥
कहँ निसिचर अति घोर कठोरा। कहँ सुंदर सुत परम किसोरा ॥208:6॥

सब सुत प्रिय मोहि प्रान कि नाईं = मुझे सभी पुत्र प्राण के समान प्यारे हैं, *राम देत नहिं बनइ गोसाईं* = राम को तो किसी भी प्रकार से देते नहीं बनता, *कहँ निसिचर अति घोर कठोरा* = कहाँ इतने डरावने व क्रूर राक्षस, *कहँ सुंदर सुत परम किसोरा* = और कहाँ परम किशोर अवस्था के मेरे सुंदर पुत्र।

राजा ने कहा कि आपने यह भी विचार नहीं किया कि निशाचर कितने कठोर, डरावने व हिंसक होते हैं। और मेरे पुत्र कितने सुंदर, कोमल व किशोर अवस्था के हैं। ये कैसे उनका सामना कर पायेंगे? मुझे तो सभी पुत्र प्राणों के समान प्रिय हैं। फिर राम को तो हम दे ही नहीं पायेंगे। इस प्रकार राजा ने कई तर्क देकर एक प्रकार से पुत्रों को देने से मना ही कर दिया।

राजा की प्रेमभरी बातों से विश्वामित्र मन में प्रसन्न हुए

सुनि नृप गिरा प्रेम रस सानी। हृदयँ हरष माना मुनि ग्यानी ॥208:7॥

सुनि नृप गिरा प्रेम रस सानी = राजा की प्रेम से सनी बातें सुनकर, *हृदयँ हरष माना मुनि ग्यानी* = ज्ञानी मुनि मन में प्रसन्न हुए।

राजा की बातों से विश्वामित्र जी को नाराज होना चाहिये, पर वे प्रसन्न होते हैं। क्यों? उन्हें लगा दशरथ को राम में कितना प्रेम है। राम के अलावा सर्वस्व देने को तैयार हैं। जैसे हमें राम से प्रेम है वैसे ही राजा को प्रेम है। मुनि ऊपर से प्रसन्न नहीं दिखते, मन में होते हैं।

वसिष्ठ जी ने समझाकर राजा का संदेह दूर किया

तब बसिष्ट बहुबिधि समुझावा। नृप संदेह नास कहँ पावा ॥208:8॥

तब बसिष्ट बहुबिधि समुझावा = तब वसिष्ठ जी ने राजा को बहुत प्रकार से समझाया, *नृप संदेह नास कहँ पावा* = जिससे राजा का संदेह मिट गया।

वसिष्ठ जी ने क्या समझाया होगा? विश्वामित्र जी त्रिकालज्ञ व ज्ञानी हैं। उन्हें मालूम है कि राम ने निशाचरों के वध के लिये ही अवतार लिया है। उसी के अनुसार माँगने आये हैं। इन्हें देने में ही राम, लक्ष्मण का व तुम्हारा हित है। ये दोनों बहुत शक्तिशाली हैं। इन्हें सुकुमार व कमजोर मत समझो। जब ये निशाचरों को मारेंगे तो इनके साथ तुम्हारा भी यश होगा। वसिष्ठ जी के समझाने से महाराज दशरथ का अज्ञान व मोह मिट गया। उन्हें लगा कि ये बस हमारे पुत्र नहीं हैं, सबका हित करने वाले हैं।

राम-लक्ष्मण को शिक्षा देकर, विश्वामित्र जी को सौंप दिया

अति आदर दोउ तनय बोलाए। हृदयँ लाइ बहु भाँति सिखाए ॥208:9॥
मेरे प्रान नाथ सुत दोऊ। तुम्ह मुनि पिता आन नहिं कोऊ ॥208:10॥

अति आदर दोउ तनय बोलाए = बहुत आदर के साथ दोनों पुत्रों को बुलवाया, *हृदयँ लाइ बहु भाँति सिखाए* = हृदय से लगाकर उन्हें बहुत प्रकार से शिक्षा दी, *मेरे प्रान नाथ* = मेरे प्राणों के रक्षक, *सुत दोऊ तुम्ह* = तुम दोनों पुत्र हो, *मुनि पिता* = अब मुनि ही तुम्हारे पिता हैं, *आन नहिं कोऊ* = दूसरा कोई नहीं।

सौंपे भूप रिषिहि सुत बहुबिधि देइ असीस ।
जननी भवन गए प्रभु चले नाइ पद सीस ॥दोहा 208 (क)॥

सौंपे भूप रिषिहि सुत = राजा ने ऋषि को पुत्र सौंप दिये, *बहुबिधि देइ असीस* = बहुत प्रकार से आशीर्वाद दिया, *जननी भवन गए प्रभु* = प्रभु माँ के महल में जाते हैं, *चले नाइ पद सीस* = माँ के चरणों में प्रणाम करके चल देते हैं।

राजदरबार में चारों पुत्र थे। दशरथ जी ने राम-लक्ष्मण को अपने पास बुलाकर हृदय से लगा लिया। फिर शिक्षा दी कि तुम दोनों के कारण ही हमारे प्राण हैं। तुम्हीं हमारे प्राणों के रक्षक हो। अब तुम्हारे पिता मुनि विश्वामित्र ही हैं। जैसे हमारी आज्ञा का पालन करते थे वैसे ही इनकी आज्ञा का पालन करना। यह शिक्षा दी फिर आशीर्वाद देकर दोनों पुत्रों को ऋषि को सौंप दिया। प्रभु राम माता के पास गये। चरणों में प्रणाम करके चल दिये।

7. आश्रम पहुँचे, निशाचरों का वध, अहिल्या उद्धार

(दोहा 209 से 211)

इस प्रसंग से राम के ऐश्वर्य व वीर गुण का प्रारंभ होता है। राम धनुष-बाण हाथ में लिये सावधानी से जा रहे हैं। आश्रम पहुँचने के पहले ताड़का जैसे ही हमला करती है, प्रभु एक ही बाण से उसे मार देते हैं। विश्वामित्र जी जब समझ जाते हैं कि ये ब्रह्म ही हैं तो वे अपनी सारी विद्यायें व अस्त्र-शस्त्र राम को अर्पित कर देते हैं। आश्रम पहुँचकर राम-लक्ष्मण यज्ञ की रक्षा करते समय निशाचरों को मारकर मुनियों का भय दूर करते हैं। राम-लक्ष्मण को अपने साथ मुनि जनकपुर में धनुषयज्ञ व सीता स्वयंवर देखने ले जाते हैं। रास्ते में पत्थर बनी अहिल्या को चरणों की धूलि का स्पर्श कराकर प्रभु उसे जीवंत कर देते हैं। प्रसंग के पाठ के समय ऐसा भाव रखें कि राम हमारे क्रोध का नाश करेंगे। अच्छे कार्य में आने वाली बाधाओं को दूर करेंगे। जड़ बुद्धि में जीवंतता ला देंगे।

प्रभु राम व लक्ष्मण शेर के समान हैं, प्रसन्नता से चल दिये

पुरुषसिंह दोउ बीर हरषि चले मुनि भय हरन ।
कृपासिंधु मतिधीर अखिल बिस्व कारन करन ।।सोरठा 208 (ख)।।

पुरुषसिंह दोउ बीर = पुरुषों में सिंह के समान दोनों वीर, *हरषि चले* = प्रसन्नता से चल दिये, *मुनि भय हरन* = मुनि का भय दूर करने के लिये, *कृपासिंधु* = वे कृपा के समुद्र हैं, *मतिधीर* = धीर बुद्धि हैं, *अखिल बिस्व कारन करन* = जो संपूर्ण विश्व के कारण के भी कारण हैं।

राम व लक्ष्मण सिंह के समान वीर पुरुष लगते हैं। वे बहुत प्रसन्न हैं कि हम राजकुमार हैं, लोगों की रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य है जिसे करने का हमें अवसर प्राप्त हुआ है। हमें भी जीवन में जो कार्य मिले हैं उन्हें प्रसन्नता से करना चाहिये। प्रभु राम के तीन गुणों का यहाँ वर्णन है।

1. कृपा के सागर हैं, मुनि पर कृपा करके उनके भय को दूर करने के लिये पिता को छोड़कर चल देते हैं।
2. धीर बुद्धि हैं, भयंकर निशाचरों से युद्ध करना है पर व्याकुलता नहीं है। सहज भाव से प्रसन्नता से जा रहे हैं।
3. सारे जगत् की उत्पत्ति का कारण वे ही हैं। कारणों के कारण हैं।

हृष्ट पुष्ट श्याम शरीर, हाथों में धनुष-बाण, कमर में तरकस

अरुन नयन उर बाहु बिसाला। नील जलज तनु स्याम तमाला ॥209:1॥
कटि पट पीत कसें बर भाथा। रुचिर चाप सायक दुहुँ हाथा ॥209:2॥

अरुन नयन = नेत्रों में लालिमा है, *उर बाहु बिसाला* = चौड़ी छाती व विशाल भुजाएँ हैं, *नील जलज* = नीले कमल के समान, *तनु* = कोमल शरीर है, *स्याम* = रंग गहरा श्याम वर्ण है, *तमाला* = जो तमाल के वृक्ष के समान है, *कटि पट पीत* = कमर में पीताम्बर पहने हैं, *कसें बर भाथा* = सुंदर तरकस कसे हैं, *रुचिर चाप* = सुंदर धनुष, *सायक* = व बाण, *दुहुँ हाथा* = दोनों हाथ में लिये हैं।

तुलसीदास जी प्रभु राम के वीर व ऐश्वर्य रूप का वर्णन करते हैं। नेत्रों में लालिमा है। भुजायें विशाल हैं। छाती चौड़ी है। शरीर हृष्ट पुष्ट है। नीले कमल के समान श्याम वर्ण है। नीले शरीर में लाल ओठ व लाल आँखें ऐसे लगते हैं जैसे गहरे नीले रंग के तमाल के वृक्ष में बीच-बीच में लाल फूल लगे हों। जब पीताम्बर को कंधे पर डालते हैं तो अलग रूप होता है। यहाँ पर पीताम्बर कमर में बाँधे हैं और उसी में तरकस बँधा है। राम का यह वीर रूप है। बाँये हाथ में सुंदर धनुष, दाँये हाथ में बाण लेकर पूरी सावधानी से इस प्रकार चल रहे हैं कि आवश्यकता होने पर तुरंत युद्ध का सामना कर लें।

राम व लक्ष्मण विश्वामित्र जी के लिये महानिधि हैं

स्याम गौर सुंदर दोउ भाई। बिस्वामित्र महानिधि पाई ॥209:3॥
प्रभु ब्रह्मन्यदेव मैं जाना। मोहि निति पिता तजेउ भगवाना ॥209:4॥

स्याम गौर सुंदर दोउ भाई = साँवले व गोरे रंग के दो भाइयों को, *बिस्वामित्र महानिधि पाई* = पाकर विश्वामित्र जी को लगा जैसे महान् खजाना मिल गया हो, *प्रभु ब्रह्मन्यदेव* = प्रभु तो ब्रह्म विद्या जानने वालों के रक्षक हैं, *मैं जाना* = यह मेरी समझ में आ गया है, *मोहि निति* = तभी तो मेरे लिये, *पिता तजेउ भगवाना* = भगवान राम ने पिता को छोड़ दिया है।

विश्वामित्र जी के पीछे श्यामल रंग के राम, उनके पीछे गोरे रंग के लक्ष्मण पैदल अयोध्या से आश्रम की ओर चले जा रहे हैं। विश्वामित्र जी मन में विचार करते हैं कि हमें तो राम-लक्ष्मण के रूप में सबसे बड़ा खजाना ही मिल गया है। निशाचरों को मारने के बहाने ये हमारे निकट रहेंगे। इनके दर्शन का आनंद हम लेते रहेंगे। हमने सुना था कि प्रभु ब्रह्म विद्या जानने वालों की रक्षा करते हैं। इसलिये *ब्रह्मन्यदेव* कहलाते हैं। पर आज तो अपनी आँखों से देख भी लिया। हम लोगों की रक्षा के लिये पिता का सुख त्यागकर पैदल ही साथ में चल दिये।

ताड़का के हमला करते ही राम ने एक बाण से मार दिया

चले जात मुनि दीन्हि देखाई। सुनि ताड़का क्रोध करि धाई ॥209:5॥
एकहिं बान प्रान हरि लीन्हा। दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा ॥209:6॥

चले जात = मार्ग में जाते हुए, *मुनि दीन्हि देखाई* = मुनि ने इशारा करके दिखा व बता दिया कि यह ताड़का है, *सुनि ताड़का* = ताड़का ने भी यह सुनकर, *क्रोध करि धाई* = क्रोध में भरकर मारने दौड़ी, *एकहिं बान प्रान हरि लीन्हा* = प्रभु राम ने एक ही बाण से उसे मार दिया, *दीन जानि तेहि* = उसे दीन समझकर, *निज पद दीन्हा* = अपना पद दे दिया मायने मुक्त कर दिया।

जैसे ही आश्रम के निकट पहुँचे, वहाँ पर ताड़का नाम की निशाचरी थी। विश्वामित्र जी ने कहा, देखो राम यह ताड़का है। ये व इसके पुत्र हमें परेशान करते हैं। ताड़का ने भी सुन लिया कि ये हमारे बारे में बता रहे हैं। वह क्रोधित होकर गदा लेकर दौड़ी। प्रभु को लगा यह तो बस मार ही देगी। वे बाण हाथ में लिये थे ही, उसे धनुष पर रखा, खींचकर चला दिया वह सटीक जाकर ताड़का को लगा। लगते ही उसके प्राण निकल गये। प्रभु ने उसे दीन समझकर अपना पद दे दिया। यानि वह मुक्त हो गयी।

क्रोधी से कैसे व्यवहार करें, अपने क्रोध के लिये क्या करें?

राम ने क्रोधी ताड़का का वध तो कर दिया पर मन में वैर भाव नहीं रखा। दया भाव रखा। उसे अपना लिया। अपना पद दे दिया। हम क्या करते हैं? सबसे पहले क्रोधी से वैर कर लेते हैं। हमें करना क्या चाहिये? क्रोधी को बीमार

समझकर उसके प्रति दया भाव रखें। पहले शांति से जीतने का प्रयास करें। जब किसी भी प्रकार न माने तो नियम के अनुसार जो दंड प्रक्रिया है उसका पालन करें। यदि हम ही क्रोधी हैं तो क्या करें? सबसे पहले महसूस करें कि हमें क्रोध आता है। यह हमारी बीमारी है। इससे निपटना हमारे वश में नहीं। प्रभु के सामने हाथ जोड़ लें कि जब आप ताड़का का वध कर सकते हैं तब हमारे अंदर के क्रोध की वृत्ति को भी समाप्त करें। नियमित प्रार्थना अवश्य फलदायी होगी।

प्रभु को पहचान कर, मुनि ने विद्यायें दीं, आश्रम पहुँच गये

तब रिषि निज नाथहि जियँ चीन्ही। बिद्यानिधि कहुँ बिद्या दीन्ही ॥209:7॥
जाते लाग न छुधा पिपासा। अतुलित बल तनु तेज प्रकासा ॥209:8॥

तब रिषि = तब ऋषि विश्वामित्र ने, *निज नाथहि* = अपने प्रभु को, *जियँ चीन्ही* = हृदय से पहचान लिया यानी स्वीकार कर लिया, *बिद्यानिधि कहुँ* = भगवान को तो सारा ज्ञान है ही, *बिद्या दीन्ही* = फिर भी उन्हें विद्यायें दी, *जाते लाग न छुधा पिपासा* = मार्ग में जाते हुए न भूख लगी न प्यास, *अतुलित बल* = उनका अतुलित बल बना रहा, *तनु तेज प्रकासा* = शरीर का तेज व प्रकाश भी बना रहा।

आयुध सर्ब समर्पि कै प्रभु निज आश्रम आनि ।
कंद मूल फल भोजन दीन्ह भगति हित जानि ॥दोहा 209॥

आयुध सर्ब समर्पि कै = मुनि ने सब अस्त्र-शस्त्र समर्पित करके, *प्रभु निज आश्रम आनि* = प्रभु राम को अपने आश्रम में ले आये, *कंद मूल फल भोजन दीन्ह* = कंद; मूल व फल का भोजन करवाया, *भगति हित जानि* = यह समझकर कि ये भक्तों का हित करने वाले हैं।

एक ही बाण से ताड़का का वध देखकर विश्वामित्र जी पहचान गये कि ये वही ब्रह्म हैं जिनकी हम उपासना करते हैं। राम तो ज्ञान के निधान हैं। उन्हें तो सारा ज्ञान है ही, फिर भी विश्वामित्र जी के पास जो भी विद्याये थीं जैसे धनुष विद्या के मंत्र, भूख प्यास न लगने के मंत्र इत्यादि वे सब उन्होंने अपने प्रभु राम को दे दिये। सारे अस्त्र-शस्त्र भी राम को समर्पित कर दिये कि अब हमें

इनकी आवश्यकता नहीं, आपको ही ये लगेंगे। आश्रम में पहुँचकर कंदमूल, फल इत्यादि का भोजन करवाया।

मुनियों के यज्ञ की रक्षा राम करने लगे

प्रात कहा मुनि सन रघुराई। निर्भय जग्य करहु तुम्ह जाई ॥210:1॥
होम करन लागे मुनि झारी। आपु रहे मख कीं रखवारी ॥210:2॥

प्रात = दूसरे दिन सुबह, *कहा मुनि सन रघुराई* = राम जी ने मुनि से कहा, *निर्भय जग्य करहु तुम्ह जाई* = हे ऋषि आप निर्भय होकर यज्ञ करें, *होम करन लागे* = यज्ञ करने लगे, *मुनि झारी* = सभी मुनि लोग, *आपु रहे मख कीं रखवारी* = राम-लक्ष्मण स्वयं यज्ञ की रक्षा करने लगे।

आश्रम पहुँचकर फलाहार कर विश्राम किया। दूसरे दिन सुबह ही राम ने कहा हे मुनि! आप सब बिना डरे, पूरे विधि विधान से यज्ञ करें। सब मुनि मिलकर यज्ञ करना प्रारंभ करते हैं। राम छोटे भाई लक्षमण सहित धनुष बाण लेकर यज्ञ की रक्षा करने लगे। यह सूचना निशाचरों ने जाकर मारीच व सुबाहु को दे दी।

मारीच को बिना नोक का बाण मारा, वह समुद्र पार गिरा

सुनि मारीच निसाचर क्रोही। लै सहाय धावा मुनिद्रोही ॥210:3॥
बिनु फर बान राम तेहि मारा। सत जोजन गा सागर पारा ॥210:4॥

सुनि मारीच = यह समाचार मारीच ने सुना, *निसाचर क्रोही* = वह क्रोधी राक्षस, *लै सहाय धावा मुनिद्रोही* = मुनियों का शत्रु सहायकों को लेकर दौड़ पड़ा, *बिनु फर बान राम तेहि मारा* = राम ने उसे बिना नोक वाला बाण मारा, *सत जोजन गा सागर पारा* = वह सौ योजन के विस्तार वाले समुद्र के पार गिरा।

यज्ञ प्रारंभ होने का समाचार सुनकर मारीच व सुबाहु सेना लेकर यज्ञ विध्वंस के लिये दौड़ पड़े। पहले मारीच सामने आया तो राम जी ने उसे बिना नोक का बाण इस प्रकार मारा कि उसका शरीर छिदा नहीं। बाण ने शरीर को उठा लिया, और आकाश में उड़ने लगा। समुद्र के पास एक टापू में उसके शरीर को गिरा दिया। बाण मारा बिहार से, शरीर गिरा मुंबई के पास। जब उसे

होश आया तो उसकी बुद्धि बदल गयी। राम की महिमा पता चल गयी। वहीं वह आश्रम बनाकर रहने लगा। इस प्रकार प्रभु राम ने मारीच को रावण का मध्यस्थ बनने के लिये संजोकर रख दिया।

सुबाहु को अग्नि बाण से मारा, लक्ष्मण जी ने सेना को मारा

पावक सर सुबाहु पुनि मारा। अनुज निसाचर कटकु सँघारा ॥210:5॥
मारि असुर द्विज निर्भयकारी। अस्तुति करहिं देव मुनि झारी ॥210:6॥

पावक सर = अग्नि बाण, *सुबाहु पुनि मारा* = फिर सुबाहु को मारा, *अनुज* = लक्ष्मण जी ने, *निसाचर कटकु सँघारा* = उसकी सेना का संहार कर दिया, *मारि असुर द्विज निर्भयकारी* = निशाचरों को मारकर आश्रम के सभी विप्रों को निर्भय कर दिया, *अस्तुति करहिं देव मुनि झारी* = तब सारे देवता व सब मुनि स्तुति करने लगे।

तहँ पुनि कछुक दिवस रघुराया। रहे कीन्हि बिप्रन्ह पर दाया ॥210:7॥
भगति हेतु बहु कथा पुराना। कहे बिप्र जद्यपि प्रभु जाना ॥210:8॥

तहँ पुनि कछुक दिवस = उस आश्रम में कुछ दिन, *रघुराया रहे* = राम जी रहकर, *कीन्हि बिप्रन्ह पर दाया* = विप्रों पर दया की, *भगति हेतु बहु कथा पुराना* = भक्ति की बहुत सी कथायें व पुराण, *कहे बिप्र* = विप्रों ने सुनाये, *जद्यपि प्रभु जाना* = यद्यपि प्रभु जानते हैं फिर भी सुने।

उसके बाद सुबाहु सामने आता है। उसे राम जी ने अग्नि बाण से मार दिया। लक्ष्मण जी ने बाकी सेना का संहार कर दिया। इस प्रकार निशाचरों को मारा। आश्रम में जितने भी विप्र थे सब निर्भय हो गये। सब देवता व मुनि भगवान की स्तुति करने लगे। इसके बाद कुछ दिन और राम-लक्ष्मण मुनियों पर कृपा करते हुए वहीं पर रहे। विप्र लोग उन्हें कथा व पुराण सुनाते हैं। यद्यपि प्रभु सब जानते हैं, फिर भी सुनते हैं। कथाओं को, पुराणों को बार-बार सुनना है, यदि पता है तो भी सुनना है।

धनुषयज्ञ देखने जनकपुर की ओर चलते हैं

तब मुनि सादर कहा बुझाई। चरित एक प्रभु देखिअ जाई ॥210:9॥
धनुषजग्य सुनि रघुकुल नाथा। हरषि चले मुनिबर के साथा ॥210:10॥

तब मुनि सादर कहा बुझाई = फिर मुनि ने आदर से समझाकर कहा, *चरित एक प्रभु देखिअ जाई* = हे प्रभु! अब चलकर एक चरित्र देखना है, *धनुषजग्य सुनि रघुकुल नाथा* = धनुषयज्ञ के बारे में रघुकुल के स्वामी राम ने सुनकर, *हरषि चले मुनिबर के साथा* = प्रसन्नता से मुनि के साथ चल दिये।

विश्वामित्र जी ने कहा कि जनकपुर के राजा जनक एक धनुष यज्ञ कर रहे हैं। उसमें सीता जी का स्वयंवर होगा। इस आयोजन में अनेक देशों के राजा आ रहे हैं। वहाँ हमें भी बुलाया गया है। तुम हमारे साथ चलो। विश्वामित्र जी की आज्ञा का पालन करते हुए राम-लक्ष्मण प्रसन्नता से उनके साथ चल दिये।

रास्ते में पत्थर बनी अहिल्या दिखी, मुनि ने कहा इसका उद्धार करें

आश्रम एक दीख मग माहीं। खग मृग जीव जंतु तहँ नाहीं ॥210:11॥
पूछा मुनिहि सिला प्रभु देखी। सकल कथा मुनि कहा बिसेषी ॥210:12॥

आश्रम एक दीख मग माहीं = रास्ते में एक आश्रम दिखाई दिया, *खग मृग जीव जंतु तहँ नाहीं* = वहाँ पशु-पक्षी या अन्य कोई जीव-जंतु नहीं था, *पूछा मुनिहि* = मुनि से पूछते हैं, *सिला प्रभु देखी* = प्रभु ने पत्थर की सिला देखकर, *सकल कथा मुनि कहा बिसेषी* = मुनि ने पूरी कथा विस्तार सहित कही।

गौतम नारि श्राप बस उपल देह धरि धीर ।
चरन कमल रज चाहति कृपा करहु रघुबीर ॥दोहा 210॥

गौतम नारि = यह गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या है, *श्राप बस* = श्राप के कारण, *उपल देह धरि* = पत्थर का शरीर धारण करके, *धीर* = धैर्य से प्रतीक्षा कर रही है, *चरन कमल रज चाहति* = आपके चरण कमलों की धूलि चाहती है, *कृपा करहु रघुबीर* = हे रघुबीर इस पर कृपा करो।

जनकपुर की ओर जाते समय एक आश्रम दिखा जो उजाड़ था। राम जी ने पूछा इतने सुंदर आश्रम में न तो कोई पक्षी हैं, न पशु, न प्राणी, यह इतना सुनसान क्यों है? विश्वामित्र जी ने सब कथा सुनाकर बताया कि यह गौतम

ऋषि की पत्नी अहिल्या है जो श्राप के कारण पत्थर की मूर्ति बनकर, धैर्य धारण करके प्रतीक्षा कर रही है। श्राप के बाद इन्हें आशीर्वाद प्राप्त हुआ कि जब प्रभु राम आयेंगे, अपने चरणों की धूलि तुम्हारे ऊपर रखेंगे तब फिर से नारी बन जाओगी। मुनि कहते हैं इस पर कृपा करो।

राम ने पत्थर में चरण स्पर्श कराया, अहिल्या प्रगट हो गयी

परसत पद पावन सोक नसावन प्रगट भई तपपुंज सही ।
देखत रघुनायक जन सुखदायक सनमुख होइ कर जोरि रही ।।छंद।।

परसत = स्पर्श कराते ही, *पद पावन* = पवित्र चरण को, *सोक नसावन* = जो शोक को दूर करने वाले हैं, *प्रगट भई* = अहिल्या प्रगट हो गई, *तपपुंज सही* = सच्चे तपस्वी रूप में, *देखत रघुनायक* = राम जी को देखकर, *जन सुखदायक* = जो भक्तों को सुख देने वाले हैं, *सनमुख होइ कर जोरि रही* = उनके सामने हाथ जोड़कर खड़ी हो गई।

प्रभु राम ने अपने पवित्र चरण जो शोक को दूर करने वाले हैं, जब उस शिला में स्पर्श करा दिये तो उसका पत्थर का रूप समाप्त हो गया। अहिल्या तपस्वी के रूप में प्रगट हो गई। वह गौतम ऋषि की पत्नी हैं, इसलिये तपस्विनी हैं। जैसे ही प्रगट हुई उसने देखा सामने प्रभु राम खड़े हैं। उनके सामने हाथ जोड़कर खड़ी हो गई।

प्रेम के अश्रु बहने लगे, प्रणाम किया, कुछ बोल नहीं पायी

अति प्रेम अधीरा पुलक सरीरा मुख नहिं आवइ बचन कही ।
अतिसय बड़भागी चरनन्हि लागी जुगल नयन जलधार बही ।।

अति प्रेम = अत्यधिक प्रेम के कारण, *अधीरा* = प्रसन्नता से भावुक हो गयी, *पुलक सरीरा* = शरीर रोमांचित हो गया, *मुख नहिं आवइ बचन कही* = मुख से कुछ बोल नहीं पा रही है, *अतिसय बड़भागी* = अपने को बहुत भाग्यशाली समझती है, *चरनन्हि लागी* = चरणों में प्रणाम करती है, *जुगल नयन जलधार बही* = दोनों नयनों से आनंद के अश्रु की धारा बहने लगी।

प्रभु को देखकर शरीर पुलकित हो गया, भावनात्मक रूप से इतनी गद्‌गद् हो गयी कि बोल नहीं पा रही है। वह अपने को बहुत भाग्यशाली मानती है कि भगवान ने स्वयं आकर हमें दर्शन दिया। प्रभु राम के चरणों में प्रणाम करती है। इतनी आनंदित हो गई कि दोनों नेत्रों से प्रेम के आँसुओं की धार बहने लगी।

धैर्य धारण किया, राम कृपा से भक्ति पाकर स्तुति गाती है

धीरजु मन कीन्हा प्रभु कहँ चीन्हा रघुपति कृपाँ भगति पाई ।
अति निर्मल बानी अस्तुति ठानी ग्यानगम्य जय रघुराई ॥

धीरजु मन कीन्हा = फिर मन में धैर्य धारण करके, *प्रभु कहँ चीन्हा* = प्रभु को पहचान लिया, *रघुपति कृपाँ* = राम की कृपा से, *भगति पाई* = उसे भक्ति प्राप्त हुई, *अति निर्मल बानी* = तब बहुत ही निर्मल वाणी से, *अस्तुति ठानी* = स्तुति करने का निश्चय करती है, *ग्यानगम्य जय रघुराई* = हे ज्ञान से जानने योग्य राम जी आपकी जय हो।

मन में धैर्य धारण किया, प्रभु को पहचाना, भगवान की कृपा प्राप्त हुई, भक्ति प्राप्त हुई। प्रेम के कारण स्तुति नहीं गा पा रही थी, परंतु अब उसने हठपूर्वक निश्चय किया कि जब प्रभु राम सामने खड़े हैं तो स्तुति अवश्य करेंगे। बहुत ही सरल व कोमल शब्दों में स्तुति गाती है। हे राम! आपकी जय हो, आपको तो कोई व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करके ही पहचान सकता है, जान सकता है।

मैं आपकी शरण में, रक्षा करें, रक्षा करें

मैं नारि अपावन प्रभु जग पावन रावन रिपु जन सुखदाई ।
राजीव बिलोचन भव भय मोचन पाहि पाहि सरनहिं आई ॥

मैं नारि अपावन = मैं अपवित्र स्त्री हूँ, *प्रभु जग पावन* = आप संसार को पवित्र करने वाले, *रावन रिपु* = रावण मायने रुलाने वाले के शत्रु हैं, *जन सुखदाई* = भक्तों को सुख देने वाले हैं, *राजीव बिलोचन* = आपके कमल के समान सुंदर नेत्र हैं, *भव भय मोचन* = आप संसार का भय दूर करने वाले हैं, *पाहि पाहि सरनहिं आई* = मैं आपकी शरण आई हूँ मेरी रक्षा कीजिये, रक्षा कीजिये।

मैं तो अपवित्र हूँ, आप संसार को पवित्र करने वाले हैं। यहाँ पर रावण से आशय उस व्यक्ति से है जो लागों को रुलावे। कहती है आप तो रावण के शत्रु हैं, व भक्तों को सुख देने वाले हैं। आपके कमल के समान सुंदर नेत्र हैं। आप संसार का भय दूर करने वाले हैं। मैं आपकी शरण में हूँ, मेरी रक्षा कीजिये, रक्षा कीजिये।

मुनि का श्राप कल्याणकारी बन गया

मुनि श्राप जो दीन्हा अति भल कीन्हा परम अनुग्रह मैं माना ।
देखउँ भरि लोचन हरि भव मोचन इहइ लाभ संकर जाना ॥

मुनि श्राप जो दीन्हा = मुनि ने मुझे जो श्राप दिया, *अति भल कीन्हा* = वह बहुत भला काम कर दिया, *परम अनुग्रह मैं माना* = मैं अपने को कृतज्ञ मानती हूँ, *देखउँ भरि लोचन* = मैंने आँखें भरकर मायने अच्छे से दर्शन किये हैं, *हरि* = राम जी के, *भव मोचन* = जो संसार के चक्कर से छुड़ाने वाला है, *इहइ लाभ* = इसी दर्शन के लाभ को, *संकर जाना* = शंकर जी लाभ समझते हैं।

मैं गौतम मुनि का अनुग्रह मानती हूँ, उनके प्रति कृतज्ञ हूँ। क्योंकि उनका श्राप मेरे लिये कल्याणकारी बन गया। श्राप के कारण जी भरकर मुझे आपके दर्शन प्राप्त करने का लाभ प्राप्त हो गया। आपका दर्शन मात्र ही संसार के जन्म-मृत्यु के बंधन से मुक्त कराने वाला है। शिव जी भी आपके दर्शन के लाभ को जीवन का सबसे बड़ा लाभ मानते हैं।

मन सदा आपके चरणों का स्मरण करे, यही वरदान दीजिये

बिनती प्रभु मोरी मैं मति भोरी नाथ न मागउँ बर आना ।
पद कमल परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना ॥

बिनती प्रभु मोरी = हे प्रभु! मैं विनती करती हूँ, *मैं मति भोरी* = मेरी बुद्धि काम नहीं करती, *नाथ न मागउँ बर आना* = हे नाथ! मैं दूसरा कोई वर नहीं माँगती हूँ, *पद कमल परागा रस* = आपके चरण कमल के रज के पराग रस में, *अनुरागा मम मन* = मेरा मन अनुरक्त रहे, *मधुप* = और मधुमक्खी के समान, *करै पाना* = सदा इसे ही पीता रहे।

भगवान के दर्शन व स्तुति का फल वरदान के रूप में मिलता है। वरदान के लिये भगवान या तो स्वयं कहते हैं या व्यक्ति याचना करता है। यहाँ पर अहिल्या विनती करती है कि मुझे ज्यादा ज्ञान नहीं कि क्या भला है क्या बुरा है। मैं तो एक ही वरदान माँगती हूँ, दूसरा नहीं चाहिये। मेरा मन आपके चरण रज के पराग के रस को सदैव पीता रहे। जैसे कमल के मध्य में पराग होता है, उस पराग के रस को केवल मधुमक्खी ही चूसकर निकाल पाती है, जिससे शहद बनता है। फिर मधुमक्खी उस शहद से चिपक कर उसका पान करती रहती है। मेरा मन भी मधुमक्खी की तरह उस मधुर भक्ति रस को पीता रहे।

कृपा करके सिर पर अपने पवित्र चरणों को रखा

जेहिं पद सुरसरिता परम पुनीता प्रगट भई सिव सीस धरी ।
सोई पद पंकज जेहि पूजत अज मम सिर धरेउ कृपाल हरी ॥

जेहिं पद = जिन चरणों से, *सुरसरिता* = गंगा जी, *परम पुनीता* = जो बहुत पवित्र हैं, *प्रगट भई* = निकली हैं, *सिव सीस धरी* = जिसे शिव जी ने अपने मस्तक में धारण किया है, *सोई पद पंकज* = वही चरण कमल, *जेहि पूजत अज* = जिसे ब्रह्मा जी पूजते रहते हैं, *मम सिर धरेउ* = मेरे सिर पर रखा है, *कृपाल हरी* = हे कृपालु राम आपने।

भगवान के चरण बहुत ही दुर्लभ हैं। इन चरणों से परम पवित्र गंगा जी प्रवाहित हुईं, फिर शंकर जी ने अपनी जटाओं में पवित्र गंगा जी को धारण किया। ब्रह्मा जी भी जिन चरणों की वंदन एवं पूजन करते हैं उन्हीं दुर्लभ चरणों को हे कृपालु राम! आपने मेरे सिर पर रखा। यह तो आपकी बहुत ही बड़ी कृपा है।

मनचाहा वर प्राप्त कर, आनंद से पति के पास चली गयी

एहि भाँति सिधारी गौतम नारी बार बार हरि चरन परी ।
जो अति मन भावा सो बरु पावा गै पति लोक अनंद भरी ॥छंद॥

एहि भाँति सिधारी गौतम नारी = इस प्रकार गौतम नारी शरीर त्याग करके चली गईं, *बार बार हरि चरन परी* = बार-बार प्रभु राम के चरणों में प्रणाम करके, *जो*

अति मन भावा = जो वर मन को बहुत अच्छा लगा, *सो बरु पावा* = वही वर प्राप्त करके, *गै पति लोक अनंद भरी* = आनंद से भरकर अपने पति के पास चली गई।

इस प्रकार दर्शन प्राप्त कर, बार-बार चरणों में प्रणाम करके, तपस्वी अहिल्या शरीर त्याग कर चली गईं। कहाँ गयी? जहाँ उनके पति गौतम ऋषि थे। आनंद से ब्रह्म भाव में स्थित हो गयीं। इस प्रकार उसे मनचाहा वरदान प्राप्त हो गया।

प्रपंच छोड़कर ऐसे प्रभु राम को भजें

अस प्रभु दीनबंधु हरि कारन रहित दयाल ।
तुलसिदास सठ तेहि भजु छाड़ि कपट जंजाल ॥दोहा 211॥

अस प्रभु दीनबंधु = इस प्रकार दीनों पर दया करने वाले प्रभु हैं, *हरि कारन रहित दयाल* = बिना ही कारण के दया करने वाले राम हैं, *तुलसिदास* = तुलसीदास जी कहते हैं, *सठ* = रे मूर्ख मन, *तेहि भजु* = उन्हीं राम का भजन कर, *छाड़ि कपट जंजाल* = कपट के जंजाल को छोड़कर।

दीनों पर दया करने वाले प्रभु राम ने बिना बुलाये स्वयं आकर अहिल्या को भक्ति प्रदान कर उसका उद्धार कर दिया। तुलसीदास जी कहते हैं ऐसे प्रभु को छोड़कर रे मन तू यहाँ-वहाँ प्रपंचों में क्यों भटकता रहता है। सब जंजाल को त्याग कर उन्हीं राम का भजन कर।

8. जनकपुर पहुँचे, जनक जी ने महल में ठहराया

(दोहा 212 से 217)

सब लोग चलते हुए गंगा नदी के किनारे पहुँचे। महिमा सुनकर स्नान किये। जनकपुर नगर जैसे-जैसे नजदीक आने लगा उसकी सुंदरता का वर्णन करते जाते हैं। वन, बगीचे, पुष्पवाटिकायें, पानी की व्यवस्था, अत्यंत सुंदर घर, भव्य राजमहल, वहाँ के रहने वाले भी अच्छे हैं। नगर के बाहर एक आम के बगीचे में, सब सुविधायें देखकर वहीं ठहर जाते हैं। सूचना मिलते ही महाराज जनक अपने मंत्री, सेनापति, गुरु, विप्रों व परिवार को लेकर मिलने आते हैं। राम के मधुर व मनोहर रूप को देखकर तो उन्हें ब्रह्मज्ञान ही भुला गया, मन प्रेम के अधीन हो गया है। विश्वामित्र जी दोनों भाइयों का परिचय

देते हैं। जनक जी सबको नगर में लाकर एक वातानुकूलित महल में ठहरा देते हैं। मुनि का पूजन करते हैं, भोजन करवाते हैं, फिर सब लोग दोपहर में विश्राम करते हैं।

गंगा तट पर पहुँचे, महिमा सुनी, स्नान किया, दान दिया

चले राम लछिमन मुनि संगा। गए जहाँ जग पावनि गंगा ॥212:1॥
गाधिसूनु सब कथा सुनाई। जेहि प्रकार सुरसरि महि आई ॥212:2॥
तब प्रभु रिषिन्ह समेत नहाए। बिबिध दान महिदेवन्हि पाए ॥212:3॥

चले राम लछिन मुनि संगा = राम व लक्ष्मण मुनि के साथ चलते हुए, *गए जहाँ जग पावनि गंगा* = संसार को पवित्र करने वाली गंगा नदी के किनारे पहुँचे, *गाधिसूनु सब कथा सुनाई* = गाधि पुत्र विश्वामित्र जी ने वह सब कथा सुनाई, *जेहि प्रकार सुरसरि महि आई* = किस प्रकार देव नदी गंगा पृथ्वी पर आयीं, *तब प्रभु रिषिन्ह समेत नहाए* = फिर प्रभु ने ऋषि के सहित स्नान किया, *बिबिध दान महिदेवन्हि पाए* = पृथ्वी के देवता यानि विप्रों को बहुत प्रकार से दान दिया।

सब लोग आश्रम से चलते हुए संसार को पवित्र करने वाली गंगा नदी के किनारे पहुँचे। स्नान से पहले महिमा सुनने का विधान है। विश्वामित्र जी ने गंगा जी के पृथ्वी पर आने की कथा सुनाई। महिमा सुनकर सबने स्नान किया। विप्रों को दान दिया।

जनकपुर के पास पहुँचे, बाहरी सुंदरता देख राम-लक्ष्मण प्रसन्न

हरषि चले मुनि बृंदि सहाया। बेगि बिदेह नगर निअराया ॥212:4॥
पुर रम्यता राम जब देखी। हरषे अनुज समेत बिसेषी ॥212:5॥

हरषि चले मुनि बृंदि सहाया = फिर प्रसन्नता से मुनियों के साथ चल दिये, *बेगि बिदेह नगर निअराया* = शीघ्र ही विदेह राजा जनक जी के नगर के नजदीक पहुँच गये, *पुर रम्यता राम जब देखा* = राम जी ने जब नगर की सुंदरता देखी, *हरषे अनुज समेत बिसेषी* = तो उन्हें छोटे भाई लक्ष्मण सहित बहुत प्रसन्नता हुई।

बापीं कूप सरित सर नाना। सलिल सुधासम मनि सोपाना ॥212:6॥
गुंजत मंजु मत्त रस भृंगा। कूजत कल बहुबरन बिहंगा ॥212:7॥
बरन बरन बिकसे बनजाता। त्रिबिध समीर सदा सुखदाता ॥212:8॥

बापीं कूप सरित सर नाना = अनेकों बावलियाँ; कुएँ; नदी और तालाब हैं, *सलिल सुधासम* = अमृत के समान जल है, *मनि सोपाना* = मणियों की सीढ़ियाँ बनी हुई थीं, *गुंजत मंजु* = भौंरे गुंजार कर रहे हैं, *मत्त रस भृंगा* = मकरंद रस से मतवाले होकर, *कूजत कल* = पक्षी मधुर शब्द कह रहे हैं, *बहुबरन बिहंगा* = रंग-बिरंगे बहुत से पक्षी हैं, *बरन बरन बिकसे बनजाता* = रंग-रंग के कमल खिले हैं, *त्रिबिध समीर सदा सुखदाता* = सदा सुख देने वाली शीतल; मंद व सुगंधित वायु चल रही है।

सुमन बाटिका बाग बन बिपुल बिहंग निवास ।
फूलत फलत सुपल्लवत सोहत पुर चहुँ पास ॥दोहा 212॥

सुमन बाटिका = पुष्पों की वाटिका, *बाग बन* = बगीचे व वन, *बिपुल बिहंग निवास* = जहाँ बहुत से पक्षियों का निवास है, *फूलत फलत सुपल्लवत* = फूलते; फलते; सुंदर पत्तों से लदे वृक्ष, *सोहत पुर चहुँ पास* = नगर के चारों ओर शोभायमान हैं।

बनइ न बरनत नगर निकाई। जहाँ जाइ मन तहँइँ लोभाई ॥213:1॥

बनइ न बरनत नगर निकाई = नगर की सुंदरता का वर्णन करते नहीं बनता, *जहाँ जाइ मन तहँइँ लोभाई* = मन जहाँ जाता है वहीं रम जाता है।

आगे चलते हैं, जनकपुर नगर निकट आ गया। नगर की सुंदरता बाहर से ही दिखने लगी। पानी की सुंदर व्यवस्था है। कुएँ, तालाब, बाबली, नदियाँ व तालाब हैं। पानी मीठा व स्वादिष्ट है। तालाब के चारों तरफ सुंदर सीढ़ियाँ बनी हैं। उनमें मणियाँ लगी हुई हैं। सुंदर पुष्प वाटिकायें, बाग-बगीचे व वन हैं। तरह-तरह के रंग बिरंगे पक्षी गुंजार कर रहे हैं। सरोवर में रंग-बिरंगे कमल खिले हैं। शीतल, मंद व सुंगधित वायु चल रही है। बाहर से ही नगर की सुंदरता देख राम व लक्ष्मण दोनों प्रसन्न होते हैं। इतनी सुंदरता है कि कहते हैं कि उसका वर्णन करते नहीं बनता। जिस तरफ देखो उसी तरफ मन लुब्ध हो जाये।

जनकपुर के नगर के अंदर की सुंदरता

चारु बजारु बिचित्र अँबारी। मनिमय बिधि जनु स्वकर सँवारी ॥213:2॥
धनिक बनिक बर धनद समाना। बैठे सकल बस्तु लै नाना ॥213:3॥

चारु बजारु = सुंदर बाजार हैं, *बिचित्र अँबारी* = विचित्र छज्जे हैं, *मनिमय* = जो मणियों से सजे हैं, *बिधि जनु स्वकर सँवारी* = लगता है ब्रह्मा जी ने उन्हें अपने हाथों से बनाया है, *धनिक बनिक बर धनद समाना* = कुबेर के समान श्रेष्ठ धनी व्यापारी, *बैठे सकल बस्तु लै नाना* = सब प्रकार की अनेक वस्तुएँ लेकर दुकानों में बैठे हैं।

चौहट सुंदर गलीं सुहाई। संतत रहहिं सुगंध सिंचाई ॥213:4॥
मंगलमय मंदिर सब केरें। चित्रित जनु रतिनाथ चितेरें ॥213:5॥

चौहट सुंदर = सुंदर चौराहे हैं, *गलीं सुहाई* = सुहावनी सड़के हैं, *संतत रहहिं सुगंध सिंचाई* = जो सदैव सुंगध से सिंची रहती हैं, *मंगलमय मंदिर सब केरें* = सबके घर मंगलमय हैं, *चित्रित* = उनमें चित्रकारी की गई है, *जनु रतिनाथ चितेरें* = मानों कामदेव के समान सुंदर चित्रकार ने।

जनकपुर के बाजार में कुबेर के समान धनी व्यापारी हैं, जो तरह-तरह की वस्तुयें लेकर बेचने के लिये बैठे हैं। ऊँचे-ऊँचे मकान हैं, उनके छज्जे मणियों से जड़ित इतने सुन्दर लगते हैं मानों ब्रह्मा जी ने अपने हाथों से उनकी रचना की हो। सबके भवन मांगलिक हैं। वंदनवार व ध्वजायें लगी हैं। कलश रखें हैं। भवनों में सुंदर चित्रकारी ऐसे लग रही मानो कामदेव ने इन्हें चित्रित किया हो। सुंदर चौराहे हैं। सड़कें साफ-सुथरी तो हैं ही, सदैव सुगंध से सिंची रहती हैं।

नगर कैसे होने चाहिये यह रामचरितमानस में बताया गया है

हमारा नगर कैसा हो जब वे सुंदर कहलायेंगे? जनकपुर के समान हो। नगर के बाहर वन हों जहाँ नाना प्रकार के वृक्ष अपने आप उगते हैं। नगर के नजदीक बगीचा हो, जिसमें फलों के वृक्ष लगे हों। नगर के अंदर सुमन वाटिका हों। पानी के लिय पर्याप्त नदी, तालाब व कुएँ हों। जिनकी साफ-सफाई की समुचित व्यवस्था हो। सड़कें साफ-सुथरी के साथ-साथ सुगंधित भी हैं। किसी भी प्रकार का प्रदूषण नहीं है।

नगर के लोग भी सुंदर हैं

पुर नर नारि सुभग सुचि संता। धरमसील ग्यानी गुनवंता ॥213:6॥

पुर नर नारि = नगर के स्त्री व पुरुष, *सुभग सुचि संता* = सुन्दर; पवित्र; सज्जन हैं, *धरमसील ग्यानी गुनवंता* = धर्मात्मा; ज्ञानी व गुणवान् हैं।

जनकपुर नगर में रहने वाले नर-नारी पवित्र व अच्छे स्वभाव के हैं। सभी लोग धर्म में रुचि रखते हैं। सभी ज्ञानी हैं व गुणवान् हैं।

महाराज जनक का महल अनुपम सुंदर है

अति अनूप जहँ जनक निवासू। बिथकहिं बिबुध बिलोकि बिलासू ॥213:7॥
होत चकित चित कोट बिलोकी। सकल भुवन सोभा जनु रोकी ॥213:8॥

अति अनूप = अत्यंत अनुपम है, *जहँ जनक निवासू* = जहाँ जनक जी का निवास स्थान है, *बिथकहिं बिबुध* = देवता भी स्तंभित रह जाते हैं, *बिलोकि बिलासू* = उस महल का ऐश्वर्य देखकर, *होत चकित चित* = चित्त चकित हो जाता है, *कोट बिलोकी* = राजमहल के परकोटे को देखकर, *सकल भुवन सोभा* = सारे भवन की सुंदरता को, *जनु रोकी* = मानों अंदर ही रोक लिया है।

धवल धाम मनि पुरट पट सुघटित नाना भाँति ।
सिय निवास सुंदर सदन सोभा किमि कहि जाति ॥दोहा 213॥

धवल धाम = महल सफेद है, *मनि पुरट पट* = जिसमें मणि जड़ित, *सुघटित* = सुंदर तरीके से बनाये हुए, *नाना भाँति* = तरह-तरह के पर्दे लगे हैं, *सिय निवास सुंदर सदन* = सीता जी का सुंदर महल है, *सोभा किमि कहि जाति* = उसकी शोभा का कैसे वर्णन किया जा सकता है।

महाराज जनक का राजमहल तो विशेष रूप से सुंदर है। देवता लोग भी यदि आकर देखें तो इसका ऐश्वर्य देखकर आश्चर्य चकित रह जायेंगे। किले के चारों ओर बने परकोटे इतने सुंदर हैं, उन्हें देखकर मन आश्चर्य से भर उठता है। लगता है कि ये परकोटे इस महल की अनुपम छटा को

महल के अंदर ही रोके रखने के लिये बनाये गये हैं। सफेद महल में अनेक प्रकार के सुंदर बनावट के मणियों से जड़ित, सोने की जरी के परदे लगे हैं। जिस महल में सीता जी निवास करती हों उसकी सुंदरता का वर्णन कैसे किया जा सकता है।

राजमहल के द्वार का दृश्य, सेनापति व सचिवों के घर भी सुंदर

सुभग द्वार सब कुलिस कपाटा। भूप भीर नट मागध भाटा ॥214:1॥
बनी बिसाल बाजि गज साला। हय गय रथ संकुल सब काला ॥214:2॥
सूर सचिव सेनप बहुतेरे। नृपगृह सरिस सदन सब केरे ॥214:3॥

सुभग द्वार = राजमहल का प्रवेश द्वार सुंदर एवं शुभ है, *सब कुलिस कपाटा* = इनमें वज्र के समान मजबूत दरवाजे लगे हैं, *भूप भीर नट मागध भाटा* = द्वार पर राजाओं; नटों; मागधों और भाटों की भीड़ लगी रहती है, *बनी बिसाल बाजि गज साला* = बहुत बड़ी घुड़शालायें और गजशालाएँ बनी हुई हैं, *हय गय रथ संकुल सब काला* = जो हर समय घोड़े, हाथी व रथों से भरी रहती हैं, *सूर सचिव सेनप बहुतेरे* = बहुत से सूरवीर; मंत्री व सेनापति हैं, *नृपगृह सरिस सदन सब केरे* = उन सबके घर भी राजमहल के समान ही हैं।

पुर बाहेर सर सरित समीपा। उतरे जहँ तहँ बिपुल महीपा ॥214:4॥

पुर बाहेर = नगर के बाहर, *सर सरित समीपा* = तालाब व नदी के किनारे, *उतरे जहँ तहँ बिपुल महीपा* = जहाँ-तहाँ बहुत से राजा लोग डेरा डाले हैं।

राजमहल के सब दरवाजे बहुत ही सुंदर व वज्र के समान मजबूत हैं। महाराज जनक के द्वार पर नटों, मागधों और भाटों आदि गुणगान करने वालों की भीड़ लगी रहती है। हाथी को रखने की बहुत बड़ी गजशालाएँ, घोड़े को रखने के लिये बहुत सी घुड़शालें बनी हैं, जो सदैव इनसे व रथों से भरी रहती हैं। सब सवारियाँ हर समय तैयार रहती हैं। बहुत से सेनापति व मंत्री हैं जो बहुत ही शूरवीर हैं उन सबके घर राजा के घर के समान बहुत सुंदर बने हैं। नगर के बाहर तालाब और नदी हैं जिनके निकट जहाँ-तहाँ बहुत से राजा लोग आकर तम्बू में ठहरे हुए हैं।

नगर के बाहर आम के बगीचे में सभी लोग ठहर गये

देखि अनूप एक अँवराई। सब सुपास सब भाँति सुहाई ॥214:5॥
कौसिक कहेउ मोर मनु माना। इहाँ रहिअ रघुबीर सुजाना ॥214:6॥
भलेहिं नाथ कहि कृपानिकेता। उतरे तहँ मुनिबृंद समेता ॥214:7॥

देखि अनूप एक अँवराई = नगर के बाहर ही आम का एक अनुपम बगीचा देखकर, *सब सुपास सब भाँति सुहाई* = वहाँ पर सब सुविधायें देखकर, *कौसिक कहेउ मोर मनु माना* = विश्वामित्र जी ने कहा मेरा मन तो कहता है, *इहाँ रहिअ रघुबीर सुजाना* = हे सुजान राम हमें यही पर ठहरना चाहिये, *भलेहिं नाथ कहि कृपानिकेता* = कृपानिधान राम ने कहा कि आपने ठीक ही कहा है, *उतरे तहँ मुनिबृंद समेता* = मुनियों सहित सब लोग वहीं पर ठहर गये।

विश्वामित्र जी ने नगर के बाहर एक बहुत सुन्दर आम का बगीचा देखा। वहाँ पर जल, रहने का पर्याप्त स्थान इत्यादि सब सुविधायें देखकर कहा कि हे रघुबीर! आप तो सब जानते ही हैं, मेरा तो मन कहता है यहीं पर ठहरा जाये। राम जी ने कहा हे प्रभु! आप बिल्कुल ठीक कहते हैं, यहीं पर ठहर जायेंगे। वहीं पर सब सामान रख दिया गया, मुनियों सहित वहीं पर रुक गये।

समाचार सुन जनक जी, बहुत से लोगों के साथ मिलने पहुँचे

बिस्वामित्र महामुनि आए। समाचार मिथिलापति पाए ॥214:8॥

बिस्वामित्र महामुनि आए = महामुनि विश्वामित्र आये हैं, *समाचार मिथिलापति पाए* = यह सूचना मिथिला के राजा जनक को मिली।

संग सचिव सुचि भूरि भट भूसुर बर गुर ग्याति ।
चले मिलन मुनिनायकहि मुदित राउ एहि भाँति ॥दोहा 214॥

संग = जनक जी अपने साथ, *सचिव सुचि* = अच्छे आचरण वाले मंत्री, *भूरि भट* = बहुत से योद्धा, *भूसुर बर* = श्रेष्ठ विप्र, *गुर* = गुरु शतानंद जी, *ग्याति* = परिवार के लोगों को लेकर, *चले मिलन मुनिनायकहि* = मुनियों के नायक विश्वामित्र जी से मिलने चल दिये, *मुदित राउ एहि भाँति* = राजा इस प्रकार से बहुत प्रसन्न हैं।

विश्वामित्र जी की ख्याति महामुनि के रूप में दूर-दूर तक थी। उनके नगर में आने की सूचना मिलते ही महाराज जनक स्वागत के लिये जाते हैं। साथ में अपने मंत्री, सेनापति, गुरु शतानंद जी, विप्रों व परिवार के सदस्यों को ले जाते हैं। जनक जी प्रसन्न हैं कि मुनि के आगमन से हमारी सब व्यवस्था अच्छी रहेगी व सब प्रकार से कल्याण ही होगा।

जनक जी ने प्रणाम किया, विश्वामित्र जी कुशलता पूछते हैं

कीन्ह प्रनामु चरन धरि माथा। दीन्हि असीस मुदित मुनिनाथा ॥215:1॥
बिप्रबृंद सब सादर बंदे। जानि भाग्य बड़ राउ अनंदे ॥215:2॥
कुसल प्रस्न कहि बारहिं बारा। बिस्वामित्र नृपहि बैठारा ॥215:3॥

कीन्ह प्रनामु चरन धरि माथा = राजा ने मुनि के चरणों पर मस्तक रखकर प्रणाम किया, *दीन्हि असीस मुदित मुनिनाथा* = मुनियों के स्वामी विश्वामित्र जी ने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया, *बिप्रबृंद सब सादर बंदे* = फिर सभी विप्रों को सादर प्रणाम किया, *जानि भाग्य बड़ राउ अनंदे* = अपना बहुत अच्छा भाग्य समझकर राजा प्रसन्न हैं, *कुसल प्रस्न कहि बारहिं बारा* = बार-बार कुशलता पूछकर, *बिस्वामित्र नृपहि बैठारा* = विश्वामित्र जी ने राजा को बैठाया।

जनक जी ने विश्वामित्र जी के चरणों में मस्तक रखकर विनम्रता से प्रणाम किया। मुनि ने प्रसन्न मन से आशीर्वाद दिया। मुनि के साथ जो बहुत से विप्र थे उन सबको भी राजा जनक ने प्रणाम किया। राजा स्वागत में कहते हैं कि हमारा कितना बड़ा भाग्य है कि आप जैसे विप्र नगर में आये हैं। जनक जी अब चिंता मुक्त होकर आनंदित हैं कि इनके आने से सारा कार्यक्रम सफलता पूर्वक संपन्न होगा, मंगलमय परिणाम होंगे। विश्वामित्र जी बार-बार राजा जनक से राज-कार्य, पूजा-पाठ, स्वास्थ्य, घर-परिवार की कुशलता पूछते हैं। फिर उन्हें बैठने के लिये कहते हैं। सब लोग आमने-सामने ठीक से बैठ गये।

जनक जी को आशीर्वाद, पर दशरथ जी को नहीं दिया था?

महाराज दशरथ ने भी दंडवत प्रणाम किया था पर विश्वामित्र जी ने आशीर्वाद नहीं दिया क्योंकि उस समय मुनि गंभीर थे। उन्हें राम-लक्ष्मण को माँगना था।

कठोरता थी। आशीर्वाद दे देते तो राजा निर्भय हो जाते। यहाँ राजा जनक को प्रसन्न करना है। आशीर्वाद पाकर वे प्रसन्न हुए।

उसी समय राम-लक्ष्मण आ गये, दर्शन कर सब गद्गद् हो गये

तेहि अवसर आए दोउ भाई। गए रहे देखन फुलवाई ॥215:4॥
स्याम गौर मृदु बयस किसोरा। लोचन सुखद बिस्व चित चोरा ॥215:5॥

तेहि अवसर आए दोउ भाई = उसी समय दोनों भाई आ गये, *गए रहे देखन फुलवाई* = ये दोनों पुष्पवाटिका देखने गये थे, *स्याम गौर* = श्यामल व गोरे रंग के, *मृदु* = सुकुमार, *बयस किसोरा* = किशोर अवस्था वाले, *लोचन सुखद* = नेत्र जो सुख देने वाले, *बिस्व चित चोरा* = विश्व के चित्त को चुरा लेने वाले हैं।

उठे सकल जब रघुपति आए। बिस्वामित्र निकट बैठाए ॥215:6॥
भए सब सुखी देखि दोउ भ्राता। बारि बिलोचन पुलकित गाता ॥216:7॥

उठे सकल जब रघुपति आए = राम जी के आते ही सभी लोग उठकर खड़े हो गये, *बिस्वामित्र निकट बैठाए* = विश्वामित्र जी ने उन्हें अपने पास बैठा लिया, *भए सब सुखी देखि दोउ भ्राता* = दोनों भाइयों को देखकर सब सुखी हो गये, *बारि बिलोचन* = सबके नेत्रों में जल भर आया, *पुलकित गाता* = शरीर रोमांचित हो गया।

राजा जनक जब विश्वामित्र जी से मिलने आये, उस समय राम व लक्ष्मण नहीं थे। वहाँ ठहरने के बाद ये दोनों भाई यह पता करने चले गये कि आसपास क्या सुविधायें हैं, राजभवन कितना दूर है। दूसरे दिन पूजा के लिये फूल कहाँ मिलेंगे। जैसे ही राम व लक्ष्मण आये तो उनके श्याम वर्ण व गौर वर्ण की सुंदरता, स्वभाव की मृदुलता, शरीर की सुकोमलता, किशोर आयु, सुखदायी व विश्व के चित्त को चुराने वाले नेत्रों को देखकर बिना किसी परिचय के ही आदर भाव के साथ सब लोग उठकर खड़े हो गये। विश्वामित्र जी ने उन्हें अपने पास बैठा लिया। दोनों भाइयों का तेजस्वी स्वरूप देख सब इतने आनंदित हुए कि नेत्रों में प्रेम के अश्रु आ गये, शरीर रोमांचित हो गया।

जनक जी ब्रह्म ज्ञान भूलकर प्रेम में मग्न हो गये

मूरति मधुर मनोहर देखी। भयउ बिदेहु बिदेहु बिसेषी ॥216:8॥

मूरति मधुर मनोहर = राम जी की मूर्ति मधुर व मनोहर है, *देखी* = इसे देखकर, *भयउ बिदेहु* = विदेह राजा जनक, *बिदेहु बिसेषी* = अब विशेष रूप से विदेह हो गये।

प्रेम मगन मनु जानि नृपु करि बिबेकु धरि धीर ।
बोलेउ मुनि पद नाइ सिरु गदगद गिरा गभीर ॥दोहा 215॥

प्रेम मगन मनु जानि = मन को प्रेम में मग्न समझकर, *नृपु* = राजा ने, *करि बिबेकु* = ज्ञान का सहारा लेकर, *धरि धीर* = धैर्य धारण किया, *बोलेउ मुनि पद नाइ सिरु* = मुनि के चरणों में प्रणाम करके कहते हैं, *गदगद गिरा गभीर* = उनका गला भर आया है, वाणी गंभीर है।

जनक जी विदेह कहलाते हैं। उन्हें देह की सुधि नहीं रहती। राज्य भार सँभालते हुए भी ब्रह्म ज्ञान में लीन रहते हैं। जब राम के मधुर व मनोहर रूप को देखा तो उन्हें ब्रह्मज्ञान ही भुला गया। मानो साधना की एक और सीढ़ी चढ़ गये। इस अवस्था को तुलसीदास जी ने नाम दे दिया 'विशेष विदेह'। राजा जनक ने अनुभूत किया कि हमारा मन प्रेम के अधीन हो गया है, बुद्धि कार्य नहीं कर रही है। हम इनकी तरफ देखते ही रह जायें यह व्यवहार काल में ठीक नहीं। प्रेम के संवेग को नियंत्रित करके धैर्य धारण किया, फिर मुनि के चरणों में प्रणाम करके कहते हैं। प्रेम तो भरा ही था, वाणी भी भर आयी, रुँधे गले से बोलते हैं।

जनक जी पूछते हैं–ये मुनि हैं कि राजवंशी या साक्षात् ब्रह्म हैं?

कहहु नाथ सुंदर दोउ बालक। मुनिकुल तिलक कि नृपकुल पालक ॥216:1॥
ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा। उभय बेष धरि की सोइ आवा ॥216:2॥

कहहु नाथ सुंदर दोउ बालक = हे नाथ! कहिये ये दोनों सुंदर बालक कौन हैं? *मुनिकुल तिलक* = ये श्रेष्ठ मुनि के कुल के हैं, *कि नृपकुल पालक* = कि राजघराने में पैदा हुए हैं, *ब्रह्म जो* = जिस ब्रह्म को, *निगम* = वेदों ने, *नेति*

कहि गावा = इतना ही नहीं कहकर गाते हैं, *उभय बेष धरि* = वही ब्रह्म दो वेष धारण करके, *की सोइ आवा* = क्या वही आ गया है?

महाराज जनक का राम से मिलना एक महत्त्वपूर्ण घटना है। वे ब्रह्मज्ञानी हैं। भगवान को कैसे पहचान लेते हैं, उनसे कैसे प्रभावित होते हैं, इसका वर्णन किया गया है। जनक जी विश्वामित्र जी से प्रश्न करते हैं, ये दोनों बालक क्या कोई महान् श्रेष्ठ मुनि हैं? या राजघराने में पैदा हुए कोई क्षत्रिय हैं? क्योंकि ये मुनियों के साथ हैं तो लगता है कि ये कोई मुनि हैं, परंतु इनके शरीर में दृढ़ता भी दिखाई देती है, तो लगता है कि ये क्षत्रिय राजवंश के होंगे। इनमें ज्यादा ही विशेषता व तेजस्विता दिखाई देती है। वेद जिस ब्रह्म को नेति-नेति कहते हैं कहीं वही ब्रह्म इन दोनों किशोरों का रूप धारण करके तो नहीं आ गया है? इनकी तो अद्‌भुत कांति है।

मेरा विरक्त मन ब्रह्म सुख त्याग, इन्हें देख, मोहित क्यों है?

सहज विरागरूप मनु मोरा। थकित होत जिमि चंद चकोरा ॥216:3॥
ताते प्रभु पूछउँ सतिभाऊ। कहहु नाथ जनि करहु दुराऊ ॥216:4॥
इन्हहि बिलोकत अति अनुरागा। बरबस ब्रह्मसुखहि मन त्यागा ॥216:5॥

सहज विरागरूप मनु मोरा = मेरा मन तो स्वभाव से ही विरक्त है, *थकित होत* = पर इन्हें देख मुग्ध हो रहा है, *जिमि चंद चकोरा* = जैसे चकोर का मन चंद्रमा को देखकर मोहित हो जाता है, *ताते प्रभु पूछउँ सतिभाऊ* = हे प्रभु! इसलिये मैं आपसे सत्य भाव से पूछ रहा हूँ, *कहहु नाथ जनि करहु दुराऊ* = हे नाथ! बताइये; छिपाइये नहीं, *इन्हहि बिलोकत* = इन्हें देखते ही, *अति अनुरागा* = अत्यंत प्रेम के कारण, *बरबस ब्रह्मसुखहि मन त्यागा* = मेरे मन ने जबर्दस्ती ब्रह्म के सुख का त्याग कर दिया है।

अब राजा जनक अपने मन की दशा का वर्णन करते हैं। कहते हैं कि मेरा मन तो स्वभाव से ही विरक्त है। वह सदैव ब्रह्म के आनंद में ही मग्न रहता है। परंतु इन्हें देखकर मन को ब्रह्म के आनंद से भी ज्यादा सुख की अनुभूति हो रही है। वह ब्रह्मानंद को छोड़कर इनके सौंदर्य के प्रति ऐसा आकर्षित हो रहा है जैसे पूर्णिमा के चन्द्रमा की ओर चकोर टकटकी लगाये देखता रहता है। मेरे

मन में बहुत अधिक प्रेम उमड़ रहा है। लगता है इनकी ओर देखते ही रहें। हे नाथ! हमें सच-सच बताइये कि ये दोनों बालक कौन हैं? हमसे कोई छिपाव मत करिये।

अनुमान सही है, सब प्राणियों को प्रिय हैं, राम मन में मुस्कुराते हैं

कह मुनि बिहसि कहेहु नृप नीका। बचन तुम्हार न होइ अलीका ॥216:6॥
ए प्रिय सबहि जहाँ लगि प्रानी। मन मुसुकाहिं रामु सुनि बानी ॥216:7॥

कह मुनि बिहसि = विश्वामित्र जी हँसकर कहते हैं, *कहेहु नृप नीका* = हे राजन्! तुमने ठीक ही कहा है, *बचन तुम्हार न होइ अलीका* = तुम्हारे वचन मिथ्या नहीं हो सकते हैं, *ए प्रिय सबहि* = ये सबको प्रिय हैं, *जहाँ लगि प्रानी* = जगत् में जहाँ तक जितने भी प्राणी हैं, *मन मुसुकाहिं रामु* = राम जी मन में मुस्कुराते हैं, *सुनि बानी* = विश्वामित्र जी की बातें सुनकर।

मुनि विश्वामित्र जी ने राजा जनक के अनुमानों का समर्थन करते हुए कहा कि तुम ठीक कहते हो। तुम्हारी बातें मिथ्या नहीं हो सकती हैं। यह सिद्धांत की बात है कि जितनी बुद्धि शुद्ध होगी उतना ही अनुमान सही होगा। हे राजन्! आपकी तो बात ही क्या, संसार में जितने भी प्राणी हैं उन सबको ये प्रिय हैं। परमात्मा, आनंद का ही दूसरा नाम है। संसार में हर व्यक्ति आनंद चाहता है। इसलिये मुनि कहते हैं कि इन्हें सब चाहते हैं। समझदार व्यक्ति भगवान को आनंदमय समझकर उनसे प्यार करता है। कम समझदार व्यक्ति संसार की चीजों में आनंद खोजता रहता है। पर चाहते सब आनंद हैं। प्रभु राम मुनि के उत्तर को सुनकर मन ही मन मुस्कुराये, क्योंकि मुनि ने यह स्पष्ट रूप से नहीं कहा कि ये ब्रह्म ही हैं। केवल जनक जी के अनुमान को सही बताया।

दशरथ पुत्र राम व लक्ष्मण हैं, निशाचरों को मार यज्ञ-रक्षा की

रघुकुल मनि दसरथ के जाए। मम हित लागि नरेस पठाए ॥216:8॥

रघुकुल मनि दसरथ के जाए = ये दोनों रघुकुल के मणि महाराज दशरथ के पुत्र हैं, *मम हित लागि नरेस पठाए* = मेरे हित के लिये राजा ने इन्हें मेरे साथ भेज दिया है।

रामु लखनु दोउ बंधुबर रूप सील बल धाम ।
मख राखेउ सबु साखि जगु जिते असुर संग्राम ॥दोहा 216॥

रामु लखनु = एक का नाम राम; दूसरे का लक्ष्मण है, *दोउ बंधुबर* = दोनों श्रेष्ठ भाई हैं, *रूप सील बल धाम* = ये दोनों रूपनिधान; शीलनिधान व बल निधान भी हैं, *मख राखेउ* = इन्होंने यज्ञ की रक्षा की है, *सबु साखि जगु* = सारा संसार इस बात का साक्षी है, *जिते असुर संग्राम* = युद्ध में असुरों को जीतकर।

विश्वामित्र जी परिचय देते हैं कि ये रघुकुल मणि महाराज दशरथ के पुत्र हैं और उन्होंने हमारी सहायता के लिये इन्हें हमारे साथ भेज दिया है। एक का नाम राम है, दूसरे का लक्ष्मण है। दोनों श्रेष्ठ भाई हैं। इनके रूप के सौंदर्य व शील को तुमने स्वयं अपनी आँखों से देख ही लिया है। पर ये बहुत बलवान् भी हैं। जब असुरों ने हमारे यज्ञ पर आक्रमण कर दिया तो इन्होंने सारे असुरों को मारकर हमारे यज्ञ की रक्षा की।

ऋषि चरण-दर्शन से पुण्य जागे, परम-आनंद के दर्शन हुए

मुनि तव चरन देखि कह राऊ। कहि न सकउँ निज पुन्य प्रभाऊ ॥217:1॥
सुंदर स्याम गौर दोउ भ्राता। आनँदहू के आनँद दाता ॥217:2॥

मुनि तव चरन देखि कह राऊ = राजा कहते हैं हे मुनि! आपके चरण देखकर, *कहि न सकउँ निज पुन्य प्रभाऊ* = हम अपने पुण्य के प्रभाव को नहीं कह सकते हैं, *सुंदर स्याम गौर दोउ भ्राता* = ये दोनों भाई श्यामल व गोरे रंग के सुंदर हैं, *आनँदहू के आनँद दाता* = आनन्द को भी आनन्द देने वाले हैं।

प्रभु राम व लक्ष्मण का सुंदर परिचय व दर्शन प्राप्त कर जनक जी भाव विभोर हो जाते हैं। कहते हैं हे मुनि! हमारे बहुत पुण्य हैं कि आपके चरण-कमलों के दर्शन हुए। आपके चरण-कमल के दर्शन से लगता है हमारे सोये हुए भाग्य भी जाग गये। जिसके कारण से हमें इतने सुंदर श्यामवर्ण व गौरवर्ण के दोनों भाइयों के दर्शन हुए। ये दोनों राजकुमार तो आनंद को भी आनंद प्रदान करने वाले हैं।

ब्रह्म व जीव जैसा सहज प्रेम, राम व लक्ष्मण में है

इन्ह कै प्रीति परसपर पावनि। कहि न जाइ मन भाव सुहावनि ॥217:3॥
सुनहु नाथ कह मुदित बिदेहू। ब्रह्म जीव इव सहज सनेहू ॥217:4॥

इन्ह कै प्रीति परसपर पावनि = इनके आपस की प्रीति बहुत पवित्र व सुहावनी है, *कहि न जाइ* = वाणी से वर्णन नहीं कर सकते, *मन भाव सुहावनि* = मन को बहुत अच्छी लगती है, *सुनहु नाथ कह मुदित बिदेहू* = जनक जी आनंदित होकर कहते हैं हे नाथ सुनिये! *ब्रह्म जीव इव सहज सनेहू* = ब्रह्म व जीव की तरह इनमें स्वाभाविक प्रेम है।

जनक जी बहुत प्रसन्न मन से कहते हैं कि हे नाथ सुनिये! इन दोनों भाइयों का आपस का प्रेम बहुत पवित्र है, मन को भाने वाले हैं। शब्द से वर्णन नहीं किया जा सकता है। आपसी सहज प्रेम की तुलना ब्रह्म व जीव के प्रेम से करते हैं। जैसे राम के साथ लक्ष्मण सदैव रहते हैं, उनकी सेवा करते रहते हैं, उनसे प्रेम करते हैं, इसी प्रकार हमारे अंदर का जीव सदैव ब्रह्म से सहज प्रेम रखता है। क्योंकि जीव उसी ब्रह्म का अंश है।

बार-बार राम की ओर देखा, सबको नगर में लिवा लाये

पुनि पुनि प्रभुहि चितव नरनाहू। पुलक गात उर अधिक उछाहू ॥217:5॥
मुनिहि प्रसंसि नाइ पद सीसू। चलेउ लवाइ नगर अवनीसू ॥217:6॥

पुनि पुनि प्रभुहि चितव नरनाहू = राजा बार-बार प्रभु राम की ओर देखते हैं, *पुलक गात* = जिससे शरीर पुलकित हो रहा है, *उर अधिक उछाहू* = मन में बहुत प्रसन्नता हो रही है, *मुनिहि प्रसंसि* = मुनि की प्रशंसा करके, *नाइ पद सीसू* = चरणों में प्रणाम करके, *चलेउ लवाइ नगर अवनीसू* = राजा उन्हें नगर में लिवा लाये।

श्रीराम के सुंदर रूप की ओर जनक जी बार-बार देखते हैं, शरीर पुलकित हो रहा है मन में बहुत उत्साह व आनंद है। राजा जनक मुनि के चरणों में सिर नवाकर उनकी प्रशंसा करते हैं कि हे मुनि! आप धन्य हैं, आपको राम-लक्ष्मण का सान्निध्य प्राप्त है। इसके बाद राजा जनक ने निवेदन किया कि आप हमारे साथ नगर में चलिये, वहीं आपके ठहरने की व्यवस्था होगी।

वातानुकूलित सुंदर महल में ठहराया, पूजा-सेवा की

सुंदर सदनु सुखद सब काला। तहाँ बासु लै दीन्ह भुआला ॥217:7॥
करि पूजा सब बिधि सेवकाई। गयउ राउ गृह बिदा कराई ॥217:8॥

सुंदर सदनु = एक सुंदर महल, *सुखद सब काला* = जो सभी ॠतुओं में रहने में सुखदायक था, *तहाँ बासु लै दीन्ह भुआला* = राजा जनके ने उन्हें उस सुन्दर महल में ले जाकर ठहरने की व्यवस्था की, *करि पूजा सब बिधि सेवकाई* = फिर राजा जनक ने सब प्रकार से मुनि विश्वामित्र जी की पूजा की; सेवा की, *गयउ राउ गृह बिदा कराई* = और राजा जनक मुनि से विदा माँगकर अपने महल गये।

राजा जनक मुनि को नगर में ले आये। एक ऐसे सुंदर महल में ठहराया जो चाहे गर्मी हो, चाहे सर्दी हर मौसम में सुखदायक है। फिर मुनि विश्वामित्र जी की सब प्रकार से पूजा की। सेवकों को लगाकर, भोजन, स्नान की पूरी व्यवस्था करवायी। पूजा-सेवा करने के बाद राजा ने मुनि से विदा माँगी, फिर अपने महल को गये।

भोजन विश्राम करके राम-लक्ष्मण बैठे हैं

रिषय संग रघुबंस मनि करि भोजनु बिश्रामु ।
बैठे प्रभु भ्राता सहित दिवसु रहा भरि जामु ॥दोहा 217॥

रिषय संग = ऋषि के साथ, *रघुबंस मनि* = रघुकुल के मणि राम-लक्ष्मण, *करि भोजनु बिश्रामु* = भोजन किया व विश्राम किया, *बैठे प्रभु भ्राता सहित* = प्रभु राम भाई सहित बैठे हैं, *दिवसु रहा भरि जामु* = उस समय पहर भर दिन रह गया था।

जब विश्वामित्र जी व राम-लक्ष्मण ने देखा कि राजा जनक चले गये हैं और दोपहर का समय हो गया है, तब सबने भोजन किया और भोजन के पश्चात् विश्राम किया। विश्राम के पश्चात् राम जी भ्राता लक्ष्मण के साथ बैठे हैं। पहर भर दिन रह गया है मायने सूरज डूबने में लगभग 2 घंटे बचे हैं, सायँकाल होने को है।

9. राम-लक्ष्मण जनकपुर देखने निकले, नगर में चर्चा

(दोहा 218 से 226)

प्रभु राम व लक्ष्मण के नगर भ्रमण के इस सुंदर प्रसंग का पाठ करते समय कुछ समय के लिये जनकपुर के बालक बन जायें या सखी बनकर चर्चा में शामिल हों। फिर देखें कैसे राम व लक्ष्मण के सुंदर शरीर का दर्शन होगा। आनंद की अनुभूति होगी। मन के सारे तनाव एक क्षण में ही दूर हो जायेंगे। प्रभु के सौंदर्य का तुलसीदास जी ने मनमोहक वर्णन किया है। नगर के लोग राम से न केवल आकर्षित होते हैं बल्कि सीता के योग्य वर के रूप में देखने लगते हैं। बालक उनके साथ लग जाते हैं। वे नगर घुमाते हुए धनुष-यज्ञशाला तक ले जाते हैं। राम बहुत प्रेम से सब चीजें देखकर हर्ष प्रगट करते हैं। विलंब के भय से भयभीत होते हुए वापस विश्वामित्र के पास आकर संध्यावंदन कर रात्रि में विश्राम करते हैं। राम-लक्ष्मण विश्वामित्र के चरण दबाते हैं फिर लक्ष्मण राम के चरण दबाते हैं।

लक्ष्मण नगर घूमने की इच्छा स्पष्ट न कह संकेत से करते हैं

लखन हृदयँ लालसा बिसेषी। जाइ जनकपुर आइअ देखी ॥218:1॥
प्रभु भय बहुरि मुनिहि सकुचाहीं। प्रगट न कहहिं मनहिं मुसुकाही ॥218:2॥

लखन हृदयँ लालसा बिसेषी = लक्ष्मण जी के मन में विशेष इच्छा हुई, *जाइ जनकपुर आइअ देखी* = जनकपुर नगर घूम कर आयें, *प्रभु भय* = श्रीराम का भय है, *बहुरि मुनिहि सकुचाहीं* = फिर मुनि से संकोच लगता है, *प्रगट न कहहिं मनहिं मुसुकाही* = कुछ कहते नहीं परंतु मन में मुस्कुराते हैं।

सायँकाल नगर में जाने का समय भी है उसी के अनुकूल लक्ष्मण जी के मन में इच्छा उत्पन्न हुई कि जनकपुर नगर देखकर आवें। वे छोटे हैं, छोटों में घूमने की भावना ज्यादा रहती है। बाल स्वभाव प्रगट होता है। लक्ष्मण जी के मन में राम के प्रति आदरयुक्त भय है और मुनि का संकोच भी है। वे साफ-साफ तो नहीं कहते पर संकोच से मुस्कुराकर संकेत से अपनी इच्छा व्यक्त करते हैं। भाव यह है कि यदि बड़े मना कर दें तो वह अधिक आग्रह नहीं करेंगे।

मन की बात समझकर राम मुनि से जाने की आज्ञा मानते हैं

राम अनुज मन की गति जानी। भगत बछलता हियँ हुलसानी ॥218:3॥
परम बिनीत सकुचि मुसुकाई। बोले गुर अनुसासन पाई ॥218:4॥

राम अनुज मन की गति जानी = छोटे भाई की मन की दशा को राम जान गये, *भगत बछलता हियँ हुलसानी* = राम के मन में भक्त के प्रति प्रेम आ गया, *परम बिनीत सकुचि मुसुकाई* = अत्यंत विनम्रता से सकुचाकर; मुस्कुराकर, *बोले गुर अनुसासन पाई* = गुरु की आज्ञा पाकर राम कहते हैं।

नाथ लखनु पुरु देखन चहहीं। प्रभु सकोच डर प्रगट न कहहीं ॥218:5॥
जौं राउर आयसु मैं पावौं। नगर देखाइ तुरत लै आवौं ॥218:6॥

नाथ लखनु पुरु देखन चहहीं = हे नाथ! लक्ष्मण नगर देखना चाहते हैं, *प्रभु सकोच डर* = पर आपके संकोच व डर से, *प्रगट न कहहीं* = स्पष्ट नहीं कहते हैं, *जौं राउर* = यदि आपकी, *आयसु मैं पावौं* = आज्ञा मैं पाऊँ, *नगर देखाइ तुरत लै आवौं* = नगर दिखाकर जल्दी लौटकर ले आऊँगा।

राम ने छोटे भाई के मन की बात समझी। उनके मन में भक्त के प्रति प्रेम आ गया कि यदि ये नगर देखना चाहते हैं तो इन्हें दिखाना चाहिये। दोनों भाई गुरु के पास जाकर बहुत विनम्रता व संकोच से मुस्कुराते हुए खड़े हैं। विश्वामित्र जी ने पूछा कैसे आये हो? क्या चाहते हो? जब अवसर दिया तब राम बोले। यह बातचीत करने का तरीका है। कहते हैं, हे नाथ! लक्ष्मण नगर देखना चाहते हैं, आपके संकोच व भय के कारण स्पष्ट नहीं कहते, पर इनके मन में इच्छा है। यदि आपकी आज्ञा हो तो हम जाकर नगर दिखा लावें। नगर दिखाकर शीघ्र लौट भी आयेंगे। पहले ही बता दिया कि समय से आ जायेंगे।

नगर देखो, अपने सुंदर रूप का दर्शन देकर सबको धन्य करो

सुनि मुनीसु कह बचन सप्रीती। कस न राम तुम्ह राखहु नीती ॥218:7॥
धरम सेतु पालक तुम्ह ताता। प्रेम बिबस सेवक सुखदाता ॥218:8॥

सुनि मुनीसु = मुनि ने राम की बातें सुनकर, *कह बचन सप्रीती* = प्रेम पूर्वक वचनों से कहा, *कस न राम तुम्ह राखहु नीती* = हे राम! तुम नीति की रक्षा कैसे

न करोगे? *धरम सेतु पालक तुम्ह ताता* = हे तात! तुम तो धर्म के पुल की रक्षा करने वाले हो, *प्रेम बिबस* = प्रेम के वश में होकर, *सेवक सुखदाता* = सेवकों को सुख देने वाले हो।

जाइ देखि आवहु नगरु सुख निधान दोउ भाइ ।
करहु सुफल सब के नयन सुंदर बदन देखाइ ॥दोहा 218॥

जाइ देखि आवहु नगरु = जाकर नगर देख आओ, *सुख निधान दोउ भाइ* = तुम दोनों भाई सुख के निधान हो, *करहु सुफल सब के नयन* = सब नगरवासियों के नेत्रों को सफल करो, *सुंदर बदन देखाइ* = अपने सुंदर रूप का दर्शन करवाकर।

विश्वामित्र जी कहते हैं, हे तात! तुम्हारा तो स्वभाव ही नीति की रक्षा करना है। तुम धर्म के पुल की रक्षा करने वाले हो। तुम प्रेम के वशीभूत होकर सेवकों पर कृपा करने वाले हो। तुम दोनों भाई सुख निधान हो। जाकर नगर देखकर आओ। तुम्हारे सुंदर मुख को देखकर सब नगरवासी आनंदित होकर प्रसन्न होंगे। इस प्रकार स्वीकृति दे दी। कार्य ऐसा हो जिससे सबका लाभ हो।

नगर में पहुँचे, आकर्षित होकर बालक साथ में चलने लगे

मुनि पद कमल बंदि दोउ भ्राता। चले लोक लोचन सुखदाता ॥219:1॥
बालक बृंद देखि अति सोभा। लगे संग लोचन मनु लोभा ॥219:2॥

मुनि पद कमल बंदि दोउ भ्राता = दोनों भाई मुनि के चरण कमलों की वंदना करके, *चले* = चलते हैं, *लोक लोचन सुखदाता* = ये समस्त लोकों के प्राणियों के नेत्रों को सुख देने वाले हैं, *बालक बृंद* = बालकों के समूह, *देखि अति सोभा* = इनकी अत्यंत सुंदरता देखकर, *लगे संग* = साथ में चलने लगे, *लोचन मनु लोभा* = बालकों का मन व नेत्र राम-लक्ष्मण में ही लुभा जाता है।

विश्वामित्र जी के चरणों में प्रणाम करके सारे संसार के नेत्रों को सुख देने वाले राम व लक्ष्मण जनकपुर नगर के भ्रमण के लिये चलते हैं। जैसे ही नगर में पहुँचे उनके सुंदर रूप को देखकर नगर के बहुत से बालक उनकी तरफ आकर्षित हो गये। बालकों का मन व नेत्र राम-लक्ष्मण के प्रति इतने लुभा गये कि वे उनके साथ में ही चलने लगते हैं।

प्रभु राम के सुंदर रूप का सिर से लेकर पैर तक वर्णन

तुलसीदास जी ने प्रभु राम की सुंदरता का वर्णन सिर से लेकर पैरों तक प्रसंग के अनुसार कई जगह किया है। जहाँ भी ऐसा वर्णन है उसे चित्त में धारण करें। ध्यान करते समय उसी पर मन को टिकायें।

पीले वस्त्र, कमर में तरकस, हाथ में धनुष-बाण, माथे पर चंदन

पीत बसन परिकर कटि भाथा। चारु चाप सर सोहत हाथा ॥219:3॥
तन अनुहरत सुचंदन खोरी। स्यामल गौर मनोहर जोरी ॥219:4॥

पीत बसन = पीताम्बर धारण किये हैं, *परिकर कटि भाथा* = कमर में तरकस बाँधे हैं, *चारु चाप सर* = सुंदर धनुष व बाण, *सोहत हाथा* = हाथों में शोभा पा रही है, *तन अनुहरत* = शरीर के वर्ण अनुसार, *सुचंदन खोरी* = सुंदर चंदन लगा रखा है, *स्यामल गौर मनोहर जोरी* = श्यामल व गोरे रंग की मनोहर जोड़ी है।

पीताम्बरी वस्त्र, कमर में तरकस, एक हाथ में धनुष और एक में बाण लिये हैं। शरीर के वर्ण के अनुसार सुंदर चंदन का टीका माथे पर लगाये हैं। श्यामल रंग के राम व गोरे रंग के लक्ष्मण की जोड़ी मन को अत्यधिक भाने वाली लग रही है।

मजबूत कंधे, लंबी भुजायें, मणि-माला, लाल नेत्र, तेजस्वी मुख

केहरि कंधर बाहु बिसाला। उर अति रुचिर नागमनि माला ॥219:5॥
सुभग सोन सरसीरुह लोचन। बदन मयंक तापत्रय मोचन ॥219:6॥

केहरि कंधर = सिंह के समान कंधे हैं, *बाहु बिसाला* = लंबी बाहें हैं, *उर अति रुचिर नागमनि माला* = वक्ष पर सुंदर गजमुक्ता की माला पहने हैं, *सुभग सोन सरसीरुह* = सुंदर लालकमल के समान, *लोचन* = नेत्र हैं, *बदन मयंक* = चन्द्रमा के समान मुख है, *तापत्रय मोचन* = जो तीनों तापों से छुड़ाने वाला है।

सिंह के समान मजबूत कंधे हैं। लंबी भुजाये हैं। वक्ष के ऊपर अत्यंत सुंदर मणि-मुक्ता माला पहने हैं। नाग मायने हाथी भी है, सर्प भी है। हाथी के सिर पर मुक्ता होती है। सर्प के माथे पर मणि होती है। इन्हीं मणि व मुक्ता की माला पहने हैं। लाल कमल के समान सुंदर नेत्र हैं। चन्द्रमा के समान प्रकाशवान् तेजस्वी मुख

है। जैसे चन्द्रमा की शीतल किरणें ताप को दूर करती हैं, वैसे ही राम के मुख का तेज दैहिक, दैविक व भौतिक, तीनों तापों को दूर करने वाला है।

कानों में कुंडल, तिरछी भौहें, आकर्षक दृष्टि, तिलक की रेखायें

कानन्हि कनक फूल छबि देहीं। चितवत चितहि चोरि जनु लेहीं ॥219:7॥
चितवनि चारु भृकुटि बर बाँकी। तिलक रेख सोभा जनु चाँकी ॥219:8॥

कानन्हि = कानों में, *कनक फूल* = सोने के फूल पहने हैं, *छबि देहीं* = जो बहुत सुंदर हैं, *चितवत* = उन्हें देखते ही, *चितहि चोरि जनु लेहीं* = मानो चित्त को किसी ने चुरा लिया हो, *चितवनि चारु* = उनके देखने का तरीका बहुत सुंदर है, *भृकुटि बर बाँकी* = तिरछी भौहें, *तिलक रेख* = माथे पर तिलक की रेखायें, *सोभा जनु चाँकी* = इतनी सुंदर हैं मानो पूरी शोभा वहीं पर स्थिर हो गयी हो।

कानों में सुंदर कर्णफूल पहने हैं। प्रभु राम की दृष्टि इतनी सुंदर है कि जिसकी तरफ भी पड़ती है, वही व्यक्ति बहुत प्रसन्न हो जाता है। उनके देखने के तरीके से लोगों के चित्त ही चोरी हो जाते हैं। भौहें तिरछी व सुंदर हैं। माथे पर लगे तिलक की रेखायें इतनी शोभायमान हैं कि लगता है पूरी सुंदरता को मस्तक पर एकत्रित करके उस पर मोहर लगा दी हो।

चौकोनी टोपी, काले घुँघराले बाल, अंग के अनुरूप शृंगार है

रुचिर चौतनीं सुभग सिर मेचक कुंचित केस ।
नख सिख सुंदर बंधु दोउ सोभा सकल सुदेस ॥दोहा 219॥

रुचिर चौतनीं = सुंदर चार कोने वाली टोपी, *सुभग सिर* = सुंदर सिर पर रखे हैं, *मेचक* = काले, *कुंचित केस* = घुंघराले बाल हैं, *नख सिख सुंदर बंधु दोउ* = नीचे से लेकर ऊपर तक दोनों भाई सुंदर हैं, *सोभा सकल सुदेस* = सारी शोभा जहाँ जैसी चाहिये वैसी ही है।

सिर पर सुंदर चौकोनी टोपी लगाये हैं, जिसमें चार कोने हैं। काले घुँघराले बाल हैं जो टोपी के नीचे से दिखाई देते हैं। पैरों के नाखून से लेकर शिखा तक राम व लक्ष्मण के प्रत्येक अंग की शोभा उस अंग के अनुसार ही है।

सब कार्य छोड़कर नगर के लोग राजकुमार को देखने आ गये

देखन नगरु भूपसुत आए। समाचार पुरबासिन्ह पाए ॥220:1॥
धाए धाम काम सब त्यागी। मनहुँ रंक निधि लूटन लागी ॥220:2॥
निरखि सहज सुंदर दोउ भाई। होहिं सुखी लोचन फल पाई ॥220:3॥

देखन नगरु भूपसुत आए = राजकुमार नगर देखने आये हैं, *समाचार पुरबासिन्ह पाए* = यह बात जब नगर के लोगों को पता चली, *धाए धाम काम सब त्यागी* = तो वे घर व कार्य छोड़कर ऐसे दौड़े, *मनहुँ रंक निधि लूटन लागी* = मानो कोई दरिद्र व्यक्ति खजाना लूटने दौड़े, *निरखि* = यह देखकर, *सहज सुंदर दोउ भाई* = दोनों भाई सहज ही सुंदर हैं, *होहिं सुखी* = प्रसन्न हो जाते है, *लोचन फल पाई* = उन्हें लगा नेत्रों का यही फल है।

जनकपुर के मार्ग से राम व लक्ष्मण चले जा रहे हैं। नगरवासियों को पता चला तो वे सब कार्य छोड़ घर से निकलकर दरवाजे पर आ गये। उन्हें देखने इस प्रकार दौड़े जैसे कोई संपत्ति बँट रही हो जिसे लेने के लिये दरिद्र व्यक्ति दौड़े। लोगों ने देखा कि दोनों राजकुमार सहज ही सुंदर हैं। उनकी सुंदरता बनावटी नहीं है। भगवान जब अवतार लेते हैं तब उनका आनंद का गुण, सौंदर्य बनकर प्रगट होता है। इसलिये रूप की सुंदरता देखकर, नेत्रों को सफल करते हुए सभी को बहुत आनंद की प्राप्ति होती है।

जनकपुर की 8 सखियों की राम-सीता के बारे में बातचीत

जुबतीं भवन झरोखन्हि लागीं। निरखहिं राम रूप अनुरागीं ॥220:4॥
कहहिं परसपर बचन सप्रीती। सखि इन्ह कोटि काम छबि जीती ॥220:5॥

जुबतीं = स्त्रियाँ, *भवन झरोखन्हि लागीं* = घर की खिड़कियों के पास खड़ी हो गईं, *निरखहिं राम रूप अनुरागीं* = प्रेम सहित राम के रूप को देखने लगीं, *कहहिं परसपर बचन सप्रीती* = एक-दूसरे से प्रेमपूर्वक कहती हैं, *सखि इन्ह कोटि काम छबि जीती* = हे सखी! इन्होंने तो करोड़ों कामदेव की सुंदरता को जीत लिया है।

पुरुष व बालक तो सड़कों पर आ गये, पर स्त्रियों ने कैसे देखा? घर की खिड़कियाँ खोलकर, बहुत प्रेम से, अनुराग से प्रभु के सुंदर स्वरूप को देखने

लगीं। सखियाँ आपस में बातें कर रही हैं। तुलसीदास जी इस प्रसंग में आठ सखियों की चर्चा का वर्णन करते हैं। वे एक के बाद एक बोलती हैं। उनके प्रेम भाव को मन में रखते हुए इन चौपाइयों का पाठ करें।

1. एक सखी माधुर्य रूप का वर्णन करती है

सुर नर असुर नाग मुनि माहीं। सोभा असि कहुँ सुनिअति नाहीं ॥220:6॥
बिष्नु चारि भुज बिधि मुख चारी। बिकट बेष मुख पंच पुरारी ॥220:7॥
अपर देउ अस कोउ न आही। यह छबि सखी पटतरिअ जाही ॥220:8॥

सुर नर असुर नाग मुनि माहीं = देवता; मनुष्य; निशाचर; नाग व मुनियों में, *सोभा असि* = इस प्रकार की सुंदरता, *कहुँ सुनिअति नाहीं* = कभी सुनी नहीं है, *बिष्नु चारि भुज* = विष्णु जी की चार भुजायें हैं, *बिधि मुख चारी* = ब्रह्मा जी के चार मुख हैं, *बिकट बेष मुख पंच पुरारी* = शंकर जी का भयंकर वेष व पाँच मुख हैं, *अपर देउ* = अन्य दूसरा देवता, *अस कोउ न आही* = भी ऐसा कोई नहीं है, *यह छबि* = इनकी सुंदरता की, *सखी पटतरिअ जाही* = हे सखी! जिससे तुलना की जा सके।

बय किसोर सुषमा सदन स्याम गौर सुख धाम ।
अंग अंग पर वारिअहिं कोटि कोटि सत काम ॥दोहा 220॥

बय किसोर = किशोर अवस्था है, *सुषमा सदन* = सौंदर्य के निधान हैं, *स्याम गौर* = श्यामल व गोरे रंग के हैं, *सुख धाम* = सुख प्रदान करने वाले हैं, *अंग अंग पर* = एक-एक अंग इतना सुंदर है, *वारिअहिं* = उस पर न्यौछावर हो जायें, *कोटि कोटि सत काम* = सौ करोड़ कामदेवों की सुंदरता भी।

कहहु सखी अस को तनु धारी। जो न मोह यह रूप निहारी ॥221:1॥

कहहु सखी = हे सखी! कहो, *अस को तनु धारी* = ऐसा कौन शरीरधारी होगा, *जो न मोह यह रूप निहारी* = जो इस रूप को देखकर मोहित न हो जाये।

पहली सखी राम व लक्ष्मण की सुंदरता का वर्णन करने के लिये बहुत सारी उपमायें खोजती है, पर उसे लगा कि इनसे ज्यादा सुंदर संसार में कोई है ही नहीं। कहती है कि संसार में बहुत से प्राणी हैं जैसे देवता, मनुष्य, नाग, मुनि

व असुर आदि, इन सबमें ऐसी सुंदरता न आज तक देखी है न सुनी है। फिर कहती है कि त्रिदेवों को भी देखो, तो विष्णु जी सुंदर हैं पर उनकी चार भुजायें अटपटी लगती हैं। ब्रह्माजी के चार-चार मुख हैं, सुंदर तो हैं पर सामान्य नहीं लगते हैं। शिव जी तो विकराल हैं, पाँच मुख हैं। अन्य देवताओं से भी इनकी बराबरी नहीं की जा सकती है। इनकी किशोर अवस्था है, एक-एक अंग सौंदर्य से इस प्रकार परिपूर्ण है कि करोड़ों कामदेवों की सुंदरता भी इनके सामने कुछ नहीं है। अंत में कहती है कि संसार में ऐसा कोई तनुधारी प्राणी नहीं होगा जो इनकी सुंदरता देखकर मोह में न पड़ जाये। वह स्वयं मोहित हो जाती है।

2. दूसरी सखी ऐश्वर्य, शक्ति बताकर परिचय देती है

कोउ सप्रेम बोली मृदु बानी। जो मैं सुना सो सुनहु सयानी ॥221:2॥
ए दोऊ दसरथ के ढोटा। बाल मरालन्हि के कल जोटा ॥221:3॥
मुनि कौसिक मख के रखवारे। जिन्ह रन अजिर निसाचर मारे ॥221:4॥

कोउ सप्रेम बोली मृदु बानी = दूसरी स्त्री प्रेम से मधुर वाणी में कहती है, *जो मैं सुना* = मैंने जो सुना है, *सो सुनहु सयानी* = हे समझदार सखी! उसे सुनो, *ए दोऊ दसरथ के ढोटा* = ये दोनों महाराज दशरथ के बालक हैं, *बाल मरालन्हि के* = हंस के दो बच्चों, *कल* = के समान, *जोटा* = इनकी जोड़ी है, *मुनि कौसिक* = मुनि विश्वामित्र जी के, *मख के रखवारे* = यज्ञ की रक्षा की है, *जिन्ह रन अजिर* = इन्होंने युद्ध के मैदान में, *निसाचर मारे* = राक्षस मारे।

स्याम गात कल कंज बिलोचन। जो मारीच सुभुज मदु मोचन ॥221:5॥
कौसल्या सुत सो सुख खानी। नामु रामु धनु सायक पानी ॥221:6॥

स्याम गात = जिनका श्यामल रंग का शरीर है, *कल कंज बिलोचन* = कमल के समान नेत्र हैं, *जो मारीच सुभुज* = इन्होंने मारीच व सुबाहु के, *मदु मोचन* = अहंकार को चूर कर दिया है, *कौसल्या सुत* = ये माँ कौसल्या के पुत्र हैं, *सो सुख खानी* = ये सुख प्रदान करने वाले हैं, *नामु रामु* = इनका नाम राम है, *धनु सायक पानी* = जो हाथ में धनुष-बाण लिये हैं।

गौर किसोर बेषु बर काछें। कर सर चाप राम के पाछें ॥221:7॥
लछिमनु नामु राम लघु भ्राता। सुनु सखि तासु सुमित्रा माता ॥221:8॥

गौर = जिनका रंग गोरा है, *किसोर* = किशोर अवस्था है, *बेषु बर काछें* = जो सुंदर वेष बनाये हैं, *कर सर चाप* = जो हाथ में धनुष-बाण लिये, *राम के पाछें* = राम के पीछे-पीछे चल रहे हैं, *लछिमनु नामु* = उनका नाम लक्ष्मण है, *राम लघु भ्राता* = वे राम के छोटे भाई हैं, *सुनु सखि* = हे सखी! सुनो, *तासु सुमित्रा माता* = उनकी माँ का नाम सुमित्रा है।

बिप्रकाजु करि बंधु दोउ मग मुनिबधू उधारि ।
आए देखन चापमख सुनि हरषीं सब नारि ॥दोहा 221॥

बिप्रकाजु करि = विप्र का कार्य कर, *बंधु दोउ* = दोनों भाई, *मग मुनिबधू उधारि* = रास्ते में गौतमी का उद्धार करके, *आए देखन चापमख* = यहाँ धनुषयज्ञ देखने आये हैं, *सुनि हरषीं सब नारि* = यह सुनकर सब स्त्रियाँ प्रसन्न हो गईं।

पहली सखी की बातें सुनकर दूसरी बहुत ही मृदुवाणी में कहती है कि मैंने सुना है कि ये अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र हैं। ये दोनों तो इस प्रकार लगते हैं मानो नीले हंस व सफेद हंस के बच्चों की सुंदर जोड़ी हो। ग्रामीण भाषा में छोटे बालक को ढोटा कहते हैं। दशरथ जी चक्रवर्ती राजा हैं, इसलिये उनका पुत्र होना ऐश्वर्य की बात है। अब उनकी शक्ति का वर्णन करते हुए कहती है कि ये देखने में छोटे हैं पर हैं बहुत ही शक्तिशाली। इन्होंने निशाचरों का वध करके विश्वामित्र जी के यज्ञ की रक्षा की है। जो श्यामवर्ण के हैं, सुंदर कमल के समान जिनके नेत्र हैं, हाथ में धनुष-बाण लिये हैं, वे मारीच व सुबाहु के अहंकार को चूर करने वाले हैं, सबको सुख देने वाले हैं, वे कौशल्या के पुत्र हैं, उनका नाम राम है। जो दूसरे हैं, जिनका रंग गोरा है, धनुष-बाण लिये राम के पीछे चल रहे हैं, राम के छोटे भाई हैं, उनका नाम लक्ष्मण है, सुमित्रा उनकी माता हैं। जनकपुर आते समय मार्ग में गौतम ऋषि की पत्नी जो पत्थर बन गयी थी, उसे राम ने छू दिया तो वह फिर से स्त्री बनकर अपने पति के पास चली गयी। ये इस प्रकार के अलौकिक कार्य करते हैं। जनकपुर में ये दोनों धनुष-यज्ञ देखने आये हैं। दूसरी सखी की बातें सुनकर सब स्त्रियाँ बहुत हर्षित हो गयीं।

3. जानकी के योग्य वर हैं, राजा ने देखा होता तो प्रण छोड़ देते

देखि राम छबि कोउ एक कहई। जोगु जानकिहि यह बरु अहई ॥222:1॥
जौं सखि इन्हहि देख नरनाहू। पन परिहरि हठि करइ बिबाहू ॥222:2॥

देखि राम छबि = राम की सुंदरता देखकर, *कोउ एक कहई* = एक सखी कहती है, *जोगु जानकिहि* = जानकी जी के योग्य, *यह बरु अहई* = यह वर है, *जौं सखि इन्हहि देख नरनाहू* = हे सखी! यदि राजा ने इन्हें देखा होता, *पन परिहरि* = प्रतिज्ञा त्याग करके, *हठि करइ बिबाहू* = इन्हीं से विवाह कर देते।

राम जी की सुंदरता देखकर व महिमा सुनकर तीसरी सखी कहती है, सीता जी के अनुकूल यही वर है। यदि हमारे राजा जनक ने इन्हें देखा होता तो वे धनुष उठाने की अपनी प्रतिज्ञा त्याग करके इन्हीं से जानकी का विवाह कर देते। इतना कहकर वह चुप हो गई।

4. राजा इनसे मिल चुके हैं, फिर भी प्रतिज्ञा नहीं छोड़ रहे हैं

कोउ कह ए भूपति पहिचाने। मुनि समेत सादर सनमाने ॥222:3॥
सखि परंतु पनु राउ न तजई। बिधि बस हठि अबिबेकहि भजई ॥222:4॥

कोउ कह ए भूपति पहिचाने = कोई स्त्री कहती है कि राजा इन्हें पहचानते हैं, *मुनि समेत सादर सनमाने* = राजा ने मुनि सहित इनका आदर सहित सम्मान किया है, *सखि परंतु* = परंतु हे सखी, *पनु राउ न तजई* = राजा ने अपनी प्रतिज्ञा छोड़ी नहीं है, *बिधि बस* = विधाता जो करेगा वही होगा यह मानकर, *हठि अबिबेकहि भजई* = राजा एक अविवेकी की तरह अपने हठ का पालन कर रहे हैं।

चौथी सखी कहती है, तुम्हें मालुम नहीं है क्या? जब ये आये थे तो राजा जनक इन्हें लेने गये थे। आदर से मुनि विश्वामित्र के साथ इन्हें नगर में लिवा लाये हैं। राजा ने ही जनकपुर में ठहराया है। विश्वामित्र जी ने स्वयं इनके बारे में राजा को बताया है, फिर भी वे अपनी प्रतिज्ञा को पकड़े अविवेकी व्यक्ति की भाँति बैठे हैं। तुलसीदास जी स्त्रियों के मन की कोमलता का चित्रण करते हैं। सीता में प्रेम के कारण सखियाँ इतने ज्ञानी राजा को अविवेकी कहती हैं।

5. अब विधाता के हाथ में सब है, वह चाहे तो विवाह करा दे

कोउ कह जौं भल अहइ बिधाता। सब कहँ सुनिअ उचित फल दाता ॥222:5॥
तौ जानकिहि मिलिहि बरु एहू। नाहिन आलि इहाँ संदेहू ॥222:6॥

कोउ कह = कोई सखी कहती है, *जौं भल अहइ बिधाता* = यदि विधाता अच्छे हैं, *सब कहँ सुनिअ* = सबकी सुनकर, *उचित फल दाता* = उचित फल देते हैं, *तौ जानकिहि* = तो फिर जानकी जी को, *मिलिहि बरु एहू* = यही वर प्राप्त होंगे, *नाहिन आलि इहाँ संदेहू* = हे सखी इसमें संदेह नहीं है।

जौं बिधि बस अस बनै सँजोगू। तौ कृतकृत्य होइ सब लोगू ॥222:7॥
सखि हमरें आरति अति तातें। कबहुँक ए आवहिं एहि नातें ॥222:8॥

जौं बिधि बस = यदि विधाता की इच्छा से, *अस बनै सँजोगू* = इस प्रकार का संयोग बनता है, *तौ कृतकृत्य होइ सब लोगू* = तो सभी लोग धन्य हो जायेंगे, *सखि हमरें आरति अति तातें* = हे सखी हमें तो इसीलिये इतनी आतुरता हो रही है, *कबहुँक ए आवहिं एहि नातें* = इसी रिश्ते से ये कभी-कभी यहाँ आते रहेंगे।

नाहिं त हम कहुँ सुनहु सखि इन्ह कर दरसनु दूरि ।
यह संघटु तब होइ जब पुन्य पुराकृत भूरि ॥दोहा 222॥

नाहिं त = यदि विवाह न हुआ तो, *हम कहुँ* = हम लोगों को, *सुनहु सखि* = हे सखी सुनो, *इन्ह कर दरसनु दूरि* = इनके दर्शन नहीं हो पायेंगे, *यह संघटु तब होइ* = यह संयोग तभी हो सकता है, *जब पुन्य पुराकृत भूरि* = जब हमारे पूर्व जन्मों के बहुत से पुण्य हों।

पाँचवीं सखी कहती है कि अब तो सब विधाता के हाथ में ही है। वह तो सबको उचित फल देता है। चौथी सखी ने कहा था '*बिधि बस हठि*', यह कहती है कि नहीं, विधाता अपने से कुछ नहीं करता, वह कर्म के अनुसार फल देता है। इसलिये सीता को राम वर के रूप में अवश्य मिलेंगे, इसमें रंचमात्र भी संदेह नहीं है। चाहे राजा प्रतिज्ञा रखें या तोडें। जैसे राम हैं वैसी ही सीता हैं। इन दोनों का विवाह होना उचित है, इसलिये यही होगा। यदि ऐसा संयोग बनता है तो जनकपुर वासी सब कृतकृत्य हो जायेंगे। हे सखी! हम इसलिये इतने आतुर हैं कि रिश्ता हो जाने पर इसी के बहाने कभी-कभी जनकपुर आते रहेंगे। हम लोग इनके दर्शन करते रहेंगे। यदि ये बिना रिश्ता हुए लौट गये, तो फिर कहाँ आने वाले? हमारे अनेक जन्मों के पुण्य हों तब कहीं जाकर यह संयोग बनेगा। इस प्रकार यह सखी प्रभु राम से अपनापन जोड़ लेती है।

6. हाँ, इस विवाह से सभी का हित है

बोली अपर कहेहु सखि नीका। एहिं बिआह अति हित सबही का ॥223:1॥

बोली अपर = दूसरी सखी कहती है, *कहेहु सखि नीका* = हे सखी तुमने ठीक कहा है, *एहिं बिआह अति हित सबही का* = इस विवाह से सभी का बहुत हित है।

छठवीं सखी कहती है, तुमने बिल्कुल ठीक कहा है, सीता जी से इनका विवाह हो, ये बार-बार जनकपुर आयें, हमें दर्शन प्राप्त हो। इसी में सबका हित है। यदि ऐसा हो जाये तो अच्छा है।

7. शंकर जी का धनुष कठोर है, ये तो छोटे व सुकोमल हैं

कोउ कह संकर चाप कठोरा। ए स्यामल मृदु गात किसोरा ॥223:2॥
सबु असमंजस अहइ सयानी। यह सुनि अपर कहइ मृदु बानी ॥223:3॥

कोउ कह = दूसरी कहती है, *संकर चाप कठोरा* = शंकर जी का धनुष बहुत कठोर है, *ए स्यामल मृदु गात किसोरा* = ये श्यामल किशोर अवस्था के हैं, *सबु असमंजस अहइ सयानी* = हे समझदार सखी सब शंका ही शंका है, *यह सुनि अपर कहइ मृदु बानी* = यह सुनकर दूसरी सखी मधुर वाणी में कहती है।

यह सब सुनकर एक सखी शंका प्रगट करते हुए कहती है कि शंकर जी का धनुष तो बहुत कठोर है, बहुत भारी है। और तुम देख ही रही हो श्यामल रंग के राजकुमार का शरीर कितना कोमल है, मृदुल है, आयु कम है, किशोर अवस्था है। यह सखी शंकालु स्वभाव की है। कहती है सब शंका ही शंका है। यह सुनकर दूसरी सखी कोमल वाणी में कहती है।

8. दिव्यता व शक्ति का वर्णन कर कहती है, यही धनुष तोड़ेंगे

सखि इन्ह कहँ कोउ कोउ अस कहहीं। बड़ प्रभाउ देखत लघु अहहीं ॥223:4॥
परसि जासु पद पंकज धूरी। तरी अहल्या कृत अघ भूरी ॥223:5॥

सखि इन्ह कहँ कोउ कोउ अस कहहीं = हे सखी इनके बारे में कोई-कोई ऐसा कहते हैं, *बड़ प्रभाउ* = इनकी शक्ति बहुत है, *देखत लघु अहहीं* = देखने में बस

छोटे हैं, *परसि जासु पद पंकज धूरी* = जिनके चरण कमल की धूलि के स्पर्श से, *तरी अहल्या* = अहिल्या तर गयी, *कृत अघ भूरी* = जिसने बहुत पाप किया था।

सो कि रहिहि बिनु सिवधनु तोरें। यह प्रतीति परिहरिअ न भोरें ॥223:6॥
जेहिं बिरंचि रचि सीय सँवारी। तेहिं स्यामल बरु रचेउ बिचारी ॥223:7॥

सो कि रहिहि बिनु सिवधनु तोरें = वे क्या शिव जी का धनुष बिना तोड़े रहेंगे? *यह प्रतीति* = इस विश्वास को, *परिहरिअ न भोरें* = भूलकर भी नहीं छोड़ना चाहिये, *जेहिं बिरंचि* = जिस विधाता ने, *रचि सीय सँवारी* = सीता जी को इतना सुंदर बनाया है, *तेहिं स्यामल बरु रचेउ बिचारी* = उसी विधाता ने श्यामल रंग के वर की भी रचना की है।

आठवीं सखी शंका का समाधान करते हुए कहती है कि ये दिखने में छोटे व कोमल हैं पर हैं बहुत ही शक्तिशाली। इनकी चरण की धूलि लग जाने से अहिल्या, जिसने इतने पाप किये थे, का उद्धार हो गया। इन्हें साधारण मत समझो ये दिव्य हैं। अहिल्या जनकपुर के राजगुरु शतानंद जी के परिवार की ही थी। इसलिये यह बात वहाँ ज्यादा फैल गयी थी। राम जी का परिचय तभी पूरा होता है, जब उनकी दिव्यता का परिचय दिया जाये। अंतिम सखी दिव्यता का वर्णन करके कहती है, ऐसा अपने में विश्वास रखो कि ये ही शिव-धनुष तोड़ेंगे। जिस विधाता ने सीता को इतना सुंदर व महिमावान् बनाया उसी ने श्यामल राम को उनके अनुकूल वर बना दिया।

सब हर्षित होकर फूलों की वर्षा करती हैं

तासु बचन सुनि सब हरषानीं। ऐसेइ होउ कहहिं मृदु बानीं ॥223:8॥

तासु बचन सुनि सब हरषानीं = उसकी बातें सुनकर सब हर्षित हो गयीं, *ऐसेइ होउ कहहिं मृदु बानीं* = कोमल वाणी से कहने लगीं ऐसा ही होगा।

हियँ हरषहिं बरषहिं सुमन सुमुखि सुलोचनि बृंद ।
जाहिं जहाँ जहँ बंधु दोउ तहँ तहँ परमानंद ॥दोहा 223॥

हियँ हरषहिं = मन में प्रसन्न हैं, *बरषहिं सुमन* = फूलों की वर्षा करती हैं, *सुमुखि सुलोचनि बृंद* = सुंदर मुख व सुंदर नेत्रों वाली स्त्रियाँ, *जाहिं जहाँ*

जहँ बंधु दोउ = जहाँ-जहाँ दोनों भाई जाते हैं, *तहँ तहँ परमानंद* = वहाँ-वहाँ परम आनंद छा जाता है।

इस बात को सुनकर सब प्रसन्न हो गईं, शंका मिट गई, सब कहने लगीं ऐसा ही होगा, तुम्हारी बात सत्य हो जाये। सुंदर मुख व सुंदर नेत्रों वाली सब सखियाँ इस प्रकार से प्रसन्न होकर फूलों की वर्षा भी करती जाती हैं। जहाँ-जहाँ दोनों भाई जाते हैं, सब उन्हें देखकर आनंदित हो जाते हैं। प्रभु के सारे लक्षण आनंद प्रदान करने वाले हैं।

धनुष-यज्ञ स्थल पहुँचे, धनुष रखने हेतु विशाल मंच

पुर पूरब दिसि गे दोउ भाई। जहँ धनुमख हित भूमि बनाई ॥224:1॥
अति बिस्तार चारु गच ढारी। बिमल बेदिका रुचिर सँवारी ॥224:2॥

पुर पूरब दिसि = नगर के पूर्व दिशा की ओर, *गे दोउ भाई* = दोनों भाई जाते हैं, *जहँ धनुमख हित* = जहाँ धनुषयज्ञ के लिये, *भूमि बनाई* = मैदान में व्यवस्था की गई थी, *अति बिस्तार चारु गच ढारी* = बहुत चौड़ी समतल भूमि तैयार कर उसे मजबूत पक्की बनाया गया था, *बिमल बेदिका* = उस भूमि पर निर्मल चबूतरा बनाया गया था, *रुचिर सँवारी* = जिसे सुंदर तरीके से सजाया गया था।

राम व लक्ष्मण जनकपुर नगर देखने के लिये पश्चिम दिशा की तरफ से प्रवेश करते हैं। आसपास भवन हैं। स्त्रियाँ झरोखों से देखते हुए उनके बारे में बातें करती हैं। तब तक वे चलते-चलते नगर के दूसरे कोने में पूर्व की तरफ पहुँच जाते हैं। जहाँ राजमहल के एक मैदान में धनुषयज्ञ होना था। व्यवस्था स्टेडियम जैसे बनायी गयी थी। मैदान के बीच में, बहुत बड़े स्थान को पक्का बनाकर उस पर एक चबूतरा बनाया गया था जो लगभग धनुष के आकार का था। इसी पर धनुष रखा जाना है। चबूतरे को बहुत ही सुंदर तरीके से सजाया गया था।

राजाओं, सहायकों, नगरवासियों व स्त्रियों की बैठक व्यवस्था

चहुँ दिसि कंचन मंच बिसाला। रचे जहाँ बैठहिं महिपाला ॥224:3॥
तेहि पाछें समीप चहुँ पासा। अपर मंच मंडली बिलासा ॥224:4॥

चहुँ दिसि = चारों तरफ, *कंचन मंच बिसाला रचे* = सोने के बने हुए विशाल मंच बने थे, *जहाँ बैठहिं महिपाला* = जिसमें राजाओं के बैठने की व्यवस्था थी, *तेहि पाछें समीप* = उनके पीछे पास में ही, *चहुँ पासा* = चारों ओर, *अपर मंच मंडली बिलासा* = मंडलाकार में बैठने की सुंदर व्यवस्था थी जिसमें राजाओं के सहायकों को बैठना था।

कछुक ऊँचि सब भाँति सुहाई। बैठहिं नगर लोग जहँ जाई ॥224:5॥
तिन्ह के निकट बिसाल सुहाए। धवल धाम बहुबरन बनाए ॥224:6॥
जहँ बैठें देखहिं सब नारी। जथाजोगु निज कुल अनुहारी ॥224:7॥

कछुक ऊँचि सब भाँति सुहाई = उनके पीछे एक के बाद एक थोड़ी-थोड़ी ऊँचाई पर मंच बनाये गये थे, *बैठहिं नगर लोग जहँ जाई* = वहाँ पर नगर के लोग आकर बैठेंगे, *तिन्ह के निकट बिसाल सुहाए* = उन्हीं के पास विशाल व सुंदर, *धवल धाम बहुबरन बनाए* = चमचमाते रंगबिरंगे घर बनाये गये थे, *जहँ बैठें देखहिं सब नारी* = वहाँ पर स्त्रियों को बैठकर देखना है, *जथाजोगु निज कुल अनुहारी* = यथायोग्य स्थान में बैठकर अपने-अपने कुल के अनुसार।

धनुष मंच के चारो तरफ स्वर्ण से बने हुए मंच थे। मायने राजाओं के बैठने के लिये स्वर्ण निर्मित सिंहासन के समान कुर्सियाँ लगायी गयी थीं। राजा अकेले नहीं बैठते, उनके साथ सहायकों का दल रहता है। सहायकों के बैठने के लिये राजाओं के सिंहासन के पीछे ही मंडलाकार कुर्सियाँ लगी थीं। उसके पीछे नगरवासियों के बैठने के लिये थोड़े-थोड़े ऊँचे मंच बने थे, जहाँ से धनुष को सभी लोग देख सकें। उसके पीछे घर के आकार के बैठने की व्यवस्था थी, जिसे रंग-बिरंगा बना दिया गया था। इसमें नगर की स्त्रियों को आकर बैठना था।

व्यवस्था दिखाने के बहाने प्रभु के अंगों को छूकर बालक रोमांचित

पुर बालक कहि कहि मृदु बचना। सादर प्रभुहि देखावहिं रचना ॥224:8॥

पुर बालक = नगर के बालक, *कहि कहि मृदु बचना* = कोमल वचन कह-कहकर, *सादर प्रभुहि देखावहिं रचना* = आदरपूर्वक प्रभु राम को सब रचना दिखा रहे हैं।

सब सिसु एहि मिस प्रेमबस परसि मनोहर गात ।
तन पुलकहिं अति हरषु हियँ देखि देखि दोउ भ्रात ॥दोहा 224॥

सब सिसु एहि मिस = सब बालक इसी बहाने, *प्रेमबस* = प्रेम के वशीभूत होकर, *परसि* = स्पर्श करते हैं, *मनोहर गात* = प्रभु राम के मनोहर अंगों को, *तन पुलकहिं* = जिससे बालकों का शरीर रोमांचित होता है, *अति हरषु हियँ* = मन बहुत प्रसन्न होता है, *देखि देखि दोउ भ्रात* = दोनों भाइयों को देख-देखकर।

प्रभु राम के साथ में नगर के बालक लग गये थे जो नगर दिखाते हुए धनुष-यज्ञ स्थल ले जाते हैं। प्रभु के शरीर को देखकर बालकों को लगा कि इन्हें छूकर देखें कि आखिर यह किस चीज का बना है जो नीला है, चमकदार, कोमल व प्रकाशित है। यज्ञ-स्थल में एक-एक स्थान को दिखाने के बहाने, प्रभु की कभी अँगुली तो कभी हाथ पकड़ते हैं। प्रभु के शरीर के अंगों का स्पर्श करने से बालकों का शरीर रोमांचित हो जाता है। दोनों भाइयों की सुंदरता देखकर वे सब बहुत प्रसन्न हैं।

राम व्यवस्था की प्रशंसा करते हैं, लक्ष्मण को बताते हैं

सिसु सब राम प्रेमबस जाने। प्रीति समेत निकेत बखाने ॥225:1॥
निज निज रुचि सब लेहिं बोलाई। सहित सनेह जाहिं दोउ भाई ॥225:2॥
राम देखावहिं अनुजहि रचना। कहि मृदु मधुर मनोहर बचना ॥225:3॥

सिसु सब = सब बालकों को, *राम प्रेमबस जाने* = राम जी ने प्रेम के वश में समझकर, *प्रीति समेत निकेत बखाने* = प्रेमपूर्वक सब भवनों की प्रशंसा करते हैं, *निज निज रुचि सब* = सब बालक अपनी-अपनी पसंद के अनुसार, *लेहिं बोलाई* = अपनी ओर बुला लेते हैं, *सहित सनेह जाहिं दोउ भाई* = बुलाने पर प्रेम सहित दोनों भाई चले जाते हैं, *राम देखावहिं अनुजहि रचना* = राम छोटे भाई लक्ष्मण को सब रचना दिखाते हैं, *कहि मृदु मधुर मनोहर बचना* = कोमल; मीठे व मधुर वचनों से सब बताते भी हैं।

जब प्रभु राम ने देखा कि ये सब बालक प्रेम से परिपूर्ण हैं तो उनकी बातों का समर्थन करने के लिये उनके द्वारा बताये व दिखाये गये सब भवनों व व्यवस्था की प्रशंसा करते हैं। अपने छोटे भाई लक्ष्मण को भी मधुर वचनों में वर्णन करते हुए सभी चीजें दिखाते व समझाते हैं।

राम एक ही समय में अनेक बालकों के साथ में हैं

कई स्थानों में यह बात आती है कि राम एक साथ बहुत से लोगों से मिल लेते हैं। इस प्रसंग में एक बालक राम को एक तरफ ले जाता है तो दूसरा बालक अपनी रुचि के अनुसार दूसरी तरफ ले जाता है। उसे लगता है कि ये हमारे साथ इस तरफ आ गये हैं। इन्हें तो हमसे ही बहुत प्रेम है। पर राम तो सभी बालकों के साथ एक समान हैं। इस रहस्य को कोई जान नहीं पाता।

संकेत मात्र से ब्रह्मांडों की रचना करने वाला आश्चर्यचकित है!

लव निमेष महुँ भुवन निकाया। रचइ जासु अनुसासन माया ॥225:4॥
भगति हेतु सोइ दीनदयाला। चितवत चकित धनुष मखसाला ॥225:5॥

लव = क्षण भर में, *निमेष महुँ* = जितनी देर में पलकें झपकें, *भुवन निकाया रचइ* = ब्रह्माण्डों के समूह की रचना, *जासु अनुसासन* = जिसकी आज्ञा से, *माया* = माया करती है, *भगति हेतु सोइ दीनदयाला* = भक्त के हित के लिये वही दीनदयाल प्रभु, *चितवत चकित* = आश्चर्य से देख रहे हैं, *धनुष मखसाला* = धनुष यज्ञ शाला को।

सारी रचनाओं को देखकर राम इस प्रकार आश्चर्यचकित होते हैं जैसे साधारण मनुष्य हों। तुलसीदास जी उनकी शक्ति का स्मरण दिलाते हुए कहते हैं कि पलक झपकने में जितना समय लगता है उतनी देर में राम के संकेत मात्र से उनकी माया संसार की रचना कर देती है। ऐसे महान्, दीनदयाल राम अपने भक्तों के सुख के लिये धनुष-यज्ञ शाला की रचना को आश्चर्य से देख रहे हैं।

विलंब के कारण डरते हुए, संकोच से गुरु के पास पहुँचे

कौतुक देखि चले गुरु पाहीं। जानि बिलंबु त्रास मन माहीं ॥225:6॥
जासु त्रास डर कहुँ डर होई। भजन प्रभाउ देखावत सोई ॥225:7॥
कहि बातें मृदु मधुर सुहाईं। किए बिदा बालक बरिआईं ॥225:8॥

कौतुक देखि = इस कौतुक को देखकर, *चले गुरु पाहीं* = गुरु के पास चल देते हैं, *जानि बिलंबु* = देर हो गई है यह समझकर, *त्रास मन माहीं* = मन में, *जासु त्रास* = जिन राम के डर से, *डर कहुँ डर होई* = डर को भी डर लगता

है, *भजन प्रभाउ* = जो लोग भगवान का भजन करते हैं, *देखावत सोई* = उनके साथ भगवान अपना व्यवहार दिखाते हैं, *कहि बातें मृदु मधुर सुहाईं* = कोमल; मधुर व सुंदर बातें कहकर, *किए बिदा बालक बरिआईं* = बालकों को जबर्दस्ती विदा करते हैं।

सभय सप्रेम बिनीत अति सकुच सहित दोउ भाइ ।
गुर पद पंकज नाइ सिर बैठे आयसु पाइ ॥दोहा 225॥

सभय सप्रेम बिनीत अति सकुच सहित दोउ भाइ = भय; प्रेम; विनम्रता व बहुत संकोच के साथ दोनों भाई, *गुर पद पंकज नाइ सिर* = गुरु के चरण कमलों में सिर झुकाकर प्रणाम करते हैं, *बैठे आयसु पाइ* = आज्ञा मिलने पर बैठते हैं।

सब देखते हुए बहुत देर हो गई। राम-लक्ष्मण को जैसे ही विश्वामित्र जी की याद आई तो डर लगने लगा कि वे कहेंगे कि संध्या-वंदन का समय निकल जाने के बाद लौटे हो। मृदु बातें करके बालकों को जबर्दस्ती विदा किया। वे जाना नहीं चाहते थे। उन्हें समझाया होगा कि देर हो रही है, फिर मिलेंगे। जिसके डर से डर को भी डर लगे ऐसे प्रभु स्वयं डर प्रगट करके अपने भक्तों के प्रति प्रेम व आदर प्रदर्शित करते हैं। दोनों भाई देर होने के भय से बहुत संकोच, विनम्रता, प्रेम से गुरु के चरण कमलों में प्रणाम करते हैं। गुरु की आज्ञा मिलने पर बैठते हैं।

सायँकाल होने पर सबने जप करके पूजा की

निसि प्रबेस मुनि आयसु दीन्हा। सबहीं संध्याबंदनु कीन्हा ॥226:1॥

निसि प्रबेस = रात्रि का प्रवेश होते ही, *मुनि आयसु दीन्हा* = मुनि ने आज्ञा दी, *सबहीं संध्याबंदनु कीन्हा* = सबने संध्या वंदन किया।

दिन समाप्त हो रहा है, रात्रि आने वाली है उसके बीच के समय को संध्या कहते हैं। विश्वामित्र जी ने आज्ञा दी, तो सब लोग संध्या वंदन करने लगे। इसमें मुख्य रूप से जप करते हैं। हल्की रोशनी रहने पर जप प्रारंभ करके अंधेरा होने तक करते हैं। इसमें लगभग आधे घंण्टे जप होता है। यह हम सबको भी करना चाहिये।

मुनि जब शयन करने लगे, राम-लक्ष्मण चरण दबाते हैं

कहत कथा इतिहास पुरानी। रुचिर रजनि जुग जाम सिरानी ॥226:2॥
मुनिबर सयन कीन्हि तब जाई। लगे चरन चापन दोउ भाई ॥226:3॥

कहत कथा इतिहास पुरानी = फिर प्राचीन कथायें व इतिहास कहते-कहते, *रुचिर रजनि* = सुंदर रात्रि के, *जुग जाम* = दो पहर, *सिरानी* = बीत गये, *मुनिबर सयन कीन्हि तब जाई* = तब श्रेष्ठ मुनि ने जाकर शयन किया, *लगे चरन चापन दोउ भाई* = दोनों भाई मुनि के चरण दबाने लगे।

जिन्ह के चरन सरोरुह लागी। करत बिबिध जप जोग बिरागी ॥226:4॥
तेइ दोउ बंधु प्रेम जनु जीते। गुर पद कमल पलोटत प्रीते ॥226:5॥
बार बार मुनि अग्या दीन्ही। रघुबर जाइ सयन तब कीन्ही ॥226:6॥

जिन्ह के चरन सरोरुह लागी = जिनके चरण कमल के दर्शन हेतु, *करत बिबिध जप जोग बिरागी* = वैराग्यवान् लोग तरह-तरह के जप व योग करते हैं, *तेइ दोउ बंधु* = वे ही दोनों भाई, *प्रेम जनु जीते* = प्रेम के द्वारा जीत लिये गये हैं, *गुर पद कमल पलोटत प्रीते* = इसलिये प्रेम से गुरु के चरण कमल को दबा रहे हैं, *बार बार मुनि अग्या दीन्ही* = मुनि ने बार-बार कहा, *रघुबर जाइ सयन तब कीन्ही* = तब राम शयन करने जाते हैं।

संध्या-वंदन के बाद पुरानी कथायें व इतिहास सुनाते हुए कुछ समय व्यतीत हो गया। जब रात्रि के दो पहर व्यतीत हो गये, मायने 9 से 10 बजे का समय होने पर मुनि विश्वामित्र जैसे ही शयन के लिये लेटते हैं, राम व लक्ष्मण उनके चरण दबाने लगते हैं। तुलसीदास जी कहते हैं कि तरह-तरह की योग साधनायें व जप क्यों किये जाते हैं? ताकि परब्रह्म राम के चरणों की एक झलक मिल जाये। वही ब्रह्म प्रेम के द्वारा जीत लिये गये हैं। इसलिये वे मुनि के चरणों को बहुत ही प्रेम पूर्वक दबा रहे हैं। मुनि ने दोनों भाइयों से बार-बार क, बस अब बहुत हो गया, जाओ सो जाओ। तब राम अपने शयन करने के स्थान पर जाते हैं।

राम शयन करते हैं, लक्ष्मण चरण दबाते हैं

चापत चरन लखनु उर लाएँ। सभय सप्रेम परम सचु पाएँ ॥226:7॥
पुनि पुनि प्रभु कह सोवहु ताता। पौढ़े धरि उर पद जलजाता ॥226:8॥

चापत चरन लखनु = लक्ष्मण जी चरण दबा रहे हैं, *उर लाएँ* = अपने हृदय से लगाकर, *सभय सप्रेम परम सचु पाएँ* = उन्हें भय; प्रेम व बहुत संकोच लग रहा है, *पुनि पुनि प्रभु कह सोवहु ताता* = प्रभु राम बार-बार कहते हैं हे तात! अब सो जाओ, *पौढ़े* = तब लक्ष्मण जी वहीं सो गये, *धरि उर पद जलजाता* = अपने हृदय में कमल के समान राम के चरणों का स्मरण करते हुए।

जब राम शयन करते हैं तो लक्ष्मण जी कैसे चरण दबाते हैं? हृदय से चरणों को लगाकर। चरण को दबाते समय लक्ष्मण जी को संकोच, भय व प्रेम तीनों होता है। अब राम जी लक्ष्मण से उसी प्रकार बार-बार कहते हैं कि तुम जाओ सोओ, बहुत हो गया। तब लक्ष्मण जी चरणों को हृदय में धारण करके वहीं सो गये।

भगवान का स्मरण करके ही सोयें

सोने के पहले का नियम है कि भगवान का स्मरण करते-करते सोयें। सोने से पहले जप करें, धार्मिक या आध्यात्मिक पुस्तकें पढ़ें। ये सब करने से दिन-भर की तमाम थकान व बातें भूल जाती हैं, जिससे मन व शरीर को सोने से पूरा आराम मिलता है। सुबह उठने पर ताजगी महसूस होती है।

सबसे पहले लक्ष्मण, फिर राम, उसके बाद गुरुजी उठे

उठे लखनु निसि बिगत सुनि अरुनसिखा धुनि कान ।
गुर तें पहिलेहिं जगतपति जागे रामु सुजान ॥दोहा 226॥

उठे लखनु = लक्ष्मण जी उठते हैं, *निसि बिगत* = रात्रि बीत जाने पर, *सुनि* = सुनकर, *अरुनसिखा धुनि* = मुर्गे की आवाज, *कान* = कान में, *गुर तें पहिलेहिं* = गुरु से पहले ही, *जगतपति जागे रामु सुजान* = राम जी उठ जाते हैं जो संसार के स्वामी सब कुछ जानने वाले हैं।

रात्रिभर सोने के बाद सबसे पहले कौन उठे? लक्ष्मण जी। कैसे उठे? मुर्गे की आवाज सुनकर। ब्रह्ममुहूर्त में ही मुर्गा बोलता है, तब उठना चाहिये। फिर राम उठे, उसके बाद विश्वामित्र जी उठते हैं।

10. बगीचे में राम सीता एक दूसरे को देखते हैं

(दोहा 227 से 239)

शृंगार रस से भरपूर इस प्रसंग में जिस मर्यादा के साथ तुलसीदास जी ने राम व सीता का आमना-सामना बगीचे में करवाया है, वह अद्‌भुत है। गुरु की आज्ञा से राम-लक्ष्मण जिस बगीचे में पुष्प लेने जाते हैं, उसी में माँ की आज्ञा से सीता जी सखियों के साथ विवाह के पूर्व गौरी पूजन के लिये आती हैं। मालियों से पूछकर राम पुष्प ले रहे हैं। सीता जी देवी पार्वती से अपने अनुकूल वर माँग रही हैं। एक सखी आकर राम-लक्ष्मण के बगीचे में मौजूद होने की जैसे ही सूचना देती हैं, सखियाँ सीता जी को बगीचे में ले आती हैं। राम, सीता को देखकर आकर्षित होते हैं। उन्हें लगता है विधाता ने इन्हीं से विवाह होना निश्चित कर रखा है। इसके बाद सीता राम को देखकर उनके सुंदर श्यामल रूप को आँखों के रास्ते मन में बसा लेती हैं। सीता जी राम को वर रूप में पाने के लिये फिर से देवी के मंदिर में जाकर प्रार्थना करती हैं। उनकी प्रेम व विनम्रता से देवी की मूर्ति मुस्कुराकर आशीर्वाद देती है कि तुम्हारा विवाह श्यामल राजकुमार से ही होगा। इधर राम जब फूल लेकर विश्वामित्र जी के पास पहुँचकर सारी घटना बताते हैं, तब पूजा के बाद मुनि भी मनोकामना पूर्ण होने का राम व लक्ष्मण को आशीर्वाद देते हैं।

दैनिक कर्म किया, गुरु की आज्ञा लेकर फूल लेने जाते हैं

सकल सौच करि जाइ नहाए। नित्य निबाहि मुनिहि सिर नाए ॥227:1॥
समय जानि गुर आयसु पाई। लेन प्रसून चले दोउ भाई ॥227:2॥

सकल सौच करि = सब शौचक्रिया करके, *जाइ नहाए* = स्नान करने जाते हैं, *नित्य निबाहि* = नित्य कर्म करके, *मुनिहि सिर नाए* = मुनि को सिर झुकाकर प्रणाम किया, *समय जानि* = समय जानकर, *गुर आयसु पाई* = गुरु की आज्ञा पाकर, *लेन प्रसून चले दोउ भाई* = पुष्प लेने के लिये दोनों भाई चल दिये।

प्रात:काल उठकर शौचक्रिया करने के बाद दोनों भाई स्नान के लिये जाते हैं। प्रात:क्रिया करके गुरु के पास पहुँचे, सिर झुकाकर प्रणाम किया। पूजा का समय हो गया है, गुरु जी को फूल की आवश्यकता होगी यह सोचकर गुरु से

आज्ञा लेकर, दोनों भाई पुष्प लेने चल देते हैं। जहाँ ठहरे थे वहाँ फूल नहीं थे, महल के पास में ही राजा का बगीचा था, वहाँ जाते हैं।

राजा के बगीचे में पहुँचे जहाँ सदैव वसंत ऋतु रहती है

भूप बागु बर देखेउ जाई। जहँ बसंत रितु रही लोभाई ॥227:3॥
लागे बिटप मनोहर नाना। बरन बरन बर बेलि बिताना ॥227:4॥
नव पल्लव फल सुमन सुहाए। निज संपति सुर रूख लजाए ॥227:5॥

भूप बागु बर = राजा का सुंदर बगीचा, *देखेउ जाई* = जाकर देखते हैं, *जहँ बसंत रितु रही लोभाई* = वहाँ ऐसा लगा जैसे वसंत ऋतु आकर्षित होकर यहीं रुक गयी है, *लागे बिटप मनोहर नाना* = मन को लुभाने वाले अनेक वृक्ष लगे थे, *बरन बरन बर बेलि* = रंग-बिरंगी सुंदर लतायें, *बिताना* = मंडप के आकार में फैली थीं, *नव पल्लव* = नये-नये पत्ते, *फल* = फल, *सुमन सुहाए* = फूल शोभायमान थे, *निज संपति* = वृक्ष अपनी इन संपत्तियों से, *सुर रूख* = कल्पवृक्ष को, *लजाए* = लज्जित कर रहे थे।

फूल लेने कहाँ गये? राजा जनक के विशेष बगीचे में। यहाँ पर बगीचा, पुष्पवाटिका व सरोवर तीनों हैं। यहाँ की विशेषता है कि सदैव वसंत ऋतु जैसी सुंदरता बनी रहती है। आम, जामुन इत्यादि के अनेकों तरह के वृक्षों पर इस प्रकार रंग-बिरंगी बेलों का फैलाव था, जिससे जगह-जगह मंडप की आकृति बन गयी थी। वृक्षों के नीचे छाया का स्थान बन गया। लताओं व वृक्षों में नये-नये पत्ते, फूल व फल तीनों थे। सामान्य बगीचों के वृक्षों में यदि नये पत्ते हैं तो फूल नहीं होंगे, फूल हैं तो फल नहीं, फल आ गये तो पत्ते पुराने हो गये व फूल नहीं होंगे। शायद, सीता जी की महिमा है जिससे ये तीनों एक साथ हैं, इतनी विचित्रता है। इन वृक्षों के सामने कल्पवृक्ष भी हल्का लग रहा था।

बगीचे में कई ऋतुओं के पक्षी एक साथ हैं

चातक कोकिल कीर चकोरा। कूजत बिहग नटत कल मोरा ॥227:6॥

चातक = पपीहा, *कोकिल* = कोयल, *कीर* = तोते, *चकोरा* = चकोर, *कूजत बिहग* = ये पक्षी मीठी बोली बोल रहे हैं, *नटत कल मोरा* = मोर नाच रहा है।

तुलसीदास जी ने एक चौपाई में पाँच ऋतुओं के पाँच पक्षियों के नाम गिनाये हैं जो बोलकर व नाचकर पूरे बगीचे की शोभा बढ़ा रहे हैं। जैसे पपीहा वर्षा ऋतु का पक्षी है, कोयल बसंत में रहती है। इसी प्रकार तोते हैं, चकोर हैं। मोर नाच रहे हैं। सभी ऋतुओं के पक्षियों का एक साथ रहना व बोलना बाग की विशेषता है।

विचित्र सरोवर है, साफ जल में रंग-बिरंगे कमल!

मध्य बाग सरु सोह सुहावा। मनि सोपान बिचित्र बनावा ॥227:7॥
बिमल सलिलु सरसिज बहुरंगा। जलखग कूजत गुंजत भृंगा ॥227:8॥

मध्य बाग = बगीचे के बीच में, *सरु सोह सुहावा* = सुंदर सरोवर शोभायमान है, *मनि सोपान* = जिसमें मणियों की सीढ़ियाँ, *बिचित्र बनावा* = विचित्र तरीके से बनी हैं, *बिमल सलिलु* = जल निर्मल है, *सरसिज बहुरंगा* = अनेक रंगों के कमल खिले हैं, *जलखग कूजत* = जल के पक्षी बोल रहे हैं, *गुंजत भृंगा* = भौंरे गुंजार कर रहे हैं।

बगीचे के बीच में एक तालाब है, जिसकी सीढ़ियाँ मणियों से बनायी गयी हैं, जो देखने में बहुत विचित्र व सुंदर लगती हैं। सरोवर का पानी साफ है, कीचड़ नहीं है फिर भी रंग बिरंगे कमल खिले हैं, जिसके चारो तरफ भौंरे गुंजार कर रहे हैं। साफ जल में जल के पक्षी बोल रहे हैं। तुलसीदास जी उस बगीचे का वर्णन कर रहे हैं जहाँ जग-जननी सीता जी का वास है। इसलिये सभी बातें अलौकिक हैं।

बगीचे की सुंदरता देख राम व लक्ष्मण प्रसन्न

बागु तड़ागु बिलोकि प्रभु हरषे बंधु समेत ।
परम रम्य आरामु यहु जो रामहि सुख देत ॥दोहा 227॥

बागु तड़ागु बिलोकि = सुंदर बगीचा व तालाब देखकर, *प्रभु हरषे बंधु समेत* = प्रभु राम भाई लक्ष्मण सहित प्रसन्न होते हैं, *परम रम्य आरामु यहु* = यह बगीचा बहुत ही सुंदर है, *जो रामहि सुख देत* = जो राम जी को भी सुख दे रहा है।

प्रभु राम ने सुंदर बगीचा देखा, तालाब देखा, देखकर खुश हुए। जब राम प्रसन्न हैं तो लक्ष्मण भी प्रसन्न हुए। सबको सुख देने वाले राम को जो चीज सुख प्रदान करे मायने वास्तव में वह सुंदर है।

मालियों से पूछकर फूल व पत्ते लेने लगे

चहुँ दिसि चितइ पूँछि मालीगन। लगे लेन दल फूल मुदित मन ॥228:1॥

चहुँ दिसि चितइ = चारों तरफ देखा, *पूँछि मालीगन* = मालियों से पूछकर, *लगे लेन* = लेने लगे, *दल फूल* = पत्ते व पुष्प, *मुदित मन* = प्रसन्न मन से।

राम जी ने चारों तरफ क्यों देखा? दो कारण हैं। हर कोने में अलग-अलग तरह की सजावट व विचित्रता थी, वह सब देखी। दूसरा, सरोवर के किनारे खड़े होकर चारों ओर नजर घुमाकर मालियों को देखा कि वे कहाँ हैं। राम की सुंदरता देखकर मालियों का समूह स्वयं ही उनके पास आ गया होगा। मालियों से राम पूछते हैं फूल ले लें? जरा सोचें, राम के पूछते ही माली कितने भावुक हो गये होंगे! पूजा में फूल के साथ में बेल-पत्र, तुलसी-दल और दूब भी लगती है जिसके लिये तुलसीदास जी ने 'दल' शब्द का प्रयोग किया है। पूजा सामग्री है, इसलिये प्रभु राम मुदित मन से तोड़ते हैं। पूजा के लिये फूलों को पौधों से नोचना नहीं चाहिये। प्रेम भाव से तोड़ें। इसी प्रकार तुलसी के पौधे का दर्शन प्रेम से करें। फिर प्रसन्नता से तुलसी-पत्र लें। किस पात्र में फूल रख रहे हैं? एक बड़ा पत्ता लेकर उसका दोना बनाया, उसी में सब रख रहे हैं।

उसी समय गौरी पूजन के लिये सीता जी आयीं

तेहि अवसर सीता तहँ आई। गिरिजा पूजन जननि पठाई ॥228:2॥
संग सखी सब सुभग सयानीं। गावहिं गीत मनोहर बानीं ॥228:3॥

तेहि अवसर सीता तहँ आई = उसी समय सीता जी वहाँ आती हैं, *गिरिजा पूजन* = पार्वती जी की पूजा के लिये, *जननि पठाई* = माँ ने भेजा है, *संग सखी* = साथ में सखियाँ हैं, *सब सुभग सयानीं* = सभी सौभाग्यवान् व बुद्धिमान हैं, *गावहिं गीत मनोहर बानीं* = जो मधुर वाणी से गीत गा रही हैं।

राम फूल व पत्र एकत्रित करते हुए बाग के एक कोने से दूसरी तरफ पहुँच गये, उसी समय सीता जी बगीचे में आती हैं। क्यों आती हैं? अपने मन से नहीं! अनुशासन है, व्यवस्था है, मनमानी कहीं नहीं है। माँ ने भेजा है। माँ ने कहा धनुष-यज्ञ होना है, गौरी पूजन करके आओ। माता का यही धर्म है कि पुत्री को पूजा के लिये प्रेरित करे। विवाह के पूर्व पूजा के लिये कैसे जाना है? साथ में सखियाँ हैं, जो सौभाग्यशाली व बुद्धिमान हैं। वे सब मुधर वाणी में गीत गाते हुए सीता जी को ले जा रही हैं।

सरोवर के पास में ही पार्वती जी का सुंदर मंदिर है

सर समीप गिरिजा गृह सोहा। बरनि न जाइ देखि मनु मोहा ॥228:4॥

सर समीप = सरोवर के पास में, *गिरिजा गृह सोहा* = पार्वती जी का सुंदर मंदिर है, *बरनि न जाइ* = जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता, *देखि मनु मोहा* = देखकर मन मुग्ध हो जाता है।

जिस सरोवर को देखते हुए राम व लक्ष्मण आगे निकल गये, उसी के पास में गिरिजा गृह यानि पार्वती जी का मंदिर है। वह मंदिर इतना अधिक सुंदर है कि उसकी सुंदरता का वर्णन करना संभव नहीं है। वह स्वर्ण व मणियों से जड़ित होगा, जिसे देखकर मन मोहित हो जाये।

सरोवर में स्नान, मंदिर में पूजा, अनुकूल वर का वरदान माँगा

मज्जनु करि सर सखिन्ह समेता। गई मुदित मन गौरि निकेता ॥228:5॥
पूजा कीन्हि अधिक अनुरागा। निज अनुरूप सुभग बरु मागा॥228:6॥

मज्जनु करि सर = सरोवर में स्नान किया, *सखिन्ह समेता* = सखियों के साथ में, *गई मुदित मन गौरि निकेता* = फिर प्रसन्न मन से पार्वती जी के मंदिर में गईं, *पूजा कीन्हि अधिक अनुरागा* = बहुत प्रेम से पूजा की, *निज अनुरूप* = अपने अनुकूल, *सुभग बरु मागा* = सुंदर वर का वरदान माँगा।

सीता जी ने सरोवर में स्नान किया, साथ में सखियों ने भी स्नान किया। उसके बाद पार्वती जी के मंदिर में प्रसन्न मन से जाती हैं। सबसे श्रेष्ठ सगुण है मन में

प्रसन्नता, मन प्रसन्न तो समझो कार्य पूरा होगा। विधि-विधान पूर्वक हृदय से पूजा की। पूजा के बाद अपने अनुकूल योग्य वर प्राप्त हो, माँ गौरी से ऐसा वरदान माँग लिया। अपने अनुकूल वर पाने की कामना उचित कामना है।

एक सखी राम के दर्शन से भावुक हो सीता जी के पास पहुँची

एक सखी सिय संगु बिहाई। गई रही देखन फुलवाई ॥228:7॥
तेहिं दोउ बंधु बिलोके जाई। प्रेम बिबस सीता पहिं आई ॥228:8॥

एक सखी सिय संगु बिहाई = एक सखी सीता जी का साथ छोड़कर, *गई रही देखन फुलवाई* = पुष्पवाटिका देखने चली गई, *तेहिं दोउ बंधु बिलोके जाई* = उसने वहाँ पर दोनों भाइयों को देखा, *प्रेम बिबस* = प्रेम में भावुक होकर, *सीता पहिं आई* = सीता जी के पास आती है।

तासु दसा देखी सखिन्ह पुलक गात जलु नैन ।
कहु कारनु निज हरष कर पूछहिं सब मृदु बैन ॥दोहा 228॥

तासु दसा देखी सखिन्ह = सखियों ने उसकी दशा देखी कि, *पुलक गात* = शरीर पुलकित है, *जलु नैन* = नेत्रों में अश्रु भरे हैं, *कहु कारनु निज हरष कर* = अपने प्रसन्नता का कारण बताओ, *पूछहिं सब मृदु बैन* = सब लोग मधुर वाणी में उससे पूछती हैं।

सखियाँ बहुत सावधान रहती हैं। बगीचे में चारों तरफ नजर रखे रहती हैं। एक सखी सीता जी का साथ छोड़कर पुष्पवाटिका यह देखने पहुँच गयी कि कोई और तो नहीं है। उसने देखा दो भाई फूल तोड़ रहे हैं। प्रभु राम के सौंदर्य को देखकर उसके अंदर प्रेम उपजा, फिर आनंद आया, आनंद में अश्रु आ गये। इसी भाव पूर्ण दशा में वह सीता जी के पास पहुँचती है। उसकी यह दशा देखकर सब सखियाँ मधुर वाणी से पूछने लगीं कि अपने रोमांच, हर्ष व आँखों में अश्रु का कारण बताओ।

श्यामल व गोरे रंग के दो राजकुमार बगीचे में आये हैं

देखन बागु कुअँर दुइ आए। बय किसोर सब भाँति सुहाए ॥229:1॥
स्याम गौर किमि कहौं बखानी। गिरा अनयन नयन बिनु बानी ॥229:2॥

देखन बागु कुअँर दुइ आए = बगीचा देखने दो राजकुमार आये हैं, *बय किसोर* = किशोर अवस्था है, *सब भाँति सुहाए* = सभी प्रकार से सुंदर हैं, *स्याम गौर* = एक श्यामल हैं दूसरे गोरे हैं, *किमि कहौं बखानी* = मैं उनके सौंदर्य का वर्णन कैसे करूँ क्योंकि, *गिरा अनयन* = वाणी देख नहीं सकती, *नयन बिनु बानी* = आँखें बोल नहीं सकतीं।

भावुक हुई सखी अपनी इस मनोदशा का कारण इस प्रकार बताती है–
1. श्यामल व गोरे रंग के दो राजकुमारों को हम देखकर आये हैं, जो बाग में घूम रहे हैं।
2. दोनों किशोर अवस्था के हैं, सब प्रकार से सुन्दर हैं।
3. उनकी सुन्दरता का वर्णन नहीं कर पा रहे हैं।

रूप नेत्र में समा गया, नेत्र बोल नहीं सकते, वर्णन कैसे करें!

भगवान के दर्शन होने पर व्यक्ति की मनोदशा का सुंदर चित्रण तुलसीदास जी करते हैं। शरीर विज्ञान के सिद्धांत के अनुसार जब हम कोई वस्तु आँखों से देखते हैं, तो उसका ज्ञान हमारे मन को होता है फिर बुद्धि की सहायता से मन वाणी के द्वारा उस वस्तु का वर्णन करता है। यहाँ पर सखी ने जब राम के अद्भुत सौन्दर्य का दर्शन किया तो उसका मन स्तंभित हो गया। राम के रूप का ज्ञान आँखों में ही रह गया, वह मन तक पहुँचा ही नहीं। अब आँखें बोल नहीं सकतीं तो कैसे वर्णन करें, वाणी देख नहीं सकती तो कैसे वर्णन हो?

अरे! ये तो कल ही मुनि के साथ आये हैं, सारा नगर मोहित है

सुनि हरषीं सब सखीं सयानी। सिय हियँ अति उतकंठा जानी ॥229:3॥
एक कहइ नृपसुत तेइ आली। सुने जे मुनि सँग आए काली ॥229:4॥
जिन्ह निज रूप मोहनी डारी। कीन्हे स्वबस नगर नर नारी ॥229:5॥

सुनि हरषीं सब सखीं सयानी = यह सुनकर सभी समझदार सखियाँ प्रसन्न हो गयीं, *सिय हियँ* = सीता जी के मन में, *अति उतकंठा जानी* = उन्हें देखने की लालसा है; ऐसा सखियों ने समझा, *एक कहइ* = एक सखी कहती है, *नृपसुत तेइ आली* = ये वही राजा के पुत्र हैं, *सुने जे* = हमने जिन्हें सुना है, *मुनि सँग आए काली* = मुनि के साथ कल ही आये हैं, *जिन्ह निज रूप*

मोहनी डारी = जिन्होंने अपने रूप की मोहनी डालकर, *कीन्हे स्वबस नगर नर नारी* = नगर के स्त्री-पुरुषों को अपने वश में कर लिया है।

यह सुनकर सखियाँ बहुत हर्षित हुईं। इन सखियों ने सीता जी के मुख के भावों से यह जान लिया कि इनके मन में भी उन राजकुमारों को देखने की इच्छा उत्पन्न हुई है। एक सखी कहती है, हमने सुना है कि इस प्रकार के दो राजकुमार विश्वामित्र जी के साथ कल ही आये हैं। ये अपार रूप लावण्य संपन्न हैं, जिससे नगर भर के स्त्री-पुरुष मोहित होकर इनके वश में हो गये हैं।

उसी सखी को आगे कर, दर्शन के लिये सीता जी चल दीं

बरनत छबि जहँ तहँ सब लोगू। अवसि देखिअहिं देखन जोगू ॥229:6॥
तासु बचन अति सियहि सोहाने। दरस लागि लोचन अकुलाने ॥229:7॥
चली अग्र करि प्रिय सखि सोई। प्रीति पुरातन लखइ न कोई ॥229:8॥

बरनत छबि जहँ तहँ सब लोगू = जहाँ-तहाँ सब लोग उन्हीं की छवि का वर्णन कर रहे हैं, *अवसि देखिअहिं* = अवश्य उन्हें देखना चाहिये, *देखन जोगू* = वे देखने योग्य हैं, *तासु बचन अति सियहि सोहाने* = उसके वचन सीता जी को बहुत प्रिय लगे, *दरस लागि लोचन अकुलाने* = दर्शन के लिये नेत्र अकुला उठे, *चली अग्र करि प्रिय सखि सोई* = उसी प्यारी सखी को आगे करके सीता जी चलीं, *प्रीति पुरातन* = प्रेम पूर्वजन्म का है, *लखइ न कोई* = यह कोई समझ नहीं पाता।

सखी आगे कहती है कि आज तो नगर में जहाँ भी जाओ हर ओर इन्हीं की सुंदरता का लोग वर्णन कर रहे हैं। हमें भी इनके दर्शन का अवसर मिला है तो अवश्य ही इन्हें देखने चलना चाहिये। सीता जी को इस सखी के वचन बहुत प्रिय लगे। राजकुमारों को देखने की अभिलाषा उनके हृदय में प्रबल हो उठी। परंतु सीता जी शुद्ध हृदय वाली व धर्मशील हैं, वे अकेले नहीं जाती हैं। उसी सखी को आगे करके चलती हैं जिसने उनको बाग में देखा था।

नारद वचन याद आ गये, समझ गयीं पूर्वजन्म का प्रेम है

सुमिरि सीय नारद बचन उपजी प्रीति पुनीत ।
चकित बिलोकति सकल दिसि जनु सिसु मृगी सभीत ॥दोहा 229॥

सुमिरि सीय नारद बचन = नारद जी के वचन याद आ गये, *उपजी प्रीति पुनीत* = परम पवित्र प्रेम उत्पन्न हो गया, *चकित बिलोकति सकल दिसि* = चारों दिशाओं में आश्चर्यचकित होकर देख रही हैं, *जनु सिसु मृगी सभीत* = जैसे कोई डरी हुई मृगछौनी इधर-उधर देख रही है।

तुलसीदास जी कहते हैं कि सीता जी के मन में राम के प्रति जो प्रेम उत्पन्न हुआ है, वह कोई नया नहीं है। ऐसा अकारण प्रेम जब हृदय में उत्पन्न हुआ सा लगे, तब यह समझ लेना चाहिये यह पुरातन यानि पूर्वजन्म का है। यह पुरातन प्रीति ही सीता जी को राम जी की तरफ खींच ले चली है। वे सोचती हैं इन राजकुमारों के दर्शन के लिये इतनी प्रीति मन में क्यों हो रही है? इतने में उन्हें नारद जी के वचन याद आ गये, जो सदैव सत्य होते हैं। यह निश्चित हो गया कि यह प्रेम परम पवित्र है। सीता जी एक भयभीत मृगछौनी के समान अपने मुख व सुंदर नेत्रों को चारों ओर घुमाकर देख रही हैं कि वे राजकुमार किधर हैं!

सीता के कंगन, करधनी, पायल की ध्वनि राम ने सुनी

कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि। कहत लखन सन रामु हृदयँ गुनि ॥230:1॥
मानहुँ मदन दुंदुभी दीन्ही। मनसा बिस्व बिजय कहँ कीन्ही ॥230:2॥

कंकन = हाथों के कड़े, *किंकिनि* = करधनी, *नूपुर* = पायल, *धुनि सुनि* = की ध्वनि सुनकर, *कहत लखन सन रामु हृदयँ गुनि* = राम जी मन में विचार करके लक्ष्मण जी से कहते हैं, *मानहुँ मदन दुंदुभी दीन्ही* = ऐसा लगता है कि कामदेव ने नगाड़ा बजा दिया है, *मनसा बिस्व बिजय कहँ कीन्ही* = मन में विश्व विजयी का संकल्प लेकर।

राम के दर्शन की अभिलाषा से जब सीता जी बगीचे में चलती हैं तो उनके कंकण, करधनी व नूपुर की मधुर ध्वनि गूँजती है। यह मधुर खनक जब राम के कानों तक पहुँची तो उनका मन उसी तरफ खिंचता चला गया। राम इतने सरल चित्त हैं कि अपने हृदय में विचार करने के बाद मन में उत्पन्न होने वाली बातों को लक्ष्मण से स्पष्ट कहते हैं। मुझे तो ऐसा लग रहा है मानो कामदेव नगाड़े की चोट पर विश्व विजय करने का संकल्प लेकर निकला है।

राम ने मुड़कर सीता की तरफ देखा, तो एकटक देखते रह गये

अस कहि फिरि चितए तेहि ओरा। सिय मुख ससि भए नयन चकोरा ॥230:3॥
भए बिलोचन चारु अचंचल। मनहुँ सकुचि निमि तजे दिगंचल ॥230:4॥

अस कहि = ऐसा कहकर, *फिरि चितए तेहि ओरा* = सिर घुमाकर उस ओर देखा, *सिय मुख ससि* = सीता जी के चन्द्रमा के समान मुख के लिये, *भए नयन चकोरा* = राम जी की आँखें चकोर पक्षी बन गयीं, *भए बिलोचन चारु अचंचल* = राम के सुंदर नेत्र की पलकें स्थिर हो गयीं; एकटक देखते रहे, *मनहुँ सकुचि* = और संकोच के कारण, *निमि* = जनक जी के पूर्वज जिनका पलकों में वास माना जाता है, *तजे दिगंचल* = पलकों को छोड़ कर चले गये।

लक्ष्मण से इतना कहकर, राम पलट कर उस ओर देखने लगे जिस तरफ से मन को लुभाने वाली मधुर खनक आ रही थी। उधर दृष्टि घुमाते ही उन्हें सीता जी का चंन्द्रमा के समान सुंदर मुख दिखाई दिया। राम के दोनों नेत्र मानो चकोर बन गये। राम एकटक सीता की तरफ देखते ही रह गये। उनकी पलकें तो झपकना ही भूल गईं। महाराज जनक के पूर्वज जिनका नाम निमि था, उनका वास आँखों की पलकों में माना गया है। तुलसीदास जी सुंदर रूपक प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि मानो संकोच के कारण निमि पलकें छोड़कर चले गये।

राम मन में ही सीता की सुंदरता का वर्णन व प्रशंसा करते हैं

देखि सीय सोभा सुखु पावा। हृदयँ सराहत बचनु न आवा ॥230:5॥

देखि सीय सोभा सुखु पावा = सीता जी की सुंदरता देखकर राम जी को सुख हुआ, *हृदयँ सराहत बचनु न आवा* = मन में सराहना करते हैं किंतु मुख से वचन नहीं निकलते हैं।

जनु बिरंचि सब निज निपुनाई। बिरचि बिस्व कहँ प्रगटि देखाई ॥230:6॥
सुंदरता कहुँ सुंदर करई। छबिगृहँ दीपसिखा जनु बरई ॥230:7॥
सब उपमा कबि रहे जुठारी। केहिं पटतरौं बिदेहकुमारी ॥230:8॥

जनु बिरंचि = मानो ब्रह्मा जी ने, *सब निज निपुनाई* = अपनी सारी निपुणता, *बिरचि* = से रचना करके, *बिस्व कहँ प्रगटि देखाई* = संसार को दिखा दिया

हो, *सुंदरता कहुँ सुंदर करई* = सुंदरता को भी सुंदर करने वाली है, *छबिगृहँ* = सखियाँ सुंदरता का घर है, *दीपसिखा* = तो सीता जी दीपक की लौ के समान, *जनु बरई* = उनके बीच चमक रही हैं, *सब उपमा* = सभी उपमाओं को, *कबि रहे जुठारी* = कवियों ने जूठा कर रखा है, *केहिं पटतरौं* = इसलिये किससे बराबरी करें, *बिदेहकुमारी* = विदेह की पुत्री सीता जी की।

सीता जी की सुंदरता देखकर राम बहुत हर्षित हुए। राम कुछ बोलते नहीं हैं। मन ही मन सोचते हैं। राम के मन में सीता के प्रति क्या भाव आ रहे हैं, वे क्या सोचते हैं, श्रृंगार रस से भरपूर मधुर वर्णन तुलसीदास जी करते हैं।

1. विधाता ने अपनी सारी कुशलता प्रयोग करके एक अलौकिक रचना की और पृथ्वी पर सीता के रूप में प्रगट कर दी।
2. सीता की शोभा तो सुंदरता को भी सुंदर करने वाली है। ऐसा लगता है जैसे साथ की सखियाँ सुंदरता का घर हैं, उस सुंदरता में सीता की सुंदरता दीपक की लौ के समान चम-चमा रही है।
3. किसी वस्तु से एक बार उपमा कर दो तो वह वस्तु जूठी हो जाती है। राम जी के मन में जो भी उपमा सीता के लिये आती है, उसका कवियों ने पहले ही वर्णन कहीं न कहीं कर दिया है। राम को कोई उपमा ही नहीं मिलती जिससे वे सीता की सुंदरता की तुलना कर सकें। राम के मन ने अंत में निर्णय लिया कि संसार में कोई उपमा नहीं है जो विदेह कुमारी की सुंदरता की बराबरी कर सके।

राम, लक्ष्मण से सीता का परिचय देते हैं

सिय सोभा हियँ बरनि प्रभु आपनि दसा बिचारि ।
बोले सुचि मन अनुज सन बचन समय अनुहारि ॥दोहा 230॥

सिय सोभा हियँ बरनि प्रभु = सीता जी की सुंदरता का वर्णन राम ने अपने मन में किया, *आपनि दसा बिचारि* = फिर अपनी दशा पर विचार करके, *बोले सुचि मन* = पवित्र मन से बोलते हैं, *अनुज सन बचन* = छोटे भाई लक्ष्मण से वचन, *समय अनुहारि* = उस समय के अनुसार।

तात जनकतनया यह सोई। धनुषजग्य जेहि कारन होई ॥231:1॥
पूजन गौरि सखीं लै आईं। करत प्रकासु फिरइ फुलवाई ॥231:2॥

तात जनकतनया यह सोई = हे तात! ये जनक की वही कन्या हैं, *धनुषजग्य जेहि कारन होई* = जिनके लिये धनुष-यज्ञ हो रहा है, *पूजन गौरि* = गौरी पूजन के लिये, *सखीं लै आईं* = सखियाँ इन्हें ले आई हैं, *करत प्रकासु फिरइ फुलवाई* = पुष्पवाटिका में प्रकाश बिखेरते हुए घूम रही हैं।

राम अपने मन में ही सीता जी के सौंदर्य का वर्णन करने के बाद, अपनी दशा पर विचार करने लगे कि हम सीता को एकटक देख रहे हैं। फिर सावधान होकर पवित्र मन से लक्ष्मण से उतना ही बोलते हैं जितना उस समय के अनुसार उचित था। कहते हैं कि हे तात! ये महाराज जनक की पुत्री हैं, जिनके कारण धनुष-यज्ञ होने जा रहा है। गौरी-पूजन के लिये सखियाँ यहाँ लेकर आई हैं। ये जहाँ जाती हैं वहीं सुंदरता बिखर जाती है, लोग प्रसन्न हो जाते हैं।

मेरा मन चंचल, दाँये अँग फड़क कर शुभ संकेत दे रहे हैं

जासु बिलोकि अलौकिक सोभा। सहज पुनीत मोर मनु छोभा ॥231:3॥
सो सबु कारन जान बिधाता। फरकहिं सुभद अंग सुनु भ्राता ॥231:4॥

जासु बिलोकि अलौकिक सोभा = जिसकी अलौकिक सुंदरता देखकर, *सहज पुनीत* = स्वभाव से ही पवित्र, *मोर मनु छोभा* = मेरे मन में भी चंचलता आ गई है, *सो सबु कारन जान बिधाता* = इन सब का कारण तो विधाता ही जाने, *फरकहिं सुभद अंग* = मेरे अंग फड़क कर मंगल सूचना दे रहे हैं, *सुनु भ्राता* = हे भाई सुनो।

राम कहते हैं कि सदैव पवित्र रहने वाले मेरे मन में भी इनकी अलौकिक सुंदरता देखकर चंचलता आ गई है। ऐसा क्यों हो रहा है विधाता ही जाने। राम जी कहना चाहते हैं कि सीता से ही मेरा विवाह होने वाला है, पर ऐसा साफ-साफ कहना असभ्य तरीका है। सांकेतिक भाषा का प्रयोग करते हुए कहते हैं कि मेरे शुभ अंग फड़क कर कोई शुभ संकेत ही दे रहे हैं। पुरुषों के दाँये अंग का फड़कना शुभ माना जाता है। समझने वाला इतने से ही समझ जायेगा।

मैंने तो स्वप्न में भी परायी स्त्री का मुँह नहीं देखा

रघुबंसिन्ह कर सहज सुभाऊ। मनु कुपंथ पगु धरइ न काऊ ॥231:5॥
मोहि अतिसय प्रतीति मन केरी। जेहिं सपनेहुँ परनारि न हेरी ॥231:6॥

रघुबंसिन्ह कर सहज सुभाऊ = रघुवंशियों का यह जन्मजात स्वभाव है कि, *मनु कुपंथ पगु धरइ न काऊ* = मन कभी भी गलत रास्ते पर पैर नहीं रखता, *मोहि* = मुझे, *अतिसय प्रतीति मन केरी* = अपने मन पर बहुत विश्वास है, *जेहिं सपनेहुँ परनारि न हेरी* = जिसने स्वप्न में भी परायी स्त्री की ओर देखा नहीं।

राम कहते हैं कि यह तो रघुवंश है जिसमें हम पैदा हुए हैं। इस वंश में आज तक कोई पैदा नहीं हुआ है जिसके मन में गलत मार्ग पर चलने की बात आये। इसलिये हमें अपने मन पर पूरा विश्वास है कि हमने परायी स्त्री की तरफ तो स्वप्न में भी नहीं देखा।

युद्ध में पीठ न दिखायें, पर-नारी को आँख न दिखायें

जिन्ह कै लहहिं न रिपु रन पीठी। नहिं पावहिं परतिय मनु डीठी ॥231:7॥
मंगन लहहिं न जिन्ह कै नाहीं। ते नरबर थोरे जग माहीं ॥231:8॥

जिन्ह कै लहहिं न रिपु रन पीठी = युद्ध क्षेत्र में शत्रु ने जिनकी कभी पीठ नहीं देखी, *नहिं पावहिं परतिय मनु डीठी* = परायी स्त्री जिनके मन व नेत्रों को नहीं खींच पाती, *मंगन* = माँगने वाले, *लहहिं न जिन्ह कै नाहीं* = जिनके यहाँ से कभी न नहीं पाते, *ते नरबर थोरे जग माहीं* = ऐसे श्रेष्ठ पुरुष संसार में कम ही हैं।

तीन नीति वचन समझाते हैं कि ऐसे श्रेष्ठ पुरुष संसार में कम ही हैं जो
1. युद्ध के क्षेत्र में अपने शत्रु को पीठ न दिखाये हों,
2. परायी स्त्रियों को दृष्टि न दिखाये हों। पर-स्त्री ने यह कभी न देखा हो कि यह व्यक्ति हमारे ऊपर नजर रखता है, हमें ताकता है।
3. भिक्षुक को कभी ‘न’ नहीं किया हो।

बातें लक्ष्मण से करते हैं, पर मन सीता की तरफ लुभाया है

करत बतकही अनुज सन मन सिय रूप लोभान ।
मुख सरोज मकरंद छबि करइ मधुप इव पान ॥दोहा 231॥

करत बतकही अनुज सन = राम छोटे भाई लक्ष्मण से बातें कर रहे हैं, *मन सिय रूप लोभान* = पर मन सीता जी के रूप की सुंदरता में लुभाया हुआ है, *मुख*

सरोज = मुख मानो कमल है, *मकरंद छबि* = सुंदरता मानो कमल का मकरंद है, *करइ मधुप इव पान* = मन मानो भौंरे की तरह मकरंद-रस को पी रहा है।

राम बातें तो छोटे भाई लक्ष्मण से कर रहे हैं, पर उनका मन सीता की सुंदरता को देखने में लुभाया हुआ है। सीता को देखकर राम के मन में क्या दशा हुई उसका काव्यात्मक समापन तुलसीदास जी करते हैं। यदि सीता जी का मुख कमल के समान है तो मुख की सुंदरता कमल के अंदर का मकरंद है। राम का मन भौंरे के समान उस मकरंद का पान करने के लिये उसके चारों तरफ घूम रहा है।

लक्ष्मण जी एक शब्द नहीं बोलते हैं, यही उच्च मर्यादा है

पुष्पवाटिका के पूरे प्रसंग में राम बोलते हैं, पर लक्ष्मण चुप रहते हैं, एक शब्द नहीं बोलते हैं। श्रृंगार रस प्रधान इस प्रसंग में तुलसीदास जी ने मर्यादाओं का पूरा पालन किया है, यही उनकी विशेषता है।

सीता की नजरें आश्चर्य से चारों ओर राम को खोजती हैं

चितवति चकित चहूँ दिसि सीता। कहँ गए नृप किसोर मनु चिंता ॥232:1॥
जहँ बिलोक मृग सावक नैनी। जनु तहँ बरिस कमल सित श्रेनी ॥232:2॥

चितवति = सीता जी देख रही हैं, *चकित* = आश्चर्य से, *चहूँ दिसि सीता* = चारो दिशाओं में, *कहँ गए नृप किसोर* = राजकुमार कहाँ चले गये? *मनु चिंता* = यह सोचकर मन में चिंता है, *जहँ बिलोक* = सीता जी जिस ओर दृष्टि डालती हैं, *मृग सावक नैनी* = जिनकी आँखें हिरण के छोटे बच्चे के समान हैं, *जनु तहँ बरिस* = उस ओर मानो वर्षा हो रही हो, *कमल सित श्रेनी* = सफेद कमलों की पंक्ति की।

इस प्रसंग में राम को देखकर सीता के मन की दशा का काव्यात्मक चित्रण तुलसीदास जी करते हैं। राम अब सीता को नहीं दिखाई दे रहे हैं, इधर-उधर कहीं पेड़ों की आड़ में हो गये हैं। उनके मन में चिंता होने लगी कि ये राजकुमार कहाँ चले गये? सीता जी की सुंदर आँखें मानो हिरण के सुंदर छोटे बच्चे के समान हैं। इन नेत्रों से वे जिस तरफ नजर घुमाती हैं उसी तरफ ऐसी

सुंदरता हो जाती है मानो सफेद रंग के कमल के फूलों की वर्षा हो गई हो। श्वेत कमलों से आशय सीता जी के मन की सात्त्विकता व शुद्धता से भी है।

सखियों ने कहा, उधर लताओं के पीछे देखो, राजकुमार हैं

लता ओट तब सखिन्ह लखाए। स्यामल गौर किसोर सुहाए ॥232:3॥

लता ओट = लताओं के मंडप के पीछे, *तब सखिन्ह लखाए* = तब सखियों ने दिखलाया, *स्यामल गौर किसोर सुहाए* = श्यामल व गोरे रंग के सुंदर राजकुमारों को।

राम को सीता जी नहीं देख पा रही थीं पर सखियाँ देख रही थीं। सखियों ने कहा, यहाँ-वहाँ क्या देख रही हो, लताओं का जो मंडप है, उसके उस तरफ देखो। श्यामल रंग के व गोरे रंग के दोनों सुंदर राजकुमार उसी तरफ हैं।

राम को देख सीता की आँखे स्थिर, शरीर की सुध नहीं रही

देखि रूप लोचन ललचाने। हरषे जनु निज निधि पहिचाने ॥232:4॥
थके नयन रघुपति छबि देखें। पलकन्हिहूँ परिहरीं निमेषें ॥232:5॥
अधिक सनेहँ देह भै भोरी। सरद ससिहि जनु चितव चकोरी ॥232:6॥

देखि रूप लोचन ललचाने = राम के रूप को देखकर नेत्र ललचा उठे, *हरषे जनु* = और ऐसे प्रसन्न हो गये, *निज निधि पहिचाने* = मानो अपनी ही संपत्ति मिल गई हो, *थके नयन* = नेत्र स्थिर हो गये, *रघुपति छबि देखें* = राम की सुंदरता देखकर, *पलकन्हिहूँ परिहरीं निमेषें* = पलकों ने झपकना त्याग दिया, *अधिक सनेहँ* = बहुत अधिक प्रेम के कारण, *देह भै भोरी* = शरीर की सुध भूल गई, *सरद ससिहि* = शरद पूर्णिमा के चन्द्रमा को, *जनु चितव चकोरी* = मानो चकोरी देख रही हो।

राम को देखकर सीता के नेत्रों को यह लालच लगी कि इन्हें और पास से देखें। नेत्र ऐसे प्रसन्न हो गये मानो राम अपने ही हों। थके नयन मायने नेत्र स्थिर हो गये। जैसे सीता को देखकर राम के पलकों ने झपकना बंद कर दिया था वैसे ही सीता की पलकें स्थिर हो गयीं। शरीर की सुध-बुध नहीं रही, भूल गयीं

अपने आप को। ऐसा लगा मानो राम शरद पूर्णिमा का चन्द्रमा हों और सीता चकोरी पक्षी के समान टकटकी लगाये उनकी ओर देख रही हों।

नेत्रों के रास्ते राम को हृदय में बैठाकर नेत्र बंद कर लिये

लोचन मग रामहि उर आनी। दीन्हे पलक कपाट सयानी ॥232:7॥

लोचन मग = नेत्रों के रास्ते, *रामहि उर आनी* = राम के रूप को हृदय में बैठा लिया, *दीन्हे पलक कपाट सयानी* = समझदार सीता जी ने फिर पलक गिराकर नेत्रों को बंद कर लिया।

सीता जी ने प्रभु राम को आँखों से देखकर उस सुंदर रूप को अपने हृदय में अंकित कर लिया। उसके बाद आँखें बंद कर लीं। अब जैसे राम को बाहर देखा था वैसा ही अंदर देखने लगीं।

राम दूसरी तरफ जाने लगे, सखियाँ संकोच में, क्या करें?

जब सिय सखिन्ह प्रेमबस जानी। कहि न सकहिं कछु मन सकुचानी ॥232:8॥

जब सिय = जब सीता जी को, *सखिन्ह प्रेमबस जानी* = सखियों ने प्रेम के वशीभूत समझा, *कहि न सकहिं कछु मन सकुचानी* = सखियाँ संकोच के कारण कुछ कह नहीं पायीं।

सखियों ने देखा कि सीता जी ने इस प्रकार से आँखें बंद कर ली हैं, दोनों राजकुमार बातें करते हुए उधर से हट कर दूसरी तरफ चले गये। तब सखियों को लगा कि काम पूरा हो गया है, सीता जी को यहाँ से ले चलना चाहिये। फिर देखा ये तो राम के प्रेम के वश में हैं। मन में संकोच था, कैसे चलने के लिये कहें?

दो-दो चंद्रमा की तरह लताओं की ओट से दोनों भाई फिर दिखे

लताभवन तें प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाइ ।
निकसे जनु जुग बिमल बिधु जलद पटल बिलगाइ ॥दोहा 232॥

लताभवन तें प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाइ = उसी समय दोनों भाई लताओं के मंडप से बाहर निकले, *निकसे जनु जुग बिमल बिधु* = मानो दो निर्मल चन्द्रमा निकल आये हों, *जलद पटल बिलगाइ* = बादलों के पर्दे को हटाकर।

दोनों भाई लताओं के पीछे से फूल ले रहे हैं। फूल लेते-लेते उन्हीं लताओं के बीच से जब आगे बढ़े और बाहर आये तो फिर से साफ-साफ दिखाई देने लगे। उस समय ऐसा लगा जैसे लताओं का मंडप आकाश में बादलों के समान हो। उन बादलों के आवरण को हटाकर उसमें से एक नहीं दो-दो चन्द्रमा एक साथ निकल आये हों।

राम के सुंदर स्वरूप को देख लो

पुष्पवाटिका में एक तरफ राम-लक्ष्मण हैं, दूसरी तरफ सीता व उनकी सखियाँ हैं। जब सीता ने राम की तरफ देखा तो उनके मन में प्रेम जागृत हुआ, दृष्टि राम पर टिक गयी। फिर सुंदर स्वरूप को हृदय में धारण करके आँखें बंद कर लीं। सखियों ने सावधान किया कि दोनों राजकुमार लताओं की ओट से फिर से बाहर आ गये हैं, आँखें खोलकर ठीक से देख लो। सखियों को राम कैसे दिखे, उसका सुंदर चित्रण तुलसीदास जी करने जा रहे हैं। मन लगाकर, राम के श्रृंगार से परिपूर्ण रूप का दर्शन कर अपने जीवन को धन्य करें।

नीले व पीले कमल के समान सुंदर शरीर हैं व दोनों वीर हैं

सोभा सीवँ सुभग दोउ बीरा। नील पीत जलजाभ सरीरा ॥233:1॥

सोभा सीवँ = सुंदरता की सीमा है, *सुभग दोउ बीरा* = दोनों वीर व सुंदर भाई, *नील पीत जलजाभ सरीरा* = नीले कमल के समान राम, पीले कमल के समान लक्ष्मण का शरीर है।

राम का शरीर नीला है। लक्ष्मण जी का पीला है। कहते हैं कि जैसे नीले रंग के व पीले रंग के दो कमल हों। कमल के समान आभा वाले कोमल, सुगंधित व सुंदर हैं। सुकुमार होने के साथ-साथ दोनों बहुत वीर भी हैं।

सिर में मोरपंख व फूलों की कलियों से श्रृंगार

मोरपंख सिर सोहत नीके। गुच्छ बीच बिच कुसुम कली के ॥233:2॥

मोरपंख सिर सोहत नीके = सिर पर सुंदर मोर पंख शोभित है, *गुच्छ बीच बिच कुसुम कली के* = बीच-बीच में फूलों की कलियों के गुच्छे लगे हैं।

राम की वेषभूषा जगह व समय के अनुसार बदलती रहती है। जब नगर भ्रमण में निकले थे तब चौकोर टोपी पहने थे, आज लंबी टोपी पहने हैं। टोपी के ऊपर मोर पंख लगा है। इसके बीच-बीच में फूलों की कलियाँ लगी हैं। समय के अनुरूप श्रृंगार है, जो बहुत शोभायमान है।

माथे पर तिलक व पसीना, कानों में आभूषण शोभायमान हैं

भाल तिलक श्रमबिंदु सुहाए। श्रवन सुभग भूषन छबि छाए ॥233:3॥

भाल तिलक = माथे पर तिलक, *श्रमबिंदु सुहाए* = पसीना भी सुंदर लग रहा है, *श्रवन सुभग* = दोनों कान सुंदर हैं, *भूषन छबि छाए* = जिनमें आभूषण शोभायमान हैं।

सुबह से फूल लेते हुए घूम रहे हैं, इसलिये माथे पर पसीने की बूँदें भी आ गयी हैं। तिलक के साथ ये श्रमबिंदु बहुत सुंदर लग रहे हैं। दोनों कान सुंदर हैं जिनमें पहने हुए आभूषण की सुंदरता छायी हुई है।

तिरछी भौहें, घुँघराले बाल, अरुण नेत्र

बिकट भृकुटि कच घूघरवारे। नव सरोज लोचन रतनारे ॥233:4॥

बिकट भृकुटि = भौहें तिरछी हैं, *कच घूघरवारे* = बाल घुँघराले हैं, *नव सरोज लोचन रतनारे* = नये खिले लाल कमल के समान लाल नेत्र हैं।

भौहें तिरछी हैं जो सुंदरता की सूचक हैं। घुँघराले बाल गर्दन की तरफ पीछे लटक रहे हैं। जैसे ताजा खिला हुआ हल्के लाल रंग का कमल हो, वैसी ही सुंदर लालिमा लिये दोनों नेत्र हैं।

गाल, ठुड्डी, नाक सुंदर, ओंठों की मुस्कान मन को चुरा ले

चारु चिबुक नासिका कपोला। हास बिलास लेत मनु मोला ॥233:5॥
मुखछबि कहि न जाइ मोहि पाहीं। जो बिलोकि बहु काम लजाहीं ॥233:6॥

चारु चिबुक नासिका कपोला = नासिका, गाल, ठुड्डी बहुत सुंदर हैं, *हास बिलास* = होठों पर मुस्कान है, *लेत मनु मोला* = वह प्रसन्नता मन का हरण कर लेती है, *मुखछबि कहि न जाइ मोहि पाहीं* = मुख की सुंदरता का वर्णन ही नहीं किया जा सकता, *जो बिलोकि बहु काम लजाहीं* = जिसे देखकर बहुत से कामदेव भी लजा जायें।

आँखों के नीचे नासिका सुंदर है। गाल व ठुड्डी भी बहुत सुंदर है। होठों के ऊपर जो मुस्कान है वह इस प्रकार की है कि जो देखे उसी का मन लुभा जाये। पूरे मुख की सुंदरता देखकर कोई सखी कहती है कि हमसे कहते नहीं बनता कि ये कितने सुंदर हैं। इनके सामने बहुत सारे कामदेव आ जायें तो वे भी फीके लगेंगे। ऐसा अनंत सौंदर्य है।

शंख जैसी गर्दन, हाथी-सूँड़ जैसी भुजा, वक्ष में मणि-माला

उर मनि माल कंबु कल गीवा। काम कलभ कर भुज बलसींवा ॥233:7॥
सुमन समेत बाम कर दोना। सावँर कुअँर सखी सुठि लोना ॥233:8॥

उर मनि माल = वक्ष पर मणियों की माला है, *कंबु कल गीवा* = शंख के समान गर्दन है, *काम कलभ कर* = जैसे कामदेव का हाथी हो; उसकी सुंदर सूँड़ के समान, *भुज* = सुंदर भुजाये हैं, *बलसींवा* = जो बहुत शक्तिशाली भी है, *सुमन समेत* = फूलों सहित, *बाम कर* = बाँये हाथ में, *दोना* = दोना लिये हैं, *सावँर कुअँर सखी सुठि लोना* = हे सखी! श्यामल राजकुमार तो बहुत ही सुंदर हैं।

शंख के समान गोल व लंबी सुंदर गर्दन है। वक्ष में मणियों की माला पहने हैं। भुजायें लंबी उतार-चढ़ाव वाली सुंदर व बहुत शक्तिशाली हैं। इसकी तुलना के लिये कहती हैं मानो कामदेव के सुंदर हाथी की लंबी, कोमल व मजबूत सूँड़ हो। बाँये हाथ में पत्तों से बना हुआ दोना लिये हैं, जिसमें फूल रखे हैं। एक सखी कहती है कि साँवले राजकुमार तो बहुत ही सुंदर हैं।

सिंह जैसी कमर, पीताम्बर पहने हैं, सखियाँ मग्न हो गईं

केहरि कटि पट पीत धर सुषमा सील निधान ।
देखि भानुकुलभूषनहि बिसरा सखिन्ह अपान ॥दोहा 233॥

केहरि कटि = सिंह के समान कमर, *पट पीत धर* = पीताम्बर धारण किये हैं, *सुषमा सील निधान* = बहुत सुंदर व शील निधान हैं, *देखि भानुकुलभूषनहि* = सूर्यकुल के भूषण को देखकर, *बिसरा सखिन्ह अपान* = सखियों को अपनापन भूल गया।

कमर तो शेर के समान सुंदर है। पीताम्बर पहने हैं। सुंदरता के साथ-साथ उनमें सभी गुण भी दिखाई दे रहे हैं। सखियाँ राम-लक्ष्मण नाम नहीं लेतीं, हो सकता है उन्हें अभी नाम पता ही न हों। सूर्यवंश के सबसे महान् व्यक्ति को देखकर सखियाँ अपने बारे में तो भूल ही गईं। वे कहाँ हैं, क्या हैं सब भूल गईं। सिर्फ राम की सुंदरता ही दिख रही है।

हाथ पकड़कर सखी ने कहा, आँखें खोलो, राजकुमार को देखो तो

धरि धीरजु एक आलि सयानी। सीता सन बोली गहि पानी ॥234:1॥
बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू। भूपकिसोर देखि किन लेहू ॥234:2॥

धरि धीरजु = धैर्य धारण करके, *एक आलि सयानी* = एक चतुर सखी ने, *सीता सन बोली* = सीता जी से कहती है, *गहि पानी* = हाथ पकड़कर, *बहुरि* = बाद में, *गौरि* = पार्वती जी का, *कर ध्यान करेहू* = का ध्यान कर लेना, *भूपकिसोर देखि किन लेहू* = अभी राजकुमार को क्यों नहीं देख लेती।

जब सीता ने आँखें बंद कर लीं, तब एक सखी ने कहा, आँखें खोलकर देखो, वे अब दिखाई दे रहे हैं। सीता आँखें खोले तब तक दूसरी सखी ने राम के सुंदर स्वरूप का वर्णन कर दिया। अब तीसरी सखी जो चतुर है, समझदार है वह सीता जी का हाथ पकड़कर व्यंग्य पूर्वक कहती है कि पार्वती जी का ध्यान बाद में कर लेना, अभी राजकुमार सामने हैं, आँखें खोलो और इन्हें देख लो।

आँखें खोलकर, सिर से पैर तक राम की सुंदरता देखी

सकुचि सीयँ तब नयन उघारे। सनमुख दोउ रघुसिंघ निहारे ॥234:3॥
नख सिख देखि राम कै सोभा। सुमिरि पिता पनु मनु अति छोभा ॥234:4॥

सकुचि सीयँ तब नयन उघारे = सीता जी ने तब संकोच से आँखें खोल लीं, *सनमुख दोउ रघुसिंघ निहारे* = रघुवंश के दोनों शेरों को अपने सामने देखा, *नख सिख* = पैर के नाखून से लेकर सिर तक, *देखि राम कै सोभा* = राम जी की सुंदरता देखी, *सुमिरि पिता पनु* = फिर पिता जी के प्रण याद करके, *मनु अति छोभा* = मन में बहुत दु:ख हुआ।

सखी के व्यंग्य करने पर सीता ने संकोचवश जब आँखें खोलीं, तो उनके सामने रघुवंश के शेर के समान दोनों भाई खड़े थे। सिर से पैर तक राम जी की सुंदरता को सीता जी ने देखा। उन्हें लगा कि इनसे विवाह हो जाये तो अच्छा है। परंतु स्वतंत्रता नहीं है। पिता जी के अधीन हैं। उन्होंने प्रतिज्ञा ले रखी है, जो धनुष चढ़ायेगा उसी से विवाह होगा। इनसे धनुष उठवाया जाये फिर विवाह हो यह ठीक नहीं। यह स्मरण करके सीता जी का मन दु:खी हो गया।

सीता को राम के वश में देख, सखियाँ कहती हैं, देर हो रही है चलें

परबस सखिन्ह लखी जब सीता। भयउ गहरु सब कहहिं सभीता ॥234:5॥
पुनि आउब एहि बेरिआँ काली। अस कहि मन बिहसी एक आली ॥234:6॥

परबस सखिन्ह लखी जब सीता = सखियों ने देखा कि ये अब राम के वश में ही हो गई हैं, *भयउ गहरु* = बहुत देर हो गई है, *सब कहहिं सभीता* = सब भयभीत होकर ऐसा कहने लगीं, *पुनि आउब* = फिर से आयेंगे, *एहि बेरिआँ काली* = इसी सुबह के समय कल, *अस कहि* = ऐसा कहकर, *मन बिहसी एक आली* = एक सखी मन में हँसती है।

सखियों ने देखा कि सीता अब पिता के वश में नहीं हैं, राम के प्रति प्रेम की अधिकता के कारण उन्हीं के वश में हो गयी हैं। उनका मन यहाँ से चलने का नहीं हो रहा है। विलंब के डर से भयभीत होकर सखियाँ, सीता से आग्रह

करती हैं कि बहुत देर हो गयी है अब चलना चाहिये। हास-परिहास का माहौल बनाये रखने के लिये एक सखी व्यंग्य से कहती है कि अभी चलो, कल सुबह इसी समय फिर आयेंगे। ऐसा कहकर वह मन में हँसती है।

माता का भय, पिता की अधीनता, राम को मन में रख, लौट चलीं

गूढ़ गिरा सुनि सिय सकुचानी। भयउ बिलंबु मातु भय मानी ॥234:7॥
धरि बड़ि धीर रामु उर आने। फिरी अपनपउ पितुबस जाने ॥234:8॥

गूढ़ गिरा सुनि = व्यंग्यपूर्ण बातें सुनकर, *सिय सकुचानी* = सीता सकुचा गईं, *भयउ बिलंबु* = देर हो गई है, *मातु भय मानी* = ऐसा समझकर माँ का डर मन में लगा, *धरि बड़ि धीर* = बहुत धैर्य रखकर, *रामु उर आने* = राम के सुंदर रूप को हृदय में धारण करके, *फिरी* = लौट चलीं, *अपनपउ पितुबस जाने* = अपने को पिता के वश में जानकर।

सखियों की बातें सुनकर सीता को संकोच लगा, देर होने के कारण माता का भय लगता है। राम के सुंदर स्वरूप को हृदय में धारण किया, उसे ही स्मरण करती हुई घूम कर वापस चल दीं। मन में सोचती जाती हैं हम तो पिता के वश में हैं। स्वतंत्र नहीं हैं, परिवार है, समाज है उनकी सहमति से ही विवाह होगा।

चलते हुए, किसी बहाने से मुड़कर, राम को देखती जाती हैं

देखन मिस मृग बिहग तरु फिरइ बहोरि बहोरि ।
निरखि निरखि रघुबीर छबि बाढ़इ प्रीति न थोरि ॥दोहा 234॥

देखन मिस मृग बिहग तरु = मृग; पक्षी व वृक्षों को देखने के बहाने, *फिरइ बहोरि बहोरि* = बार-बार पीछे मुड़कर देखती हैं, *निरखि निरखि रघुबीर छबि* = राम की छवि देख-देखकर, *बाढ़इ प्रीति न थोरि* = उनका प्रेम बढ़ता ही जा रहा है।

चलने लगीं तो राम से दृष्टि हटती नहीं। किसी बहाने से देखने लगती हैं। क्या बहाना है? कोई पशु दिखा तो उसको देखने के बहाने, पक्षी या वृक्ष को देखने

के बहाने राम को देखती जाती हैं। सुंदर रूप को देख-देखकर प्रेम बढ़ता जाता है। राम की सुंदरता, बल सब अपने अनुकूल दिखाई देता है।

राम और सीता ने एक-दूसरे से कुछ कहा नहीं

राम, लक्ष्मण, सीता व सखियों के चेहरे के भावों को ध्यान में रखकर इस प्रसंग का भाव पूर्ण पाठ करें, तब आनंद आयेगा। राम ने सीता से कुछ नहीं कहा, सीता ने राम से कुछ नहीं कहा। राम लक्ष्मण से बोलते हैं, लक्ष्मण सुनते हैं पर चुप रहते हैं। सखियाँ बोलती हैं। सीता चुप रहकर, अपने मन में कहती हैं।

शिव-धनुष की कठोरता से मन में चिंता व दुःख

जानि कठिन सिवचाप बिसूरति। चली राखि उर स्यामल मूरति ॥235:1॥

जानि कठिन सिवचाप = शिव जी का धनुष बहुत कठिन है यह सोचकर, *बिसूरति* = मन ही मन चिंता करते हुए, *चली* = चलती हैं, *राखि उर स्यामल मूरति* = मन में श्यामल राम का स्मरण करते हुए।

पार्वती जी के जिस मंदिर में पहले सीता गयी थीं, उसी में लौटकर जा रही हैं। रास्ते में मन में सोचती हैं कि शंकर जी का धनुष बहुत मजबूत है, उसको तोड़ना या चढ़ाना बहुत ही कठिन है। इसलिये मन में चिंता आती है, उस चिंता में जो दु:ख होता है उसे ग्रामीण भाषा में बिसूरना कहते हैं। फिर मन में राम के साँवले रूप का स्मरण करती हैं।

प्रेम की स्याही से सीता का चित्र राम ने मन में अंकित किया

प्रभु जब जात जानकी जानी। सुख सनेह सोभा गुन खानी ॥235:2॥
परम प्रेममय मृदु मसि कीन्ही। चारु चित्त भीतीं लिखि लीन्ही ॥235:3॥

प्रभु जब जात जानकी जानी = प्रभु राम ने जब सीता को जाते हुए देखा, *सुख सनेह सोभा गुन खानी* = उन्हें लगा कि ये सुख; स्नेह; शोभा व गुणों की खान हैं, *परम प्रेममय* = परम प्रेम की, *मृदु मसि कीन्ही* = मधुर स्याही बनाकर, *चारु चित्त भीतीं* = सुंदर मन की दीवार पर, *लिखि लीन्ही* = सीता का सुंदर चित्र बना लिया।

राम ने सीता को उलटकर मंदिर की तरफ जाते हुए देखा। वे सोचते हैं कि सीता सुख प्रदान करने वाली हैं। वे सुंदरता की खान तो हैं ही, साथ में बहुत ही गुणवती भी हैं। फिर राम ने सीता को अपने हृदय में कैसे बैठाया उसका काव्यात्मक वर्णन तुलसीदास जी करते हैं। राम ने परम प्रेम की स्याही बनायी, वह स्याही मृदु है, काली नहीं। उस स्याही से अपने हृदय-पटल पर सीता का सुंदर चित्र अंकित कर लिया।

मंदिर पहुँचीं, मूर्ति के चरणों में प्रणाम करके प्रार्थना करती हैं

गई भवानी भवन बहोरी। बंदि चरन बोली कर जोरी ॥235:4॥

गई भवानी भवन बहोरी = पार्वती जी के मंदिर में फिर से गयीं, *बंदि चरन* = चरणों की वंदना करके, *बोली कर जोरी* = हाथ जोड़कर प्रार्थना करती हैं।

सीता पार्वती देवी के मंदिर में दुबारा पहुँचती हैं। मूर्ति के चरणों की वंदना करती हैं। दोनों हाथों को प्रार्थना की मुद्रा में जोड़कर कहती हैं। इसके पहले प्रार्थना की थी कि हमारे अनुकूल वर मिले। देवी की कृपा से अनुकूल वर मिल गया।

हे हिमाचल की पुत्री, शिव की पत्नी, गणेश की माँ, आपकी जय हो

जय जय गिरिबरराज किसोरी। जय महेस मुख चंद चकोरी ॥235:5॥
जय गजबदन षडानन माता। जगत जननि दामिनि दुति गाता ॥235:6॥

जय जय गिरिबरराज किसोरी = हिमाचल की पुत्री पार्वती जी आपकी जय हो; जय हो, *जय महेस मुख चंद चकोरी* = अपने पति, शिव जी के चन्द्रमा के समान मुख की तरफ चकोरी की तरह आप देखती रहती हैं, *जय गजबदन षडानन माता* = गणेश जी व स्वामिकार्तिकेय की आप माँ हैं, *जगत जननि* = आप सारे जगत् की माता हैं, *दामिनि दुति गाता* = हे कांति से युक्त आपकी जय हो।

हे श्रेष्ठ पर्वतों के राजा हिमाचल की पुत्री पार्वती! आपकी जय हो, जय हो। शिव जी आपके पति हैं। हे शिव जी के चन्द्रमा के समान मुख की ओर

टकटकी लगाकर देखने वाली चकोरी! आपकी जय हो। हे हाथी के मुख वाले गणेश जी व छः मुख वाले स्वामिकार्तिकेय की माता, आपकी जय हो। हे जगत् की जननी आपकी जय हो।

आप जगत् को उत्पन्न, पालन व संहार करने वाली हैं

नहिं तव आदि मध्य अवसाना। अमित प्रभाउ बेदु नहिं जाना ॥235:7॥
भव भव बिभव पराभव कारिनि। बिस्व बिमोहनि स्वबस बिहारिनि ॥235:8॥

नहिं तव आदि मध्य अवसाना = आपका न आदि है; न मध्य है; न अंत है, *अमित प्रभाउ* = आपके असीम प्रभाव को, *बेदु नहिं जाना* = वेद भी नहीं जानते हैं, *भव* = संसार को, *भव* = उत्पन्न करने , *बिभव* = पालन करने, *पराभव* = विनाश करने, *कारिनि* = वाली हैं, *बिस्व बिमोहनि* = संसार को मोह में डालने वाली, *स्वबस बिहारिनि* = स्वतंत्र रूप से विचरण करने वाली हैं।

हे माता आपका न प्रारंभ है, न मध्य है, न अंत है। आपके असीम प्रभाव को वेद भी नहीं जानते। आप संसार को उत्पन्न करने वाली, पालन करने वाली व संहार करने वाली हैं। आप विश्व को मोहित करने वाली हैं। आपके सिर पर कोई नहीं है, आप स्वतंत्र हैं।

आप पति को देवता मानने वाली स्त्रियों में प्रथम हैं

पतिदेवता सुतीय महुँ मातु प्रथम तव रेख ।
महिमा अमित न सकहिं कहि सहस सारदा सेष ॥दोहा 235॥

पतिदेवता सुतीय महुँ = पति को देवता मानने वाली स्त्रियों में, *मातु प्रथम तव रेख* = हे माता आपका पहला नाम है, *महिमा अमित* = आपकी अपार महिमा का, *न सकहिं कहि* = का वर्णन नहीं कर सकते हैं, *सहस सारदा सेष* = हजारों सरस्वती व शेषनाग भी।

पति को देवता मानने वाली श्रेष्ठ शीलवती नारियों में आपका प्रथम स्थान है। आपकी अपार महिमा को हजारों शेषनाग व सरस्वती भी वर्णन नहीं कर सकती हैं।

आप वर देने में सक्षम, आपकी सेवा से चारों फल प्राप्त

सेवत तोहि सुलभ फल चारी। बरदायनी पुरारि पिआरी ॥236:1॥
देबि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे ॥236:2॥

सेवत तोहि सुलभ फल चारी = आपकी सेवा करने से चारों फल प्राप्त होते हैं, *बरदायनी* = आप वर देने में सक्षम हैं, *पुरारि पिआरी* = शंकर जी को आप प्रिय हैं, *देबि पूजि पद कमल तुम्हारे* = हे देवी! आपके चरणों की पूजा करके, *सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे* = देवता; मनुष्य व मुनि सभी सुखी होते हैं।

आपकी सेवा करने से धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष चारों फल प्राप्त होते हैं। आप वरदायिनी हैं। आप जो कह देती हैं वह पूरा होता है। आप शिवप्रिया हैं। आपके चरणों की सेवा करके देवता, मनुष्य व मुनि सभी सुखी हो जाते हैं।

मेरा मनोरथ तो आप जानती हैं, यह कहकर चरण पकड़ लिये

मोर मनोरथु जानहु नीकें। बसहु सदा उर पुर सबहीं कें ॥236:3॥
कीन्हेउँ प्रगट न कारन तेहीं। अस कहि चरन गहे बैदेहीं ॥236:4॥

मोर मनोरथु जानहु नीकें = मेरी मनोकामना को आप ठीक से जानती हैं, *बसहु सदा उर पुर सबहीं कें* = क्योंकि आप सदैव सबके हृदय में वास करने वाली हैं, *कीन्हेउँ प्रगट न कारन तेहीं* = इसलिये हमने आपसे कहा नहीं है, *अस कहि* = इस प्रकार प्रार्थना करके, *चरन गहे बैदेहीं* = सीता जी ने देवी की मूर्ति के चरणों को पकड़ लिया।

आप सबके हृदय में वास करती हैं, इसलिये मेरे हृदय में भी आपका वास है। तो हमारे हृदय की बात, हम क्या चाहते हैं, यह आपको ठीक से पता ही है, आपसे कुछ छिपा नहीं है। इसलिये मैंने अपना मनोरथ आपसे कहा नहीं है। प्रार्थना पूरी करके सीता ने पार्वती देवी की मूर्ति के चरण पकड़ लिये।

सीता के प्रेम से मूर्ति सजीव, माला खिसकी, मुस्कुराकर बोलने लगी

बिनय प्रेमबस भई भवानी। खसी माल मूरति मुसुकानी ॥236:5॥
सादर सियँ प्रसादु सिर धरेऊ। बोली गौरि हरषु हियँ भरेऊ ॥236:6॥

बिनय प्रेमबस भई भवानी = पार्वती जी सीता की विनम्रता व प्रेम के वश में हो गईं, *खसी माल* = मूर्ति के गले की माला खिसकी, *मूरति मुसुकानी* = मूर्ति मुस्कुरायी, *सादर सियँ* = सीता जी ने आदर के साथ, *प्रसादु सिर धरेऊ* = उस माला को प्रसाद समझकर सिर पर धारण कर लिया, *बोली गौरि* = पार्वती जी की मूर्ति बोलने लगी, *हरषु हियँ भरेऊ* = पार्वती जी का मन प्रसन्नता से भर गया।

सीता जी की प्रेमपूर्वक, विनम्रता से की गई प्रार्थना का प्रभाव देवी की मूर्ति पर हुआ। माँ पार्वती की मूर्ति ने तीन कार्य किये।
1. मूर्ति में जो माला पहनायी गयी थी वह खिसक गयी। सीता जी ने प्रसाद समझकर आदरपूर्वक माला को सिर पर धारण कर लिया।
2. मूर्ति मुस्कुराने लगी। सजीव हो उठी। प्रसन्नता से भर गई। क्यों प्रसन्न हुई? राम-सीता विवाह तो होनी ही है, अब हम आशीर्वाद देकर इस घटना के एक भाग बन जायेंगे।
3. मूर्ति सीता को आशीर्वाद देने के लिये बोलने लगी। यह है प्रेम की ताकत।

हे सीता! तुम्हारा मनोरथ पूरा होगा, मेरा यह आशीर्वाद सत्य है

सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मन कामना तुम्हारी ॥236:7॥
नारद बचन सदा सुचि साचा। सो बरु मिलिहि जाहिं मनु राचा ॥236:8॥

सुनु सिय = हे सीता सुनो! *सत्य असीस हमारी* = हमारा आशीर्वाद सत्य होगा, *पूजिहि मन कामना तुम्हारी* = तुम्हारे मन की जो कामना है वह पूरी होगी, *नारद बचन सदा सुचि साचा* = नारद जी की बात सदैव सत्य है; सचमुच वही होगा, *सो बरु मिलिहि* = तुम्हें वही वर मिलेगा, *जाहिं मनु राचा* = जिसमें तुम्हारा मन अनुरक्त है।

जगजननी माता पार्वती की मूर्ति ने कहा, हे सीता! तुम्हारे मन की कामना पूरी होगी, यह हमारा आशीर्वचन सत्य होगा। नारद जी ने जो बात कही थी वह सत्य है, वैसा ही होगा। जिस वर में तुम्हारा मन अनुरक्त है वही वर तुम्हें मिलेगा।

आशीर्वाद से प्रसन्न, सीता राजमहल वापस चल दीं

मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो ।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो ॥
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली ।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ॥छंद॥

मनु जाहिं राचेउ = तुम्हारा मन जिसमें अनुरक्त है, *मिलिहि सो बरु* = वही वर मिलेगा, *सहज सुंदर साँवरो* = वह स्वाभाविक ही सुंदर व श्यामल रंग का है, *करुना निधान सुजान* = वे करुणानिधान व सर्वज्ञ हैं, *सीलु सनेहु जानत रावरो* = तुम्हारे शील व स्नेह की बात वे जानते हैं, *एहि भाँति गौरि असीस सुनि* = इस प्रकार पार्वती जी का आशीर्वाद सुनकर, *सिय सहित हियँ हरषीं अली* = सीता जी व सब सखियाँ प्रसन्न हो गईं, *तुलसी* = तुलसीदास जी कहते हैं, *भवानिहि पूजि पुनि पुनि* = सीता ने बार-बार देवी को प्रणाम किया, *मुदित मन मंदिर चली* = फिर प्रसन्न मन से राजमहल की ओर लौट चलीं।

सीता राम के श्यामल सुंदर रूप को मन में धारण किये हुए थीं। माता पार्वती कहती हैं कि जिस सहज सुंदर श्यामल वर में तुम्हारा मन अनुरक्त है वही तुमको प्राप्त होगा। देवी माँ राम व सीता दोनों के गुणों का वर्णन करके बताती हैं कि तुम दोनों का विवाह होना उपयुक्त है। राम के लिये कहती हैं कि वे करुणा के निधान हैं, सुजान हैं। सीता के लिये कहती हैं तुम शील व स्नेह से परिपूर्ण हो। तुम्हारे गुणों को राम ने अच्छी तरह पहचान लिया है। गौरी जी की ये बातें सीता जी के साथ उनकी सब सखियों ने भी सुनीं। सबका मन बहुत प्रसन्न है। तुलसीदास जी कहते हैं इसके बाद सीता ने बार-बार देवी के चरणों में प्रणाम किया। तुलसीदास जी ने इस प्रसंग में अपना नाम लिखकर कह दिया कि हमारी तरफ से भी देवी माँ प्रणाम स्वीकार कर लें।

रास्ते में बाँये अंग फड़क कर मंगल सूचना दे रहे हैं

जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि ।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ॥सोरठा 236॥

जानि गौरि अनुकूल = गौरी जी को अनुकूल समझकर, *सिय हिय हरषु* = सीता जी के मन में जो प्रसन्नता हुई, *न जाइ कहि* = उसका वर्णन नहीं किया जा सकता है, *मंजुल मंगल मूल* = कल्याणकारी मंगल करने वाले, *बाम अंग फरकन लगे* = सीता जी के बाँये अंग फड़कने लगे।

सीता मंदिर से राजमहल की तरफ जाते हुए रास्ते में सोच रही हैं कि देवी जी हमारे अनुकूल हैं। उन्होंने वरदान दिया है तो कार्य अवश्य पूरा होगा। मन में हर्ष है। पहले तो संशय था, चिंता थी। अब भरोसा हो गया है। सीता जी के बाँये अंग फड़क कर भविष्य में होने वाले मंगलकारी कार्य की सूचना दे रहे हैं।

भगवान की मूर्ति से प्रार्थना करने के तरीकों को समझें

सीता ने देवी पार्वती की मूर्ति के सामने जिस प्रेम, श्रद्धा, विश्वास, विनम्रता से उनकी महिमा कहकर, अपने मनोरथ को बताया उसे हमें अपने जीवन में सीखकर अपनाने का अभ्यास करना है। जब भगवान से कुछ माँगते हैं तो पहले उनकी महिमा कहें, ऐसी बुद्धि रखें कि मूर्ति वरदान देने में पूरी तरह समर्थ है। तब प्रार्थना फलदायी होती है। संदेह के साथ की गई प्रार्थना फलदायी नहीं होती है। भगवान तो सब जगह एक समान विद्यमान हैं। जब हम प्रेम से प्रार्थना करते हैं तो वे प्रगट होकर आशीर्वाद देते हैं। जैसे सीता देवी की शरण में गईं वैसे ही हमें भी पूरे भरोसे के साथ भगवान की शरण में जाना चाहिये। जब वे देख लेते हैं कि हमारे बिना इसका काम नहीं बनेगा, तो वे काम पूरा करवाते हैं।

स्वामी सत्यानंदजी के रिखिया सत्संग से

अगर तुम कोई दिव्य अनुभव प्राप्त करना चाहते हो तो तुम्हारे भीतर श्रद्धा व विश्वास होना चाहिये। दिमाग से भगवान का कोई रिश्ता नहीं। दिमाग से गुरु का कोई रिश्ता नहीं। जब मैंने गणेश जी, राम जी, काली जी, कृष्ण जी, शंकर जी को दिमाग से समझना चाहा, तो संशय ही पैदा हुआ। दिमाग से तो ये समझ में आते नहीं हैं। लेकिन जब दिमाग को हटाया और दिल को सामने रखा तो पत्थर भी भगवान बन गया और उसके चारों तरफ ज्योति जगमगाने लगी। वह पत्थर का भगवान बोलने लग गया। प्रेम में क्या ताकत है? वह

पहाड़ों को भी हिला सकती है। इसलिये अपने दिल पर, अपनी श्रद्धा-भक्ति पर विश्वास करो, दिमाग पर नहीं।

दोनों भाई गुरु के पास पहुँचे, राम ने पूरी बातें बता दीं

हृदयँ सराहत सीय लोनाई। गुर समीप गवने दोउ भाई ॥237:1॥
राम कहा सबु कौसिक पाहीं। सरल सुभाउ छुअत छल नाहीं ॥237:2॥

हृदयँ सराहत सीय लोनाई = मन में सीता के सौंदर्य की सराहना करते हुए, *गुर समीप गवने दोउ भाई* = दोनों भाई गुरु के पास गये, *राम कहा सबु कौसिक पाहीं* = राम जी ने विश्वामित्र से सब बता दिया, *सरल सुभाउ* = राम का स्वभाव सरल है, *छुअत छल नाहीं* = कपट तो उनमें है ही नहीं।

सीता अपने घर की तरफ और राम पुष्प लेकर विश्वामित्र जी के पास चले। दोनों तरफ बराबरी होती है। हृदय में राम का स्मरण करते हुए सीता घर जा रही हैं। सीता की सुंदरता की सराहना करते हुए राम जा रहे हैं। दोनों भाई गुरु के पास पहुँचते हैं। राम ने पुष्पवाटिका की सारी घटनायें मुनि विश्वामित्र को बता दीं कि किस प्रकार सीता को देखा, मन में क्या भाव आये इत्यादि। राम को तो छल-कपट अच्छा ही नहीं लगता, जो मन में है वही बातें सरलता से बता दीं।

पूजा करके दोनों भाइयों को मनोकामना पूर्ति का आशीर्वाद दिया

सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्ही। पुनि असीस दुहु भाइन्ह दीन्ही ॥237:3॥
सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे। रामु लखनु सुनि भए सुखारे ॥237:4॥

सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्ही = पुष्प पाकर मुनि ने पूजा की, *पुनि असीस दुहु भाइन्ह दीन्ही* = इसके बाद दोनों भाइयों को आशीर्वाद प्रदान किया, *सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे* = तुम्हारी मनोकामना सफल हो, *रामु लखनु सुनि भए सुखारे* = यह सुनकर राम व लक्ष्मण सुखी हो गये।

विश्वामित्र जी ने राम की बातें सुनीं, उनके द्वारा लाये पुष्पों को लिया, फिर पूजा की। राम को फूल लाने में देर नहीं हुई, पूजा के समय ही वे फूल लेकर

पहुँचे। पूजा करने के बाद मुनि ने राम व लक्ष्मण दोनों को आशीर्वाद दिया कि तुम्हारे मन में जो कामना है वह सफल हो। यह सुनकर दोनों प्रसन्न हो गये। देवी माँ ने सीता जी को आशीर्वाद दिया *'पूजिहि मन कामना तुम्हारी'* यहाँ गुरु ने दोनों भाइयों को कहा *'सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे'*। दोनों तरफ बराबरी चल रही है। पूजा के बाद दिया गया आशीर्वाद फलीभूत होता है क्योंकि उस समय व्यक्ति में परमात्मा का आवेश आ जाता है, उसकी शक्ति कार्य करती है।

दोपहर का भोजन, सत्संग, विश्राम के बाद संध्या वंदन हुआ

करि भोजनु मुनिबर बिग्यानी। लगे कहन कछु कथा पुरानी ॥237:5॥
बिगत दिवसु गुरु आयसु पाई। संध्या करन चले दोउ भाई ॥237:6॥

करि भोजनु मुनिबर बिग्यानी = श्रेष्ठ विज्ञानी मुनि भोजन करने के बाद, *लगे कहन कछु कथा पुरानी* = पुरानी कुछ कथायें कहने लगे, *बिगत दिवसु* = जब दिन बीत गया, *गुरु आयसु पाई* = गुरु की आज्ञा पाकर, *संध्या करन चले दोउ भाई* = संध्या वंदन करने के लिये दोनों भाई चल दिये।

सुबह पूजन, आशीर्वाद के बाद दोपहर का भोजन किया। ज्ञानवान् मुनि उसके बाद कुछ पुरानी कथा सुनाकर सत्संग करते हैं। उनके साथ में अन्य विप्र हैं, वे सब भी कथा सुनते हैं। इससे आध्यात्मिक भावना जागृत होती है। दिन समाप्त हो गया, संध्याकाल आ गया, सूर्य डूब रहा है, चन्द्रमा का उदय नहीं हुआ, इस संधिकाल में सबने संध्या वंदन तब तक किया जब तक सूर्य पश्चिम में पूरा डूब गया व चन्द्रमा का पूर्व दिशा में उदय हो गया।

चन्द्रमा के दोषों के बहाने सीता के मुख की राम प्रशंसा करते हैं

प्राची दिसि ससि उयउ सुहावा। सिय मुख सरिस देखि सुखु पावा ॥237:7॥
बहुरि बिचारु कीन्ह मन माहीं। सीय बदन सम हिमकर नाहीं ॥237:8॥

प्राची दिसि = पूर्व दिशा की ओर, *ससि उयउ सुहावा* = सुंदर चन्द्रमा का उदय हुआ, *सिय मुख सरिस देखि* = सीता जी के मुख को समान देखकर, *सुखु पावा* = राम को अच्छा लगा, *बहुरि बिचारु कीन्ह मन माहीं* = फिर मन में

बहुत विचार किया, *सीय बदन सम* = राम को लगा सीता के मुख के समान, *हिमकर नाहीं* = चन्द्रमा नहीं है।

जनमु सिंधु पुनि बंधु बिषु दिन मलीन सकलंक ।
सिय मुख समता पाव किमि चंदु बापुरो रंक ॥दोहा 237॥

जनमु सिंधु = इसका जन्म खारे पानी के समुद्र से हुआ है, *पुनि बंधु बिषु* = फिर जहर इसका भाई है, *दिन मलीन* = दिन में यह शोभाहीन रहता है, *सकलंक* = इसमें काला दाग है, *सिय मुख समता पाव किमि* = सीता के मुख से कैसे इसकी बराबरी की जा सकती है, *चंदु बापुरो रंक* = यह तो बेचारा सौंदर्य में दरिद्र है।

घटइ बढ़इ बिरहिनि दुखदाई। ग्रसइ राहु निज संधिहिं पाई ॥238:1॥
कोक सोकप्रद पंकज द्रोही। अवगुन बहुत चन्द्रमा तोही ॥238:2॥

घटइ बढ़इ = यह घटता-बढ़ता रहता है, *बिरहिनि दुखदाई* = विरहिणी स्त्रियों को दु:ख देने वाला है, *ग्रसइ राहु निज संधिहिं पाई* = संधिकाल में राहु इसे ग्रस लेता है, *कोक सोकप्रद* = चकवे पक्षी को शोक देता है, *पंकज द्रोही* = कमल के फूल का दुश्मन है, *अवगुन बहुत चन्द्रमा तोही* = हे चन्द्रमा! तुझमें बहुत से अवगुण हैं।

बैदेही मुख पटतर दीन्हे। होइ दोषु बड़ अनुचित कीन्हे ॥238:3॥
सिय मुख छबि बिधु ब्याज बखानी। गुर पहिं चले निसा बड़ि जानी ॥238:4॥

बैदेही मुख पटतर दीन्हे = सीता के मुख से तुम्हारी तुलना करने में, *होइ दोषु* = दोष लगेगा, *बड़ अनुचित कीन्हे* = बहुत बड़ा अनुचित कार्य करने जैसा है, *सिय मुख छबि* = सीता के मुख की शोभा, *बिधु ब्याज* = चन्द्रमा के बहाने, *बखानी* = राम ने वर्णन किया, *गुर पहिं चले निसा बड़ि जानी* = रात बहुत हो गई है, यह समझकर गुरु के पास चल दिये।

रामचरितमानस महाकाव्य है। इसमें चन्द्रमा, सूर्य, प्रकृति, पर्वत सबका वर्णन होना चहिये। चन्द्रमा के दोषपूर्ण रूप की बातें कहकर राम सीता के मुख की सुंदरता को चन्द्रमा से श्रेष्ठ बताकर कहते हैं कि इससे तुलना करने में अनुचित कार्य हो जायेगा, इसका दोष लगेगा। पूर्व दिशा की तरफ चमचमाता चन्द्रमा

उदय हो गया है। उसकी सुंदरता देखकर राम को सीता के मुख की सुंदरता का स्मरण आ गया। राम को लगा कि चन्द्रमा तो वैसे ही है जैसे सीता का मुख। तुलना करके विचार किया तो पहले चन्द्रमा के चार दोष दिखाई दिये। 1. चन्द्रमा का जन्म खारे पानी के समुद्र से हुआ है। 2. इसका भाई विष है। 3. दिन में यह मलीन रहता है। 4. रात में इसमें काला धब्बा दिखता है। और विचार किया तो राम को लगा कि यह सदैव एक समान नहीं रहता है, घटता-बढ़ता रहता है। पर सीता की सुंदरता घटने-बढ़ने वाली नहीं है। राहु इसे ग्रसता भी है। वियोगिनी स्त्री व कोक पक्षी को यह दुःख देता है। कमल के फूल को यह मुरझा ही देता है। अंत में कहते हैं कि हे चन्द्रमा तुममें तो बहुत दोष हैं, वैदेही के मुख से तुम्हारी तुलना नहीं हो सकती है।

रात्रि विश्राम, सुबह सूर्योदय की लालिमा की प्रशंसा

करि मुनि चरन सरोज प्रनामा। आयसु पाइ कीन्ह बिश्रामा ॥238:5॥
बिगत निसा रघुनायक जागे। बंधु बिलोकि कहन अस लागे ॥238:6॥
उयउ अरुन अवलोकहु ताता। पंकज कोक लोक सुखदाता ॥238:7॥

करि मुनि चरन सरोज प्रनामा = मुनि के चरणों में प्रणाम करके, *आयसु पाइ कीन्ह बिश्रामा* = आज्ञा लेकर विश्राम करने चल दिये, *बिगत निसा रघुनायक जागे* = रात व्यतीत होने पर राम उठे, *बंधु बिलोकि कहन अस लागे* = भाई की तरफ देखकर कहने लगे, *उयउ अरुन अवलोकहु ताता* = हे तात! देखो अरुणोदय हुआ है, *पंकज कोक लोक सुखदाता* = जो कमल; कोक पक्षी व समस्त संसार को सुख देने वाला है।

रात्रि बहुत हो गई, तो गुरु के पास गये, प्रणाम किया, उनकी आज्ञा पाकर विश्राम करने चले गये। सुबह जब उठे तो सूर्योदय होता दिखाई दिया। लक्ष्मण को देखकर राम कहने लगे, देखो पूर्व दिशा में अरुणोदय हो रहा है। सूर्य के निकलने के पहले की लालिमा छाई है। इस अरुणोदय से कमल का फूल, कोक पक्षी व सारा संसार सुखी हो गया है।

लक्ष्मण सूर्य के उदय की तुलना राम से करते हैं

बोले लखनु जोरि जुग पानी। प्रभु प्रभाउ सूचक मृदु बानी ॥238:8॥

बोले लखनु जोरि जुग पानी = दोनों हाथ जोड़कर लक्ष्मण कहते हैं, *प्रभु प्रभाउ सूचक मृदु बानी* = मधुर वाणी में जो प्रभु राम के प्रभाव को सूचित करती है।

अरुनोदयँ सकुचे कुमुद उडगन जोति मलीन ।
जिमि तुम्हार आगमन सुनि भए नृपति बलहीन ॥दोहा 238॥

अरुनोदयँ = अरुणोदय होने से, *सकुचे कुमुद* = कुमुदिनी सकुचा गयी, *उडगन जोति मलीन* = तारों का प्रकाश फीका हो गया, *जिमि तुम्हार आगमन सुनि* = जैसे आपका आगमन सुनकर, *भए नृपति बलहीन* = सब राजा बलहीन हो गये हैं।

नृप सब नखत करहिं उजिआरी। टारि न सकहिं चाप तम भारी ॥239:1॥
कमल कोक मधुकर खग नाना। हरषे सकल निसा अवसाना ॥239:2॥
ऐसेहिं प्रभु सब भगत तुम्हारे। होइहहिं टूटें धनुष सुखारे ॥239:3॥

नृप सब नखत = सारे राजा तारों के समान, *करहिं उजिआरी* = हल्की रोशनी करते हैं, *टारि न सकहिं* = हटा नहीं सकते, *चाप तम भारी* = धनुष के समान भारी अंधकार को, *कमल कोक मधुकर खग नाना* = कमल; चकवे; भौंरे और अनेक प्रकार के पक्षी, *हरषे सकल* = जैसे सभी हर्षित होते हैं, *निसा अवसाना* = रात्रि व्यतीत हो जाने पर, *ऐसेहिं प्रभु सब भगत तुम्हारे* = हे प्रभु इसी प्रकार आपके सब भक्त, *होइहहिं टूटें धनुष सुखारे* = धनुष टूटने पर सुखी हो जायेंगे।

उयउ भानु बिनु श्रम तम नासा। दुरे नखत जग तेजु प्रकासा ॥239:4॥
रबि निज उदय ब्याज रघुराया। प्रभु प्रतापु सब नृपन्ह दिखाया ॥239:5॥
तव भुज बल महिमा उदघाटी। प्रगटी धनु बिघटन परिपाटी ॥239:6॥

उयउ भानु = सूर्य के उदय होते ही, *बिनु श्रम* = बिना परिश्रम के, *तम नासा* = अंधकार दूर हो जाता है, दुरे *नखत* = तारे छिप जाते हैं, *जग तेजु प्रकासा* = संसार में तेज प्रकाश फैल जाता है, *रबि निज उदय ब्याज* = सूर्य ने अपने उदय के बहाने, *रघुराया* = हे राम, *प्रभु प्रतापु* = आपके प्रताप को, *सब नृपन्ह दिखाया* = सभी राजाओं को दिखा दिया है, *तव भुज बल महिमा उदघाटी* = आपकी भुजाओं के बल की महिमा को सूर्य ने प्रगट कर

दिया है, *प्रगटी धनु बिघटन परिपाटी* = धनुष के टूटते ही आपकी महिमा के प्रकटीकरण का कार्य प्रारंभ होगा।

राम की आज्ञा पाकर लक्ष्मण दोनों हाथ जोड़कर बहुत विनम्रता से सूर्योदय की तुलना प्रभु राम की उपस्थिति से करते हैं।

1. सूर्य के उदय के साथ ही कुमुदिनी मुरझा जाती है। तारों का प्रकाश दिखाई नहीं देता है। वैसे ही हे प्रभु! आपके आगमन से धनुषयज्ञ में आये सब राजा बलहीन हो गये हैं।
2. धनुष का भारीपन घोर अंधकार के समान है। जैसे बहुत संख्या में तारों का प्रकाश भी अंधकार नहीं मिटा सकता वैसे ही इन राजाओं के टिमटिमाते बल से यह धनुष टूटने वाला नहीं है। राजा तो तारों के समान हैं।
3. सूर्य के उदय से जैसे बिना प्रयास के ही अंधकार दूर हो जाता है वैसे ही आपसे यह धनुष बिना परिश्रम के ही टूट जायेगा।
4. सूर्य के उदय से कमल, चकवे, भौंरे और अनेक प्रकार के पक्षी हर्षित होते हैं, वैसे ही आपके सब भक्त, धनुष टूटने पर सुखी हो जायेंगे।
5. सूर्य ने अपने उदय के बहाने आपकी महिमा उद्घाटित कर दी है। धनुष टूटने पर आपकी महिमा सबके सामने प्रगट हो जायेगी।

लक्ष्मण की बातों से राम प्रसन्न, दोनों गुरु के पास पहुँचे

बंधु बचन सुनि प्रभु मुसुकाने। होइ सुचि सहज पुनीत नहाने ॥239:7॥
नित्यक्रिया करि गुरु पहिं आए। चरन सरोज सुभग सिर नाए ॥239:8॥

बंधु बचन सुनि प्रभु मुसुकाने = भाई के बचन सुनकर राम मुस्कुराते हैं, *होइ सुचि सहज पुनीत नहाने* = स्वभाव से ही पवित्र राम ने शौच से निवृत होकर स्नान किया, *नित्यक्रिया करि गुरु पहिं आए* = नित्यकर्म करके गुरु के पास आ गये, *चरन सरोज सुभग सिर नाए* = गुरु के सुंदर चरण कमलों में सिर झुकाकर प्रणाम किया।

लक्ष्मण की बातें सुनकर राम मुस्कुराये, उन्होंने कुछ कहा तो नहीं पर मौन स्वीकृति दे दी कि हाँ ऐसा ही होगा। नित्यकर्म करके गुरु के पास आये, उनके चरणों में सिर झुकाकर प्रणाम किया।

11. धनुष-यज्ञ परिसर में सब लोग पहुँचते हैं

(दोहा 240 से 249)

धनुष-यज्ञ का प्रसंग जनमानस में बहुत लोकप्रिय है। तुलसीदास सभी को इस लीला को देखने के लिये आमंत्रित कर रहे हैं। जनक जी ने योग्यतानुसार सभी नगरवासियों को आदर से बैठवाया। राजाओं को सिंहासननुमा कुर्सियों पर बैठवाया। विश्वामित्र जी को प्रणाम करके परिसर घुमाकर अपनी प्रतिज्ञा बतायी व एक विशेष प्रकार के सबसे ऊँचे मंच पर प्रभु राम व लक्ष्मण के साथ बैठाया। अपनी-अपनी भावनाओं के अनुसार लोगों ने राम को अलग-अलग रूपों में देखा। प्रभु राम की सुंदरता, वीरता, दिव्य सौंदर्य, चलने, उठने, बैठने के तरीकों को देखकर राजाओं को लगा कि ये ही धनुष तोड़ेंगे। जब सब लोग बैठ गये, माहौल शांत हुआ तो जनक जी के बुलवाने पर सखियाँ सीता जी को लेकर आती हैं। उनके दिव्य सौंदर्य को देखकर सब मोहित हो जाते हैं। राम को खोजते हुए उन्होंने सरसरी तौर पर सारे राजाओं पर नजर घुमायी। राम को देखा, मन में बैठाया, संकोच से सखियों को देखने लगीं।

धनुष-यज्ञ में चलने का बुलावा लेकर शतानंद जी आते हैं

सतानंदु तब जनक बोलाए। कौसिक मुनि पहिं तुरत पठाए ॥239:9॥
जनक बिनय तिन्ह आइ सुनाई। हरषे बोलि लिए दोउ भाई ॥239:10॥

सतानंदु तब जनक बोलाए = शतानंद जी को जनक जी ने तब बुलवाकर, *कौसिक मुनि पहिं तुरत पठाए* = तुरंत ही मुनि विश्वामित्र जी के पास भेजा, *जनक बिनय तिन्ह आइ सुनाई* = उन्होंने आकर जनक जी की विनती सुनायी, *हरषे बोलि लिए दोउ भाई* = विश्वामित्र जी ने प्रसन्न होकर दोनों भाइयों को बुलवाया।

सतानंद पद बंदि प्रभु बैठे गुर पहिं जाइ ।
चलहु तात मुनि कहेउ तब पठवा जनक बोलाइ ॥दोहा 239॥

सतानंद पद बंदि प्रभु = प्रभु राम शतानंद जी के चरणों की वंदना करके, *बैठे गुर पहिं जाइ* = गुरु के पास जाकर बैठ गये, *चलहु तात मुनि कहेउ तब* = तब मुनि ने कहा हे तात! चलो, *पठवा जनक बोलाइ* = जनक जी ने बुलावा भेजा है।

जनक जी ने शतानंद जी को बुलवाकर उनसे कहा कि आप विश्वामित्र जी के पास जाकर हमारी तरफ से धनुष-यज्ञ में आने की विनती करिये। राजा जनक का संदेश लेकर शतानंद जी विश्वामित्र जी के पास पहुँचकर कहते हैं कि धनुष-यज्ञ की तैयारी हो गई है, सब राजा लोग आने लगे हैं, राम-लक्ष्मण को लेकर आप भी चलिये। विश्वामित्र जी जनक जी का यह संदेश सुनकर प्रसन्न हुए, तुरंत राम-लक्ष्मण को बुलवाते हैं। दोनों भाई आकर सबसे पहले शतानंद जी को प्रणाम करते हैं, फिर विश्वामित्र जी के पास बैठ जाते हैं। जब बैठ गये तब मुनि कहते हैं कि धनुष-यज्ञ के लिये जनक जी का बुलावा आ गया है, अब चलना चाहिये।

विश्वामित्र जी ने संदेह व्यक्त किया, राम के पक्ष में लक्ष्मण बोले

सीय स्वयंबरु देखिअ जाई। ईसु काहि धौं देइ बड़ाई ॥240:1॥
लखन कहा जस भाजनु सोई। नाथ कृपा तव जापर होई ॥240:2॥
हरषे मुनि सब सुनि बर बानी। दीन्हि असीस सबहिं सुखु मानी ॥240:3॥

सीय स्वयंबरु देखिअ जाई = सीता जी का स्वयंवर चलकर देखेंगे, *ईसु काहि धौं देइ बड़ाई* = देखें ईश्वर किसको बड़ाई देता है, *लखन कहा* = लक्ष्मण कहते हैं, *जस भाजनु सोई* = उसी का यश होगा, *नाथ कृपा तव जापर होई* = हे नाथ! जिस पर आपकी कृपा होगी, *हरषे मुनि सब सुनि बर बानी* = लक्ष्मण की सुंदर बात सुनकर सभी मुनि प्रसन्न हुए, *दीन्हि असीस सबहिं सुखु मानी* = सबने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया।

विश्वामित्र जी ने कहा सीता जी का स्वयंवर चलकर देखेंगे। पता नहीं ईश्वर किसको यश देता है! कौन धनुष तोड़ेगा? सीता जी किसे वरमाला पहनायेंगी? प्रभु राम के विद्यमान रहते हुए विश्वामित्र जी ने संदेह व्यक्त कर दिया, पता नहीं कौन! जहाँ कहीं भी प्रभु राम की ध्वजा का पताका नीचे होता है लक्ष्मण जी तुरंत बोलते हैं, उनका पताका हमेशा ऊँचा रखते हैं। यहाँ पर बोलने वाले गुरु हैं इसलिये उनकी बात को बहुत ही चतुरता व शालीनता से विरोध करते हुए लक्ष्मण कहते हैं– जिस पर आपकी कृपा होगी उसे ही यह यश प्राप्त होगा। लक्ष्मण की बातों से सब हर्षित होकर आशीर्वाद देते हैं।

मुनियों के साथ राम धनुष-यज्ञ शाला की ओर चले

पुनि मुनिबृंद समेत कृपाला। देखन चले धनुषमख साला ॥240:4॥

पुनि मुनिबृंद समेत = फिर मुनियों के समूह के साथ, *कृपाला* = कृपा करने वाले राम, *देखन चले धनुषमख साला* = धनुषयज्ञशाला देखने चल दिये।

जहाँ पर धनुषयज्ञ होना था वहाँ कृपालु राम मुनियों के साथ चल दिये। सामान्य रूप से यज्ञ का आशय है जहाँ पर अग्नि जलाकर देवताओं को आहुति देते हैं, परंतु जहाँ पर सबके कल्याण के लिये सब मिलकर कार्य करें, उसे भी यज्ञ कहते हैं। इस धनुष के टूटने से सबका हित होना था। सीता जी, जनक जी, जनकपुरवासी इत्यादि सबका हित था, इसलिये इसका नाम धनुष-यज्ञ दिया गया।

नगरवासी सब कार्य छोड़कर यज्ञ-शाला पहुँचे

रंगभूमि आए दोउ भाई। असि सुधि सब पुरबासिन्ह पाई ॥240:5॥
चले सकल गृह काज बिसारी। बाल जुबान जरठ नर नारी ॥240:6॥

रंगभूमि आए दोउ भाई = रंगभूमि में दोनों भाई आ गये हैं, *असि सुधि सब पुरबासिन्ह पाई* = यह समाचार सब नगरवासियों को मिला, *चले सकल* = वे सब चल दिये, *गृह काज बिसारी* = घर व कार्य को भुलाकर, *बाल जुबान जरठ नर नारी* = बालक; जवान व बूढ़े सभी स्त्री-पुरुष।

दोनों भाई धनुष-यज्ञ शाला पहुँच गये हैं यह समाचार नगरवासियों को पता चला। क्या बच्चे, क्या जवान और क्या बूढ़े, सबके सब, चाहे स्त्री हो या पुरुष, अपना घर व कार्य छोड़कर यज्ञशाला की तरफ दौड़ पड़े।

सबको प्रेमपूर्वक योग्यता के अनुसार बैठाया गया

देखी जनक भीर भै भारी। सुचि सेवक सब लिए हँकारी ॥240:7॥
तुरत सकल लोगन्ह पहिं जाहू। आसन उचित देहु सब काहू ॥240:8॥

देखी जनक भीर भै भारी = जब जनक जी ने देखा कि बहुत भीड़ हो गई है, *सुचि सेवक सब लिए हँकारी* = तब सब विश्वासपात्र सेवकों को बुलवाकर,

तुरत सकल लोगन्ह पहिं जाहू = कहा कि तुरंत सब लोगों के पास जाओ, *आसन उचित देहु सब काहू* = सबको यथा-योग्य स्थान पर बैठाओ।

कहि मृदु बचन बिनीत तिन्ह बैठारे नर नारि ।
उत्तम मध्यम नीच लघु निज निज थल अनुहारि ॥दोहा 240॥

कहि मृदु बचन बिनीत तिन्ह = उन लोगों ने कोमल व नम्र वचन कहकर, *बैठारे नर नारि* = सभी स्त्रियों व पुरुषों को बैठाया, *उत्तम मध्यम नीच लघु* = उत्तम; मध्यम; नीच व लघु, *निज निज थल अनुहारि* = जो व्यक्ति जिस श्रेणी का था उसी अनुसार उसे बैठाया गया।

जब सब राजा आ गये, सारे नगरवासी आ गये, जनक जी ने देखा बहुत भीड़ हो गयी है तब अपने सेवकों को बुलाकर कहा, सबके बैठने की उचित व्यवस्था करो। राजाओं के बैठने की तो अलग व्यवस्था थी। बाकी लोगों के लिये उत्तम, मध्यम, नीच व लघु, इन चार श्रेणियों के अनुसार बैठक व्यवस्था की गई थी। राजा के सेवक तुरंत लोगों के पास पहुँचे, उनसे मृदुवाणी में बातें करके,जहाँ जिसकी व्यवस्था थी वहाँ प्रेमपूर्वक बैठाया।

श्याम व गौर वर्ण के दोनों सुंदर राजकुमार पहुँचे

राजकुअँर तेहि अवसर आए। मनहुँ मनोहरता तन छाए ॥241:1॥
गुन सागर नागर बर बीरा। सुंदर स्यामल गौर सरीरा ॥241:2॥

राजकुअँर तेहि अवसर आए = उसी समय दोनों राजकुमार वहाँ आये, *मनहुँ मनोहरता तन छाए* = साक्षात् सुंदरता ही उनके शरीर पर छायी है, *गुन सागर* = वे सब गुणों के सागर हैं, *नागर* = चतुर व बुद्धिमान हैं, *बर बीरा* = उत्तम योद्धा हैं, *सुंदर स्यामल गौर सरीरा* = श्यामले व गोरे रंग का उनका सुंदर शरीर है।

जब सब राजा लोग आ गये, नगरवासी आ गये उसी समय दोनों राजकुमार, राम व लक्ष्मण धनुष-यज्ञ शाला पहुँचे। सुंदरता तो जैसे उनके शरीर पर छा गयी है। श्याम व गौर रंग के उनके शरीर सुंदर तो हैं ही, उसके साथ ये दोनों सभी गुणों से भरपूर हैं, चतुर व बुद्धिमान हैं, और बहुत अच्छे योद्धा भी हैं।

राजाओं के बीच दोनों ऐसे लगे जैसे तारों के बीच दो चन्द्रमा हों

राज समाज बिराजत रूरे। उडगन महुँ जनु जुग बिधु पूरे ॥241:3॥

राज समाज बिराजत रूरे = राजाओं के बीच में अलग ही शोभित हो रहे हैं, *उडगन महुँ जनु* = तारों के बीच में, *जुग बिधु पूरे* = जैसे पूर्णिमा के दो-दो चन्द्रमा हों।

राजाओं के बीच राम-लक्ष्मण कैसे दिख रहे हैं उसके वर्णन के लिये तुलसीदास जी अंग्रेजी भाषा के 'रेअर' से मिलता-जुलता शब्द रूरे प्रयोग करते हैं। आशय है एकदम अलग दिखे, कैसे अलग? जैसे तारों के बीच में चन्द्रमा प्रकाशित हो। अंधेरी रात में तारों का प्रकाश ज्यादा दिखता है, चन्द्रमा की रोशनी में कम हो जाता है। तारों के समान इन राजाओं के बीच में पूर्णिमा के एक नहीं बल्कि दो चन्द्रमाओं का प्रकाश फैल गया, जिससे राजाओं का तेज बहुत क्षीण हो गया, महिमा व चमक फीकी पड़ गई, वे सब बलहीन दिखाई देने लगे।

जैसी भावना वैसे ही राम दिखे– 9 रूपों का वर्णन

जिन्ह कें रही भावना जैसी। प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी ॥241:4॥

जिन्ह कें रही भावना जैसी = जिनके जैसे भाव थे, *प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी* = प्रभु राम उन्हें वैसे ही दिखे।

वहाँ उपस्थित सब लोगों की दृष्टि जब प्रभु राम पर पड़ी तो राम का रूप सबको एक जैसा नहीं दिखाई दिया। एक ही राम लोगों को भिन्न-भिन्न रूप में दिखाई दिये। जिसकी जैसी भावना है, उसे वैसे ही दिखते हैं। तुलसीदास जी इस प्रसंग में नौ प्रकार के लोगों का वर्णन करते हैं, जिन्हें उनकी भावना के अनुसार नौ तरह के रूपों में राम दिखते हैं। नौ तरह के रसों का संचार भी होता है।

1. वीर राजाओं को राम वीर दिखे– वीर रस का संचार

देखहिं रूप महा रनधीरा। मनहुँ बीर रसु धरें सरीरा ॥241:5॥

देखहिं रूप महा रनधीरा = शक्तिशाली योद्धा राजाओं को राम का रूप देखकर लगा, *मनहुँ बीर रसु धरें सरीरा* = मानो वीर रस ही शरीर धारण करके आ गया हो।

शक्तिशाली राजाओं के दिमाग में सदैव वीरता छाई रहती है। प्रभु राम की विशाल भुजायें, मजबूत कंधों को देखकर उन्हें लगा कि हाँ ये बहुत वीर हैं। ऐसे वीर हैं मानो वीर रस ने ही शरीर धारण कर लिया हो। प्रभु को देख उनके अंदर वीर रस का संचार हुआ।

2. कुटिल राजाओं को राम भयानक लगे– भय व्याप्त

डरे कुटिल नृप प्रभुहि निहारी। मनहुँ भयानक मूरति भारी ॥241:6॥

डरे कुटिल नृप प्रभुहि निहारी = प्रभु राम को देखकर कुटिल स्वभाव के राजा डर गये, *मनहुँ भयानक मूरति भारी* = उन्हें राम का रूप बहुत भयानक लगा।

कुटिल व दुर्गुणी राजा, जो गलत कार्यों में लिप्त रहते हैं उनके मन में सदा सजा भुगतने का भय बना ही रहता है। ऐसे राजाओं को प्रभु राम के उस सुंदर रूप में बहुत ही भयानकता दिखी। उनके अंदर भय उत्पन्न हो गया। वे सब डर गये।

3. असुर जो नकली राजा बने थे, उन्हें राम काल जैसे लगे

रहे असुर छल छोनिप बेषा। तिन्ह प्रभु प्रगट काल सम देखा ॥241:7॥

रहे असुर छल छोनिप बेषा = छल से जो असुर वहाँ राजाओं के वेष में बैठे थे, *तिन्ह प्रभु प्रगट काल सम देखा* = उन्हें प्रभु राम काल के समान दिखे।

अपने स्वार्थ के लिये जो अन्य लोगों को हानि पहुँचा रहे हैं उन्हीं मनुष्यों को पौराणिक भाषा में असुर कहा गया है। छल करके कुछ असुर भी वहाँ राजाओं के वेष में बैठे थे। वे अपने पापों के कारण सोचते थे कि यदि हमारा भेद खुल गया तो हम मार दिये जायेंगे। प्रभु राम मृत्यु के देवता साक्षात् काल के समान दिखाई दिये। मृत्यु के रूप में उनके अंदर वीभत्स रस का संचार होने लगा।

4. नगरवासियों को सुंदर दिखे– शृंगार रस व्याप्त

पुरबासिन्ह देखे दोउ भाई। नर भूषन लोचन सुखदाई ॥241:8॥

पुरबासिन्ह देखे दोउ भाई = नगरवासियों ने दोनों भाइयों को ऐसा देखा, *नर भूषन लोचन सुखदाई* = जैसे मनुष्यों में सर्वश्रेष्ठ आँखों को सुख देने वाले हैं।

नारि बिलोकहिं हरषि हियँ निज निज रुचि अनुरूप ।
जनु सोहत सिंगार धरि मूरति परम अनूप ॥दोहा 241॥

नारि बिलोकहिं हरषि हियँ = स्त्रियाँ प्रसन्न होकर उनकी ओर देखती हैं, *निज निज रुचि अनुरूप* = अपनी-अपनी रुचि के अनुसार, *जनु सोहत सिंगार* = मानो शृंगार रस ही, *धरि मूरति परम अनूप* = अनुपम मूर्ति धारण करके शोभायमान हो।

नगर के स्त्री-पुरुषों के नेत्रों को राम का रूप देखकर बहुत सुख का अनुभव हुआ। उन्हें लगा कि ये मनुष्यों में सबसे ज्यादा श्रेष्ठ हैं। स्त्रियों ने अपनी अलग-अलग रुचि के अनुसार राम को रिश्तेदार जैसे देखा। जो स्त्री सीता जी को पुत्री मानती हैं, उसे दामाद जैसे दिखे, जो बहन मानती है उसे बहनोई के समान दिखने लगे। उन्हें लगा मानो शृंगार रस मूर्तिमान रूप धारण करके विराजमान है।

5. ज्ञानियों को विराट् रूप दिखा– अद्‌भुत रस व्याप्त

बिदुषन्ह प्रभु बिराटमय दीसा। बहु मुख कर पग लोचन सीसा ॥242:1॥

बिदुषन्ह = ज्ञानियों को, *प्रभु बिराटमय दीसा* = प्रभु में विराट् रूप दिखा, *बहु मुख कर पग लोचन सीसा* = जिनके बहुत से मुख; हाथ; पैर; आँखें व सिर हैं।

ज्ञानी व्यक्ति जो वहाँ बैठे थे, उन्हे प्रभु राम के अंदर विराट् रूप के दर्शन हुए। इस रूप में भगवान के बहुत से मुख, बहुत से हाथ, बहुत से पैर, बहुत से नेत्र व बहुत सारे सिर दिखाई देते हैं। ज्ञानियों के अंदर अद्‌भुत रस का संचार होने लगा।

6. राजा जनक व रानी को पुत्र जैसे दिखे– वात्सल्य रस व्याप्त

जनक जाति अवलोकहिं कैसें। सजन सगे प्रिय लागहिं जैसें ॥242:2॥
सहित बिदेह बिलोकहिं रानी। सिसु सम प्रीति न जाति बखानी ॥242:3॥

जनक जाति अवलोकहिं कैसें = जनक जी के घर के लोगों को कैसे दिखते हैं?, *सजन सगे प्रिय लागहिं जैसें* = जैसे घर के सगे रिश्तेदार के समान प्रिय हों, *सहित बिदेह बिलोकहिं रानी* = जनक जी सहित रानियाँ भी उन्हें देख रही हैं, *सिसु सम* = उन सबको को शिशु के समान दिख रहे हैं, *प्रीति न जाति बखानी* = उनके प्रेम का वर्णन नहीं किया जा सकता है।

जनक जी के परिवार के लोग प्रभु राम को अपने ही घर के सदस्य के समान देखते हैं। उन्हें बहुत लगाव व प्रियता का अनुभव होने लगा। जनक जी सहित सब रानियों को राम तो अपने शिशु के समान दिखते हैं। उन सबके अंदर राम को देखकर वात्सल्य रस का संचार होने लगा। उनके प्रेम का वर्णन नहीं किया जा सकता है।

7. योगियों को ब्रह्म के समान शांत, शुद्ध, सम, चेतन लगे

जोगिन्ह परम तत्त्वमय भासा। सांत सुद्ध सम सहज प्रकासा ॥242:4॥

जोगिन्ह परम तत्त्वमय भासा = योगियों को परम तत्त्व के समान दिखे, *सांत सुद्ध सम सहज प्रकासा* = जो शांत है; शुद्ध है; सम है व स्वयं प्रकाशित है।

योगी वह है जिसने अपने आप को ब्रह्म से जोड़ लिया है। ब्रह्म का लक्षण है कि वह शांत रहता है, शुद्ध यानि सदा निर्विकार रहता है, सब जगह सदैव एक समान रहता है और चेतना के प्रकाश से स्वयं ही प्रकाशित है। वहाँ पर बैठे योगियों को ये चारों परम तत्त्व प्रभु राम में दिखाई दिये। उन्हें लगा कि ब्रह्म ही राम बनकर आ गये हैं। प्रभु के दर्शन पाकर उनके अंदर शांतरस का संचार हुआ।

8. भक्तों को इष्ट के समान दिखे– आनंद का संचार

हरिभगतन्ह देखे दोउ भ्राता। इष्टदेव इव सब सुख दाता ॥242:5॥

हरिभगतन्ह देखे दोउ भ्राता = भगवान के भक्तों ने उन्हें देखा, *इष्टदेव इव* = अपने इष्टदेव के समान, *सब सुख दाता* = जो सब प्रकार का सुख प्रदान करते हैं।

तुलसीदास जी की स्पष्ट मान्यता है कि आनंद तभी प्राप्त होगा जब मन में भक्ति भाव आये। कहते हैं वहाँ बैठे भक्तों को प्रभु राम व लक्ष्मण तो अपने इष्ट-देव के समान दिखाई दिये। भक्तों को लगा यही हमको सुख प्रदान करने वाले हैं। इस भाव से देखते ही भक्तों के अंदर आनंद रस का संचार होने लगा।

9. सीता को राम कैसे दिखे? उस स्नेह व सुख का वर्णन नहीं

रामहि चितव भायँ जेहि सीया। सो सनेहु सुखु नहिं कथनीया ॥242:6॥
उर अनुभवति न कहि सक सोऊ। कवन प्रकार कहै कबि कोऊ ॥242:7॥

रामहि चितव भायँ जेहि सीया = सीता जिस भाव से राम को देख रही हैं, *सो सनेहु सुखु नहिं कथनीया* = उस स्नेह व सुख का वर्णन नहीं किया जा सकता है, *उर अनुभवति* = वे हृदय में अनुभव कर रही हैं, *न कहि सक सोऊ* = पर वे उसे कह नहीं सकती, *कवन प्रकार कहै कबि कोऊ* = तब कोई कवि उसका कैसे वर्णन करे?

आठ तरह के लोगों के मन में उठे भावों को तुलसीदास जी के तीक्ष्ण कवित्व ने पढ़कर काव्यात्मक वर्णन कर दिया। सीता जी झरोखे से राम की ओर देख रही हैं। उनके मन में जो स्नेह उत्पन्न हुआ, जो प्रेम उमड़ा, जिस आनंद की अनुभूति हुई, कहते हैं कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। सीता जी हृदय में जो अनुभव कर रही हैं वे स्वयं नहीं बता सकतीं, तब कोई कवि उसके बारे में कैसे कुछ कह सकता है?

राम-लक्ष्मण को सबने अपने भाव से देखा

एहि बिधि रहा जाहि जस भाऊ। तेहिं तस देखेउ कोसलराऊ ॥242:8॥

एहि बिधि रहा जाहि जस भाऊ = इस प्रकार जिसका जैसा भाव था, *तेहिं तस देखेउ कोसलराऊ* = उसने कौसल के राजा राम को वैसा ही देखा।

राजत राज समाज महुँ कोसलराज किसोर ।
सुंदर स्यामल गौर तन बिस्व बिलोचन चोर ॥दोहा 242॥

राजत राज समाज महुँ = राजाओं के समाज में सुशोभित हैं, *कोसलराज किसोर* = अयोध्या के राजकुमार, *सुंदर स्यामल गौर तन* = श्यामल व गोरे सुंदर शरीर वाले, *बिस्व बिलोचन चोर* = विश्व भर के नेत्रों को चुरा लेने वाले।

इस प्रकार से वहाँ जितने भी लोग एकत्रित थे उन्होंने अपने-अपने भाव के अनुसार प्रभु राम को देखा। उस राज समाज में राम व लक्ष्मण बहुत सुशोभित हो रहे हैं। अयोध्या के राजकुमार राम के श्याम वर्ण व लक्ष्मण के गौर वर्ण की सुंदर जोड़ी ने विश्व भर के नेत्रों को चुरा लिया है। सारे नेत्र उन्हीं की तरफ देख रहे हैं।

राम का सिर से पैर तक सुंदर स्वरूप

तुलसीदास जी जनकपुर में प्रतिदिन प्रभु राम की सुंदरता का नख से लेकर सिख तक वर्णन करते हैं। पहले दिन जनकपुर घूमने में किया, दूसरे दिन पुष्पवाटिका में, तीसरे दिन आज धनुषयज्ञ में तो अत्यंत सुंदर लग रहे हैं।

सहज मनोहर मूरति दोऊ। कोटि काम उपमा लघु सोऊ ॥243:1॥
सरद चंद निंदक मुख नीके। नीरज नयन भावते जी के ॥243:2॥

सहज मनोहर मूरति दोऊ = दोनों के रूप स्वाभाविक ही सुंदर हैं, *कोटि काम उपमा लघु सोऊ* = करोड़ों कामदेव की उपमा भी उनके लिये तुच्छ है, *सरद चंद* = शरद पूर्णिमा के चन्द्रमा, *निंदक* = निंदा करने वाले, *मुख नीके* = उनके सुंदर मुख हैं, *नीरज नयन भावते जी के* = कमल के समान नेत्र मन को बहुत ही भाते हैं।

चितवनि चारु मार मनु हरनी। भावति हृदय जाति नहिं बरनी ॥243:3॥
कल कपोल श्रुति कुंडल लोला। चिबुक अधर सुंदर मृदु बोला ॥243:4॥

चितवनि चारु मार मनु हरनी = सुंदर चितवन कामदेव के मन को हरने वाली है, *भावति हृदय जाति नहिं बरनी* = वह मन को इतनी अच्छी लगती है कि वर्णन नहीं हो सकता, *कल कपोल* = सुंदर गाल हैं, *श्रुति कुंडल लोला* =

कानों में कुंडल झूम रहे हैं, *चिबुक अधर सुंदर* = ठुड्डी व ओंठ सुंदर हैं, *मृदु बोला* = वाणी मधुर है।

कुमुदबंधु कर निंदक हाँसा। भृकुटी बिकट मनोहर नासा ॥243:5॥
भाल बिसाल तिलक झलकाहीं। कच बिलोकि अलि अवलि लजाहीं ॥243:6॥

कुमुदबंधु कर = चन्द्रमा की किरणों की, *निंदक हाँसा* = निंदा करने वाली उनकी हँसी है, *भृकुटी बिकट* = भौंहें तिरछी हैं, *मनोहर नासा* = नासिका सुंदर है, *भाल बिसाल* = चौड़े माथे पर, *तिलक झलकाहीं* = तिलक दीप्तिमान है, *कच बिलोकि* = बालों को देखकर, *अलि अवलि लजाहीं* = भौंरों के झुंड भी लजा जाते हैं।

पीत चौतनीं सिरन्हि सुहाईं। कुसुम कलीं बिच बीच बनाईं ॥243:7॥
रेखें रुचिर कंबु कल गीवाँ। जनु त्रिभुवन सुषमा की सीवाँ ॥243:8॥

पीत चौतनीं = पीली चौकोनी टोपी, *सिरन्हि सुहाईं* = सिर पर शोभायमान है, *कुसुम कलीं बिच बीच बनाईं* = जिसके बीच-बीच में फूलों की कलियाँ कढ़ी हुई हैं, *रेखें रुचिर कंबु कल गीवाँ* = शंख समान सुंदर गोल गले में तीन सुंदर रेखाये हैं, *जनु त्रिभुवन सुषमा की सीवाँ* = मानो तीनों लोकों के सुंदरता की सीमा हैं।

कुंजर मनि कुंठा कलित उरन्हि तुलसिका माल ।
बृषभ कुंध केहरि ठवनि बल निधि बाहु बिसाल ॥दोहा 243॥

कुंजर मनि कुंठा कलित = मणियों के सुंदर कण्ठे, *उरन्हि तुलसिका माल* = और तुलसी की माला हृदय में पहने हैं, *बृषभ कंध* = बैलों के समान कंधे, *केहरि ठवनि* = शेर के समान खड़े होते हैं, *बल निधि बाहु बिसाल* = भुजायें विशाल व बल का भंडार हैं।

कटि तूनीर पीत पट बाँधें। कर सर धनुष बाम बर काँधें ॥244:1॥
पीत जग्य उपबीत सुहाए। नख सिख मंजु महाछबि छाए ॥244:2॥
देखि लोग सब भए सुखारे। एकटक लोचन चलत न तारे ॥244:3॥

कटि तूनीर = कमर में तरकस, *पीत पट बाँधें* = पीताम्बर बाँधे हैं, *कर सर* = हाथ में बाण, *धनुष बाम बर काँधें* = बाँयें सुंदर कंधे पर धनुष है, *पीत जग्य*

उपबीत सुहाए = पीला यज्ञोपवीत सुशोभित है, *नख सिख मंजु महाछबि छाए* = नख से लेकर सिर तक सब अंग सुंदर हैं; उन पर महान् शोभा छायी है, *देखि लोग सब भए सुखारे* = उन्हें देखकर सब लोग सुखी हुए, *एकटक लोचन चलत न तारे* = टकटकी लगाकर देख रहे हैं; आँखों की पुतलियाँ चल नहीं रही हैं।

1. मुख मंडल शरद के चन्द्रमा से भी ज्यादा प्रकाशित है।
2. नेत्र कमल के समान हैं जो बहुत ही प्रिय लग रहे हैं। प्रभु इन नेत्रों से इतनी प्रियता से देखते हैं कि कामदेव जो सारे संसार का मन हरण किये रहता है, उसके भी मन को हर ले।
3. गाल सुंदर हैं, कानों में पहने हुए कुंडल हिलते हुए चम-चमा रहे हैं।
4. ठुड्डी व ओंठ भी बहुत सुंदर हैं, वाणी बहुत मधुर है। वे सदैव प्रसन्न दिखाई देते हैं,ओठों में मुस्कान चन्द्र-किरणों से ज्यादा आकर्षक है।
5. तिरछी भौंहें, सुंदर नासिका, मस्तक पर तिलक झिलमिला रहा है।
6. काले व घुंघराले बाल ऐसे सुंदर हैं मानो भौंरों की पंक्ति को लजा रहे हैं। पीले रंग की चौकोनी टोपी पहने हैं, काढ़कर फूलों की कलियाँ बनी हैं।
7. गला शंख के समान सुंदर गोल है जिसमें तीन रेखायें दिख रही हैं। ऐसा लगता है मानो तीनों लोकों की सुंदरता सिमट कर इनमें समा गई हो। गजमुक्ता की बनी हुई गले से लगी हुई छोटी माला पहने हैं, इसे कंठा कहते हैं।
8. वक्ष में तुलसी की माला शोभायमान है।
9. कंधे बैल के कंधों के समान चौड़े व शक्तिशाली हैं।
10. प्रभु के बैठने, उठने, चलने की शान शेर के समान निर्भयता से है।
11. कमर में तरकस और पीताम्बर बांध रखा है। दाहिने हाथ में बाण और बाँयें कंधे पर धनुष लिये हैं। वक्ष में पीले रंग का यज्ञोपवीत शोभायमान है।
12. इस सुंदर रूप को देखकर सभी लोग सुखी हो जाते हैं। टकटकी लगाकर देखते रह जाते हैं, आँखों की पुतलियाँ जैसे स्थिर हो गयी हों।

जनक जी ने विश्वामित्र जी को प्रणाम किया, कथा कही, घुमाया

हरषे जनकु देखि दोउ भाई। मुनि पद कमल गहे तब जाई ॥244:4॥
करि बिनती निज कथा सुनाई। रंग अवनि सब मुनिहि देखाई ॥244:5॥

हरषे जनकु देखि दोउ भाई = दोनों भाइयों को देखकर जनक जी प्रसन्न हो गये, *मुनि पद कमल गहे तब जाई* = तब जाकर मुनि के चरणकमल पकड़ लिये, *करि बिनती निज कथा सुनाई* = विनती करके अपनी प्रतिज्ञा बतायी, *रंग अवनि सब मुनिहि देखाई* = मुनि को पूरी धनुष-यज्ञ शाला दिखाई।

दोनों भाइयों को देखकर जनक जी बहुत प्रसन्न हुए। विश्वामित्र जी के पास जाकर चरणों में प्रणाम किया। विनयपूर्वक धनुष-यज्ञ के आयोजन के संबंध में अपनी ओर से सब बातें बतायीं। पुराणों की कथा के अनुसार शिव जी ने जनक जी को स्वप्न में आदेश दिया था कि जो हमारे धनुष को तोड़ देगा उससे सीता जी के विवाह करने की घोषणा करो। जनक जी के कहने का आशय है कि शिव जी के कहने से प्रतिज्ञा की है, अपने से नहीं। धनुष-यज्ञ के पूरे परिसर को विश्वामित्र जी को दिखाया।

सबको लगा कि राम मेरी तरफ ही देख रहे हैं

जहँ जहँ जाहिं कुअँर बर दोऊ। तहँ तहँ चकित चितव सबु कोऊ ॥244:6॥
निज निज रुख रामहि सबु देखा। कोउ न जान कछु मरमु बिसेषा ॥244:7॥

जहँ जहँ जाहिं कुअँर बर दोऊ = जहाँ-जहाँ दोनों सुंदर राजकुमार जाते हैं, *तहँ तहँ चकित चितव सबु कोऊ* = वहाँ-वहाँ सब लोग आश्चर्यचकित हो जाते हैं, *निज निज रुख रामहि सबु देखा* = सबने राम को अपनी तरफ मुख किये हुए देखा, *कोउ न जान कछु मरमु बिसेषा* = पर इस विशेष रहस्य को कोई समझ न सका।

धनुष-यज्ञ परिसर में मुनि विश्वामित्र जी के साथ जहाँ-जहाँ राम व लक्ष्मण जाते हैं, सबकी नजरें आश्चर्यचकित होकर उन्हें ही देखती रह जाती हैं। सबको लगा कि प्रभु राम मेरी ही तरफ देख रहे हैं, इसलिये अपनी-अपनी भावनाओं के अनुसार सब देखते रहे। एक व्यक्ति एक साथ इतने सारे लोगों से नजरें मिलाकर कैसे देख सकता है, इस रहस्य को वहाँ कोई समझ नहीं पाया। जितने व्यक्ति होते हैं, उतने ही राम बन जाते हैं, यह बात रामचरितमानस में कई प्रसंगों में आती है। जब पाठ करें तो मन में ऐसा भाव रखें कि प्रभु राम हमें ही देख रहे हैं। अपनी मानसिक आँखों से प्रभु से नजरें मिलाने का अभ्यास करें।

मुनि ने कहा बहुत सुंदर रचना है, राजा प्रसन्न

भलि रचना मुनि नृप सन कहेऊ। राजाँ मुदित महासुख लहेऊ ॥244:8॥

भलि रचना मुनि नृप सन कहेऊ = मुनि ने राजा से कहा यह रचना बहुत अच्छी है, *राजाँ मुदित महासुख लहेऊ* = राजा को प्रसन्नता के साथ बहुत सुख लगा।

विश्वामित्र जी ने पूरा परिसर बहुत रुचि लेकर घूमा। व्यवस्थायें देखीं। फिर संतुष्ट होकर इसकी प्रशंसा की। प्रशंसा सुनकर राजा जनक को बहुत सुख हुआ। उन्हें लगा होगा कि राम व लक्ष्मण को भी यह पसंद है।

सबसे ऊँचे मंच पर विश्वामित्र जी व राम-लक्ष्मण को बैठाया

सब मंचन्ह तें मंचु एक सुंदर बिसद बिसाल ।
मुनि समेत दोउ बंधु तहँ बैठारे महिपाल ॥दोहा 244॥

सब मंचन्ह तें = सब मंचों में, *मंचु एक* = एक मंच था, *सुंदर बिसद बिसाल* = जो बहुत सुंदर; उज्ज्वल व विशाल था, *मुनि समेत दोउ बंधु तहँ बैठारे महिपाल* = राजा ने मुनियों सहित दोनों भाइयों को उस पर बैठाया।

धनुष-यज्ञ परिसर में स्टेडियम जैसी बैठने की वृहत् व सुंदर व्यवस्था थी। राजाओं के बैठने के लिये अनेक मंच थे जिन पर सिंहासन जैसी कुर्सियाँ रखी थीं। उन सब मंचों में जो सबसे ऊँचा, सबसे सुंदर व विशाल था उस पर राजा जनक ने विश्वामित्र जी सहित दोनों भाइयों को बैठाया। उनके साथ आये अन्य मुनि लोगों को उचित स्थान पर बैठाया।

राम के मंच पर बैठते ही राजाओं को लगा ये ही धनुष तोड़ेंगे

प्रभुहि देखि सब नृप हियँ हारे। जनु राकेस उदय भएँ तारे ॥245:1॥
असि प्रतीति सब के मन माहीं। राम चाप तोरब सक नाहीं ॥245:2॥

प्रभुहि देखि = प्रभु को देखकर, *सब नृप हियँ हारे* = सब राजाओं ने मन में हार मान ली, *जनु राकेस उदय भएँ तारे* = जैसे चन्द्रमा के उदय होने पर तारे प्रकाशहीन हो जाते हैं, *असि प्रतीति सब के मन माहीं* = सबके मन

में ऐसा विश्वास हो गया, *राम चाप तोरब सक नाहीं* = राम ही धनुष को तोड़ेंगे इसमें संदेह नहीं है।

जब राम, लक्ष्मण व विश्वामित्र जी मंच पर बैठ गये तो राजा लोग मन में हार मान गये। राजाओं का तेज ऐसा फीका हो गया जैसे आकाश में पूर्णिमा का चन्द्रमा उदय होने पर तारों की चमक फीकी हो जाती है। सब राजाओं के मन में इस प्रकार का निश्चय हो गया कि राम ही धनुष तोड़ेंगे। सीता का विवाह इन्हीं से होगा।

कुछ राजाओं ने कहा, अपना यश बचाकर घर वापस चलो

बिनु भंजेहुँ भव धनुषु बिसाला। मेलिहि सीय राम उर माला ॥245:3॥
अस बिचारि गवनहु घर भाई। जसु प्रतापु बलु तेजु गवाँई ॥245:4॥

बिनु भंजेहुँ = बिना तोड़े ही, *भव धनुषु बिसाला* = शिव जी के विशाल धनुष को, *मेलिहि सीय राम उर माला* = सीता राम के गले में वरमाला पहना देंगी, *अस बिचारि* = ऐसा विचार करके, *गवनहु घर भाई* = अपने-अपने घर चलो, *जसु प्रतापु बलु तेजु गवाँई* = अन्यथा अपना यश; प्रताप; बल व तेज यहाँ नष्ट हो जायेगा।

तीन कोटि के राजाओं के विचारों का तुलसीदास जी ने वर्णन किया है। मध्यम कोटि के राजा, राम के रूप व तेज को देखकर कहने लगे कि शिव जी का धनुष तो बहुत ही विशाल है। हमसे तो टूट नहीं सकता और हो सकता है ये भी न तोड़ पायें, तो भी सीता जी इन्हीं के गले में वरमाला पहनायेंगी। ऐसा विचार करके अपने-अपने घर लौट चलो, नहीं तो यहाँ अपना यश, प्रताप, बल व तेज नष्ट हो जायेगा।

अभिमानियों ने कहा, धनुष कोई तोड़े, हमसे युद्ध जीतना होगा

बिहसे अपर भूप सुनि बानी। जे अबिबेक अंध अभिमानी ॥245:5॥
तोरेहुँ धनुषु ब्याहु अवगाहा। बिनु तोरें को कुअँरि बिआहा ॥245:6॥
एक बार कालउ किन होऊ। सिय हित समर जितब हम सोऊ ॥245:7॥

बिहसे अपर भूप सुनि बानी = ये बातें सुनकर दूसरे राजा हँसे, *जे अबिबेक अंध अभिमानी* = जो अविवेक से अंधे थे व अभिमानी थे, *तोरेहुँ धनुषु* = राम धनुष तोड़ भी दें, *ब्याहु अवगाहा* = तो भी इनके साथ ब्याह होना संभव नहीं है, *बिनु तोरें* = बिना तोड़े तो, *को कुअँरि बिआहा* = राजकुमारी से ब्याह ही कौन कर सकता है, *एक बार कालउ किन होऊ* = एक बार काल भी यदि आ जाये, *सिय हित* = सीता जी के लिये, *समर जितब हम सोऊ* = हम युद्ध करके उसे जीत लेंगे।

अविवेक व अभिमान के कारण जिनकी बुद्धि काम नहीं कर रही थी, ऐसे राजाओं ने पहले वाले राजाओं की बातों का हँसकर उपहास किया। कहने लगे, मान लो ये धनुष तोड़ भी दें तो भी विवाह इनके साथ होना संभव नहीं है। यदि धनुष टूटता नहीं है तो फिर इनका विवाह सीता से हो ही नहीं सकता है। इनकी तो बात ही क्या है, यदि एक बार काल भी आ जाये, तो सीता के लिये हम उससे भी युद्ध करेंगे। आशय है जब तक ये हमें युद्ध में पराजित न कर लें, तब तक सीता से विवाह नहीं कर सकते हैं।

सज्जन राजाओं ने कहा, राम से ही सीता का ब्याह होगा

यह सुनि अवर महिप मुसुकाने। धरमसील हरिभगत सयाने ॥245:8॥

यह सुनि अवर महिप मुसुकाने = यह सुनकर दूसरे राजा मुस्कुराने लगे, *धरमसील हरिभगत सयाने* = जो धर्मपरायण; भक्त व समझदार थे।

सीय बिआहबि राम गरब दूरि करि नृपन्ह के ।
जीति को सक संग्राम दसरथ के रन बाँकुरे ॥सोरठा 245॥

सीय बिआहबि राम = राम जी सीताजी को ब्याहेंगे, *गरब दूरि करि नृपन्ह के* = राजाओं के गर्व को समाप्त करके, *जीति को सक संग्राम* = युद्ध में जीत ही कौन सकता है, *दसरथ के रन बाँकुरे* = दशरथ के इन पुत्रों को जो युद्ध में निपुण हैं।

ब्यर्थ मरहु जनि गाल बजाई। मन मोदकन्हि कि भूख बुताई ॥246:1॥

ब्यर्थ मरहु जनि गाल बजाई = झूठी बातें कहकर बेमतलब में मत मरो, *मन मोदकन्हि* = मन के लड्डुओं से, *कि भूख बुताई* = क्या भूख मिट सकती है।

वहाँ पर जो उच्चकोटि के धर्मशील, भक्त व समझदार राजा थे, वे राजाओं की विवेकहीन बातों को सुनकर मुस्कुराते हैं। फिर कहते हैं कि राम जी से ही सीता जी का विवाह होगा। सब राजाओं का गर्व व अहंकार मिट जायेगा। ये दोनों राजकुमार अपने पिता महाराज दशरथ के समान ही बहुत वीर हैं, फिर भला इनसे युद्ध में कौन जीत सकता है? व्यर्थ में झूठी बातें करके, कल्पना करके क्यों मर रहे हो? क्या मन के लड्डुओं से भूख मिट सकती है?

सीता-राम जगत् के माता-पिता हैं, इनके दर्शन करो

सिख हमारि सुनि परम पुनीता। जगदंबा जानहु जियँ सीता ॥246:2॥
जगत पिता रघुपतिहि बिचारी। भरि लोचन छबि लेहु निहारी ॥246:3॥

सिख हमारि सुनि = हमारी सीख को सुनो, *परम पुनीता* = जो बहुत पवित्र है, *जगदंबा जानहु जियँ सीता* = अपने मन में सीता जी को जगजननी समझो, *जगत पिता रघुपतिहि बिचारी* = राम जी को जगत् के पिता समझो, *भरि लोचन छबि लेहु निहारी* = नेत्र भरकर उनकी छवि को देख लो।

सज्जन राजा कहते हैं कि हमारी शिक्षा को सुनो। सीता जी जगदंबा हैं, जगत् की माता हैं। उनके प्रति माता का भाव रखो। राम जी को जगत् के पिता समझो। यह बात मात्र कहने के लिये नहीं है। समस्त जीवों की रचना परमात्मा अपनी माया शक्ति से करता है। ये राम उसी परमात्मा का रूप हैं व सीता जी उनकी माया शक्ति हैं। इसलिये ये जगत् के माता-पिता हैं। इस समय इनके दर्शन प्राप्त हो रहे हैं, जी भरकर अद्वितीय सौंदर्य को देखो।

शिव जी के मन में भी राम-लक्ष्मण ही रहते हैं

सुंदर सुखद सकल गुन रासी। ए दोउ बंधु संभु उर बासी ॥246:4॥

सुंदर सुखद सकल गुन रासी = सुंदर; सुख देने वाले; सभी गुणों से भरपूर, *ए दोउ बंधु संभु उर बासी* = ये दोनों भाई शिव जी के हृदय में निवास करते हैं।

ये सुंदर, सुखदायक, समस्त गुणों की राशि हैं। अच्छे राजा लोग अभिमानी राजाओं को एक प्रकार से चेतावनी देते हैं कि तुम अपने आप को क्या

समझते हो? साधारण लोगों की बात ही क्या है? ये दोनों भाई तो शंकर जी के हृदय में ही वास करने वाले हैं। शिव जी निरंतर इनका स्मरण करते रहते हैं, ध्यान, चिंतन करते हैं।

अमृत के सामने खड़े हो, पर भागते रहे हो नकली जल की ओर

सुधा समुद्र समीप बिहाई। मृगजलु निरखि मरहु कत धाई ॥246:5॥
करहु जाइ जा कहुँ जोइ भावा। हम तौ आजु जनम फलु पावा ॥246:6॥
अस कहि भले भूप अनुरागे। रूप अनूप बिलोकन लागे ॥246:7॥

सुधा समुद्र = अमृत के समुद्र, *समीप बिहाई* = के किनारे खड़े होकर, *मृगजलु निरखि* = मृगजल को देखकर, *मरहु कत धाई* = उसमें मरने के लिये क्यों दौड़ रहे हो? *करहु जाइ जा कहुँ जोइ भावा* = जिसको जो अच्छा लगे वही जाकर करो, *हम तौ आजु जनम फलु पावा* = हमने तो आज अपने जन्म का फल प्राप्त कर लिया, *अस कहि* = ऐसा कहकर, *भले भूप अनुरागे* = सज्जन राजा प्रेमपूर्वक, *रूप अनूप बिलोकन लागे* = प्रभु राम का अनुपम रूप देखने लगे।

राम अमृत के समुद्र के समान आनंद प्रदाता हैं। इनके दर्शन करना, इनके समीप रहना ही अमृत के पान जैसा फलदायी है। तुम लोग अपने अभिमान में इन्हें भूलकर मृगमरीचिका के पीछे मरने के लिये भाग रहे हो, जहाँ पानी है ही नहीं। ये बातें सुनकर घमंडी राजाओं पर जब कोई असर नहीं हुआ तो सज्जन राजा कहने लगे, जिसे जो अच्छा लगे करे, हमने तो राम-लक्ष्मण के दर्शन करके अपने जन्म को सार्थक कर लिया है। इतना समझाकर वे प्रभु के सुंदर अलौकिक सौंदर्य को निहारने में लग गये।

आकाश से देवता फूलों की वर्षा करने लगे

देखहिं सुर नभ चढ़े बिमाना। बरषहिं सुमन करहिं कल गाना ॥246:8॥

देखहिं सुर नभ चढ़े बिमाना = देवता लोग भी सुंदर विमानों में चढ़कर आकाश से देखने लगे, *बरषहिं सुमन* = फूलों की वर्षा करके, *करहिं कल गाना* = सुंदर गाना गाने लगे।

आकाश में देवता आये, वे अपने विमानों में ही बैठकर धनुष-यज्ञ परिसर व प्रभु राम-लक्ष्मण के दर्शन करते हैं। देवता फूलों की वर्षा करते हैं। देवांगनायें गाना गाती हैं। मन में सद्‌गुण आये समझो देवता आ गये। जब मन में प्रसन्नता होने लगे समझो देवता फूल बरसा रहे हैं। बहुत सी बातों को समझाने का यह पौराणिक तरीका है जिसे काव्यात्मक भाषा में प्रस्तुत किया गया है।

जनक जी सीता को बुलवाते हैं, सखियाँ उन्हें लेकर चलीं

जानि सुअवसरु सीय तब पठई जनक बोलाइ ।
चतुर सखीं सुंदर सकल सादर चलीं लवाइ ॥दोहा 246॥

जानि सुअवसरु = तब सुंदर अवसर जानकर, *सीय तब पठई जनक बोलाइ* = जनक जी ने सीता जी को बुलवाने भेजा, *चतुर सखीं सुंदर सकल सादर चलीं लवाइ* = चतुर व सुंदर सखियाँ उन्हें आदरपूर्वक लिवाकर चलीं।

सबके बैठने की व्यवस्था हो गई, राजाओं की आपस में बातचीत हो गई, माहौल शांत होने पर जनक जी उचित अवसर समझकर बोले कि अंत:पुर से सीता को लिवाकर लाओ। उन्होंने इस प्रकार बोला कि सब सुन लें। आगे का कार्यक्रम उनकी उपस्थिति में होगा। सीता की सभी सखियाँ सुंदर हैं व चतुर हैं। मायने समझदार व उचित मार्गदर्शन देने वाली हैं। ये सब आदरपूर्वक सीता जी को आगे करके धनुष-यज्ञशाला की ओर चलती हैं।

सीता जी की सुंदरता के लिये कोई उपमा ही नहीं है

सिय सोभा नहिं जाइ बखानी। जगदंबिका रूप गुन खानी ॥247:1॥
उपमा सकल मोहि लघु लागीं। प्राकृत नारि अंग अनुरागीं ॥247:2॥
सिय बरनिअ तेइ उपमा देई। कुकबि कहाइ अजसु को लेई ॥247:3॥
जौं पटतरिअ तीय सम सीया। जग असि जुबति कहाँ कमनीया ॥247:4॥

सिय सोभा = सीता जी की सुंदरता का, *नहिं जाइ बखानी* = वर्णन नहीं किया जा सकता, *जगदंबिका* = वे जगत् की जननी हैं, *रूप गुन खानी* = सुंदरता व गुणों की खदान हैं, *उपमा सकल* = उनके लिये सारी उपमायें, *मोहि लघु*

लागीं = मुझे तुच्छ लगती हैं, *प्राकृत नारि अंग* = प्रकृति से बनी स्त्रियों के अंगों, *अनुरागीं* = के लिये ये उपमायें उपयुक्त हैं, *सिय बरनिअ* = सीता जी की सुंदरता का वर्णन करें, *तेइ उपमा देई* = उन उपमाओं से, *कुकबि कहाइ* = तो मैं कुकवि कहलाऊँगा, *अजसु को लेई* = यह अपयश कौन ले, *जौं पटतरिअ* = यदि तुलना करना चाहें, *तीय सम सीया* = सीता जी की किसी स्त्री से, *जग असि जुबति कहाँ कमनीया* = तो संसार में इतनी सुंदर कोई स्त्री है ही नहीं।

राम जी के अंग-अंग की सुंदरता का वर्णन किया पर सीता जी की सुन्दरता का अलग तरह से वर्णन करते हैं। तुलसीदास जी की यह मर्यादा है। कहते हैं कि वे जगत् की माता हैं, इसलिये मातृत्व भाव रखते हुए सुंदरता का वर्णन किया है। इसी भाव से हमें पढ़ना भी चाहिये। सीता माँ की सुंदरता क्या कहें? संसार की सारी सुंदरतायें तो उन्हीं से प्रगट हुई हैं। संसार की सारी उपमायें तो साधारण स्त्रियों तक ही सीमित हैं। यदि उन्हीं उपमाओं से हम दिव्य सीता माँ की तुलना कर दें तो मेरी बहुत बदनामी होगी। मैं एक खराब कवि कहलाऊँगा। इस जगत् में इतनी सुंदर कोई स्त्री है ही नहीं जिनसे उनकी तुलना की जा सके।

उपमा के लिये देवी सरस्वती, पार्वती, रति व लक्ष्मी भी अयोग्य

गिरा मुखर तन अरध भवानी। रति अति दुखित अतनु पति जानी ॥247:5॥
बिष बारुनी बंधु प्रिय जेही। कहिअ रमासम किमि बैदेही ॥247:6॥

गिरा मुखर = सरस्वती जी बहुत बोलने वाली हैं, *तन अरध भवानी* = पार्वती जी का आधा शरीर ही स्त्री है, *रति अति दुखित* = कामदेव की पत्नी रति दु:खी रहती है, *अतनु पति जानी* = क्योंकि उसका पति अशरीरी है, *बिष बारुनी बंधु प्रिय जेही* = विष व मदिरा जिसके दो प्रिय भाई हों, *कहिअ रमासम किमि बैदेही* = उस लक्ष्मी जी से भी सीता जी की कैसे तुलना कर सकते हैं।

पृथ्वी की स्त्रियों की बात ही क्या, यदि देवियों से भी तुलना की जाये तो माँ सीता उनसे ज्यादा दिव्य व सुंदर हैं। चार देवियों की कमियों को बताकर कहते हैं सीता जी की इनसे भी उपमा नहीं की जा सकती है।

1. सरस्वती जी: ये हैं तो बहुत सुंदर पर ज्यादा बोलती हैं, मुखर हैं।
2. पार्वती जी: आधा शरीर स्त्री है, आधा पुरुष।
3. रति: पति कामदेव के अशरीरी होने का दु:ख रहता है।
4. लक्ष्मी जी: ये भी बहुत सुंदर हैं परंतु इनके प्रिय दो भाई हैं, एक विष दूसरा मदिरा। ये दोनों बहुत ही खराब हैं। जहाँ केवल धन है, दोनों भाई रहते हैं।

मीठे पानी के समुद्र-मंथन से उत्पन्न लक्ष्मी से भी पूरी तुलना नहीं

जौं छबि सुधा पयोनिधि होई। परम रूपमय कच्छपु सोई ॥247:7॥
सोभा रजु मंदरु सिंगारू। मथै पानि पंकज निज मारू ॥247:8॥

जौं छबि सुधा पयोनिधि होई = मान लो सुंदरता व अमृत का एक समुद्र हो, *परम रूपमय कच्छपु सोई* = बहुत ही सुंदर रूप का कछुआ हो, *सोभा रजु* = शोभा की रस्सी हो, *मंदरु सिंगारू* = श्रृंगार रस का मंदराचल पर्वत हो, *मथै* = उस समुद्र का मंथन, *पानि पंकज निज* = अपने कमल के समान सुंदर हाथों से, *मारू* = कामदेव करें।

एहि बिधि उपजै लच्छि जब सुंदरता सुख मूल ।
तदपि सकोच समेत कबि कहहिं सीय समतूल ॥दोहा 247॥

एहि बिधि उपजै लच्छि जब = इस प्रकार समुद्र मंथन से जब लक्ष्मी उत्पन्न हों, *सुंदरता सुख मूल* = जो सुंदरता व सुख का कारण हों, *तदपि सकोच समेत कबि* = फिर भी कवि संकोच के साथ, *कहहिं सीय समतूल* = उन लक्ष्मी को सीता माँ के समान सुंदर कहेंगे।

तुलसीदास जी स्थूल से सूक्ष्म की ओर कैसे ले जाते हैं, समझने का प्रयास करें। मान लो एक समुद्र है जिसमें खारा पानी न होकर सुंदरता का मीठा जल, जिसे अमृत कह सकते हैं, भरा हो। खारे समुद्र का मंथन कछुआ, सर्प की रस्सी, मंदराचल पर्वत की मथानी से एक तरफ देवता दूसरी तरफ राक्षसों ने मथकर किया था। परंतु इस सुंदरता के समुद्र का मंथन यदि कामदेव स्वयं अपने हाथों से सुंदरता के कछुए, शोभा की रस्सी, श्रृंगार के पर्वत की सहायता से करें, फिर उसमें से सुंदरता व सुख की जो लक्ष्मी उत्पन्न हों, उनसे भी सीता जी की तुलना करने में कवि को संकोच हो।

सुंदर साड़ी व प्रत्येक अंग के अनुरूप आभूषण पहने हैं

चलीं संग लै सखीं सयानी। गावत गीत मनोहर बानी ॥248:1॥
सोह नवल तनु सुंदर सारी। जगत जननि अतुलित छबि भारी ॥248:2॥
भूषन सकल सुदेस सुहाए। अंग अंग रचि सखिन्ह बनाए ॥248:3॥

चलीं संग लै सखीं सयानी = समझदार सखियाँ सीता जी को लेकर चलीं, *गावत गीत मनोहर बानी* = सखियाँ मधुर वाणी से गीत गा रही हैं, *सोह नवल तनु सुंदर सारी* = सीता जी के नवल शरीर पर सुंदर साड़ी सुशोभित है, *जगत जननि* = जगत् की माता की, *अतुलित छबि भारी* = महान् छवि की तुलना नहीं की जा सकती है, *भूषन सकल सुदेस सुहाए* = सभी अंगों में सुंदर आभूषण पहने हैं, *अंग अंग रचि सखिन्ह बनाए* = जिसे सखियों ने अंग-अंग में सजाकर पहनाया है।

सीता जी के साथ में समझदार सखियाँ हैं, जो मंगल गीत गाते हुए चल रही हैं। माँ सीता ने नवल शरीर में सुंदर साड़ी पहनी है, जो बहुत शोभायमान है। सभी अंगों में जहाँ जो आभूषण पहनने चाहिये, सखियों ने रचकर अच्छे से पहनाये हैं। जगत्-जननी की सुंदरता अतुलनीय है। सखियों के कई कार्य हैं– वस्त्र व आभूषण पहनाना, मार्गदर्शन व शिक्षा देना, समय-समय पर हँसी-मजाक करते रहना जिससे अकेलापन न लगे।

धनुष-यज्ञ शाला में प्रवेश, जनकपुर वासी मोहित

रंगभूमि जब सिय पगु धारी। देखि रूप मोहे नर नारी ॥248:4॥
हरषि सुरन्ह दुंदुभीं बजाईं। बरषि प्रसून अपछरा गाईं ॥248:5॥

रंगभूमि जब सिय पगु धारी = जब सीता जी ने धनुष-यज्ञ शाला में पैर रखा, *देखि रूप मोहे नर नारी* = तब उनका दिव्य रूप देखकर सभी नर-नारी मोहित हो गये, *हरषि सुरन्ह* = देवताओं ने हर्षित होकर, *दुंदुभीं बजाईं* = बाजे बजाये, *बरषि प्रसून अपछरा गाईं* = फूलों की वर्षा करके अप्सरायें गाने लगीं।

प्रभु राम व सीता जी की इस लीला का आनंद तभी है जब पाठक भी इसमें शामिल हों। तुलसीदास जी ने परिसर का पूरा चित्र पहले वर्णित किया है।

सीता माँ कहाँ से कैसे प्रवेश करती हैं, उसे देखने व समझने के लिये एक बार पूरी व्यवस्था का फिर से स्मरण कर लें।

1. जनकपुर की पूर्व दिशा में यह कार्यक्रम हो रहा है, मुख्य प्रवेश द्वार से जनकपुर वासी, राजा व अन्य लोग प्रवेश करते हैं।
2. मैदान के बीचों-बीच विशाल मंच पर शिव-धनुष रखा गया है।
3. उत्तर की ओर अर्ध-गोलाकर पंक्ति में राजा बैठे हैं। उनके पीछे सहायक बैठे हैं। सहायकों के पीछे बने कुछ-कुछ ऊँचे मंचों पर नगर के लोग बैठे हैं। उसके पीछे भवनों में नगर की स्त्रियाँ बैठी हैं।
4. पश्चिम की तरफ विशाल ऊँचा मंच है, जिस पर मुनि विश्वामित्र के साथ प्रभु राम व लक्ष्मण जी विराजमान हैं।
5. दक्षिण की ओर राजा जनक का सिंहासन है। उसी के पीछे राजमहल है जहाँ पर रानियाँ व राजवंश की स्त्रियाँ बैठी हैं। सीता जी उसी तरफ से राजमहल से निकलकर यज्ञ-मंडप में प्रवेश करती हैं। अंदर आकर वे महाराज जनक के बाँये तरफ खड़ी होती हैं। सीता जी को देखकर जनकपुरवासी सारी देश-दुनिया भूलकर उन्हीं की तरफ देखते रह गये। आकाश में देवता थे ही, उन्होंने फूलों की वर्षा की। बाजे बजाये। अप्सरायें गाने लगीं। उसी प्रकार से आनंद फैल गया जैसा राम जी के आने से हुआ था।

राम को खोजते सरसरी नजर राजाओं पर डाली, सब मोहित

पानि सरोज सोह जयमाला। अवचट चितए सकल भुआला ॥248:6॥
सीय चकित चित रामहि चाहा। भए मोहबस सब नरनाहा ॥248:7॥

पानि सरोज = कमल के समान हाथों में, *सोह जयमाला* = वरमाला लिये हैं, *अवचट चितए* = सरसरी नजर से देखा, *सकल भुआला* = सभी राजाओं की ओर, *सीय चकित चित* = सीता ने आश्चर्य चकित होकर, *रामहि चाहा* = राम को खोजा, *भए मोहबस सब नरनाहा* = सभी राजा लोग मोहित हो गये।

सीता कमल के समान अपने सुंदर हाथों में वरमाला लिये हैं। जिसके गले में पड़ेगी वही विजयी कहलायेगा। सीता ने वहाँ पहुँचकर सबसे पहले सभी राजाओं पर दृष्टि डाली। कैसे देखा? ‘अवचट’ मायने नजर किसी राजा पर टिकी नहीं, ऊपरी नजर से देखा, सरसरी तौर पर देखा। देखने का भाव क्या था? ‘रामहि चाहा’,

राम कहाँ बैठे हैं? सीता की दृष्टि आश्चर्य से राम को ही खोज रही थी। राम को खोजते हुए जब दृष्टि राजाओं पर पड़ी तो वे सब मोहित हो गये।

राम को देखा, हृदय में बसाया, संकोच से सखियों को देखने लगीं

मुनि समीप देखे दोउ भाई। लगे ललकि लोचन निधि पाई ॥248:8॥

मुनि समीप देखे दोउ भाई = मुनि विश्वामित्र के पास दोनों भाइयों को देखा, *लगे ललकि लोचन* = नेत्र ललचाकर वहीं टिक गये, *निधि पाई* = नेत्रों को अपना खजाना मिल गया।

गुरजन लाज समाजु बड़ देखि सीय सकुचानि ।
लागि बिलोकन सखिन्ह तन रघुबीरहि उर आनि ॥दोहा 248॥

गुरजन लाज समाजु बड़ देखि = गुरुओं; बड़े लोगों व समाज को देखकर लज्जा से, *सीय सकुचानि* = सीता जी को संकोच लगा, *लागि बिलोकन सखिन्ह तन* = तब वे सखियों के शरीर की ओर देखने लगीं, *रघुबीरहि उर आनि* = पर मन में राम को ही देख रही हैं।

मुनि विश्वामित्र के बगल में दोनों भाई बैठे हैं। राम को देखते ही सीता प्रसन्न हो गई। जिनको एक दिन पहले पुष्पवाटिका में देखा था, उनके प्रति आकर्षण हुआ था, मन से वरण किया था, उन पर दृष्टि पड़ते ही नेत्र उन्हें लगातार एकटक देखते रहने के लिये ललचाने लगे। दृष्टि राम पर पड़ी पर टिकी नहीं, क्यों? वहाँ पर गुरुजन व पिता बैठे हैं। इतने विशाल समाज के बीच टकटकी लगाकर नहीं देखना चाहिये, संकोच लगा। सीता सखियों की तरफ देखने लगीं पर हृदय में राम हैं। स्मरण राम का कर रही हैं, पर देख सखियों को रही हैं। यही भारतीय संस्कृति व सभ्यता है।

राम-सीता की सुंदर जोड़ी नगरवासी एकटक निहार रहे हैं

राम रूपु अरु सिय छबि देखें। नर नारिन्ह परिहरीं निमेषें ॥249:1॥

राम रूपु अरु सिय छबि देखें = राम जी का रूप व सीता जी की छवि देखकर, *नर नारिन्ह परिहरीं निमेषें* = स्त्री-पुरुषों ने पलक झपकना छोड़ दिया।

धनुष-यज्ञ परिसर में सभी लोग आ गये हैं। प्रतिज्ञा की घोषणा होने वाली है। उसके पहले जनकपुर के स्त्री व पुरुष राम जी का सुंदर श्यामल सलोना शरीर व सीता जी की सुंदर छवि को एक साथ देखकर पलक झपकाना ही भूल जाते हैं। टकटकी लगाकर देख रहे हैं।

मन ही मन सोचते हैं, जनक प्रतिज्ञा त्यागें, राम-सीता का विवाह करें

सोचहिं सकल कहत सकुचाहीं। बिधि सन बिनय करहिं मन माहीं ॥249:2॥
हरु बिधि बेगि जनक जड़ताई। मति हमारि असि देहि सुहाई ॥249:3॥
बिनु बिचार पनु तजि नरनाहू। सीय राम कर करै बिबाहू ॥249:4॥

सोचहिं सकल = सभी अपने मन में सोचते हैं, *कहत सकुचाहीं* = कहने में संकोच लगता है, *बिधि सन बिनय करहिं मन माहीं* = मन ही मन वे विधाता से प्रार्थना करते हैं, *हरु बिधि बेगि जनक जड़ताई* = हे ब्रह्मा जी! जनक जी की बुद्धि की जड़ता शीघ्र दूर करें, *मति हमारि असि देहि सुहाई* = हमारे जैसी सुंदर बुद्धि उन्हें दें, *बिनु बिचार* = जिससे बिना विचार किये ही, *पनु तजि नरनाहू* = राजा प्रतिज्ञा त्याग करके, *सीय राम कर करै बिबाहू* = सीता जी का विवाह राम से कर दें।

जगु भल कहिहि भाव सब काहू। हठ कीन्हें अंतहुँ उर दाहू ॥249:5॥
एहिं लालसाँ मगन सब लोगू। बरु साँवरो जानकी जोगू ॥249:6॥

जगु भल कहिहि = संसार उन्हें अच्छा कहेगा, *भाव सब काहू* = क्योंकि इसी में सबकी भलाई है, *हठ कीन्हें* = हठ करने से, *अंतहुँ उर दाहू* = अंत में हृदय में दु:ख ही होगा, *एहिं लालसाँ मगन सब लोगू* = इसी लालसा में लोग मग्न हो रहे हैं, *बरु साँवरो* = यह साँवला वर, *जानकी जोगू* = सीता जी के योग्य है।

कहते हैं जो घटना घटने वाली होती है वह वातावरण में पहले से ही आ जाती है। जनकपुर वासी मन ही मन सोचते हैं कि श्यामल राम ही सीता के अनुकूल वर हैं। इन्हीं के गले में वरमाला पहनानी चाहिये। जनक जी की बुद्धि ठीक काम नहीं कर रही है जो प्रतिज्ञा ठान कर बैठ गये हैं। संकोच के कारण ये बातें मुँह से कह नहीं पाते हैं। तब ईश्वर से मन में ही प्रार्थना करते हैं हे ब्रह्मा जी! हमारे जैसी सुंदर बुद्धि जनक जी की भी कर दें, जिससे

ये प्रतिज्ञा त्याग दें। बिना कुछ सोचे-समझे सीता का विवाह राम से कर दें। यदि बिना धनुष तोड़े ही विवाह कर देंगे तो सारा संसार अच्छा कहेगा, क्योंकि इसी में सबकी भलाई है। हठ करने से फायदा नहीं है। इसके परिणाम अच्छे नहीं होंगे।

12. धनुष न टूटने से जनक का क्षोभ, लक्ष्मण का रोष

(दोहा 250 से 253)

'जो राजा धनुष तोड़ेगा उसे सीता जी बिना विचारे वरण करेंगी' राजा जनक की इस प्रतिज्ञा की घोषणा होते ही अभिमानी राजा तुरंत पूरी तैयारी से उठे, धनुष को देखा, सारी शक्ति व सारी युक्तियाँ लगा दीं पर धनुष अपने स्थान से हिला तक नहीं। राजाओं की दशा देखकर महाराज जनक उन्हें ललकारते व धिक्कारते हैं। उनका आशय रहा होगा कि इन्हें और ताकत आजमानी है तो आजमा लें। बाद में यह न कहें कि हमें मौका नहीं मिला। परंतु ये बातें लक्ष्मण को चुभ गयीं। उन्हें लगा कि यह तो प्रभु राम का अपमान है। उनके रहते ये अनुचित बातें कैसे कह दीं। अपने प्रभु का सम्मान बनाये रखने के लिये लक्ष्मण क्रोधित होकर रघुकुल की महिमा, राम की महिमा व अपने बल का इस प्रकार वर्णन करते हैं कि सारे राजा व जनकपुरवासी डर जाते हैं। माँ सीता प्रसन्न होती हैं। जनक जी सकुचा जाते हैं। राम गुरु विश्वामित्र व मुनियों सहित मन ही मन प्रसन्न होते हैं। इशारे से राम मना करते हैं। लक्ष्मण को अपने पास बैठा लेते हैं। वातावरण शांत हो जाता है। सब चुपचाप हैं।

जनक जी ने उद्घोषकों से कहा, हमारी प्रतिज्ञा की घोषणा करो

तब बंदीजन जनक बोलाए। बिरिदावली कहत चलि आए ॥249:7॥
कह नृपु जाइ कहहु पन मोरा। चले भाट हियँ हरषु न थोरा ॥249:8॥

तब बंदीजन जनक बोलाए = तब राजा ने घोषणा करने वालों को बुलवाया, *बिरिदावली कहत चलि आए* = वे सब वंश के महान् कार्यों का उल्लेख करते चले आ रहे हैं, *कह नृपु* = राजा ने उनसे कहा, *जाइ कहहु पन मोरा* = जाकर मेरी प्रतिज्ञा की घोषणा करो, *चले भाट हियँ हरषु न थोरा* = भाट लोग मन में बहुत हर्ष के साथ चल दिये।

बंदीजन मायने घोषणा करने वाले लोग। भाटों और बंदीजन में मामूली फर्क है। इनका कार्य राजवंश के महान् कार्यों को गाकर सुनाना, राजा की प्रशंसा करना, लाऊडस्पीकर के समान चिल्लाकर घोषणा करना आदि होता है। महाराज जनक ने इन लोगों को बुलाकर कहा कि हमारी प्रतिज्ञा सुना दो। ये सब प्रसन्नता से प्रतिज्ञा सुनाने चलते हैं।

प्रतिज्ञा– शिव-धनुष तोड़ने वाले को सीता जी वरण करेंगीं

बोले बंदी बचन बर सुनहु सकल महिपाल ।
पन बिदेह कर कहहिं हम भुजा उठाइ बिसाल ॥दोहा 249॥

बोले बंदी बचन बर = भाटों ने श्रेष्ठ वाणी में कहा, *सुनहु सकल महिपाल* = सारे राजाओं सुनो, *पन बिदेह कर* = जनक जी की प्रतिज्ञा, *कहहिं हम* = हम कहते हैं, *भुजा उठाइ बिसाल* = जो उन्होंने विशाल भुजा को उठाकर की है।

नृप भुजबलु बिधु सिवधनु राहू। गरुअ कठोर बिदित सब काहू ॥250:1॥
रावनु बानु महाभट भारे। देखि सरासन गवँहिं सिधारे ॥250:2॥

नृप भुजबलु बिधु = राजाओं की भुजाओं का बल चन्द्रमा के समान है, *सिवधनु राहू* = तो शिव जी का धनुष राहु है, *गरुअ कठोर* = वह भारी व कठोर है, *बिदित सब काहू* = यह सबको पता है, *रावनु बानु* = रावण व बाणासुर, *महाभट भारे* = जैसे बड़े भारी योद्धा भी, *देखि सरासन* = इस धनुष को देखकर, *गवँहिं सिधारे* = चुपचाप चले गये हैं।

सोइ पुरारि कोदंडु कठोरा। राज समाज आजु जोइ तोरा ॥250:3॥
त्रिभुवन जय समेत बैदेही। बिनहिं बिचार बरइ हठि तेही ॥250:4॥

सोइ = उसी, *पुरारि कोदंडु कठोरा* = शिव जी के कठोर धनुष को, *राज समाज आजु जोइ तोरा* = इस राजाओं के समाज में आज जो तोड़ेगा, *त्रिभुवन जय समेत* = तीनों लोकों में वह विजयी कहलायेगा, *बैदेही बिनहिं बिचार बरइ हठि तेही* = सीता जी बिना विचार किये उसका वरण करेंगी, यही प्रतिज्ञा है।

बंदीजनों ने वहाँ उपस्थित राजाओं के निकट जाकर शिव-धनुष के भारीपन के बारे में बताकर महाराज जनक की प्रतिज्ञा सुनायी।

1. शिव जी का धनुष बहुत भारी व कठोर है। राजाओं की भुजाओं का बल मानो चन्द्रमा के समान है, तो यह शिव-धनुष राहु के समान है। जैसे राहु चन्द्रमा को निगल जाता है, वैसे ही यह धनुष राजाओं की भुजाओं के बल को निगल जाता है। यह इतना भारी है कि किसी का बल इसके सामने नहीं चलता है।
2. रावण व बाणासुर जैसे बहुत शक्तिशाली राजा भी आप लोगों के आने के पहले यहाँ आये थे। धनुष को देखकर चुपचाप चले गये। इसे छूने की उनकी हिम्मत ही नहीं हुई। अपनी विजय को बनाये रखने के लिये वे चले गये।
3. वही कठोर धनुष सब राजाओं के सामने रखा है। महाराज जनक ने अपनी दोनों विशाल भुजाओं को उठाकर प्रतिज्ञा की है कि जो राजा इस धनुष को उठा ले फिर तोड़ दे, सीता जी बिना विचार किये उसे वरण कर लेंगी। वही विश्व विजयी माना जायेगा।

प्रतिज्ञा सुन अभिमानी राजा धनुष तोड़ने चल दिये

सुनि पन सकल भूप अभिलाषे। भटमानी अतिसय मन माखे ॥250:5॥
परिकर बाँधि उठे अकुलाई। चले इष्टदेवन्ह सिर नाई ॥250:6॥

सुनि पन = प्रतिज्ञा सुनकर, *सकल भूप अभिलाषे* = सब राजाओं के मन में धनुष तोड़ लेने की इच्छा हुई, *भटमानी* = जो अपने को वीर मानते थे, *अतिसय मन माखे* = वे मन में बहुत ही तमतमाये, *परिकर बाँधि* = कमर में कमरकस बाँधा, *उठे अकुलाई* = अकुलाकर उठे, *चले इष्टदेवन्ह सिर नाई* = अपने इष्टदेवों को सिर नवाकर प्रणाम करके चले।

महाराज जनक की प्रतिज्ञा सुनकर सब राजाओं के मन में अभिलाषा उत्पन्न हुई कि हम धनुष तोड़ देंगे। जो अपने को वीर मानते थे, वे कमर में कमरकस बाँधकर अकुलाकर उठे कि हम ही पहले धनुष तोड़ दें। वे अपने इष्टदेव की प्रार्थना करते हैं, पर सारे इष्टदेव तो राम के ही सेवक हैं।

पूरी ताकत झोंक दी पर धनुष हिला तक नहीं

तमकि ताकि तकि सिवधनु धरहीं। उठइ न कोटि भाँति बलु करहीं ॥250:7॥
जिन्ह के कछु बिचारु मन माहीं। चाप समीप महीप न जाहीं ॥250:8॥

तमकि ताकि = वे बहुत ताव से धनुष की ओर देखते हैं, *तकि सिवधनु धरहीं* = निगाहें जमाकर शिव-धनुष को पकड़ते हैं, *उठइ न* = वह उठता ही नहीं, *कोटि भाँति बलु करहीं* = करोड़ों भाँति से जोर लगाते हैं, *जिन्ह के कछु बिचारु मन माहीं* = जिन राजाओं के पास सोचने की शक्ति है, *चाप समीप महीप न जाहीं* = वे धनुष के पास गये ही नहीं।

तमकि धरहिं धनु मूढ़ नृप उठइ न चलहिं लजाइ ।
मनहुँ पाइ भट बाहुबलु अधिकु अधिकु गरुआइ ॥दोहा 250॥

तमकि धरहिं धनु मूढ़ नृप = वे मूर्ख राजा किटकिटाकर धनुष को पकड़ते हैं, *उठइ न* = जब नहीं उठता तो, *चलहिं लजाइ* = लजाकर चले जाते हैं, *मनहुँ पाइ भट बाहुबलु* = मानों वीरों की भुजाओं का बल पाकर, *अधिकु अधिकु गरुआइ* = वह और अधिक-अधिक भारी होता जाता है।

अभिमानी राजा धनुष के पास पहुँचे। पहले उसे ताव से देखते हैं। फिर निगाहें जमाकर जोर से पकड़कर उठाने की कोशिश करते हैं पर धनुष उठता ही नहीं। अनेक प्रकार से बल लगाकर उठाने की कोशिश करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है, मानो राजाओं का बल पाकर धनुष और भारी होता जा रहा है। असफल होकर ये मूढ़ व अभिमानी राजा लजाकर चले जाते हैं। मध्यम कोटि के राजा तो धनुष की तरफ जाते ही नहीं, बस देखते रहते हैं।

अनेक राजाओं ने मिलकर ताकत लगायी, पर हिला न सके

भूप सहस दस एकहि बारा। लगे उठावन टरइ न टारा ॥251:1॥
डगइ न संभु सरासनु कैसें। कामी बचन सती मनु जैसें ॥251:2॥

भूप सहस दस = दस हजार राजा, *एकहि बारा लगे उठावन* = एक साथ उठाने लगे, *टरइ न टारा* = पर खिसका तक नहीं, *डगइ न संभु सरासनु कैसें* = शिव जी का धनुष उसी प्रकार अपने स्थान से नहीं डिगा, *कामी बचन* = जैसे कामी पुरुष की बातों से, *सती मनु जैसें* = पतिव्रता स्त्री का मन विचलित नहीं होता।

जब राजा अकेले नहीं उठा पाये तब अभिमानी राजाओं ने मिलकर धनुष को उठाने का उपाय रचा। धनुष में लंबी-लंबी रस्सी बाँधी। एक-एक रस्सी में बहुत से राजा

लोग लगकर खींचने लगे जैसे भारी समान को उठाया जाता है। पर धनुष अपने स्थान से हिला तक नहीं। जैसे कामी मनुष्य सती स्त्री के मन को अनेक तरह से लालच देकर विचलित करने की कोशिश करे, पर उसका मन विचलित न हो।

वैराग्य-हीन संन्यासी की तरह वीर-हीन राजा उपहास के पात्र बने

सब नृप भए जोगु उपहासी। जैसें बिनु बिराग संन्यासी ॥251:3॥
कीरति बिजय बीरता भारी। चले चाप कर बरबस हारी ॥251:4॥
श्रीहत भए हारि हियँ राजा। बैठे निज निज जाइ समाजा ॥251:5॥

सब नृप भए जोगु उपहासी = सारे राजा उपहास के योग्य बन गये, *जैसें बिनु बिराग संन्यासी* = जैसे बिना वैराग्य के सन्यासी हँसी का पात्र होता है, *कीरति बिजय बीरता भारी* = कीर्ति; विजय व बड़ी वीरता को, *चले चाप कर बरबस हारी* = धनुष के हाथों बरबस हारकर चले गये, *श्रीहत भए हारि हियँ* = हृदय से हारकर श्रीहीन होकर, *राजा बैठे निज निज जाइ समाजा* = राजा लोग अपने-अपने समाज में जाकर बैठ गये।

राजाओं का लोग मजाक उड़ाने लगे। कैसे? जैसे संन्यासी का मूलतत्त्व वैराग्य है। यदि वैराग्य नहीं है तो फिर काहे का संन्यासी। ऐसे लोग समाज में हँसी के पात्र बनते हैं। इसी प्रकार यदि राजा में वीरता नहीं है तो फिर काहे का राजा? ये लोग अपनी वीरता दिखाना चाहते थे पर सिद्ध कर दिये कि ये दुर्बल हैं। इनमें वीरता है ही नहीं। धनुष के हाथों ये राजा अपनी कीर्ति, विजय व बड़ी वीरता को हारकर, श्रीहीन होकर अपने-अपने स्थानों में सिर झुकाकर बैठ गये।

जनक जी क्रोध लाकर राजाओं को ललकारते हैं

नृपन्ह बिलोकि जनकु अकुलाने। बोले बचन रोष जनु साने ॥251:6॥

नृपन्ह बिलोकि = राजाओं को देखकर, *जनकु अकुलाने* = जनक जी व्याकुल हो गये, *बोले बचन रोष जनु साने* = जनक जी ऐसे बोलते हैं मानो गुस्से से भरे हों।

राजाओं को सिर झुकाये, हार मानकर बैठे हुए देखकर राजा जनक के मन में व्याकुलता हुई। जब राम-लक्ष्मण उठे नहीं, मुनि विश्वामित्र कुछ बोले नहीं

तो जनक जी को लगा कि इन राजाओं को चुनौती दे दें कि और जितनी ताकत लगानी हो लगा लें। बाद में यह न कहें कि हमें मौका मिलता तो हम ही धनुष तोड़ देते। ऐसा सोचकर मन में थोड़ा रोष लाते हैं। फिर ललकारते हुए कहते हैं।

दुनिया भर के राजाओं में धनुष तोड़ने की ताकत ही नहीं?

दीप दीप के भूपति नाना। आए सुनि हम जो पनु ठाना ॥251:7॥
देव दनुज धरि मनुज सरीरा। बिपुल बीर आए रनधीरा ॥251:8॥

दीप दीप के भूपति नाना = द्वीप-द्वीप के अनेक राजा, *आए सुनि हम जो पनु ठाना* = हमारी प्रतिज्ञा को सुनकर आये, *देव दनुज धरि मनुज सरीरा* = देवता व दैत्य भी मनुष्य शरीर धारण करके, *बिपुल बीर आए रनधीरा* = और भी बहुत से वीर व रणवीर आये।

कुँअरि मनोहर बिजय बड़ि कीरति अति कमनीय ।
पावनिहार बिरंचि जनु रचेउ न धनु दमनीय ॥दोहा 251॥

कुँअरि मनोहर = सुंदर राजकुमारी, *बिजय बड़ि* = बड़ी विजय, *कीरति अति कमनीय* = व अत्यंत सुंदर कीर्ति को, *पावनिहार* = पानेवाला, *बिरंचि जनु रचेउ न* = लगता है ब्रह्मा जी ने किसी को बनाया ही नहीं, *धनु दमनीय* = जो धनुष तोड़कर पा सके।

हमारी प्रतिज्ञा सुनकर दूर-दूर तक के राजा लोग एकत्रित हुए। यहाँ तक कि देवता व राक्षस भी मानवीय शरीर धारण करके यहाँ आये हैं। बहुत से वीर-रणधीर सब आये हैं। धनुष तोड़ने से तीन तरह के लाभ मिलने वाले थे– 1. सुंदर राजकुमारी से विवाह, 2. राजाओं के सामने विजय, 3. सारे संसार में कीर्ति। ऐसा लगता है कि विधाता ने इन तीनों चीजों को प्राप्त करने वाला व्यक्ति रचा ही नहीं है। तभी तो कोई धनुष नहीं तोड़ पाया है।

धनुष को कोई हिला भी नहीं सका, क्या पृथ्वी वीरों से खाली है?

कहहु काहि यहु लाभु न भावा। काहुँ न संकर चाप चढ़ावा ॥252:1॥
रहउ चढ़ाउब तोरब भाई। तिलु भरि भूमि न सके छड़ाई ॥252:2॥
अब जनि कोउ माखै भट मानी। बीर बिहीन मही मैं जानी ॥252:3॥

कहहु काहि यहु लाभु न भावा = कहिये किसको यह लाभ अच्छा नहीं लगता, *काहुँ न संकर चाप चढ़ावा* = किसी ने भी शिव-धनुष पर प्रत्यंचा तक नहीं चढ़ायी, *रहउ चढ़ाउब तोरब भाई* = अरे भाई! चढ़ाना व तोड़ना तो दूर रहा, *तिलु भरि भूमि न सके छड़ाई* = तिल भर भूमि से धनुष को हिला भी न सका, *अब जनि कोउ माखै भट मानी* = अब कोई योद्धा वीरता की बड़ी-बड़ी बातें न करे, *बीर बिहीन मही मैं जानी* = मैंने समझ लिया पृथ्वी पर कोई वीर नहीं है।

ये तीनों प्रकार के लाभ क्या किसी को अच्छे नहीं लग रहे हैं? किसी भी राजा ने शिव-धनुष को उठाकर उस पर प्रत्यंचा तक नहीं चढ़ायी। धनुष पर डोरी चढ़ाना, उसे उठाना तो दूर, जमीन से तिल भर कोई हिला भी नहीं सका। अब कोई अपने को वीर न समझे, बढ़-चढ़कर कोई बातें न करे। मैंने समझ लिया है कि पृथ्वी वीरों से खाली है। यह वचन बहुत ही कठोर हो गया, सब राजा चुपचाप सिर झुकाये सुनते रहे।

वापस जाओ, प्रण त्याग नहीं सकते, वैदेही कुँवारी ही रहेगी

तजहु आस निज निज गृह जाहू। लिखा न बिधि बैदेहि बिबाहू ॥252:4॥
सुकृतु जाइ जौं पनु परिहरऊँ। कुअँरि कुआरि रहउ का करऊँ ॥252:5॥

तजहु आस निज निज गृह जाहू = अब आशा छोड़कर अपने-अपने घर जाओ, *लिखा न बिधि बैदेहि बिबाहू* = लगता है ब्रह्मा जी ने वैदेही का विवाह लिखा ही नहीं, *सुकृतु जाइ जौं पनु परिहरऊँ* = यदि प्रण छोड़ता हूँ तो पुण्य नष्ट होता है, *कुअँरि कुआरि रहउ* = कन्या कुमारी ही रह जायेगी, *का करऊँ* = क्या करूँ?

सभा विसर्जित करने का समय आ गया है। सब अपने-अपने घर जाओ। हमने समझ लिया कि विधाता ने वैदेही का विवाह लिखा ही नहीं है। यदि हम प्रण त्याग देते हैं तो बहुत अपयश होगा, पुण्य नष्ट होंगे। लगता है हमारी पुत्री कुँवारी ही रह जायेगी

पता होता पृथ्वी पर वीर नहीं तो ऐसा प्रण ही न करते

जौं जनतेउँ बिनु भट भुबि भाई। तौ पनु करि होतेउँ न हँसाई ॥252:6॥
जनक बचन सुनि सब नर नारी। देखि जानकिहि भए दुखारी ॥252:7॥

जौं जनतेउँ = यदि मैं जानता कि, *बिनु भट भुबि भाई* = हे भाई! पृथ्वी पर वीर नहीं हैं, *तौ पनु करि होतेउँ न हँसाई* = तो प्रण करके अपना उपहास न कराता, *जनक बचन सुनि* = जनक जी की बातें सुनकर, *सब नर नारी* = सभी स्त्री व पुरुष, *देखि जानकिहि* = सीता जी की ओर देखकर, *भए दुखारी* = दु:खी हो गये।

किसी ने कहा कि भई ऐसी प्रतिज्ञा ही क्यों की? जनक जी कहते हैं कि हमें पहले से मालूम होता कि पृथ्वी वीर विहीन है तो हम यह प्रतिज्ञा करते ही नहीं। अब कर ली है तो उसे त्याग नहीं सकते। ये सब बातें जनकपुरवासियों ने भी सुनीं। उन्हें लगा हम पहले ही सोच रहे थे कि राजा प्रतिज्ञा छोड़कर राम से विवाह कर दें। जानकी जी की ओर देख वे सब दु:खी हो गये।

लक्ष्मण ने राम का अपमान समझा, मौन स्वीकृति ले क्रोध में बोले

माखे लखनु कुटिल भइँ भौंहें। रदपट फरकत नयन रिसौंहें ॥252:8॥

माखे लखनु = लक्ष्मण जी को क्रोध आ गया, *कुटिल भइँ भौंहें* = भौंहें तन गयीं, *रदपट फरकत* = ओठ फड़कने लगे, *नयन रिसौंहें* = आँखें तिरछी कीं।

कहि न सकत रघुबीर डर लगे बचन जनु बान ।
नाइ राम पद कमल सिरु बोले गिरा प्रमान ॥दोहा 252॥

कहि न सकत रघुबीर डर = राम जी के डर से ज्यादा कुछ कह सकते नहीं, *लगे बचन जनु बान* = जनक जी के वचन तीर के समान लगे, *नाइ राम पद कमल सिरु* = राम जी के चरण-कमल में सिर नवाया, *बोले गिरा प्रमान* = फिर प्रमाणिक बात बोलने लगे।

राजाओं को ललकारते व धिक्कारते हुए जनक जी ने जो बातें कहीं वे लक्ष्मण जी को बाण के समान लगीं। उन्हें लगा कि ये तो हमारे भइया राम का अपमान है। रामचरितमानस में जहाँ भी राम जी की पताका नीचे होने लगती है, उनके बल या वीरता पर कोई संदेह करता है, लक्ष्मण जी को क्रोध आ जाता है। वे अपनी बात को प्रमाणिक तरीके से रखकर राम की पताका को फहरा देते हैं। यही उनकी विशेषता है। वे अपने लिये कभी क्रोध नहीं करते। वे शीतल हैं।

लक्ष्मण जी के गुस्से के जो लक्षण शरीर में दिखे तुलसीदास जी उसका वर्णन करते हैं। ओंठ फड़फड़ाने लगे, भौंहें तन गयीं, आँखें तिरछी हो गयीं। भइया राम के सामने ज्यादा बोल नहीं सकते। मर्यादा में रहना है। फिर भी वे राम से स्वीकृति माँगते हैं। कैसे? चरणों में प्रणाम किया। राम कुछ बोले नहीं। लक्ष्मण जी ने मौन स्वीकृति मान ली। स्वीकृति मिलने पर प्रभु राम के सम्मान के लिये प्रमाणिक बात कहते हैं।

रघुकुलमणि राम की उपस्थिति में जनक जी ने अनुचित बातें कही हैं

रघुबंसिन्ह महुँ जहँ कोउ होई। तेहिं समाज अस कहइ न कोई ॥253:1॥
कही जनक जसि अनुचित बानी। बिद्यमान रघुकुलमनि जानी ॥253:2॥

रघुबंसिन्ह महुँ जहँ कोउ होई = रघुवंश का कोई भी व्यक्ति जहाँ होता है, *तेहिं समाज* = उस सभा में, *अस कहइ न कोई* = इस प्रकार की बातें कोई नहीं कहता है, *कही जनक जसि अनुचित बानी* = जनक जी ने जिस प्रकार की अनुचित बातें कही हैं, *बिद्यमान रघुकुलमनि जानी* = यह जानते हुए भी कि रघुकुल के शिरोमणि राम यहाँ बैठे हैं।

लक्ष्मण जी पहले अपने रघुवंश कुल की महिमा बताते हैं कि इस कुल का कोई भी व्यक्ति यदि किसी सभा में उपस्थित है तो वहाँ इस प्रकार की बातें कोई नहीं कहता है। फिर राम की महिमा कहते हैं कि राजा जनक यह जानते हुए कि यहाँ सूर्य के समान प्रकाशित रघुवंश के राजकुमार श्रीराम स्वयं बैठे हैं, फिर भी इस प्रकार की अनुचित बाते कही हैं।

आपकी आज्ञा हो तो ब्रह्मांड को फोड़ दूँ, सुमेरु पर्वत को तोड़ दूँ

सुनहु भानुकुल पंकज भानू। कहउँ सुभाउ न कछु अभिमानू ॥253:3॥
जौं तुम्हारि अनुसासन पावौं। कंदुक इव ब्रह्मांड उठावौं ॥253:4॥
काचे घट जिमि डारौं फोरी। सकउँ मेरु मूलक जिमि तोरी ॥253:5॥

सुनहु भानुकुल पंकज भानू = हे सूर्यकुल रूपी कमल के सूर्य मेरी बात सुनिये, *कहउँ सुभाउ न कछु अभिमानू* = मैं अपने स्वभाव से कहता हूँ अभिमान से नहीं, *जौं तुम्हारि अनुसासन पावौं* = यदि आपकी आज्ञा मुझे मिले तो, *कंदुक*

इव = गेंद की तरह, *ब्रह्मांड उठावौं* = ब्रह्मांड को उठा लूँ, *काचे घट जिमि* = फिर काँच के घड़े के समान, *डारौं फोरी* = फोड़ कर डाल दूँ, *सकउँ मेरु* = मैं सुमेरु पर्वत को, *मूलक जिमि तोरी* = मूली की तरह तोड़ सकता हूँ।

राम जी को संबोधित करते हुए लक्ष्मण जी अपने बल का वर्णन करते हैं। हे प्रभु, हम कुछ कहना चाहते हैं, जो अभिमान की बात नहीं है। यह तो हमारा सामर्थ्य है। यदि आप स्वीकृति प्रदान कर दें तो ब्रह्मांड को गेंद की तरह उठाकर काँच के घड़े की तरह पटक कर फोड़ डालूँ। सुमेरु पर्वत को मूली की तरह तोड़ दूँ।

आपके प्रताप से धनुष में डोरी चढ़ाकर, इसे उठाकर दौड़ जाऊँ

तव प्रताप महिमा भगवाना। को बापुरो पिनाक पुराना ॥253:6॥
नाथ जानि अस आयसु होऊ। कौतुकु करौं बिलोकिअ सोऊ ॥253:7॥
कमल नाल जिमि चाप चढ़ावौं। जोजन सत प्रमान लै धावौं ॥253:8॥

तव प्रताप महिमा भगवाना = हे प्रभु आपके प्रताप की महिमा से, *को बापुरो पिनाक पुराना* = इस बेचारे पुराने धनुष की बात ही क्या? *नाथ जानि अस* = हे नाथ! ऐसा जानकर, *आयसु होऊ* = यदि आपकी आज्ञा हो, *कौतुकु करौं* = कुछ खेल करूँ, *बिलोकिअ सोऊ* = आप उसे देखें, *कमल नाल जिमि* = कमल की डंडी की तरह धनुष को उठाकर, *चाप चढ़ावौं* = उसमें डोरी चढ़ा दूँ, *जोजन सत प्रमान लै धावौं* = उसे सौ योजन तक दौड़ा चला जाऊँ।

हे प्रभु, आपके प्रताप की महिमा से इस पुराने धनुष की बात ही क्या है? यदि आपकी आज्ञा हो तो अपनी शक्ति के परीक्षण के लिये एक खेल दिखा दूँ। आप कृपा कर उसे देख लें। कमल की डंडी के समान इस धनुष को उठा लूँ, उस पर प्रत्यंचा चढ़ाकर सौ योजन तक मैं दौड़ जाऊँ।

आपके बल के प्रताप से इसे कुकुरमुत्ते की तरह तोड़ दूँ

तोरौं छत्रक दंड जिमि तव प्रताप बल नाथ ।
जौं न करौं प्रभु पद सपथ कर न धरौं धनु भाथ ॥दोहा 253॥

तोरौं छत्रक दंड जिमि = इस धनुष को कुकुरमुत्ते के छत्ते की तरह तोड़ दूँ, *तव प्रताप बल नाथ* = हे नाथ! आपके बल के प्रताप से, *जौं न करौं* = यदि मैं ऐसा न कर पाऊँ, *प्रभु पद सपथ* = हे प्रभु आपके चरणों की सौगंध है, *कर न धरौं धनु भाथ* = धनुष व तरकस को कभी हाथ में नहीं लूँगा।

हे प्रभु, यदि कहें तो आपके बल के प्रताप से इस धनुष को कुकुरमुत्ते के छत्ते की तरह तोड़ दूँ। आपके चरणों की शपथ लेता हूँ, यदि मैंने जो कहा है वह नहीं कर सकूँ तो फिर धनुष व तरकस को कभी हाथ में नहीं लूँगा।

लक्ष्मण जी अति उत्साह में नहीं बल्कि शेषनाग रूप में बोले

लखन सकोप बचन जे बोले। डगमगानि महि दिग्गज डोले ॥254:1॥

लखन सकोप बचन जे बोले = लक्ष्मण जी के गुस्से से बोलने पर, *डगमगानि महि* = पृथ्वी डगमगा गयी, *दिग्गज डोले* = दिशाओं के हाथी काँप गये।

क्या लक्ष्मण जी अति उत्साह में ऐसा बोल गये? पृथ्वी को कैसे उठायेंगे? सुमेरु पर्वत को कैसे उखाड़ेंगे? वे इस समय अपने शेषनाग के रूप में बोल रहे हैं। उनके फन के ऊपर पृथ्वी ऐसे रखी है जैसे कण रखा हो। जब स्वयं पृथ्वी उन पर आश्रित है तो सुमेरु भी तो पृथ्वी पर ही है। लक्ष्मण जी के गुस्से से बोलने पर पृथ्वी हिल गयी। दिशाओं के हाथी संभल कर पृथ्वी को संभालने लगे, उन्हें लगा कि कहीं हमसे पृथ्वी छूट न जाये।

राजा डरे, सीता हर्षित, जनक सकुचाये, राम व गुरु पुलकित

सकल लोग सब भूप डेराने। सिय हियँ हरषु जनकु सकुचाने ॥254:2॥
गुर रघुपति सब मुनि मन माहीं। मुदित भए पुनि पुनि पुलकाहीं ॥254:3॥

सकल लोग सब भूप डेराने = सभी लोग व सारे राजा डर गये, *सिय हियँ हरषु* = सीता जी के मन में हर्ष है, *जनकु सकुचाने* = जनक जी सकुचा गये, *गुर रघुपति सब मुनि* = गुरु विश्वामित्र; राम व सब मुनि लोग, *मन माहीं मुदित भए* = मन ही मन प्रसन्न हुए, *पुनि पुनि पुलकाहीं* = और बार-बार पुलकित होने लगे।

लक्ष्मण जी की कोप से भरी बातें सुनकर जनकपुरी के सारे लोग व राजा डर गये। सीता जी के मन में प्रसन्नता हुई कि लक्ष्मण जी बार-बार मेरे प्रभु राम की ही शक्ति का वर्णन कर रहे थे। जनक जी के मन में संकोच लगा कि हमने अनुचित बात कह दी जिससे इनकी मर्यादा को धक्का लगा। जितने मनोबल व मजबूती से लक्ष्मण जी ने बातें कहीं उससे गुरु, प्रभु राम व मुनि लोग मन ही मन प्रसन्न हुए। वे सब बार-बार पुलकित होते हैं।

राम ने इशारे से मना किया, फिर अपने पास में बैठा लिया

सयनहिं रघुपति लखनु नेवारे। प्रेम समेत निकट बैठारे ॥254:4॥

सयनहिं रघुपति लखनु नेवारे = राम जी ने इशारे से लक्ष्मण जी को मना किया, *प्रेम समेत निकट बैठारे* = प्रेम सहित अपने पास बैठा लिया।

राम ने नेत्रों के इशारे से लक्ष्मण को और आगे बोलने से मना कर दिया। उन्हें लगा कि सब बातें समय के अनुसार होनी चाहिये। इतना बोलना पर्याप्त है। फिर लक्ष्मण को प्रेमपूर्वक अपने पास बैठा लेते हैं। शांति हो गई। सब लोग चुपचाप बैठे हैं।

13. गुरु की आज्ञा से श्रीराम ने शिव-धनुष तोड़ दिया

(दोहा 254 से 262)

विश्वामित्र जी की आज्ञा से राम सहजता से शिव-धनुष को तोड़ देते हैं। प्रभु के मंच से उठकर धनुष तोड़ने तक के समय में लोगों के मन में उठ रहे भावों का सुंदर चित्रण तुलसीदास जी इस प्रसंग में करते हैं। जब राम उठते हैं तो लगा मंच पर सूर्योदय हो गया, जब चलते हैं तो सुंदर हाथी की चाल है। सुनयना जी के शंका प्रगट करने पर सखियाँ समझाकर राम में विश्वास पैदा करवा देती हैं। सीता जी के मन में बहुत व्याकुलता है। राम के कोमल शरीर को देखकर लगा कि इनसे इतना कठोर धनुष तुड़वाना अनुचित कार्य है। राम के अनुरूप ही धनुष हल्का हो जाये ऐसी प्रार्थना करती हैं। मन में राम के प्रति पक्का प्रेम का संकल्प व दास्य भक्ति आते ही प्रभु उनकी तरफ देखते हैं। भावों को जान जाते हैं। जैसे ही राम ने धनुष की तरफ देखा, लक्ष्मण जी पृथ्वी संभालने वाली सारी शक्तियों को सचेत करते हैं। राम के बहुत शीघ्रता से

धनुष उठाते ही बिजली जैसी चमकी, लोग कुछ देख या समझ पाते तब तक तेजी से डोरी चढ़ाकर उसे झुकाकर गोलाकार किया, फिर बीच से दो टुकड़े करके जमीन पर डाल दिया। भयंकर कठोर ध्वनि हुई, फिर पूरे ब्रह्मांड में राम की जय-जयकार गूँज गयी।

विश्वामित्र जी ने कहा राम, धनुष को तोड़कर जनक का दुःख दूर करो

बिस्वामित्र समय सुभ जानी। बोले अति सनेहमय बानी ॥254:5॥
उठहु राम भंजहु भवचापा। मेटहु तात जनक परितापा ॥254:6॥

बिस्वामित्र समय सुभ जानी = विश्वामित्र जी शुभ समय जानकर, *बोले अति सनेहमय बानी* = अत्यंत प्रेम से भरी वाणी में कहते हैं, *उठहु राम* = हे राम उठो, *भंजहु भवचापा* = शिव जी का धनुष तोड़ो, *मेटहु तात जनक परितापा* = हे तात जनक जी का दु:ख दूर करो।

विश्वामित्र जी ने देखा कि शुभ समय आ गया है। तब स्नेहमय वाणी में कहते हैं कि हे राम उठो, शिव जी के धनुष को तोड़कर जनक जी के दु:ख को दूर करो। राम अपने से कुछ नहीं करते हैं, गुरु के कहने से करते हैं। आदेश को मानते हैं।

निष्काम कर्म से राम लक्ष्य को प्राप्त करते हैं, ठीक से समझें

1. राजकुमारी से विवाह, 2. विजय, 3. यश की प्राप्ति, इन तीन कामनाओं की पुर्ति हेतु स्वार्थी राजा लोग धनुष को तोड़ने चले थे, पर असफल रहे, लज्जित व दु:खी हुए। राम बिना अपने स्वार्थ के राजा जनक का दु:ख दूर करने धनुष तोड़ने जा रहे हैं। परंतु क्या धनुष टूटने पर राम को राजकुमारी सीता नहीं मिलेंगी? विजयी नहीं कहलायेंगे? यश नहीं फैलेगा? उनका लक्ष्य जनकल्याण है, स्वार्थ नहीं है, फिर भी ये तीनों बातें होंगी ही। अपने शास्त्रों की इस शिक्षा को बहुत बारीकी से समझना पड़ता है।

राम सहजता से उठे, प्रणाम किया, उनके सामने सिंह फीका

सुनि गुरु बचन चरन सिरु नावा। हरषु बिषादु न कछु उर आवा ॥254:7॥
ठाढ़े भए उठि सहज सुभाएँ। ठवनि जुबा मृगराजु लजाएँ ॥254:8॥

सुनि गुरु बचन चरन सिरु नावा = गुरु के वचन सुनकर उनके चरणों में प्रणाम किया, *हरषु बिषादु न कछु उर आवा* = राम जी के मन में न हर्ष है न विषाद है, *ठाढ़े भए उठि सहज सुभाएँ* = वे सहजता से उठकर खड़े हो गये, *ठवनि* = उनके खड़े होने की शान या तरीका तो, *जुबा मृगराजु लजाएँ* = जवान शेर को भी लजा देने वाला था।

विश्वामित्र जी की आज्ञा सुनकर राम ने सिर नवाकर उन्हें प्रणाम किया। राम के मन में न हर्ष है न विषाद है। सहज स्वभाव से उठे, अभिमान से अकड़ते हुए अन्य राजाओं की तरह नहीं उठे। उनके उठकर खड़े होने का तरीका व शान के सामने जवान शेर की ठसक भी हल्की लगे।

मंच पर राम के खड़े होने से लगा जैसे पर्वत पर सूर्य निकला हो

उदित उदय गिरि मंच पर रघुबर बालपतंग ।
बिकसे संत सरोज सब हरषे लोचन भृंग ॥दोहा 254॥

उदित उदय गिरि = जैसे उदयाचल पर्वत पर सूर्य का उदय हो, *मंच पर रघुबर बालपतंग* = राम के उठकर खड़े होने से लगा जैसे मंच पर सूर्य ही निकल आया हो, *बिकसे संत सरोज सब* = सब संत रूपी कमल खिल उठे, *हरषे लोचन भृंग* = नेत्र रूपी भौंरे हर्षित हो गये।

नृपन्ह केरि आसा निसि नासी। बचन नखत अवली न प्रकासी ॥255:1॥
मानी महिप कुमुद सकुचाने। कपटी भूप उलूक लुकाने ॥255:2॥
भए बिसोक कोक मुनि देवा। बरिसहिं सुमन जनावहिं सेवा ॥255:3॥

नृपन्ह केरि = राजाओं की, *आसा निसि नासी* = रात्रि के समान आशा नष्ट हो गयी, *बचन नखत* = तारों के समान राजाओं के वचन, *अवली न प्रकासी* = चमकना बंद हो गये; वे मौन हो गये, *मानी महिप* = अभिमानी राजा, *कुमुद सकुचाने* = कुमुद के समान संकुचित हो गये, *कपटी भूप उलूक लुकाने* = कपटी राजा उल्लू के समान छिप गये, *भए बिसोक कोक मुनि देवा* = मुनि व देवता गण चकवे के समान शोकरहित हो गये, *बरिसहिं सुमन जनावहिं सेवा* = वे फूल बरसाकर अपनी सेवा प्रभु के समक्ष प्रगट कर रहे हैं।

विश्वामित्र जी की आज्ञा से जब श्रीराम मंच पर उठकर खड़े हुए, तो ऐसा लगा मानो उदयाचल पर्वत पर सूर्य उदय हो रहा हो। तुलसीदास जी सूर्य के उदय होने पर प्रकृति में होने वाले परिवर्तनों को इस प्रसंग से जोड़कर सुंदर रूपक प्रस्तुत कर रहे हैं।

1. जैसे सूर्य के उदय होने पर कमल खिलते हैं वैसे ही संत, मुनि व सज्जनों के हृदय में प्रसन्नता का संचार हो गया। जैसे भौंरे कमल के चारो ओर मंडराते रहते हैं वैसे ही इन सबके नेत्र राम के ही चारों तरफ घूमकर हर्षित हैं।
2. राजाओं की आशा कि हम धनुष तोड़ लेंगे रात्रि के समान है, सूर्योदय होते ही अंधेरा गायब, इनकी आशायें समाप्त।
3. राजाओं के वचन टिमटिमाते तारों की तरह थे, जैसे सुबह को तारों का प्रकाश गायब, वैसे ही सब राजा चुपचाप बैठ गये।
4. राजाओं का अभिमान कुमुद के फूल के समान है जो रात्रि में खिला और दिन में मुरझा गया। राजा संकुचित हो गये।
5. वहाँ पर कपटी राजा भी थे जो वेष बदल कर आये थे, उनका क्या हुआ? कहते हैं जैसे उल्लू दिन में छिप जाता है वैसे वे छिप गये।
6. मुनि व देवता चकवा पक्षी के समान रात्रि के कारण दु:खी थे, दिन निकलते ही चकवा पक्षी प्रसन्न, ये सब भी प्रसन्न हो गये।
7. देवता लोग फूलों की वर्षा करके अपनी उपस्थिति बता रहे हैं।

गुरु को प्रणाम किया, हाथी की चाल जैसे राम चल दिये

गुर पद बंदि सहित अनुरागा। राम मुनिन्ह सन आयसु मागा ॥255:4॥
सहजहिं चले सकल जग स्वामी। मत्त मंजु बर कुंजर गामी ॥255:5॥

गुर पद बंदि सहित अनुरागा = प्रेम सहित गुरु के चरणों की वंदना करके, *राम मुनिन्ह सन आयसु मागा* = राम जी मुनियों से आज्ञा माँगते हैं। *सहजहिं चले सकल जग स्वामी* = पूरे संसार के स्वामी सहज भाव से चल दिये, *मत्त मंजु बर कुंजर गामी* = उनकी चलने की गंभीरता सुंदर श्रेष्ठ मतवाले हाथी के समान है।

बहुत प्रेम से गुरु के चरणों की वंदना की। फिर अन्य मुनि लोगों से आज्ञा ली। प्रभु राम पूरे संसार के स्वामी हैं, फिर भी सहज भाव से चलते हैं।

जब चलते हैं तो उसकी गंभीरता व सहजता की तुलना सुंदर श्रेष्ठ मतवाले हाथी की चाल से करते हैं।

धनुष तक पहुँचने में लोगों के मन में उठ रहे भावों का चित्रण

राम धनुष की तरफ चले जा रहे हैं। मंच से उतरकर धनुष तक पहुँचने में जितना समय लगा उतनी देर में तुलसीदास जी जनकपुरवासी, माता सुनयना व सीता जी के मन में उठे भावों, चिंताओं, विश्वास, अविश्वास, प्रार्थनाओं का सुंदर चित्रण कर रहे हैं। ध्यान से इसका पाठ कर शरीर को रोमांचित व मन को आनंदित करें।

जनकपुरवासी की वंदना– कमल की डंडी जैसे राम धनुष को तोड़ें!

चलत राम सब पुर नर नारी। पुलक पूरि तन भए सुखारी ॥255:6॥
बंदि पितर सुर सुकृत सँभारे। जौं कछु पुन्य प्रभाउ हमारे ॥255:7॥
तौ सिवधनु मृनाल की नाईं। तोरहुँ रामु गनेस गोसाईं ॥255:8॥

चलत राम = राम के चलते ही, *सब पुर नर नारी* = नगर के सारे स्त्री व पुरुष के, *पुलक पूरि तन* = शरीर रोमांचित हो गये, *भए सुखारी* = वे सब सुखी हो गये, *बंदि पितर सुर* = उन्होंने पितर व देवताओं की वंदना की, *सुकृत सँभारे* = अपने पुण्यों का स्मरण किया, *जौं कछु पुन्य प्रभाउ हमारे* = यदि हमारे पुण्यों का कुछ प्रभाव हो, *तौ सिवधनु मृनाल की नाईं* = तो शिव जी का धनुष कमल की डंडी की तरह, *तोरहुँ रामु* = राम जी तोड़ दें, *गनेस गोसाईं* = हे गणेश जी स्वामी।

जनकपुरवासियों के शरीर राम को चलते हुए देखकर रोमांचित हैं। वे बहुत आनंदित हैं कि अब धनुष टूटेगा व सीता जी का विवाह होगा। उन्होंने अपने पितरों की वंदना की। देवताओं की वंदना की। अपने पुण्यों का स्मरण करके प्रार्थना करते हैं कि यदि हमारे कुछ पुण्यों का प्रभाव हो तो राजकुमार राम धनुष को इतनी सरलता से तोड़ दें जैसे वह कमल की डंडी हो। विघ्नों का विनाश करने वाले गणेश जी महाराज की भी वंदना करते हैं।

सुनयना जी व्याकुल हैं, सखी से शंका प्रगट करती हैं

रामहि प्रेम समेत लखि सखिन्ह समीप बोलाइ ।
सीता मातु सनेह बस बचन कहइ बिलखाइ ॥दोहा 255॥

रामहि प्रेम समेत लखि = राम को प्रेम के साथ देखकर, *सखिन्ह समीप बोलाइ* = सखियों को पास बुलाकर, *सीता मातु सनेह बस* = सीता जी की माता स्नेह से, *बचन कहइ बिलखाइ* = व्याकुल होकर ये वचन कहे।

सखि सब कौतुकु देखनिहारे। जेउ कहावत हितू हमारे ॥256:1॥
कोउ न बुझाइ कहइ गुर पाहीं। ए बालक असि हठ भलि नाहीं ॥256:2॥

सखि सब कौतुकु देखनिहारे = हे सखी! सब तमाशा देख रहे हैं, *जेउ कहावत हितू हमारे* = जो हमारे हितैषी कहलाते हैं, *कोउ न बुझाइ कहइ गुर पाहीं* = कोई भी गुरु को समझाकर नहीं कहता है कि, *ए बालक* = राम बालक हैं, *असि हठ भलि नाहीं* = इनके लिये इस प्रकार की प्रतिज्ञा ठीक नहीं है।

रावन बान छुआ नहिं चापा। हारे सकल भूप करि दापा ॥256:3॥
सो धनु राजकुअँर कर देहीं। बाल मराल कि मंदर लेहीं ॥256:4॥

रावन बान छुआ नहिं चापा = रावण व बाणासुर ने जिस धनुष को छुआ तक नहीं, *हारे सकल भूप करि दापा* = सारे राजा घमंड करके हार गये, *सो धनु राजकुअँर कर देहीं* = वही धनुष इन राजकुमार के हाथ में दे रहे हैं, *बाल मराल कि मंदर लेहीं* = हंस का बच्चा क्या मंदराचल पर्वत उठा सकता है?

भूप सयानप सकल सिरानी। सखि बिधि गति कछु जाति न जानी ॥256:5॥

भूप सयानप सकल सिरानी = राजा का सयानापन पूरा समाप्त हो गया है, *सखि बिधि गति कछु जाति न जानी* = हे सखी! विधाता की गति कुछ समझ में नहीं आती है।

सीता जी की माता, रानी सुनयना ने राम को बहुत प्रेम से देखा। अपने बच्चे के समान उन्हें राम में अपनापन दिखा। सखियों को अपने पास बुलाकर व्याकुलता व प्रेम से अपने भाव व्यक्त करती हैं।

1. जो लोग यहाँ बैठकर तमाशा देख रहे हैं वे कहलाते तो हमारे हितैषी हैं पर कुछ भी हित नहीं कर रहे हैं। ये लोग गुरु को जाकर क्यों नहीं समझाते कि यह बालक इतने कठोर धनुष के योग्य नहीं है।

2. धनुष की कठोरता का स्मरण करके कहती हैं कि जिसे रावण व बाणासुर जैसे योद्धाओं ने डरकर छुआ तक नहीं, यहाँ जितने राजा हैं वे हिला तक नहीं सके, उसी धनुष को इतने कोमल शरीर वाले राजकुमार को दे रहे हैं।
3. एक उदाहरण देती हैं कि यदि हंस के बच्चे की पीठ पर मंदराचल पर्वत रख दिया जाये तो वह कहाँ उठा पायेगा! राम तो मराल हंस के समान हैं। धनुष विशाल पर्वत है। यह अनुचित कार्य हो रहा है।
4. राजा जनक का सयानापन समाप्त हो गया लगता है। बहुत विद्वान् कहलाते थे, अब बुद्धि काम नहीं कर रही है।
5. विधाता क्या चाहता है? उसकी गति का अनुमान नहीं लगाया जा सकता है।

सखी समझाती है कि सूक्ष्म चीज स्थूल से ज्यादा शक्तिशाली है

बोली चतुर सखी मृदु बानी। तेजवंत लघु गनिअ न रानी ॥256:6॥
कहँ कुंभज कहँ सिंधु अपारा। सोषेउ सुजसु सकल संसारा ॥256:7॥
रबि मंडल देखत लघु लागा। उदयँ तासु तिभुवन तम भागा ॥256:8॥

बोली चतुर सखी मृदु बानी = एक चतुर सखी कोमल वाणी में बोली, *तेजवंत लघु गनिअ न रानी* = तेजवान् को छोटा नहीं समझना चाहिये, *कहँ कुंभज* = कहाँ छोटे से मुनि अगस्त्य, *कहँ सिंधु अपारा* = कहाँ अपार समुद्र, *सोषेउ* = उन्होंने समुद्र को सोख लिया, *सुजसु सकल संसारा* = जिसका यश सारे संसार में छाया हुआ है, *रबि मंडल देखत लघु लागा* = सूर्य देखने में छोटा दिखता है, *उदयँ तासु तिभुवन तम भागा* = पर उसके उदय होते ही तीनों लोकों का अंधकार दूर हो जाता है।

मंत्र परम लघु जासु बस बिधि हरि हर सुर सर्ब ।
महामत्त गजराज कहुँ बस कर अंकुस खर्ब ॥दोहा 256॥

मंत्र परम लघु = मंत्र अत्यंत छोटा होता है, *जासु बस* = परंतु उसके अधीन, *बिधि हरि हर सुर सर्ब* = ब्रह्मा; विष्णु; महेश व सारे देवता रहते हैं, *महामत्त गजराज कहुँ* = महान् मतवाले हाथी को, *बस कर अंकुस खर्ब* = छोटा सा अंकुश वश में कर लेता है।

काम कुसुम धनु सायक लीन्हे। सकल भुवन अपने बस कीन्हे ॥257:1॥

काम कुसुम धनु सायक लीन्हे = कामदेव ने फूलों का ही धनुष-बाण लेकर, *सकल भुवन अपने बस कीन्हे* = समस्त लोकों को अपने वश में कर रखा है।

चतुर सखी मृदुवाणी में समझाने लगती है कि हे रानी! ये बहुत तेजस्वी हैं। इन्हें छोटा नहीं समझना चाहिये। वह कहती है कि जो जितना सूक्ष्म होता है उतना ही शक्तिशाली होता है। पंच महाभूतों से पाँच उदाहरण देती है। यह प्रसंग सखी गीता भी कहलाता है।

1. **समुद्र का जल :** समुद्र जल का सबसे बड़ा भंडार है। कुंभज ऋषि, जो देखने में तो छोटे हैं पर इतने विशाल समुद्र के जल को पी गये। उनका यश सारे संसार में फैला हुआ है।
2. **सूर्य का प्रकाश :** सूर्य देखने में कितना छोटा दिखता है, परंतु उसके उदय होते ही पूरे संसार का अंधकार दूर हो जाता है।
3. **छोटे से मंत्र की ध्वनि :** मंत्र कितना छोटा होता है, परंतु उसकी ध्वनि की ऐसी महिमा है कि उसके उच्चारण करने से, जप करने से, स्मरण करने से ब्रह्मा, विष्णु, शिव जैसे विशाल देवता व अन्य सभी देवता भी प्रसन्न हो जाते हैं। जपकर्ता के वश में हो जाते हैं।
4. **अंकुश की ताकत :** इतने विशाल मतवाले हाथी को वश में करने के लिये कोई बहुत बड़ी वस्तु की आवश्यकता नहीं, छोटे से अंकुश से ही हाथी बस में हो जाता है।
5. **फूलों के धनुष की ताकत :** कामदेव ने समस्त लोकों को अपने वश में कर रखा है। उसके लिये उसने कोई मजबूत या बड़ा धनुष नहीं लिया। कोमल फूलों के बने धनुष व बाण से ही सबको वश में किया है।

सखी के वचनों से सुनयना जी को राम में विश्वास व प्रेम हो गया

देबि तजिअ संसउ अस जानी। भंजब धनुषु राम सुनु रानी ॥257:2॥
सखी बचन सुनि भै परतीती। मिटा बिषादु बढ़ी अति प्रीती ॥257:3॥

देबि तजिअ संसउ अस जानी = हे देवी! ऐसा समझकर संदेह त्याग दीजिये, *भंजब धनुषु राम सुनु रानी* = हे रानी! सुनिये राम ही धनुष को तोड़ेंगे, *सखी बचन सुनि* = सखी की बातें सुनकर, *भै परतीती* = विश्वास हो गया, *मिटा बिषादु* = उदासी मिट गयी, *बढ़ी अति प्रीती* = राम के प्रति प्रेम बहुत बढ़ गया।

सखी कहती है कि हे देवी! इसलिये अपना संशय त्याग दो। हे रानी! राम बहुत शक्तिशाली हैं, वे ही धनुष को तोड़ेंगे। सखी के कहने से सुनयना जी को विश्वास हो गया। भगवान की शक्ति में विश्वास तब होता है जब उसे ठीक से समझें, जानें। अपने मन से कई बार समझ में नहीं आता है तो गुरु से जानें, शास्त्रों से जानें। सुनयना जी जानती हैं, पर ज्ञान भूल गया तो सखी ने याद दिला दिया। ज्ञान समझ में आते ही विषाद दूर हो गया। ज्ञान से राम की शक्ति में विश्वास आया। विश्वास से राम के प्रति प्रेम बढ़ गया।

शरीर बड़ा दिखता है, असली शक्ति अंदर बैठे सूक्ष्म जीव की है

हमारा शरीर देखने में बहुत बड़ा दिखता है पर असली ताकत उसके अंदर बैठे अति सूक्ष्म जीव की है जो आँखों से दिखाई तक नहीं देता है। जब जीव शरीर छोड़ देता है तो शरीर की क्या दशा होती है? परमात्मा तो सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है। इसलिये उसके अस्तित्व को स्वीकार करना लोगों के लिये बहुत कठिन होता है। पर है तो जीव भी और परमात्मा भी।

सीता जी के मन में उठ रहे भावों का चित्रण

सुनयना जी ने अपने भावों को व्यक्त किया परंतु सीता जी कुछ कहती नहीं, मन ही मन सोचती हैं। तुलसीदास जी की पहुँच माँ सीता के मन तक है। वे मन में उठ रहे भावों को पढ़कर अपनी अद्भुत काव्यशैली में प्रस्तुत कर रहे हैं।

सीता ने राम को देखकर अनेक देवताओं से प्रार्थना की

तब रामहि बिलोकि बैदेही। सभय हृदयँ बिनवति जेहि तेही ॥257:4॥

तब रामहि बिलोकि बैदेही = अब सीता ने राम को देखकर, *सभय हृदयँ* = भयभीत मन से, *बिनवति जेहि तेही* = कभी इस देवता की कभी उस देवता की विनती करती हैं।

तब वैदेही ने भी राम को धनुष की तरफ जाते हुए देखा। उनके मन में भय है। भयभीत मन से कभी इस देवता की तो कभी उस देवता की प्रार्थना करती हैं। प्रार्थना क्या है? किसी प्रकार से यह धनुष हल्का हो जाये। हमारे सामने भी जब कोई समस्या होती है तो जल्दी-जल्दी अनेक देवताओं को याद करने लग जाते हैं।

शिव-पार्वती से मन में विनती की, धनुष को हल्का कर दें

मनहीं मन मनाव अकुलानी। होहु प्रसन्न महेस भवानी ॥257:5॥
करहु सफल आपनि सेवकाई। करि हितु हरहु चाप गरुआई ॥257:6॥

मनहीं मन मनाव अकुलानी = व्याकुल होकर मन ही मन मना रही हैं, *होहु प्रसन्न महेस भवानी* = हे शिव-पार्वती मुझ पर प्रसन्न हो जाइये, *करहु सफल आपनि सेवकाई* = मैंने आपकी जो सेवा की है उसे फलदायी बनाइये, *करि हितु* = हमारे ऊपर कृपा करके, *हरहु चाप गरुआई* = धनुष के भारीपन को दूर करे दें।

सीता मन ही मन व्याकुल हैं। अब मन में कहती हैं कि हे शिव-पार्वती! आप दोनों मुझ पर प्रसन्न होवें। मैंने अभी तक आपकी जो सेवा की है उसका अब फल प्रदान करें। हमारे ऊपर कृपा करके धनुष को हल्का कर दें। उसका भारीपन दूर कर दें। ध्यान दें वे यह नहीं कहती कि राम जी को शक्ति दें। यह प्रार्थना अनुचित होती। वे तो सर्वशक्तिमान हैं ही। वे चाहती हैं कि मेरे प्रभु राम को धनुष उठाने में परेशानी न हो।

गणेश जी से वर माँगती हैं– धनुष को बहुत हल्का कर दें

गननायक बर दायक देवा। आजु लगें कीन्हिउँ तुअ सेवा ॥257:7॥
बार बार बिनती सुनि मोरी। करहु चाप गुरुता अति थोरी ॥257:8॥

गननायक = हे गणों के नायक, *बर दायक देवा* = वर देने वाले देवता, *आजु लगें कीन्हिउँ तुअ सेवा* = आज तक मैंने आपकी सेवा ही सेवा की है, *बार बार बिनती सुनि मोरी* = अब मेरी बार-बार विनती सुनकर, *करहु चाप गुरुता अति थोरी* = धनुष का भारीपन बहुत ही कम कर दीजिये।

अब गणेश जी का स्मरण करते हुए कहती हैं कि आप तो गणों के नायक व वर देने वाले देवता हो। हमने आज तक आपकी सेवा ही सेवा की है, माँगा कुछ नहीं है। आज आपसे बार-बार विनती करती हूँ– धनुष को बहुत ही हल्का कर दें। शिव जी से कहा हल्का करें, गणेश जी से कहा अति हल्का कर दें।

राम को देख-देखकर आँखों में प्रेम अश्रु, शरीर रोमांचित

देखि देखि रघुबीर तन सुर मनाव धरि धीर ।
भरे बिलोचन प्रेम जल पुलकावली सरीर ॥दोहा 257॥

देखि देखि रघुबीर तन = प्रभु राम के शरीर को बार-बार देखती हैं, *सुर मनाव धरि धीर* = धैर्य रखकर देवताओं को मना रही हैं, *भरे बिलोचन प्रेम जल* = उनके नेत्रों में प्रेम के अश्रु भर आये हैं, *पुलकावली सरीर* = शरीर में रोमांच हो रहा है।

सीता राम को बार-बार देखती हैं। टकटकी लगाकर नहीं देखती, एक बार देखा फिर यहाँ-वहाँ देखती हैं। सखियों की तरफ देखती हैं, फिर राम की तरफ देखती हैं। हृदय के भावों से नेत्रों में प्रेम के अश्रु आ गये। प्रेम की अधिकता से शरीर पुलकित हो रहा है। मन में धैर्य रखकर देवताओं को मना रही हैं।

पिता ने कठोर प्रतिज्ञा की, अब भी लाभ-हानि नहीं समझ रहे

नीकें निरखि नयन भरि सोभा। पितु पनु सुमिरि बहुरि मनु छोभा ॥258:1॥
अहह तात दारुनि हठ ठानी। समुझत नहिं कछु लाभु न हानी ॥258:2॥
सचिव सभय सिख देइ न कोई। बुध समाज बड़ अनुचित होई ॥258:3॥

नीकें निरखि = सीता ने एक बार अच्छी तरह से राम को देखकर, *नयन भरि सोभा* = नेत्रों में उनकी सुंदरता को भर लिया, *पितु पनु सुमिरि* = फिर पिता जी की प्रतिज्ञा का स्मरण करके, *बहुरि मनु छोभा* = मन दु:खी हो गया, *अहह तात दारुनि हठ ठानी* = अहो! पिता जी ने बहुत ही कठिन प्रतिज्ञा ठान ली है, *समुझत नहिं कछु लाभु न हानी* = वे इसके लाभ-हानि समझ ही नहीं रहे हैं, *सचिव सभय* = मंत्री डर रहे हैं, *सिख देइ न कोई* = इसलिये कोई उन्हें सलाह भी नहीं दे रहा है, *बुध समाज बड़ अनुचित होई* = समझदारों की सभा में यह अनुचित हो रहा है।

कहँ धनु कुलिसहु चाहि कठोरा। कहँ स्यामल मृदुगात किसोरा ॥258:4॥
बिधि केहि भाँति धरौं उर धीरा। सिरस सुमन कन बेधिअ हीरा ॥258:5॥

कहँ धनु कुलिसहु चाहि कठोरा = कहाँ तो वज्र से भी ज्यादा कठोर धनुष है, *कहँ स्यामल मृदुगात किसोरा* = और कहाँ ये किशोर अवस्था के सुकुमार व

श्यामल शरीर के राजकुमार, *बिधि केहि भाँति धरौं उर धीरा* = हे विधाता मैं मन में कैसे धीरज रखूँ? *सिरस सुमन कन* = सिरस के फूल के कण से, *बेधिअ हीरा* = मानों हीरे में छेद करना चाह रहे हैं।

सीता जी ने एक बार अच्छी तरह से राम जी को देखकर, उनकी सुंदरता को आँखों में भर लिया। फिर पिता जी की प्रतिज्ञा याद आयी तो बहुत दुःख हुआ। अहो! पिता जी ने बहुत ही कठिन प्रतिज्ञा कर ली है। अब प्रतिज्ञा को लेकर हठ कर रहे हैं। उन्हें इसके लाभ-हानि अब भी समझ में नहीं आ रहे हैं। मंत्री डरे हुए हैं इसलिये उचित सलाह नहीं दे पा रहे हैं। धनुष तो वज्र के समान कठोर है। राम का शरीर सुकुमार व कोमल है। इसलिये उनसे धनुष तुड़वाने की प्रतिज्ञा पूरी करवाना अनुचित कार्य है। हे ब्रह्मा जी! हम धैर्य रखना चाहें तो कैसे रखें? ये लोग तो सिरस के कोमल फूल के कण से हीरे जैसे कठोर पत्थर में छेद करवाने जा रहे हैं।

धनुष से प्रार्थना–राम के अनुरूप हल्के हो जाओ

सकल सभा कै मति भै भोरी। अब मोहि संभुचाप गति तोरी ॥258:6॥
निज जड़ता लोगन्ह पर डारी। होहि हरुअ रघुपतिहि निहारी ॥258:7॥
अति परिताप सीय मन माहीं। लव निमेष जुग सय सम जाहीं ॥258:8॥

सकल सभा कै मति भै भोरी = सभी की बुद्धि मारी गयी है, *अब मोहि संभुचाप गति तोरी* = हे शिव जी के धनुष अब हमें तुम्हारा ही आसरा है, *निज जड़ता लोगन्ह पर डारी* = तुम अपनी जड़ता लोगों पर डालकर, *होहि हरुअ* = उतने ही हल्के हो जाओ, *रघुपतिहि निहारी* = राम के शरीर को देखकर; जितने वे हैं, *अति परिताप सीय मन माहीं* = सीता जी के मन में बहुत संताप हो रहा है, *लव निमेष* = एक-एक क्षण, *जुग सय सम जाहीं* = सौ युगों के समान व्यतीत हो रहा है।

सीता ने देखा कि यहाँ बैठे सभी लोगों की बुद्धि मारी गयी है। सब चुपचाप बैठे हैं। फिर सोचा होगा कि कहीं देवता भी हमारी विनती न सुनें, तब कहती हैं, हे शिव-धनुष! अब तुम्हारा ही आसरा है। धनुष को चेतन प्राणी मानकर कि उसमें भी भगवान का ही वास है, प्रार्थना करती हैं कि तुम राम के शरीर को देखो और उनके शरीर के अनुरूप ही हल्के हो जाओ।

सीता के नेत्रों की चंचलता बहुत सुंदर है

प्रभुहि चितइ पुनि चितव महि राजत लोचन लोल ।
खेलत मनसिज मीन जुग जनु बिधु मंडल डोल ॥दोहा 258॥

प्रभुहि चितइ = सीता जी प्रभु राम की ओर देखती हैं, *पुनि चितव महि* = फिर पृथ्वी की ओर देखने लगती हैं, *राजत लोचन लोल* = सीता जी के चंचल नेत्र इस प्रकार शोभित हो रहे हैं, *खेलत मनसिज मीन जुग* = मानो कामदेव की दो मछलियाँ, *जनु बिधु मंडल डोल* = चन्द्रमंडल के डोल में खेल रही हों।

सीता राम की ओर देखती हैं फिर पृथ्वी की तरफ देखती हैं। यह शीलता का लक्षण है। स्थिर होकर नहीं देखतीं। इस प्रकार देखने से नेत्रों में चंचलता झलक रही है। उसकी तुलना कैसे करते हैं? गोल चन्द्रमा है, डोल यानी छोटा सा तालाब या पानी भरा गड्डा हो जिसमें दो सुंदर मछलियाँ पानी में हिल रही हों। सीता जी का मुख चन्द्र मंडल जैसा है। नेत्र डोल हैं, आँखों की पुतलियाँ मानो कामदेव की दो सुंदर मछलियों जैसे उस डोल में खेल रही हों।

सीता की वाणी मुख में बंद है मानो भौंरा कमल में बंद हो

गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी। प्रगट न लाज निसा अवलोकी ॥259:1॥

गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी = जैसे एक भ्रमर रात्रि में कमल की कली में बंद हो जाये; तो प्रात: तक बाहर निकल ही न सके, *प्रगट न लाज निसा अवलोकी* = इसी प्रकार सीता का मुख कमल की कली के समान है; लज्जा रात्रि है; वाणी भ्रमर है; लज्जा के कारण वे कुछ बोल नहीं पा रही हैं।

यहाँ पर तुलसीदास जी स्पष्ट बता देते हैं कि ये सब बातें सीता जी के मन में हो रही हैं। अलिनि मायने स्त्रीलिंग भ्रमर है। यदि वह रात्रि में कमल के अंदर बंद हो जाये तो रात्रि भर उसके अंदर रहे। सीता जी का मुख कमल के समान है, शब्द या वाणी अलिनि की तरह मुख के भीतर ही बंद है। वाणी बाहर क्यों नहीं निकलती? जैसे कमल रात्रि में खिलता नहीं, अलिनि बाहर नहीं निकलती, इसी प्रकार माता-पिता, गुरु व समाज की लज्जा रात्रि के समान है जिसके कारण सीता जी कुछ बोलती नहीं।

आँखों के कोने में अश्रु रोके हैं, राम में विश्वास लाकर धैर्य रखा

लोचन जलु रह लोचन कोना। जैसें परम कृपन कर सोना ॥259:2॥
सकुची ब्याकुलता बड़ि जानी। धरि धीरजु प्रतीति उर आनी ॥259:3॥

लोचन जलु रह लोचन कोना = नेत्रों का जल नेत्रों के कोने में ही रह जाता है, *जैसें परम कृपन कर सोना* = जैसे बहुत कंजूस व्यक्ति धन को बाहर निकालता ही नहीं, *सकुची ब्याकुलता बड़ि जानी* = व्याकुलता को बढ़ता देखकर सीता जी को संकोच लगा, *धरि धीरजु* = फिर धैर्य धारण करके, *प्रतीति उर आनी* = मन में विश्वास ले आयीं।

प्रेम का जल आँखों के कोने तक ही भरा रहा, बाहर नहीं निकला। अवसर के अनुकूल सीता जी ने प्रेम के अश्रु को रोके रखा। उदाहरण देते हैं एक परम कंजूस व्यक्ति का जो धन को छिपा कर रखता है। सीता जी को लगा कि हमारे मन की व्याकुलता तो अब चेहरे से प्रगट होने लगी है। लोग हमें देख रहे होंगे, इसलिये व्याकुलता को धैर्य से रोका। राम के प्रति विश्वास लाकर धैर्य धारण किया।

तन-मन-वचन से यदि मेरा प्रेम सच्चा, तो राम मुझे अपना लें

तन मन बचन मोर पनु साचा। रघुपति पद सरोज चितु राचा ॥259:4॥
तौ भगवानु सकल उर बासी। करिहि मोहि रघुबर कै दासी ॥259:5॥
जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू ॥259:6॥

तन मन बचन मोर पनु साचा = तन; मन व वचन से मेरा प्रण सच्चा है, *रघुपति पद सरोज चितु राचा* = और राम जी के चरणों में मेरा चित्त वास्तव में अनुरक्त है, *तौ भगवानु सकल उर बासी* = तो हे भगवान! आप तो सबके हृदय में वास करने वाले हो, *करिहि मोहि रघुबर कै दासी* = तो मुझे प्रभु राम की दासी अवश्य बनायें, *जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू* = जिसका जिस पर सच्चा प्रेम होता है, *सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू* = वह उसे मिलता ही है इसमें कुछ भी संदेह नहीं है।

सीता सोचती हैं कि यदि तन-मन-वचन से राम के प्रति प्रेम की मेरी प्रतिज्ञा सच है, राम के चरणों में यदि मेरा चित्त वास्तव में निमग्न है, उन्हीं में प्रेम

रखने वाला है, उन्हें ही समर्पित है तो भगवान तो सबके हृदय में बैठा है। मेरे मन को देख ले, मुझे प्रभु राम की दासी बनाये। सीता जी ने प्रभु राम से दास्य भक्ति का संबंध जोड़ लिया। भगवान से संबंध जोड़ने से कार्य तुरंत पूरा होता है। यह नियम है कि जिसका जिसके प्रति सच्चा प्रेम है उसे वह अवश्य प्राप्त होता है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

राम ने सीता के प्रेम को जाना, फिर धनुष की तरफ देखा

प्रभु तन चितइ प्रेम तन ठाना। कृपानिधान राम सबु जाना ॥259:7॥
सियहि बिलोकि तकेउ धनु कैसें। चितव गरुरु लघु ब्यालहि जैसें ॥259:8॥

प्रभु तन चितइ = प्रभु राम की ओर देखकर, *प्रेम तन ठाना* = सीता जी ने प्रेम करने का प्रण ले लिया, *कृपानिधान राम सबु जाना* = कृपा के निधान राम सब जान गये, *सियहि बिलोकि* = राम ने सीता की ओर देखकर, *तकेउ धनु कैसें* = धनुष की तरफ इस प्रकार देखा, *चितव गरुरु लघु ब्यालहि जैसें* = जैसे गरुड़ छोटे से सांप की ओर देखे।

सीता ने राम की तरफ देखकर अपने प्रेम के प्रण को पक्का किया। राम जब समझ गये कि इनके मन के सारे संदेह दूर हो गये हैं, मेरे प्रति पूर्ण समर्पण भाव आ गया है, दास्य भक्ति स्वीकार कर ली है, तब वे सीता की ओर देखते हैं। प्रभु कृपानिधान हैं। जब कृपा करनी है तब सीता की ओर देखा। प्रभु हमारी ओर भी तभी देखते हैं जब हमारे मन में अनन्य प्रेम आ जाये। अनन्यता आने तक इंतजार करते हैं। धनुष तोड़कर कृपा करनी है। इसलिये अब धनुष की तरफ देखते हैं। कैसे? जैसे गरुड़ छोटे से साँप की ओर देखे। सर्प चाहे जितना फुफकार करे, पर जब गरुड़ उसकी ओर देखता है तो वह डरकर संकुचित हो जाता है। वैसे ही राम के देखने से ही धनुष डरकर भारीपन छोड़ हल्का हो गया।

देवताओं की प्रार्थना कैसे फलीभूत होती है?

सीता ने पहले सब देवताओं की प्रार्थना की। शिव-पार्वती का स्मरण किया, फिर गणेश जी से वर माँगा। इन सबने कैसे सहायता की? क्या धनुष को हल्का कर दिया? नहीं। देवताओं के कार्य करने का तरीका अलग होता है।

सबने सीता के मन में प्रभु राम के प्रति एकनिष्ठ विश्वास, समर्पण, दास्य भक्ति ला दी। इसके आते ही राम ने कृपा करने का निश्चय कर लिया। राम ने जब धनुष की ओर देखा तो वह स्वयं हल्का हो गया।

लक्ष्मण ने पृथ्वी को थामने वाली शक्तियों को सचेत किया

लखन लखेउ रघुबंसमनि ताकेउ हर कोदंडु ।
पुलकि गात बोले बचन चरन चापि ब्रह्मांडु ॥दोहा 259॥

लखन लखेउ = लक्ष्मण ने देखा कि, *रघुबंसमनि* = रघुकुल के मणि प्रभु राम ने, *ताकेउ हर कोदंडु* = शिव जी के धनुष की ओर देखा है, *पुलकि गात बोले बचन* = पुलकित होकर वचन बोलने लगे, *चरन चापि ब्रह्मांडु* = चरणों से ब्रह्मांड को दबाकर।

दिसिकुंजरहु कमठ अहि कोला। धरहु धरनि धरि धीर न डोला ॥260:1॥
रामु चहहिं संकर धनु तोरा। होहु सजग सुनि आयसु मोरा ॥260:2॥

दिसिकुंजरहु = हे! दसदिशाओं के हाथिओं, *कमठ* = हे! कच्छप, *अहि* = हे! सर्प, *कोला* = हे! वाराह, *धरहु धरनि* = पृथ्वी को थामे रहो, *धरि धीर* = धैर्य धारण करके, *न डोला* = जिससे वह डोलने न पावे, *रामु चहहिं संकर धनु तोरा* = प्रभु राम शिव धनुष को तोड़ना चाहते हैं, *होहु सजग* = तुम सावधान हो जाओ, *सुनि आयसु मोरा* = मेरी आज्ञा सुनकर।

लक्ष्मण ने देखा कि भइया राम ने शिव-धनुष की तरफ दृष्टि डाली है। वे समझ गये कि अब धनुष टूटने ही वाला है। पुलकित होकर सारे ब्रह्मांड को चरण से दबाकर पृथ्वी को संभाले रहने वाली शक्तियों को सावधान करते हैं। हे! दसो दिशाओं के हाथियों, कच्छप, सर्प व वाराह तुम सब मिलकर धैर्य धारण करके पृथ्वी को संभाले रहना। प्रभु राम शिव धनुष को तोड़ना चाहते हैं। तुम सब सावधान हो जाओ, पृथ्वी स्थिर रहनी चाहिये। धनुष के टूटने पर बहुत भारी विस्फोट होने जा रहा है।

जनकवासी देवताओं व पुण्यों का स्मरण करते हैं

चाप समीप रामु जब आए। नर नारिन्ह सुर सुकृत मनाए ॥260:3॥

चाप समीप रामु जब आए = जब राम धनुष के पास पहुँचे, *नर नारिन्ह* = जनकपुर के स्त्री व पुरुष, *सुर सुकृत मनाए* = देवताओं और अपने पुण्यों का स्मरण किया।

जब राम धनुष के पास पहुँचे तब जनकपुर के स्त्री व पुरुष अपने पुण्यों का स्मरण करके देवताओं से प्रार्थना करते हैं, यदि हमारे कुछ पुण्य हों तो राम धनुष तोड़ दें, सीता जी से विवाह हो।

धनुष एक जहाज, अज्ञान, अहंकार, भय व दुःख उसकी सवारी

सब कर संसउ अरु अग्यानू। मंद महीपन्ह कर अभिमानू ॥260:4॥
भृगुपति केरि गरब गरुआई। सुर मुनिबरन्ह केरि कदराई ॥260:5॥
सिय कर सोचु जनक पछितावा। रानिन्ह कर दारुन दुख दावा ॥260:6॥
संभुचाप बड़ बोहितु पाई। चढ़े जाइ सब संगु बनाई ॥260:7॥

सब कर संसउ अरु अग्यानू = सबका संदेह और अज्ञान, *मंद महीपन्ह कर अभिमानू* = मंद बुद्धि के राजाओं का अभिमान, *भृगुपति केरि गरब गरुआई* = परशुराम जी के गर्व का भारीपन, *सुर मुनिबरन्ह केरि कदराई* = देवताओं और मुनियों का भय, *सिय कर सोचु* = सीता जी की चिंता, *जनक पछितावा* = जनक जी का पश्चात्ताप, *रानिन्ह कर दारुन दुख दावा* = रानियों के भारी दु:ख का दावानल, *संभुचाप बड़ बोहितु पाई* = ये सब शिव जी के धनुषरूपी बड़े जहाज को पाकर, *चढ़े जाइ सब संगु बनाई* = एकत्रित होकर उस पर सवार हो गये, मायने उस पर आश्रित हो गये।

तुलसीदास जी शिव-धनुष की तुलना समुद्र के एक जहाज से करते हैं। इसके ऊपर सवारी कौन हैं? सबका संशय व अज्ञान। मंद बुद्धि राजाओं का अभिमान, परशुराम जो आने वाले हैं उनका गर्व, देवताओं व मुनियों का भय, सीता जी की व्याकुलता, जनक जी का पश्चात्ताप और रानियों का दु:ख। ये सब एकत्रित होकर धनुष रूपी जहाज पर सवार हो गये।

राम का बाहुबल समुद्र, केवट नहीं है, जहाज डूबेगा!

राम बाहुबल सिंधु अपारू। चहत पारु नहिं कोउ कड़हारू ॥260:8॥

राम बाहुबल सिंधु अपारू = राम जी की भुजाओं का अपार बल समुद्र है, *चहत पारु* = ये सब समुद्र पार करना चाहते हैं, *नहिं कोउ कड़हारू* = पर कोई केवट नहीं है।

राम की भुजाओं का अपार बल समुद्र के समान है। अनेकों तरह के दु:खों से भरा जहाज समुद्र पर खड़ा है, पर उस पार लगाने के लिये कोई केवट नहीं है। बिना केवट के भारी जहाज का क्या होगा? वह डूब जायेगा! ये सब सवारी डूब कर कहाँ जायेगी, राम के भुजाओं के बल में। आशय है कि राम बहुत शक्तिशाली हैं। उनकी शक्ति के सामने मोह बना रहे, संशय बना रहे, अज्ञ ानता आये, दु:ख आये, ऐसा हो नहीं सकता। धनुष टूटेगा, जहाज डूबेगा, ये सब समाप्त हो जायेंगे।

राम को सब लोग चित्र के समान व सीता व्याकुल दिखीं

राम बिलोके लोग सब चित्र लिखे से देखि ।
चितई सीय कृपायतन जानी बिकल बिसेषि ॥दोहा 260॥

राम बिलोके लोग सब = राम ने सब लोगों की ओर देखा, *चित्र लिखे से देखि* = चित्र में लिखे हुए से दिखे; साँस रोके एकदम शांत बैठे थे। *चितई सीय कृपायतन* = कृपानिधान राम जी ने फिर सीता जी की ओर देखा, *जानी बिकल बिसेषि* = उन्हें लगा कि ये बहुत व्याकुल हैं।

देखी बिपुल बिकल बैदेही। निमिष बिहात कलप सम तेही ॥261:1॥

देखी बिपुल बिकल बैदेही = उन्होंने ने सीता को बहुत ही व्याकुल देखा, *निमिष बिहात कलप सम तेही* = उनका एक-एक क्षण कल्प के समान व्यतीत हो रहा था।

राम ने धनुष को देखने के बाद उत्तर दिशा में बैठे सब राजाओं व जनकपुरवासियों की ओर देखा, वे कैसे दिखे? चित्र लिखे से– साँस रोके एकदम शांत बैठे हैं। राम ने जब दक्षिण की तरफ दृष्टि घुमायी तो जनक जी के सिंहासन के बगल में सीता को खड़े देखा, वे कैसी दिखीं? बहुत व्याकुल। उनका एक-एक क्षण कल्प के समान व्यतीत हो रहा है।

प्यास से मरे को अमृत का, खेत सूख जाने पर वर्षा का क्या लाभ?

तृषित बारि बिनु जो तनु त्यागा। मुएँ करइ का सुधा तड़ागा ॥261:2॥
का बरषा सब कृषी सुखानें। समय चुकें पुनि का पछितानें ॥261:3॥
अस जियँ जानि जानकी देखी। प्रभु पुलके लखि प्रीति बिसेषी ॥261:4॥

तृषित बारि बिनु = पानी के बिना प्यासा व्यक्ति, *जो तनु त्यागा* = यदि शरीर त्याग दे, *मुएँ* = तो उसके मर जाने पर, *करइ का सुधा तड़ागा* = अमृत का तालाब भी क्या कर सकता है? *का बरषा सब कृषी सुखानें* = खेती सूख जाने पर वर्षा किस काम की, *समय चुकें पुनि का पछितानें* = समय बीत जाने पर फिर पछताने से क्या फायदा? *अस जियँ जानि* = मन में ऐसा स्मरण करके, *जानकी देखी* = सीता जी की ओर देखा, *प्रभु पुलके* = प्रभु पुलकित हो गये, *लखि प्रीति बिसेषी* = उनके विशेष प्रेम को देखकर।

राम ने सोचा यदि कोई प्यासा है, उसे समय से पानी न मिले और वह मर जाये, मरने के बाद कोई अमृत का तालाब भी ला दे तो उससे क्या फायदा? बेकार है। इसी प्रकार बिना पानी के खेत सूख जाये फिर कितनी भी वर्षा हो उसका कोई फायदा नहीं। समय पर कार्य न होने से किसी के प्राण चले जायें उसके बाद कार्य करना बेकार है। मन में नीति की ये बातें सोचकर प्रभु ने सीता जी की ओर फिर देखा और उनके विशेष प्रेम को देख पुलकित हो गये।

गुरु को प्रणाम करके राम ने शीघ्रता से धनुष उठा लिया

गुरहि प्रनामु मनहिं मन कीन्हा। अति लाघवँ उठाइ धनु लीन्हा ॥261:5॥

गुरहि प्रनामु मनहिं मन कीन्हा = मन-ही-मन गुरु को प्रणाम करके, *अति लाघवँ* = बहुत ही शीघ्रता से, *उठाइ धनु लीन्हा* = धनुष को उठा लिया।

मन में गुरु को प्रणाम किया मायने उन्हीं के बल से धनुष टूट रहा है। गुरुकृपा से ही कार्य कर रहे हैं। फिर बहुत ही शीघ्रता से धनुष को उठा लिया। इस प्रकार से उठाया जैसे धनुष बहुत हल्का हो।

बिजली जैसी चमक, प्रत्यंचा चढ़ाई, धनुष गोलाकार हो गया

दमकेउ दामिनि जिमि जब लयऊ। पुनि नभ धनु मंडलसम भयऊ ॥261:6॥
लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़ें। काहुँ न लखा देख सबु ठाढ़ें ॥261:7॥

दमकेउ दामिनि जिमि = वह बिजली की तरह चमका, *जब लयऊ* = जब उसे हाथ में उठाया, *पुनि नभ धनु मंडलसम भयऊ* = फिर धनुष मंडलाकार आकाश के समान गोलाकार हो गया, *लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़ें* = धनुष को उठाते; उस पर प्रत्यंचा चढ़ाते; जोर से खींचते हुए, *काहुँ न लखा* = किसी को पता ही नहीं चला; कोई देख ही नहीं पाया इतनी फुर्ती से हुआ, *देख सबु ठाढ़ें* = सबने राम को धनुष खींचे खड़े हुए देखा।

प्रभु राम ने जब धनुष को उठाया तो ऐसा लगा जैसे आकाश में बिजली चमकी हो। धनुष उठाकर उसमें तुरंत ही डोरी चढ़ा दी, जिससे वह झुकता चला गया, झुकते हुए वह एकदम से गोलाकार हो गया। कैसा गोल है? जैसे आकाश-मंडल होता है। धनुष को उठाना, जोर से खींचते हुए प्रत्यंचा चढ़ाना, गोलाकार होना, ये सब कार्य इतनी तेजी से हुए कि कोई देख ही नहीं पाया। सबने राम को धनुष खींचे खड़े हुए ही देखा।

उसी क्षण राम ने धनुष को बीच से तोड़ दिया

तेहि छन राम मध्य धनु तोरा। भरे भुवन धुनि घोर कठोरा ॥261:8॥

तेहि छन राम मध्य धनु तोरा = उसी क्षण राम ने धनुष को बीच से तोड़ दिया, *भरे भुवन धुनि घोर कठोरा* = भयंकर कठोर ध्वनि सारे लोकों में छा गई।

गोलाकार धनुष को राम ने उसी क्षण बीच से तोड़ दिया। धनुष टूटने की कठोर आवाज सारे लोकों में छा गई।

पृथ्वी हिली, सूर्य के घोड़े बिचके, राम की जय-जयकार हुई

भरे भुवन घोर कठोर रव रबि बाजि तजि मारगु चले ।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरुम कलमले ॥

सुर असुर मुनि कर कान दीन्हें सकल बिकल बिचारहीं ।
कोदंड खंडेउ राम तुलसी जयति बचन उचारहीं ॥छंद॥

भरे भुवन घोर कठोर रव = घोर कठोर आवाज सब लोकों में छा गई, *रबि बाजि तजि मारगु चले* = सूर्य के घोड़े रास्ता भूल कर चलने लगे, *चिक्करहिं दिग्गज* = दिग्गज चिंघाड़ने लगे, *डोल महि* = पृथ्वी डोलने लगी, *अहि कोल कूरुम कलमले* = सर्प; वाराह व कच्छप कलमला उठे, *सुर असुर मुनि* = देवता; राक्षस व मुनि, *कर कान दीन्हें* = कानों पर हाथ रखकर, *सकल बिकल बिचारहीं* = सब व्याकुल होकर सोचने लगे, *कोदंड खंडेउ राम* = जब निश्चय हो गया कि राम ने धनुष तोड़ दिया है, *तुलसी* = तुलसीदास जी कहते हैं, *जयति बचन उचारहीं* = सब लोग राम जी की जय-जयकार करने लगे।

धनुष टूटने की घोर व कठोर आवाज सब लोकों में छा गई। सूर्य के घोड़े भी रास्ता भटक कर इधर-उधर चलने लगे। पृथ्वी को संभालने वाले हाथी चिंघाड़ने लगे जिससे पृथ्वी डोल गयी। जिनके ऊपर पृथ्वी टिकी है वे सर्प, वाराह व कच्छप कलमला उठे। देवता, राक्षस व मुनियों ने तेज आवाज सुन हाथों से कानों को बंद कर लिया। फिर उन्हें समझ आया कि प्रभु राम ने शिव-धनुष तोड़ दिया है, उसी की इतनी तेज ध्वनि है। तुलसीदास जी कहते हैं सब लोग प्रभु राम की जय-जयकार बोलने लगे।

राम की भुजाओं के बल से लोगों का मोह समाप्त हो गया

संकर चापु जहाजु सागरु रघुबर बाहुबलु ।
बूड़ सो सकल समाजु चढ़ा जो प्रथमहिं मोह बस ॥सोरठा 261॥

संकर चापु जहाजु = शिव जी का धनुष जहाज है, *सागरु रघुबर बाहुबलु* = राम जी की भुजाओं का बल समुद्र है, *बूड़ सो सकल समाजु* = वह सारा समाज डूब गया, *चढ़ा जो प्रथमहिं मोह बस* = जो पहले मोह के कारण इसमें बैठा था।

पहले बताया था कि शिव-धनुष एक जहाज के समान है, जिसमें मोह के कारण सबका अज्ञान, संशय, भय, दुःख इस पर बैठे थे। केवट था नहीं।

राम जी की भुजाओं का बल समुद्र था। इस समुद्र में वह जहाज डूब गया। जहाज के डूबने से सबका मोह भी डूब गया। मोह दूर करने का एकमात्र उपाय राम की शरण है। उनकी ही शक्ति से ये मोह जनित दु:ख दूर हो सकते हैं। दूसरा कोई उपाय नहीं है।

धनुष के दो टुकड़े देख सब लोग सुखी

प्रभु दोउ चापखंड महि डारे। देखि लोग सब भए सुखारे ॥262:1॥

प्रभु दोउ चापखंड महि डारे = प्रभु राम ने धनुष के दोनों टुकड़े पृथ्वी पर डाल दिये, *देखि लोग सब भए सुखारे* = यह देखकर सब लोग सुखी हो गये।

जब धनुष के दो खंड हो गये, तब राम जी ने उसे पृथ्वी पर डाल दिया। सबने देखा कि धनुष टूटा पड़ा है। अब सब सुखी हो गये।

विश्वामित्र जी का मन राम प्रेम में पुलकित व तरंगित

कौसिकरूप पयोनिधि पावन। प्रेम बारि अवगाहु सुहावन ॥262:2॥
रामरूप राकेसु निहारी। बढ़त बीचि पुलकावलि भारी ॥262:3॥

कौसिकरूप = मुनि विश्वामित्र जी का स्वरूप तो मानो, *पयोनिधि पावन* = पवित्र सफेद सागर है, *प्रेम बारि अवगाहु सुहावन* = जिसमें प्रेम का अथाह सुंदर एवं निर्मल जल भरा है, *रामरूप राकेसु* = राम जी का रूप चन्द्रमा के समान है, *निहारी* = जो समुद्र के समान विश्वामित्र जी की ओर देखता है, *बढ़त बीचि पुलकावलि भारी* = जिसके कारण समुद्र में भारी तरंग उठती है; मुनि पुलकित हैं।

विश्वामित्र जी तो सफेद समुद्र के समान हैं, जिसमें अथाह जल की जगह प्रभु राम का सुंदर अथाह प्रेम भरा हुआ है। प्रभु राम चन्द्रमा के समान हैं, जब चन्द्रमा समुद्र की ओर देखता है तब समुद्र में ज्वार-भाटा आने लगता है, ऊँची-ऊँची तरंगें उठने लगती हैं। जब विश्वामित्र ने राम की तरफ देखा तो उनके अंदर प्रेम की तरंगें उठने लगीं, सारा शरीर रोमांचित हो गया। वे बहुत प्रसन्न हैं।

आकाश में बाजे, मधुर गीत, फूलों की वर्षा, देवता प्रसन्न

बाजे नभ गहगहे निसाना। देवबधू नाचहिं करि गाना ॥262:4॥
ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीसा। प्रभुहि प्रसंसहिं देहिं असीसा ॥262:5॥
बरिसहिं सुमन रंग बहु माला। गावहिं किंनर गीत रसाला ॥262:6॥

बाजे नभ गहगहे निसाना = आकाश में जोर से नगाड़े बजने लगे, *देवबधू नाचहिं करि गाना* = देवांगनायें गाने गाकर नाच रही हैं, *ब्रह्मादिक सुर* = ब्रह्मा इत्यादि देवता, *सिद्ध मुनीसा* = सिद्ध व मुनि लोग, *प्रभुहि प्रसंसहिं देहिं असीसा* = प्रभु की प्रशंसा करके आशीर्वाद दे रहे हैं, *बरिसहिं सुमन रंग बहु माला* = रंग-बिरंगे फूल व मालायें बरसा रहे हैं, *गावहिं किंनर गीत रसाला* = किन्नर लोग रसीले गीत गा रहे हैं।

दैवी शक्तियाँ प्रसन्न हो गईं, आकाश में बाजे बजने लगे, देवांगनायें नाचने लगीं, गीत गाने लगीं। ब्रह्मा इत्यादि देवता, सिद्ध व मुनि लोग प्रसन्न होकर राम को आशीर्वाद देने लगे। रंग-बिरंगे फूलों की वर्षा कर रहे हैं। किन्नर लोग रसीले गीत गा रहे हैं।

ब्रह्मांड में जय-जयकार की ध्वनि से धनुष की आवाज दब गई

रही भुवन भरि जय जय बानी। धनुष भंग धुनि जात न जानी ॥262:7॥
मुदित कहहिं जहँ तहँ नर नारी। भंजेउ राम संभुधनु भारी ॥262:8॥

रही भुवन भरि जय जय बानी = सारे संसार में जय-जयकार की ध्वनि छा गयी, *धनुष भंग धुनि जात न जानी* = जिससे धनुष टूटने की ध्वनि पता ही नहीं चल रही है, *मुदित कहहिं जहँ तहँ नर नारी* = जहाँ-तहाँ स्त्री-पुरुष प्रसन्न होकर कह रहे हैं, *भंजेउ राम संभुधनु भारी* = राम ने भारी शिव-धनुष को तोड़ दिया है।

प्रभु राम के जय-जयकार की ध्वनि आकाश में इस प्रकार गूँजने लगी कि धनुष भंग से उत्पन्न कठोर ध्वनि धीरे-धीरे शांत होती गयी। पूरे नगर में यह खबर शीघ्रता से फैल गयी की राम ने शिव के कठोर धनुष को तोड़ दिया है। खबर सुनते ही सब नगरवासी प्रसन्न हुए।

कीर्ति गान के साथ न्योछावरें होने लगीं

बंदी मागध सूतगन बिरुद बदहिं मतिधीर ।
करहिं निछावरि लोग सब हय गय धन मनि चीर ॥दोहा 262॥

बंदी मागध सूतगन = भाट; मागध और सूत लोग, *बिरुद बदहिं मतिधीर* = धैर्यपूर्वक कीर्ति का बखान कर रहे हैं, *करहिं निछावरि लोग सब* = सब लोग न्योछावर कर रहे हैं, *हय गय धन मनि चीर* = घोड़े; हाथी; धन; मणि और वस्त्र निछावर कर रहे हैं।

जनक दरबार के बंदी, मागध व सूत, ये तीन श्रेणी के लोग धैर्य पूर्वक प्रभु राम की महिमा का गान करते हैं। लोग घोड़े, हाथी, धन, मणि और वस्त्र न्योछावर कर रहे हैं। प्रसन्नता में व्यक्ति कुछ देता है। सिर के ऊपर से घुमाकर ही देना आवश्यक नहीं, राम के नाम से दे दिया वही न्योछावर है। जब प्रभु राम के नाम से न्योछावर बाँटी जाती है तो उसे लेने केवल निर्धन ही नहीं आते बल्कि उसे पाने के लिये देवता भी लालायित रहते हैं। वे भी हाथ बढ़ा देते हैं।

14. सीता ने राम के गले में वरमाला पहना दी

(दोहा 263 से 267)

तुलसीदास जी ने श्रीराम-सीता विवाह का वर्णन तीन चरणों में किया है। प्रथम चरण में शिव-धनुष टूटने के साथ ही प्रतिज्ञा के अनुसार विवाह हो गया। दूसरे चरण में इस प्रसंग में सीता राम के गले में जयमाला पहनाती हैं। गुरु शतानंद का आदेश मिलते ही सीता जी हंसिनी जैसी चाल से राम जी की ओर चलती हैं। सुंदर सखियों के मध्य में सीता जी महाछवि जैसे शोभायमान हैं। पहली बार सीता जी राम जी की सुंदरता को निकट से देखकर एकदम स्थिर हो जाती हैं। प्रेम इतना है कि जयमाला पहना नहीं पा रही हैं। वरमाला पहनाते ही देवता फूलों की वर्षा करने लगे। चारों तरफ बाजे बजने लगे। जय-जयकार होने लगी। राम व सीता की सुंदर जोड़ी की आरती व न्योछावर होने लगती है। विवाह में विघ्न भी आता है। कुछ दुष्ट राजा शोर मचाने लगते हैं परन्तु सज्जन राजा उन्हें डांटकर शांत कर देते हैं।

अनेकों तरह के बाजे बजने लगे, स्त्रियाँ मंगलगीत गाती हैं

झाँझि मृदंग संख सहनाई। भेरि ढोल दुंदुभी सुहाई ॥263:1॥
बाजहिं बहु बाजने सुहाए। जहँ तहँ जुबतिन्ह मंगल गाए ॥263:2॥

झाँझि = बड़ा मंजीरा, *मृदंग* = लंबी ढोलक, *संख* = शंख, *सहनाई* = शहनाई, *भेरि* = नगाड़ा, *ढोल* = ढोलक, *दुंदुभी* = छोटे नगाड़े इत्यादि, *बाजहिं बहु बाजने सुहाए* = बहुत से सुहावने बाजे बजने लगे, *जहँ तहँ जुबतिन्ह मंगल गाए* = जगह-जगह स्त्रियाँ मंगलगीत गाने लगीं।

धनुष टूटने के बाद तरह-तरह के बाजे बजने लगे। बड़ा मंजीरा, लंबी ढोलक, शंख, शहनाई, नगाड़ा, ढोलक, छोटे नगाड़े इत्यादि, बहुत से सुहावने बाजे बजने लगे। स्त्रियाँ मंगलगीत गाने लगीं।

धनुष टूटने से रानी प्रसन्न, जनक जी सुखी, राजा निस्तेज

सखिन्ह सहित हरषी अति रानी। सूखत धान परा जनु पानी ॥263:3॥
जनक लहेउ सुखु सोचु बिहाई। पैरत थकें थाह जनु पाई ॥263:4॥
श्रीहत भए भूप धनु टूटे। जैसें दिवस दीप छबि छूटे ॥263:5॥

सखिन्ह सहित हरषी अति रानी = सखियों सहित रानी प्रसन्न हैं, *सूखत धान परा जनु पानी* = मानो सूखते हुए धान के खेत को पानी मिल गया, *जनक लहेउ सुखु* = जनक जी को सुख की प्राप्ति हुई, *सोचु बिहाई* = चिंता मिट गयी, *पैरत थकें* = तैरते हुए थके हुए व्यक्ति ने, *थाह जनु पाई* = मानो थाह पा ली हो, *श्रीहत भए भूप धनु टूटे* = धनुष टूटने से राजा लोग श्रीहीन हो गये, *जैसें दिवस* = जैसे दिन निकलने पर, *दीप छबि छूटे* = दीपक की रोशनी निस्तेज हो जाती है।

धनुष टूटने से किस पर क्या प्रभाव हुआ, उसका वर्णन करते हैं:

1. सखियों सहित रानी सुनयना वैसे ही अत्यंत प्रसन्न हो गईं जैसे धान के सूखे हुए खेत पर बारिश हो जाये तो फसल लहलहा उठे।
2. कोई व्यक्ति तैरना शुरू करने के बाद सोचे कि हम थक गये हैं, अब डूब जायेंगे, इतने में उसे थाह मिल जाये। इसी प्रकार जनक जी अपनी प्रतिज्ञा को लेकर चिंतित थे। धनुष टूटते ही उनकी चिंता दूर, वे सुखी हो गये।

3. सूर्य निकलने पर जैसे दीपक प्रभावहीन हो जाता है वैसे ही राजाओं का तेज समाप्त हो गया।

सीता को बहुत सुख, लक्ष्मण राम को एकटक देख रहे हैं

सीय सुखहि बरनिअ केहि भाँती। जनु चातकी पाइ जलु स्वाती ॥263:6॥
रामहि लखनु बिलोकत कैसें। ससिहि चकोर किसोरकु जैसें ॥263:7॥

सीय सुखहि बरनिअ केहि भाँती = सीता जी के सुख का किस प्रकार वर्णन करें, *जनु चातकी पाइ जलु स्वाती* = जैसे चातकी स्वाती नक्षत्र का जल पाकर प्रसन्न हो, *रामहि लखनु बिलोकत कैसें* = राम जी को लखन जी कैसे देख रहे हैं, *ससिहि चकोर किसोरकु जैसें* = जैसे चन्द्रमा को चकोर का बच्चा देख रहा हो।

4. सीता जी का सुख कैसा है? जैसे चातकी स्वाती नक्षत्र का जल पाकर प्रसन्न हो जाये। चातक कहीं का पानी नहीं पीता है, स्वाती नक्षत्र में बरस रहे पानी को ही पीता है। इसी प्रकार भक्त भी भगवान के अलावा किसी अन्य सुख की कामना नहीं करते हैं।
5. राम जी की तरफ लक्ष्मण जी देख रहे हैं कैसे? जैसे चकोर पक्षी का बच्चा चन्द्रमा की ओर देख रहा हो। जब चन्द्रमा का उदय होता है तो चकोर पक्षी लगातार उसकी ओर देखता रहता है।

शतानंद जी की आज्ञा से सीता राम की तरफ चलीं

सतानंद तब आयसु दीन्हा। सीताँ गमनु राम पहिं कीन्हा ॥263:8॥

सतानंद तब आयसु दीन्हा =शतानंद जी ने जब आज्ञा दी, *सीताँ गमनु राम पहिं कीन्हा* = सीता जी राम की तरफ चलती हैं।

प्रतिज्ञा के अनुसार जो धनुष तोड़ेगा, सीता उसे वरमाला पहनायेंगी। राम के धनुष तोड़ते ही सीता वरमाला पहना देतीं, परंतु वे खड़ी क्यों हैं? आदेश की प्रतीक्षा करती हैं। शतानंद जी जनक जी के पुरोहित व गुरु हैं। उन्होंने जब आदेश दिया तब सीता राम की ओर चलती हैं। राम भी धनुष तोड़ने के लिये विश्वामित्र जी की आज्ञा से ही उठे थे।

बाल हंसिनी जैसी चाल, साथ में सखियाँ गीत गाते जा रही हैं

संग सखीं सुंदर चतुर गावहिं मंगलचार ।
गवनी बाल मराल गति सुषमा अंग अपार ॥दोहा 263॥

संग सखीं सुंदर चतुर = साथ में सुंदर व होशियार सखियाँ हैं, *गावहिं मंगलचार* = मंगलाचार के गीत गा रही हैं, *गवनी बाल मराल गति* = सीता जी बाल हंसिनी की चाल से चल रही हैं, *सुषमा अंग अपार* = उनके अंगों में अपार सुंदरता है।

सीता जी चल कैसे रही हैं, उनकी गति क्या है? तुलसीदास जी कहते हैं कि बाल हंसिनी के समान। उनके अंगों में अपार सुंदरता है। राम जी कैसे चल रहे थे? श्रेष्ठ हाथी जैसे। साथ में सुंदर सखियाँ चल रही हैं। सखियाँ चतुर हैं। वे मंगल-गीत में राम, अयोध्या, जनकपुर, धनुष की महिमा के साथ सीता जी को यह भी बताती जाती हैं कि अब करना क्या है।

संकोच व परम उत्साह से महाछवि सीता जी चल रही हैं

सखिन्ह मध्य सिय सोहित कैसें। छबिगन मध्य महाछबि जैसें ॥264:1॥
कर सरोज जयमाल सुहाई। बिस्व बिजय सोभा जेहिं छाई ॥264:2॥
तन सकोचु मन परम उछाहू। गूढ़ प्रेमु लखि परइ न काहू ॥264:3॥

सखिन्ह मध्य सिय = सखियों के मध्य में सीता जी, *सोहित कैसें* = कैसे शोभायमान हैं, *छबिगन मध्य* = जैसे सुंदरताओं के मध्य, *महाछबि जैसें* = महान सुंदरता हो, *कर सरोज* = कमल के समान हाथों में, *जयमाल सुहाई* = सुंदर जय माला है, *बिस्व बिजय सोभा* = विश्वविजय की सुंदरता, *जेहिं छाई* = जिसमें छायी है, *तन सकोचु* = शरीर में संकोच है, *मन परम उछाहू* = परंतु मन में परम उत्साह है, *गूढ़ प्रेमु लखि परइ न काहू* = उनका गूढ़ प्रेम किसी को दिखाई नहीं देता।

जब तक राम के निकट सीता पहुँचें, तुलसीदास जी उनकी सुंदरता का वर्णन कर देते हैं। सखियों के बीच में सीता जी चलते हुए कैसे दिख रही हैं? कहते हैं जैसे सुंदरता के बीच में महाछवि हो। कमल के समान सुंदर हाथों में जयमाला लिये हैं। सीता जी के हाथों में जयमाला पहुँचकर बहुत सुंदर लग रही है।

उसमें विश्व विजय की शोभा छा गयी है। मर्यादा का पालन करते हुए शरीर से संकोच लग रहा है परंतु मन में परम उत्साह है। सीता जी के मन में अत्यंत गहन आत्मिक प्रेम है, जिसे कोई देख नहीं पा रहा है।

राम के निकट पहुँचीं, सुंदरता देख अचल भाव से खड़ी रह गईं

जाइ समीप राम छबि देखी। रहि जनु कुअँरि चित्र अवरेखी ॥264:4॥
चतुर सखीं लखि कहा बुझाई। पहिरावहु जयमाल सुहाई ॥264:5॥

जाइ समीप = राम के नजदीक पहुँचकर, *राम छबि देखी* = जब राम की सुंदरता निकट से देखी, *रहि जनु कुअँरि* = राजकुमारी सीता इस प्रकार हो गईं, *चित्र अवरेखी* = जैसे कोई चित्र हो जो हिलता-डुलता नहीं, *चतुर सखीं लखि* = बुद्धिमान सखियों ने सीता जी की दशा देखकर, *कहा बुझाई* = समझाकर कहा कि, *पहिरावहु जयमाल सुहाई* = सुंदर जयमाला पहनाओ।

सीता राम के नजदीक पहुँच गईं। पहली बार सीता ने राम की सुंदर छवि को निकट से देखा। पुष्पवाटिका में दूर से लताओं की ओट में देखा था। इस सभा में भी दूर से मंच पर बैठे हुए, फिर धनुष के पास देखा था। राजकुमारी सीता राम को देखकर इस प्रकार से अचल भाव से खड़ी रह गईं मानो दिवाल पर बनाया हुआ चित्र हों। उनमें कोई हलचल नहीं है, शरीर एकदम स्थिर हो गया। चतुर सखियों ने सीता जी की दशा को देखकर, अच्छे से समझाकर कहा कि खड़ी क्यों हो, जयमाला पहनाओ।

जयमाला ऊपर उठायी, प्रेम की अधिकता से पहना नहीं पाईं

सुनत जुगल कर माल उठाई। प्रेम बिबस पहिराइ न जाई ॥264:6॥
सोहत जनु जुग जलज सनाला। ससिहि सभीत देत जयमाला ॥264:7॥

सुनत = यह सुनकर, *जुगल कर* = दोनों हाथो से, *माल उठाई* = जयमाला को ऊपर उठाया, *प्रेम बिबस पहिराइ न जाई* = प्रेम की विवशता से माला पहनायी नहीं जा रही थी, *सोहत जनु जुग* = दोनों हाथ इस प्रकार शोभायमान हैं, *जलज सनाला* = मानों दो कमल के फूल डंडियों सहित, *ससिहि* = चन्द्रमा को, *सभीत देत जयमाला* = डरते हुए जयमाला पहना रहे हों।

सखियों के वचन सुनकर सीता जी ने दोनों हाथों से पकड़ी हुई जयमाला ऊपर उठायी। परंतु उनके मन में प्रेम की प्रबलता इतनी थी कि वे जयमाला पहना नहीं पाईं। सीता जी के दोनों हाथ जयमाला लिये हुए जब प्रभु राम के सिर की ओर बढ़ते हैं तो ऐसा लगा जैसे दो हाथ नहीं, दो कमल के फूल हैं, बाँहें कमल की डंडी जैसी लगीं। प्रभु राम का मुख चन्द्रमा के समान है। ऐसा दृश्य दिखा जैसे दो कमल के फूल चन्द्रमा को माला पहना रहे हैं। रामचरितमानस के इन अद्भुत दृश्यों को मन में बैठा लेना चाहिये, समय-समय पर स्मरण करते रहें।

सीता ने राम के गले में जयमाला पहना दी

गावहिं छबि अवलोकि सहेली। सियँ जयमाल राम उर मेली ॥264:8॥

गावहिं छबि अवलोकि सहेली = इस सुंदरता को देखकर सखियाँ गीत गा रही हैं, *सियँ जयमाल राम उर मेली* = सीता जी ने जयमाला राम के गले में पहना दी।

रघुबर उर जयमाल देखि देव बरिसहिं सुमन ।
सकुचे सकल भुआल जनु बिलोकि रबि कुमुदगन ॥सोरठा 264॥

रघुबर उर जयमाल देखि = राम के गले में जयमाला देखकर, *देव बरिसहिं सुमन* = देवता पुष्पों की वर्षा कर रहे हैं, *सकुचे सकल भुआल* = सभी राजा संकुचित हो गये, *जनु बिलोकि रबि* = जैसे सूर्य को देखकर, *कुमुदगन* = कुमुद के फूलों का समूह मुरझा जाता है।

सुंदर दृश्य को देख सखियाँ गीत गा रही हैं। सीता जी ने दोनों हाथों में ली हुई जयमाला ऊपर उठाकर प्रभु राम के गले में पहना दी। गले में जयमाला देखकर देवता फूलों की वर्षा कर रहे हैं। जैसे सूर्य को देख कुमुद के फूलों का समूह मुरझा जाता है वैसे जयमाला देखकर राजा तेजहीन हो गये।

बाजे, नाच-गाना, वेद ध्वनि, जय-जयकार की गूँज

पुर अरु ब्योम बाजने बाजे। खल भए मलिन साधु सब राजे ॥265:1॥
सुर किंनर नर नाग मुनीसा। जय जय जय कहि देहिं असीसा ॥265:2॥

पुर अरु ब्योम बाजने बाजे = नगर व आकाश में बाजे बजने लगे, *खल भए मलिन* = दुष्ट लोग उदास हो गये, *साधु सब राजे* = सज्जन लोग प्रसन्न हो गये, *सुर किंनर नर नाग मुनीसा* = देवता; किन्नर; मनुष्य; नाग व मुनीश्वर, *जय जय जय कहि देहिं असीसा* = जय-जय-जयकार करके आशीर्वाद दे रहे हैं।

नाचहिं गावहिं बिबुध बधूटीं। बार बार कुसुमांजलि छूटीं ॥265:3॥
जहँ तहँ बिप्र बेदधुनि करहीं। बंदी बिरिदावलि उच्चरहीं ॥265:4॥
महि पाताल नाक जसु ब्यापा। राम बरी सिय भंजेउ चापा ॥265:5॥

नाचहिं गावहिं = नाच व गा रही हैं, *बिबुध बधूटीं* = बहुत सी अप्सरायें, *बार बार कुसुमांजलि छूटीं* = बार-बार हाथों से पुष्पांजलि देती हैं, *जहँ तहँ बिप्र बेदधुनि करहीं* = जहाँ-तहाँ विप्र लोग वेदों की ऋचायें उच्चारित करने लगे, *बंदी बिरदावलि उच्चरहीं* = बंदी कुल की कीर्ति का गान कर रहे हैं, *महि पाताल नाक जसु ब्यापा* = पृथ्वी; पाताल व स्वर्ग लोक में यश फैल गया, *राम बरी सिय भंजेउ चापा* = धनुष तोड़कर राम ने सीता से विवाह कर लिया है।

जनकपुर व आकाश में बाजे बजने लगे। दुष्ट राजा दु:खी हो गये, अच्छे राजा प्रसन्न हो गये। देवता, किन्नर, मनुष्य, नाग व मुनीश्वर, जय-जय-जयकार करके आशीर्वाद दे रहे हैं। अप्सरायें नाचती हैं, गाती हैं, अंजली भर-भरकर फूल बरसाती हैं। विश्वामित्र जी के साथ जो विप्र आये थे वे ऋग्वेद की ऋचायें बोलने लगे। बंदी विरदावली गा रहे हैं। पृथ्वी, स्वर्ग व पाताल तीनों लोकों में प्रभु राम का यश फैल गया। सब कहने लगे राम ने सीता का वरण कर लिया है, धनुष टूट गया है।

श्रृंगार-सुंदरता की जोड़ी राम-सीता की आरती व न्योछावर

करहिं आरती पुर नर नारी। देहिं निछावरि बित्त बिसारी ॥265:6॥
सोहति सीय राम कै जोरी। छबि सिंगारु मनहुँ एक ठोरी ॥265:7॥

करहिं आरती पुर नर नारी = नगर के स्त्री व पुरुष आरती करते हैं, *देहिं निछावरि बित्त बिसारी* = अपने सामर्थ्य से ज्यादा न्योछावर दे रहे हैं, *सोहति*

सीय राम कै जोरी = राम व सीता की जोड़ी इस प्रकार शोभायमान है, *छबि सिंगारु मनहुँ एक ठोरी* = मानो छवि व शृंगार एक साथ खड़े हों।

जयमाल के बाद राम व सीता साथ में खड़े हैं। कैसे लगते हैं? तुलसीदास जी कहते हैं कि शृंगार मानो राम बनकर और छवि मानो सीता बनकर खड़ी हैं। दोनों की जोड़ी अत्यधिक सुंदर है। नगर के स्त्री-पुरुष आरती करके न्योछावर देते हैं। न्योछावर कितनी? *वित्त बिसारी* मायने अपने आर्थिक सामर्थ्य को भूलकर, नगरवासी इतने प्रसन्न हैं कि उन्हें यह भी ध्यान न रहा कि सब बाँट देंगे तो हम करेंगे क्या। इस प्रसंग के पाठ से हमारे अंदर भी इतनी प्रसन्नता आये कि दिल खोलकर न्योछावर करने मायने दान देने का भाव आये।

अहिल्या के डर से सीता चरण स्पर्श नहीं करतीं, राम मुस्कुराये

सखीं कहहिं प्रभु पद गहु सीता। करति न चरन परम अति भीता ॥265:8॥

सखीं कहहिं = सखियाँ कहती हैं, *प्रभु पद गहु सीता* = सीता प्रभु के चरण छुओ, *करति न चरन* = सीता चरण नहीं छूतीं, *परम अति भीता* = अत्यंत भय के कारण।

गौतम तिय गति सुरति करि नहिं परसति पग पानि ।
मन बिहसे रघुबंसमनि प्रीति अलौकिक जानि ॥दोहा 265॥

गौतम तिय = गौतम ऋषि की स्त्री, *गति सुरति करि* = की गति का स्मरण करके, *नहिं परसति पग पानि* = स्पर्श नहीं करती राम के चरणों को हाथ से, *मन बिहसे रघुबंसमनि* = राम जी मन में मुस्कुराते हैं, *प्रीति अलौकिक जानि* = सीता के अलौकिक प्रेम को समझकर।

चतुर सखियों ने सीता से कहा कि राम के चरण छूकर प्रणाम कर लो। सीता ने राम के चरणों की ओर देखा, झुकी भी पर हाथों से चरण स्पर्श नहीं किया। उन्हें गौतम ऋषि की स्त्री अहिल्या का स्मरण आ गया, जो राम की चरण धूलि लगते ही पत्थर से स्त्री बनकर स्वर्ग चली गयी थी। सीता जी को लगा कि हम पैर छुएँ और स्वर्ग न चले जायें। सीता जी के अलौकिक प्रेम को समझकर राम मन में हँसते हैं।

कुछ दुष्ट राजा व्यर्थ की बातें करके, युद्ध की धमकी देने लगे

तब सिय देखि भूप अभिलाषे। कूर कपूत मूढ़ मन माखे ॥266:1॥
उठि उठि पहिरि सनाह अभागे। जहँ तहँ गाल बजावन लागे ॥266:2॥

तब सिय देखि = उस समय सीता जी को देखकर, *भूप अभिलाषे* = राजाओं के मन में इच्छा जागी, *कूर कपूत मूढ़ मन माखे* = वे दुष्ट; कुपूत और मूर्ख राजा मन में क्रोधित हुए, *उठि उठि पहिरि सनाह अभागे* = वे अभागे उठ-उठकर कवच पहनकर, *जहँ तहँ गाल बजावन लागे* = यहाँ वहाँ व्यर्थ की बातें करने लगे।

लेहु छड़ाइ सीय कह कोऊ। धरि बाँधहु नृप बालक दोऊ ॥266:3॥
तोरें धनुषु चाड़ नहिं सरई। जीवत हमहि कुअँरि को बरई ॥266:4॥
जौं बिदेहु कछु करै सहाई। जीतहु समर सहित दोउ भाई ॥266:5॥

लेहु छड़ाइ सीय कह कोऊ = कोई कहने लगा कि सीता को छीन लो, *धरि बाँधहु नृप बालक दोऊ* = कोई कहता है दोनों राजकुमारों को पकड़कर बाँध लो, *तोरें धनुषु* = धनुष तोड़ने से, *चाड़ नहिं सरई* = काम पूरा नहीं होगा, *जीवत हमहि कुअँरि को बरई* = हमारे जिंदा रहते राजकुमारी कौन ब्याह सकता है? *जौं बिदेहु कछु करै सहाई* = यदि जनक जी कुछ सहायता करते हैं, जीतहु *समर सहित दोउ भाई* = दोनों भाइयों सहित उन्हें भी युद्ध में जीत लेंगे।

उसी समय सीता जी को देखकर कुछ दुष्ट व मूर्ख प्रवृत्ति के राजाओं के मन में लोभ जगा कि धनुष तो हम तोड़ नहीं पाये, सीता जी को इनसे छीन लो। वे अभागे उठ-उठ कर अपने कवच, ढाल, तलवार लेकर लड़ने के लिये तैयार होकर व्यर्थ की बातें करने लगे। कोई कहने लगा सीता को छीन लो। दोनों राजकुमारों को बंदी बना लो। धनुष तोड़ने बस से काम पूरा नहीं होगा। जब तक हम जीवित हैं राजकुमारी का विवाह अन्य किसी से नहीं होने देंगे। यदि राजा जनक इनकी सहायता करते हैं तो उन्हें भी युद्ध में जीत लो।

सज्जन राजाओं ने दुष्टों को डाँटा, समझाया, भय दिखाया

साधु भूप बोले सुनि बानी। राजसमाजहि लाज लजानी ॥266:6॥
बलु प्रतापु बीरता बड़ाई। नाक पिनाकहि संग सिधाई ॥266:7॥
सोइ सूरता कि अब कहुँ पाई। असि बुधि तौ बिधि मुहँ मसि लाई ॥266:8॥

साधु भूप बोले सुनि बानी = ये बातें सुनकर अच्छे राजा लोग बोले, *राजसमाजहि लाज लजानी* = इस राज समाज में तो लज्जा भी लज्जित हो गयी, *बलु प्रतापु बीरता बड़ाई नाक* = अरे! तुम्हारा बल प्रताप वीरता बड़ाई और प्रतिष्ठा, *पिनाकहि संग सिधाई* = तो धनुष के साथ ही चली गयी, *सोइ सूरता* = वही वीरता है, *कि अब कहुँ पाई* = कि अब कहीं से आ गयी है, *असि बुधि* = ऐसी बुद्धि है, *तौ बिधि मुहँ मसि लाई* = तभी तो विधाता ने तुम्हारे मुख पर कालिख लगा दी है।

देखहु रामहि नयन भरि तजि इरिषा मदु कोहु ।
लखन रोषु पावकु प्रबल जानि सलभ जनि होहु ॥दोहा 266॥

देखहु रामहि नयन भरि = नेत्र भरकर राम को देख लो, *तजि इरिषा मदु कोहु* = ईर्ष्या; घमंड; क्रोध को त्यागकर, *लखन रोषु पावकु प्रबल जानि* = लक्ष्मण के क्रोध को प्रचंड अग्नि मानकर, *सलभ जनि होहु* = उसमें पतंगे बनकर नष्ट मत हो।

वहाँ पर उपस्थित सज्जन राजाओं ने कहा कि तुम लोग राजा होकर इतनी निर्लज्जता की बातें कर रहे हो कि राजसमाज में लज्जा भी लज्जित हो गई है। धनुष टूटने के साथ ही तुम लोगों की इज्जत, प्रतिष्ठा, मान-सम्मान चला गया है। अब तुम्हें कोई वीर तो मानता नहीं। धनुष को हिला न पाने वाली वीरता ही है कि अब कहीं से नई वीरता प्राप्त हो गयी? इतने तुच्छ बुद्धि के हो तभी तो विधाता ने तुम्हारे मुख पर कालिख पोत दी है। फिर सज्जन राजा समझाते हुए कहते हैं कि तुम अब ईर्ष्या, अभिमान और क्रोध का त्यागकर नेत्र भरकर राम के दर्शन कर लो। अंत में भय दिखाते हुए कहते हैं कि लक्ष्मण के क्रोध की अग्नि के सामने तुम्हारा वही हाल होगा जैसे प्रज्ज्वलित अग्नि में जलकर पतंगे नष्ट हो जाते हैं।

भगवान सामने हो तो भी लोग मानने को तैयार नहीं

भगवान अवतार लेकर अपनी महिमा प्रकट कर दें, उनका अनुपम सौंदर्य भी सामने दिखे तो भी अज्ञान, अभिमान और भाग्यहीनता के कारण बहुत से लोग उन्हें पहचान नहीं पाते। उनकी सत्ता को मानने को तैयार नहीं होते। ऐसा संभव नहीं कि संसार में सब लोग परमात्मा को मान लें, उनकी ओर आकर्षित हों।

सीता जी को प्राप्त करने की इच्छा ही व्यर्थ है

बैनतेय बलि जिमि चह कागू। जिमि ससु चहै नाग अरि भागू ॥267:1॥
जिमि चह कुसल अकारन कोही। सब संपदा चहै सिवद्रोही ॥267:2॥

बैनतेय बलि जिमि = जैसे गरुड़ की बलि, *चह कागू* = कौआ चाहे, *जिमि ससु चहै* = जैसे खरगोश चाहत रखे, *नाग अरि भागू* = सिंह का भाग, *जिमि चह कुसल* = जैसे कुशलता चाहे, *अकारन कोही* = बिना कारण क्रोध करने वाला, *सब संपदा चहै सिवद्रोही* = शंकर जी से विरोध करने वाला व्यक्ति संपति की चाह रखे।

लोभी लोलुप कल कीरति चहई। अकलंकता कि कामी लहई ॥267:3॥
हरि पद बिमुख परम गति चाहा। तस तुम्हार लालचु नरनाहा ॥267:4॥

लोभी लोलुप = लोभी व लालची व्यक्ति, *कल कीरति चहई* = सुंदर कीर्ति चाहे, *अकलंकता कि कामी लहई* = कामी मनुष्य निष्कलंकता चाहे, *हरि पद बिमुख* = श्रीहरि के चरणों से विमुख व्यक्ति, *परम गति चाहा* = परम गति चाहे, *तस तुम्हार लालचु नरनाहा* = हे राजाओं तुम्हारा लालच इसी प्रकार का है।

सज्जन राजा लोग सात उदाहरणों से समझाते हैं कि तुम लोग सीता जी के योग्य हो ही नहीं। इसलिये व्यर्थ की लालसा क्यों करते हो?

1. जैसे कौआ गरुड़ के भाग की कामना करे। गरुड़ इतना शक्तिशाली है कि अपने पंख भी फड़फड़ा दे, तो कौआ टिक नहीं सकता।
2. जैसे सिंह के भाग की कामना खरगोश करे। खरगोश चाहे कि सिंह को भगाकर इसका भाग हम ले लें।
3. जैसे व्यर्थ में, बात-बात में क्रोध करने वाला व्यक्ति अपनी कुशलता की चाहत रखे। अकारण क्रोध, व्यक्ति के विनाश का कारण बनता है।
4. जीवन में सफलता व संपत्ति तो शंकर जी की कृपा से ही आती है, अब कोई शंकर जी का विरोध करे व संपति चाहे तो कैसे संभव है?
5. कोई लोभी व्यक्ति धन को छिपाकर रखे, जन-कल्याण में दान ही न दे, तो उसे यश-कीर्ति मिलेगी ही नहीं। लोग उसकी निंदा करेंगे।
6. कामी व्यक्ति को कलंक तो लगेगा। उसकी निष्कलंकता की कामना व्यर्थ है।
7. बिना हरि चरणों में प्रेम के मुक्ति की कामना करना व्यर्थ है।

सीता माँ के पास, राम गुरु के पास चले गये

कोलाहलु सुनि सीय सकानी। सखीं लवाइ गईं जहँ रानी ॥267:5॥
रामु सुभायँ चले गुरु पाही। सिय सनेहु बरनत मन माहीं ॥267:6॥

कोलाहलु सुनि सीय सकानी = कोलाहल सुनकर सीता शंकित हो गयीं, *सखीं लवाइ गईं जहँ रानी* = तब सखियाँ उन्हें रानी सुनयना के पास ले गयीं, *रामु सुभायँ चले गुरु पाही* = राम सहज स्वभाव से गुरु के पास चल दिये, *सिय सनेहु बरनत मन माहीं* = मन में सीता के प्रेम का स्मरण करते जा रहे हैं।

सखियों ने देखा कि इस कोलाहल को सुनकर सीता सशंकित हैं तो वे उन्हें लेकर माता सुनयना के पास पहुँच गईं। मन में सीता जी के प्रेम का स्मरण करते हुए राम अपने सहज स्वभाव से बिना किसी अभिमान के गुरु विश्वामित्र के पास चले गये। धनुष यज्ञ परिसर में राम व सीता अपने स्थान में पहुँच गये। जमीन पर टूटा हुआ धनुष पड़ा है।

रानियाँ व सीता चिंतित, लक्ष्मण क्रोधित, स्त्रियाँ व्याकुल

रानिन्ह सहित सोचबस सीया। अब धौं बिधिहि काह करनीया ॥267:7॥
भूप बचन सुनि इत उत तकहीं। लखनु राम डर बोलि न सकहीं ॥267:8॥

रानिन्ह सहित सोचबस सीया = रानियों सहित सीता जी सोच के वश में हैं, *अब धौं बिधिहि काह करनीया* = अब विधाता पता नहीं क्या करने वाला है, *भूप बचन सुनि* = राजाओं के वचन सुनकर, *इत उत तकहीं लखनु* = लक्ष्मण जी इधर-उधर देखते हैं, *राम डर बोलि न सकहीं* = पर राम के डर से कुछ बोल नहीं सकते।

अरुन नयन भृकुटी कुटिल चितवत नृपन्ह सकोप ।
मनहुँ मत्त गजगन निरखि सिंघकिसोरहि चोप ॥दोहा 267॥

अरुन नयन = नेत्र लाल हो गये, *भृकुटी कुटिल* = भौंहें टेढ़ी हो गईं, *चितवत नृपन्ह सकोप* = क्रोध से राजाओं की ओर देखने लगे, *मनहुँ मत्त गजगन निरखि* = मानों मतवाले हाथियों का झुंड देखकर, *सिंघकिसोरहि चोप* = सिंह के बच्चे को जोश आ गया हो।

खरभरु देखि बिकल पुर नारीं। सब मिलि देहिं महीपन्ह गारीं ॥268:1॥

खरभरु देखि = खलबली देखकर, *बिकल पुर नारीं* = जनकपुर की स्त्रियाँ व्याकुल हो गईं, *सब मिलि देहिं महीपन्ह गारीं* = सब मिलकर राजाओं को गालियाँ देने लगीं।

रानियाँ व सीता जी सोच के वश में हैं कि ये दुष्ट राजा लोग शुभ कार्य में विघ्न डाल रहे हैं। अब आगे विधाता पता नहीं क्या करने वाला है। लक्ष्मण के नेत्र राजाओं की बातें सुनकर लाल हो गये, भौंहें टेढ़ी हो गईं। क्रोध से इधर-उधर राजाओं की तरफ इस प्रकार देखने लगे जैसे सिंह के बच्चे को मतवाले हाथियों का झुंड देखकर जोश आ गया हो। पर भइया राम के सामने कुछ बोलते नहीं हैं। जनकपुर की स्त्रियाँ मिलकर राजाओं को बलहीन, तेजहीन, कायर, दुष्ट इत्यादि कहने लगीं।





अवलोकितेश्वर (सुबोध अग्रवाल) का जन्म मध्यप्रदेश के सतना जिले में 1962 में हुआ। उन्होंने स्वामी सत्यानन्द सरस्वती से जुलाई 1983 में मंत्र दीक्षा ग्रहण की। अपने शैक्षिक जीवन को 1988 में समाप्त कर मुंगेर आश्रम में ढाई वर्ष तक गुरु सेवा में रत रहे, और गुरुदेव ने उनको अवलोकितेश्वर नाम भी प्रदान किया। वे अभी मध्यप्रदेश के सतना जिले में चार्टर्ड एकाण्टेण्ट का कार्य कर रहे हैं।

श्री गुरुदेव की प्रेरणा से भारत की अनुपम संस्कृति के प्रचार व उत्थान हेतु प्रवचनों को संग्रहित कर शीर्षकों के माध्यम से लेखन व संपादन का मंगलकारी एवं उत्तम कार्य शुरू किया। प्रथम ग्रंथ श्री हनुमान चालीसा है जिसमें चिन्मय मिशन के प्रमुख स्वामी तेजोमयानन्दजी के प्रवचनों का संग्रह है। अन्य ग्रंथ गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस पर चिन्मय मिशन के वरिष्ठ स्वामी श्री शंकरानंदजी के प्रवचनों के संग्रह हैं।



श्री स्वामी सत्यानन्द जी कहते हैं कि श्रीरामचरितमानस का शब्दानुवाद होना चाहिये। उनकी प्रेरणा व स्वामी निरंजनानंद सरस्वती के कृपापूर्ण मार्गदर्शन में श्रीरामचरितमानस के बालकाण्ड भाग चार का शब्दानुवाद, श्री स्वामी सत्यानन्द जी के रिखिया सत्संगों का संकलन, चिन्मय मिशन के वरिष्ठ स्वामी श्री शंकरानंद जी के प्रवचनों का संकलन व संपादन 14 मुख्य शीर्षकों व उपशीर्षकों के माध्यम से किया गया है। परमपूज्य गुरुदेव का निर्देश है कि तुलसीदास जी ने जैसा ग्रंथ लिखा है, उसे वैसा ही समझा जाये। इस बात को ध्यान में रखते हुए ही यह संकलन व संपादन कार्य किया गया है।

प्रभु राम के अवतार का सुन्दर वर्णन, माँ कौशल्या के साथ बाल लीलाओं का अनुपम दृश्य एवं शिव-धनुष यज्ञ के अवसर पर राजा जनक के दरबार में रघुवंश के शौर्य एवं प्रताप का सुन्दर एवं विस्तृत वर्णन बालकाण्ड के इस चौथे भाग में दिया गया है। भगवान का अवतार एवं लीला भक्तों के हृदय में प्रभु के साथ एक प्रेम का रिश्ता बनाने के लिए होता है। उस प्रेम के सम्बन्ध की प्रगाढ़ता ही आध्यात्मिक जगत् में सेतु का कार्य करता है जिस पर चलकर साधक भव सागर को सहजतापूर्वक पार कर पाता है।



ISBN

978-81-949328-6-4